#1 बेस्टसेलर द स्ट्रेंजर इन द लाइफबोट के लेखक

मिच एल्बम

छोटा झूठा

उपन्यास

छोटा झूठा

उपन्यास

मिच एल्बम

हार्पर कॉलिन्स पब्लिशर्स की एक छाप

समर्पण

ईवा और सोलोमन नेसर, और अन्य जिन्होंने इसे पहना था
उनकी भुजाओं पर अंकित संख्याएँ, और उन सभी के लिए जो आज भी

उनके लिए शोक मनाते हैं।

सूक्ति

ये आपकी यादें नहीं हैं जो आपको परेशान करती हैं।
यह वह नहीं है जो आपने लिखा है।
यह वही है जिसे आप भूल चुके हैं, और जिसे आपको भूलना ही होगा।
जिसे आपको जीवन भर भूलते रहना होगा।
—जेम्स फेंटन, “एक जर्मन शोकगीत”
सब कुछ बदल जाएगा, सिवाय सच्चाई के।
—लुसिंडा विलियम्स

अंतर्वस्तु

ढकना
शीर्षक पेज
समर्पण
सूक्ति
भाग I
1943
मुझे बताने दीजिए कि मैं कौन हूँ
“कितना प्यारा लड़का है!”
बाकी कलाकार
एक दृष्टांत
तीन क्षण
झूठ कैसे पनपता है
एक सच्ची और प्रेमपूर्ण दयालुता
सबसे पहले, वे आपका कारोबार छीन लेते हैं...
...फिर वे आपकी पूजा छीन लेते हैं
...फिर वे आपको घर ले जाते हैं
उडो को रहने की जगह मिल गई
स्वीकार

निको सफेद टावर का सपना देखता है
एक और दृष्टांत
पुनर्वास का झूठ
उडो को एक चाल की जरूरत थी
एक बहुत बड़ी शादी
तीन विश्वासघात
भाग II
धुरी
प्रकाश और अंधकार की दुनिया
बारह महीने बाद
घास की रातें
निको, लाइ टू लाइ से
उडो को नई नौकरी मिल गई है
सेबेस्टियन कमजोर होता जाता है, फिर मजबूत होता जाता है
बुडापेस्ट
आशीर्वाद के शब्द
चार दिन तक बर्फबारी
भाग III
1946
भाग IV
आगे क्या हुआ?
उडो एक मनोरंजन पार्क घूमने जाता है
ईर्ष्या का पात्र सनकी
हृदय और उसकी आकांक्षाएँ
भाग V
वह हंसती है, वह झूठ बोलती है
अतीत से पोस्टकार्ड
वियना, 1978
हॉलीवुड, 1980

चार टकराव
भाग VI
अंत की शुरुआत
मुझे तरीकों को गिनने दें
द ट्रैक्स रिमेंबर
और चलिए मान लेते हैं...
... आमीन
लेखक की ओर से
लेखक के बारे में
मिच एल्बोम द्वारा भी।
कॉपीराइट
प्रकाशक के बारे में

भाग I

1943

“यह झूठ है।”

उस विशालकाय व्यक्ति की आवाज गहरी और कर्कश थी।

“झूठ क्या होता है?” किसी ने फुसफुसाते हुए पूछा।

हम कहाँ जा रहे हैं?

वे हमें उत्तर की ओर ले जा रहे हैं।

वे हमें मरने के लिए ले जा रहे हैं।

"सच नहीं!"

“यह सच है,” उस विशालकाय व्यक्ति ने कहा। “वहाँ पहुँचते ही वे हमें मार डालेंगे।”

“नहीं! हमें पुनर्स्थापित किया जा रहा है! नए घरों में! आपने मंच पर खड़े लड़के की बात सुनी ही होगी!”

“नए घरों की ओर!” एक और आवाज ने कहा।

“नए घर उपलब्ध नहीं हैं,” उस विशालकाय व्यक्ति ने कहा।

ट्रेन के पहियों की तेज़ आवाज़ ने बातचीत को खामोश कर दिया। वह विशालकाय आदमी उस धातु की जाली को घूर रहा था जो इस अंधेरे डिब्बे की इकलौती खिड़की

को ढके हुए थी। यह डिब्बा गायों को ले जाने के लिए बनाया गया था, इंसानों के लिए नहीं। इसमें बैठने की कोई जगह नहीं थी। न खाना था, न पानी। लगभग सौ लोग अंदर ठसाठस भरे हुए थे, मानो इंसानों का एक ठोस समूह हो। सूट पहने बूढ़े आदमी। सोने के कपड़ों में बच्चे। एक जवान माँ अपने शिशु को सीने से लगाए बैठी थी। केवल एक ही व्यक्ति बैठा था, एक किशोरी जिसने अपनी पोशाक को उस टिन की बाल्टी के ऊपर उठा रखा था जो यात्रियों को शौच के लिए दी गई थी। उसने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया था।

उस विशालकाय व्यक्ति ने बहुत कुछ देख लिया था। उसने अपने माथे से पसीना पोंछा और फिर लाशों के बीच से रास्ता बनाते हुए खिड़की की ओर बढ़ा।

"अरे!"

"इस पर नजर रखें!"

"आप कहां जा रहे हैं!"

वह जाली तक पहुंचा और अपनी मोटी उंगलियों को छेदों में फंसा दिया। वह जोर से कराह उठा। चेहरे पर भावभंगिमा लिए वह खींचने लगा।

मवेशी गाड़ी में बैठे सभी लोग चुप हो गए। वह क्या कर रहा है? अगर गार्ड आ गए तो क्या होगा? कोने में, सेबेस्टियन नाम का एक दुबला-पतला लड़का दीवार से टिककर खड़ा था और यह सब देख रहा था। उसके बगल में उसका पूरा परिवार बैठा था - उसकी माँ, उसके पिता, उसके दादा-दादी, उसकी दो छोटी बहनें। लेकिन जब उसने खिड़की की जाली खींचते हुए उस आदमी को देखा, तो उसकी नज़र कुछ ही दूरी पर खड़ी एक पतली, काले बालों वाली लड़की पर पड़ी।

उसका नाम फैनी था। सारी मुसीबत शुरू होने से पहले, टैंकों, सैनिकों, भौंकते कुत्तों, आधी रात को दरवाज़े पीटने और उसके गृह नगर सैलानिका में सभी यहूदियों को पकड़ने से पहले, सेबेस्टियन को विश्वास था कि वह इस लड़की से प्यार करता है, अगर चौदह साल की उम्र में प्यार जैसी कोई चीज़ होती है।

उसने यह भावना कभी किसी के साथ साझा नहीं की थी, न उसके साथ और न ही किसी और के साथ। लेकिन अब, किसी कारणवश, वह इस भावना से भर उठा था, और उसका ध्यान उसी पर केंद्रित हो गया जब उस विशालकाय व्यक्ति ने जाली को हिलाकर दीवार से अलग किया। एक आखिरी ज़ोरदार झटके से उसने उसे उखाड़ दिया और नीचे गिरा दिया। खुली जगह से हवा अंदर आई, और वसंत ऋतु का

आकाश सबके सामने प्रकट हो गया।
उस विशालकाय व्यक्ति ने जरा भी समय बर्बाद नहीं किया। उसने खुद को ऊपर खींचने की कोशिश की, लेकिन द्वार बहुत छोटा था। उसका मोटा पेट उसमें से नहीं निकल सका।
वह बड़बड़ाते हुए नीचे गिर पड़ा। ट्रेन के डिब्बे में हल्की फुसफुसाहट फैल गई।
“कोई छोटा,” एक आवाज ने कहा।
माता-पिता ने अपने बच्चों को कसकर पकड़ लिया। एक पल के लिए कोई नहीं हिला। सेबेस्टियन ने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं, गहरी साँस ली, फिर फैनी को कंधों से पकड़कर आगे धकेल दिया।
वह फिट हो सकती है।
“सेबेस्टियन, नहीं!” फैनी चिल्लाई।
“उसके माता-पिता कहाँ हैं?” किसी ने पूछा।
किसी ने जवाब दिया, "मर गया।"
"आओ, बच्चे।"
जल्दी करो, बच्चे!
यात्रियों ने भीड़ के बीच से फैनी को खिसकाते हुए निकाला और उसकी पीठ को ऐसे छुआ मानो उस पर मनोकामनाएं पूरी कर रहे हों। वह उस विशालकाय व्यक्ति तक पहुंची, जिसने उसे उठाकर खिड़की तक पहुंचाया।
उन्होंने निर्देश दिया, "पहले पैर ज़मीन पर रखें। ज़मीन पर उतरते ही शरीर को समेटकर लुढ़कें।"
"इंतज़ार-"
हम और इंतजार नहीं कर सकते! आपको अभी जाना होगा!
फैनी सेबेस्टियन की ओर मुड़ी। उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने मन ही मन कहा, "फिर मिलेंगे।" दाढ़ी वाला एक आदमी, जो प्रार्थना बुदबुदा रहा था, आगे बढ़ा और फैनी के कान में कुछ फुसफुसाया।
उन्होंने कहा, "एक अच्छा इंसान बनो। दुनिया को बताओ कि यहां क्या हुआ था।"
उसके मुंह से सवाल निकलने ही वाला था कि इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, उस विशालकाय आदमी ने उसे उस खुले हिस्से से धक्का देकर अंदर धकेल दिया और वह गायब हो गई।

खिड़की से तेज़ हवा सरसराती हुई आई। एक पल के लिए यात्री मानो थम से गए, मानो फैनी के वापस आने का इंतज़ार कर रहे हों। जब ऐसा नहीं हुआ, तो वे आगे बढ़ने लगे। डिब्बे में उम्मीद की लहर दौड़ गई। हम बाहर निकल सकते हैं! हम जा सकते हैं! वे एक-दूसरे से चिपक कर आगे बढ़ गए।

और तब।

धमाका! एक गोली चली। फिर कई और गोलियां। ट्रेन के ब्रेक लगने से पहले ही यात्री खिड़की पर जाली लगाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। जाली टिक नहीं रही थी। जब डिब्बा रुका, तो दरवाजे खुल गए और चकाचौंध भरी धूप में एक छोटा सा जर्मन अधिकारी खड़ा था, उसकी पिस्तौल ऊपर उठी हुई थी।

“रुको!” वह चिल्लाया।

सेबेस्टियन ने खिड़की से गिरते हाथों को ऐसे देखा जैसे हिलती हुई डाल से सूखे पत्ते गिर रहे हों। उसने पुलिस अधिकारी को देखा, यात्रियों को देखा, कूड़ेदान पर रो रही किशोरी को देखा, और वह समझ गया कि उनकी आखिरी उम्मीद भी बुझ गई है। उसी क्षण, उसने अपने परिवार के इकलौते लापता सदस्य, अपने छोटे भाई निको को कोसा, और कसम खाई कि वह उसे एक दिन ढूंढ निकालेगा, उसे इस सब का बदला चुकाने पर मजबूर करेगा, और उसे कभी माफ नहीं करेगा।

मुझे बताने दीजिए कि मैं कौन हूँ

आप जो कहानी सुनने वाले हैं उस पर भरोसा कर सकते हैं। आप इस पर भरोसा कर सकते हैं क्योंकि मैं इसे आपको सुना रहा हूँ, और इस दुनिया में आप केवल मुझ पर ही भरोसा कर सकते हैं।

कुछ लोग कहेंगे कि प्रकृति पर भरोसा किया जा सकता है, लेकिन मैं इससे सहमत नहीं हूँ। प्रकृति चंचल है; प्रजातियाँ फलती-फूलती हैं फिर विलुप्त हो जाती हैं। कुछ अन्य लोग कहते हैं कि आस्था पर भरोसा किया जा सकता है। लेकिन किस आस्था पर? मैं पूछता हूँ।

जहां तक इंसानों की बात है? खैर। इंसानों पर सिर्फ अपनी सुरक्षा के लिए ही भरोसा किया जा सकता है। खतरा महसूस होने पर वे जीवित रहने के लिए कुछ भी नष्ट कर देंगे, खासकर मुझे।

लेकिन मैं वो साया हूँ जिससे तुम भाग नहीं सकते, वो आईना हूँ जिसमें तुम्हारा अंतिम

प्रतिबिंब दिखता है। तुम चाहे जितनी भी मेरी निगाहों से बचते रहो, पर यकीन मानो, आखिरी निगाह तो मेरी ही होगी।
मैं सत्य हूँ।
और यह कहानी एक ऐसे लड़के के बारे में है जिसने मुझे तोड़ने की कोशिश की।
होलोकॉस्ट के दौरान और उसके बाद, वह वर्षों तक छिपा रहा, नाम बदलता रहा, जीवन बदलता रहा। लेकिन अंत में, उसे पता होना चाहिए था कि मैं उसे ढूंढ ही लूंगा।
मुझसे बेहतर झूठ बोलने वाले को कौन पहचान सकता है?

“कितना प्यारा लड़का है!”

झूठ का सिलसिला शुरू होने से पहले, मैं आपको उससे मिलवाता हूँ। इस पृष्ठ को तब तक देखते रहिए जब तक आपकी आँखें धुंधली सी अवचेतना में न डूब जाएँ। आह! वह रहा। नन्हा निको क्रिस्पिस, ग्रीस के थेसालोनिकी (जिसे सैलॉनिका भी कहा जाता है) की गलियों में खेल रहा है। यह एजियन सागर के किनारे बसा एक शहर है जिसका इतिहास 300 ईसा पूर्व तक जाता है। यहाँ प्राचीन स्नानागारों के खंडहर रेलगाड़ियों और घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियों के साथ मिलते हैं, जैतून के तेल का बाज़ार गुलज़ार रहता है, और सड़क किनारे विक्रेता बंदरगाह से सुबह की नावों से उतारे गए फल, मछली और मसाले बेचते हैं।
वर्ष 1936 है। गर्मियों की धूप प्रसिद्ध व्हाइट टॉवर के पास की पथरीली सड़क को गर्म कर रही है। यह पंद्रहवीं शताब्दी का किला सैलानिका के तटों की रक्षा के लिए बनाया गया था। पास के एक पार्क में, बच्चे अबारिज़ा नामक खेल में खुशी से चिल्ला रहे हैं, जिसमें दो टीमें चाक से बॉक्स बनाती हैं और फिर उनके बीच एक-दूसरे का पीछा करती हैं। अगर वे पकड़े जाते हैं, तो उन्हें तब तक बॉक्स में खड़ा रहना पड़ता है जब तक कि उनका कोई साथी उन्हें "आज़ाद" न कर दे।
निको क्रिस्पिस अपनी टीम का आखिरी सदस्य बचा है। उसका पीछा जॉर्जोस नाम का एक बड़ा लड़का कर रहा है। जब भी जॉर्जोस बहुत करीब आता है, तो पकड़े गए बच्चे चिल्लाते हैं, "निको, सावधान रहो!"
निको मुस्कुराता है। अपनी उम्र के हिसाब से वह बहुत तेज़ है। वह एक स्ट्रीट लैंप की ओर दौड़ता है, उसे पकड़ता है, फिर घूमकर गुलेल की तरह उछल पड़ता है। जॉर्जोस अपनी बाहें हिलाता है। अब यह एक दौड़ बन गई है। निको का पैर चाक के डिब्बे के किनारे को छूता ही है कि बड़ा लड़का उसके कंधे पर थपकी देता है।

“अबरिज़ा!” निको चिल्लाता है और बच्चे इधर-उधर भागने लगते हैं। “लिबर्टे! स्वतंत्रता!”

“नहीं, नहीं! मैंने तुम्हें पकड़ लिया, निको!” जॉर्जोस ने ऐलान किया। “तुम्हारे छूने से पहले ही मैंने तुम्हें टैग कर दिया था!”

बच्चे एकदम स्तब्ध रह गए। वे निको की ओर मुड़े। आखिर क्या होने वाला है? उसने अपनी चप्पल की ओर देखा। उसने जॉर्जोस की ओर देखा।

“वह सही कह रहा है,” निको कहता है। “उसने मुझे फंसा लिया।”

उसके साथी खिलाड़ी आहें भरते हैं। वे पैर पटकते हुए चले जाते हैं।

“ओह, निको,” एक व्यक्ति विलाप करते हुए कहता है, “तुम्हें हमेशा सच ही क्यों बोलना पड़ता है?”

मुझे पता है क्यों।

मैं हमेशा किसी प्रशंसक को पहचान लेता हूँ।

* * *

अब शायद आप पूछेंगे: इस एक छोटे लड़के पर ही ध्यान क्यों केंद्रित किया जाए? इसमें रुचि की क्या बात हो सकती है? क्या अरबों जीवन ऐसे नहीं हैं जिन्हें सत्य साझा कर सकता है, पृथ्वी पर बिताए उनके अंतरंग अनुभवों को उजागर कर सकता है?

हाँ, बिल्कुल। लेकिन निको के साथ, मैं आपको एक ऐसी कहानी सुनाता हूँ जिसका गहरा महत्व है, एक ऐसी कहानी जो पहले कभी नहीं सुनाई गई। यह कहानी धोखे, बड़े धोखे, लेकिन साथ ही गहरी सच्चाई, दिल टूटने, युद्ध, परिवार, बदला और प्यार से जुड़ी है, एक ऐसे प्यार से जिसकी बार-बार परीक्षा होती है। कहानी के अंत से पहले, मानवीय कमजोरियों के अंतहीन ताने-बाने के बीच एक जादुई पल भी आता है।

जब हम यह कहानी खत्म करेंगे, तो शायद आप कहेंगे, "यह तो असंभव था।" लेकिन सच्चाई के बारे में एक मजेदार बात यह है: कोई चीज जितनी कम वास्तविक लगती है, लोग उस पर उतना ही ज्यादा विश्वास करना चाहते हैं।

तो निको क्रिस्पिस के बारे में इस बात पर गौर करें:

जब तक वह ग्यारह साल का नहीं हो गया, उसने कभी झूठ नहीं बोला।

इससे लोग तुम्हें नोटिस करेंगे, कम से कम मैं तो ज़रूर। अगर निको रसोई से एक मीठा रोल चुरा लेता, तो पूछे जाने पर वो तुरंत मान लेता। अगर उसकी माँ पूछती,

"क्या तुम थके हुए हो, निको?" तो वो मान लेता कि वह थका हुआ है, भले ही उसे जल्दी सोने भेज दिया जाए।

स्कूल में, अगर निको किसी शिक्षक के प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाता, तो वह खुशी-खुशी बता देता कि उसने अपना होमवर्क नहीं पढ़ा है। दूसरे छात्र उसकी ईमानदारी पर हंसते थे। लेकिन निको के दादा, लाज़ार्रे, जिनसे निको बहुत प्यार करता था, ने उसे बचपन से ही जीवन के अनमोल महत्व के बारे में सिखाया था। जब निको केवल पाँच वर्ष का था, वे बंदरगाह के पास बैठे थे और खाड़ी के उस पार भव्य माउंट ओलंपस को निहार रहे थे।

"मेरे दोस्त ने मुझे बताया कि देवता ऊपर रहते हैं," निको ने कहा।

“निको, ईश्वर एक ही है,” लाज़ार्रे ने उत्तर दिया। “और वह पहाड़ों पर नहीं रहता।”

निको ने भौंहें चढ़ा लीं। "तो फिर मेरे दोस्त ने ऐसा क्यों कहा?"

लोग बहुत सी बातें कहते हैं। कुछ सच होती हैं, कुछ झूठ होती हैं। कभी-कभी, अगर आप लंबे समय तक झूठ बोलते रहें, तो लोग उसे सच मान लेते हैं।

"कभी झूठ मत बोलना, निको।"

“मैं ऐसा नहीं करूँगा, नैनो।”

भगवान हमेशा देख रहे हैं।

निको क्रिस्पिस के बारे में जानने योग्य तीन बातें।

उन्हें भाषाओं का असाधारण ज्ञान था।

वह लगभग कुछ भी बना सकता था।

वह एक आकर्षक बच्चा था।

तीसरा बिंदु आगे चलकर महत्वपूर्ण साबित होगा। निको को अपने लंबे, हट्टे-कट्टे पिता, जो एक तंबाकू व्यापारी थे, और अपनी सुनहरे बालों वाली माँ, जो मंच पर अभिनय करने की उम्मीद में एक स्थानीय थिएटर में स्वयंसेवा करती थीं, के सर्वोत्तम गुण विरासत में मिले थे। मैं किसी व्यक्ति के शारीरिक गुणों का श्रेय नहीं लेता, लेकिन मैं आपको बता सकता हूँ कि आप चाहे जिस भी रूप-रंग के साथ पैदा हुए हों, सत्य उसे और निखार देगा।

मैं देखता हूँ।

निको के चेहरे पर एक ऐसी मनमोहक मुस्कान रहती थी कि अजनबी भी उसे निहारने लगते थे। “कितना प्यारा बच्चा है,” वे उसके गालों या ठोड़ी को छूते हुए कहते थे।

कभी-कभी वे यह भी कहते थे, “यह यहूदी नहीं लगता।” युद्ध के दौरान यह बात भी बहुत मायने रखती थी।

लेकिन निको के लहराते सुनहरे बालों, चमकीली नीली आँखों या उभरे हुए सफेद दाँतों पर फैले भरे होंठों के अलावा, अजनबी लोग सबसे ज़्यादा उसके शुद्ध हृदय की ओर आकर्षित होते थे। उसमें ज़रा भी छल-कपट नहीं था।

वह एक ऐसा लड़का था जिस पर विश्वास किया जा सकता था।

समय बीतने के साथ, उसके पड़ोस के लोग उसे चियोनी कहने लगे—जो यूनानी भाषा में "बर्फ" का अर्थ है—क्योंकि वह सांसारिक छल से अछूता प्रतीत होता था। भला मैं ऐसे व्यक्ति को कैसे नज़रअंदाज़ कर सकता था? झूठ से भरी इस दुनिया में, ईमानदारी सूरज की रोशनी में चमकती चांदी की पन्नी की तरह दमकती है।

बाकी कलाकार

अब, निको की कहानी को पूरी तरह से बताने के लिए, मुझे तीन अन्य लोगों को भी शामिल करना होगा, जो उसके असामान्य जीवन के दौरान लगातार एक दूसरे से जुड़े रहेंगे।

पहला है उसका भाई सेबेस्टियन, जिससे आप ट्रेन में पहले ही मिल चुके हैं। तीन साल बड़ा, काले बालों वाला और काफी गंभीर स्वभाव का सेबेस्टियन एक अच्छा बेटा बनने की कोशिश करता था, जबकि मन ही मन अपने लाड़ले छोटे भाई से ईर्ष्या करता था।

“हमें अभी सोने क्यों जाना है?” सेबेस्टियन बड़बड़ाता।

अनुवाद: निको को मेरी तरह देर तक जागने की इजाजत क्यों मिलती है?

मुझे अपना सूप खत्म क्यों करना है?

अनुवाद: निको को अपना काम खत्म करने की ज़रूरत क्यों नहीं है?

बड़ा भाई दुबला-पतला था जबकि छोटा फुर्तीला था, और जहाँ छोटा भाई सहज था वहीं सेबेस्टियन संकोची था। कई बार जब निको हास्य अभिनय से परिवार का मनोरंजन कर रहा होता था, तब सेबेस्टियन खिड़की के पास दुबका बैठा होता था, गोद में किताब लिए, और उसके चेहरे पर शिकन होती थी।

क्या सेबेस्टियन निको जितना ईमानदार था? अफसोस की बात है, नहीं। वह आम बातों पर झूठ बोलता था, जैसे दांत ब्रश करना, अपने पिता के दराज से सिक्के निकालना, यह झूठ बोलना कि उसने आराधनालय में ध्यान दिया था या नहीं, और

किशोरावस्था में पहुँचने के बाद, बाथरूम में इतना समय क्यों लगा रहा था।
फिर भी, बड़ा लड़का अपने परिवार के प्रति बेहद समर्पित था - अपनी माँ, टान्ना, अपने पिता, लेव, अपने दादा-दादी लाज़ारे और ईवा, अपनी जुड़वां छोटी बहनों, एलिज़ाबेथ और अन्ना के प्रति, और हाँ, जब ज़ोर दिया जाता था, तो अपने छोटे भाई, निको के प्रति भी, जो जैतून के तेल के बाज़ार में दौड़ लगाने या शहर के पूर्वी तट के समुद्र तटों पर तैरने में उसका प्रतिद्वंद्वी था।
लेकिन सेबेस्टियन ने अपनी सबसे अधिक भक्ति फैनी नाम की लड़की के लिए बचाकर रखी थी।
फैनी, छोटी झूठी की कहानी में तीसरी पात्र है। ट्रेन की उस यात्रा से पहले जिसने उसकी ज़िंदगी हमेशा के लिए बदल दी, फैनी एक शर्मीली बारह साल की लड़की थी, जो जवानी की दहलीज पर खड़ी थी। उसके चेहरे पर अभी भी निखार था, उसकी आंखें जैतून जैसी चमकीली थीं, होंठ भरे हुए थे, एक शर्मीली मुस्कान थी और उसका पतला, उभरता हुआ शरीर था। उसके काले घुंघराले बाल उसके पतले कंधों को ढके हुए थे।
फैनी के पिता, शिमोन नाहमियास, जो एक विधुर थे, एग्नाटिया स्ट्रीट पर एक दवाखाने के मालिक थे, और उनकी इकलौती संतान फैनी, अलमारियों को व्यवस्थित करने में उनकी मदद करती थी। सेबेस्टियन अक्सर अपनी माँ के लिए कुछ लेने के बहाने दुकान पर जाता था, लेकिन मन ही मन वह फैनी के साथ अकेले समय बिताना चाहता था। हालाँकि वे बचपन से एक-दूसरे को जानते थे और बचपन से साथ खेलते आए थे, लेकिन पिछले कुछ महीनों में हालात बदल गए थे। जब भी फैनी उसे देखती, सेबेस्टियन के पेट में गुड़गुड़ाहट होने लगती। उसके हाथ पसीने से भीगने लगते।
अफसोस की बात है कि फैनी को निको में कोई आकर्षण नहीं था। उम्र में छोटी होने के कारण वह स्कूल में निको की ही कक्षा में पढ़ती थी, जहाँ उसकी सीट निको के ठीक पीछे थी। अपने बारहवें जन्मदिन के अगले दिन, उसने अपने पिता द्वारा उपहार में दी गई नई पोशाक पहनी थी, और निको, जो हमेशा ईमानदार था, ने मुस्कुराते हुए उससे कहा, "आज तुम बहुत सुंदर लग रही हो, फैनी।"
उस पल से ही उसका दिल उस पर आ गया था।
मैंने कहा कि मैंने देख लिया है।
खैर, परिचय पूरा करने के लिए, आइए उस ट्रेन की ओर लौटें, जो 1943 की गर्मियों

में सैलानिका से मध्य यूरोप की ओर तेज़ी से बढ़ रही थी। आज बहुत से लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं कि नाज़ियों ने महाद्वीप पर कब्ज़ा करने के अपने प्रयासों में ग्रीस पर आक्रमण किया और उस गर्म देश को अपना घोषित कर दिया। या यह कि युद्ध से पहले सैलानिका यूरोप का एकमात्र ऐसा शहर था जहाँ यहूदी आबादी बहुसंख्यक थी —जिसने इसे नाज़ियों और उनके शुट्ज़स्टाफ़ेल, या एसएस, सैनिकों के लिए एक आसान निशाना बना दिया। उन्होंने वहाँ भी वही किया जो उन्होंने पोलैंड, हंगरी, फ्रांस और अन्य जगहों पर किया: यहूदी नागरिकों को इकट्ठा किया और उन्हें मौत के घाट उतार दिया।

थेसालोनिकी से चलने वाली उस ट्रेन का अंतिम गंतव्य एक मृत्यु शिविर था, जिसे ऑशविट्ज़-बिरकेनौ कहा जाता था। उस विशालकाय व्यक्ति की बात सही थी। हालांकि इससे उसे कोई लाभ नहीं हुआ।

“रुको!” जर्मन अधिकारी ने यात्रियों के बीच से रास्ता बनाते हुए खिड़की तक पहुँचते हुए दोहराया। वह कद में छोटा और होंठ मोटे किए हुए था, उसका चेहरा इतना कसा हुआ था मानो उसकी उभरी हुई ठुड्डी या फूली हुई गाल की हड्डियों को नरम करने के लिए कोई अतिरिक्त त्वचा न हो। उसने फर्श पर लगी जाली की ओर अपनी बंदूक लहराई।

“यह किसने किया?” उसने पूछा।

सबने सिर झुका रखे थे। कोई नहीं बोला। जर्मन ने जाली उठाई और उसके नुकीले किनारों को गौर से देखा, फिर दाढ़ी वाले आदमी की ओर देखा, वही आदमी जिसने फैनी से कहा था कि "अच्छी इंसान बनो" और "दुनिया को बताओ कि यहाँ क्या हुआ था।"

“क्या यह आप थे, महोदय?” जर्मन ने फुसफुसाते हुए कहा।

दाढ़ी वाले आदमी के कुछ कहने से पहले ही, जर्मन ने जाली उसके चेहरे पर दे मारी, जिससे उसकी नाक और गालों की त्वचा छिल गई। दाढ़ी वाला आदमी दर्द से चीख उठा।

मैं फिर से पूछता हूँ। क्या यह तुम थे?

“उसने ऐसा नहीं किया!” एक महिला चीख पड़ी।

जर्मन महिला ने उसकी निगाहों का पीछा करते हुए खिड़की के छेद के पास चुपचाप खड़े एक विशालकाय व्यक्ति को देखा।

“धन्यवाद,” जर्मन ने कहा।
उसने अपनी पिस्तौल उठाई और उस विशालकाय व्यक्ति के सिर में गोली मार दी। जैसे ही वह विशालकाय व्यक्ति गिरा, खून ट्रेन की दीवार पर फैल गया। गोली की गूंज से यात्री अपनी जगह पर जम गए। सच्चाई यह थी (और मुझे पता होना चाहिए था) कि उस डिब्बे में इतने लोग थे कि जर्मन अधिकारी को काबू में करके उसे मार गिराया जा सकता था। लेकिन उस क्षण वे मुझे नहीं देख पा रहे थे। वे केवल वही देख पा रहे थे जो जर्मन उन्हें दिखाना चाहता था। कि उनका भाग्य उन्हीं का नहीं, बल्कि उसी का था।
“क्या तुम इस खिड़की से बाहर जाना चाहते हो?” उसने कहा। “बहुत अच्छा। मैं तुममें से एक को जाने दूंगा। कौन होगा वो?”
उसने अपना सिर दाएं-बाएं घुमाया और अपने सामने मौजूद थके-हारे चेहरों पर गौर किया। अंत में उसकी नज़र अपने बच्चे को गोद में लिए एक युवती पर रुक गई।
“तुम जाओ।”
महिला की आंखें इधर-उधर घूमने लगीं। वह धीरे-धीरे खुले स्थान की ओर बढ़ने लगी।
“रुको। पहले मुझे अपना बच्चा दे दो।”
महिला एकदम स्तब्ध रह गई। उसने शिशु को और करीब खींच लिया।
"क्या तुमने सुना मैंने क्या कहा?"
उसने अपनी बंदूक उसकी नाक पर तान दी और अपने दूसरे हाथ से बच्चे को पकड़ लिया।
अब तुम जा सकते हो। जल्दी करो। खिड़की से बाहर निकलो।
“नहीं, नहीं, कृपया, कृपया,” माँ हकलाते हुए बोली। “मैं नहीं जाना चाहती, मैं नहीं जाना चाहती…”
“मैं तुम्हें जाने का मौका दे रहा हूँ। क्या इसीलिए तुमने मेरी खिड़की की जाली तोड़ दी?”
"प्लीज, नहीं, प्लीज, प्लीज, मेरे बच्चे, मेरे बच्चे।"
महिला अपने साथी कैदियों की गोद में गिर पड़ी। अधिकारी ने अपना सिर हिलाया।
"तुम यहूदियों को क्या हो गया है? तुम कहते हो कि तुम्हें कुछ चाहिए, फिर नहीं चाहिए।"
उसने आह भरी। “ठीक है। मैंने कहा था कि तुममें से एक जा सकता है। मुझे अपना

वादा निभाना ही होगा।”
वह खिड़की के पास गया और तेज़ी से हाथ घुमाकर बच्चे को खिड़की से अंदर फेंक दिया। माँ चीखने लगी और कैदी काँपने लगे, तभी केवल सेबेस्टियन ने ही अधिकारी से नज़रें मिलाईं, और वह भी इतनी देर के लिए कि उसे मुस्कुराते हुए देख सके।
उनका नाम उडो ग्राफ था।
वह इस कहानी का चौथा पात्र है।

एक दृष्टांत

जब ईश्वर मनुष्य की रचना करने वाले थे, तब उन्होंने सभी श्रेष्ठ स्वर्गदूतों को इकट्ठा किया ताकि वे इस विचार की खूबियों पर चर्चा कर सकें। क्या ऐसा होना चाहिए? हाँ या ना?
दया के दूत ने कहा, "हाँ, मनुष्य को बनाया जाए, क्योंकि वह दयालु कर्म करेगा।"
धर्म के दूत ने कहा, “हाँ, मनुष्य की रचना की जाए, क्योंकि वह धर्मपरायण कर्म करेगा।”
केवल सत्य के देवदूत ने असहमति जताई। “नहीं, मनुष्य की रचना न की जाए, क्योंकि वह झूठा होगा और झूठ बोलेगा।”
तो प्रभु ने क्या किया? उन्होंने कही गई सभी बातों पर विचार किया। फिर उन्होंने सत्य को स्वर्ग से निकालकर पृथ्वी की गहराइयों में फेंक दिया।
* * *
खैर, जैसा कि आपके युवा कहते हैं: इससे दुख होता है।
यह कहानी बिल्कुल सही है। वरना मैं यहाँ आपसे बात कैसे कर रहा होता?
लेकिन क्या मनुष्य के कपटपूर्ण होने की चेतावनी देकर मैंने ईश्वर को आगाह करना गलत किया था? स्पष्ट रूप से, मैंने गलत नहीं किया था। मनुष्य लगातार झूठ बोलते हैं, विशेषकर अपने रचयिता से।
फिर भी, स्वर्ग से मेरे निष्कासन के कारणों पर गरमागरम बहस जारी है। कुछ का मानना है कि मुझे जमीन के नीचे दफना दिया गया था ताकि मानव जाति के अपने सर्वोत्तम स्वरूप में उत्थान होने पर मैं पुनर्जीवित हो सकूँ। अन्य कहते हैं कि मुझे जानबूझकर छिपाया गया था, क्योंकि मेरा सद्गुण आपकी समझ से परे है।
मेरी अपनी एक थ्योरी है। मेरा मानना है कि मुझे धरती पर इसलिए फेंका गया ताकि मैं अरबों टुकड़ों में बिखर जाऊं, और हर टुकड़ा किसी न किसी इंसान के दिल में समा

जाए।
और मैं वहाँ फलता-फूलता हूँ।
या फिर मर जाओ।

तीन क्षण

लेकिन अब बस, इस बारे में और बात नहीं करते। वापस अपनी कहानी पर आते हैं। 1930 और 1940 के उथल-पुथल भरे वर्षों के दौरान हमारे चार मुख्य पात्रों का जीवन तेजी से बदल गया, जब युद्ध की आशंका बढ़ रही थी, फिर वह सुलगने लगा और फिर हर जगह फैल गया।
आइए मैं आपको तीन विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ।
तुम्हें समझ आएगा मेरा तात्पर्य क्या है।
हम 1938 में हैं।
सलोनिका की वेनिज़ेलौ स्ट्रीट पर एक उत्सवपूर्ण रात। एक चहल-पहल भरे कैफे के अंदर, एक "राज्याभिषेक समारोह" चल रहा है। यहूदी धर्म में, यह वह दिन होता है जब माता-पिता अपने अंतिम बच्चे का विवाह करते हैं। दो लंबी मेजों पर भोजन परोसा गया है - मछली, मांस, पनीर और मिर्च की थालियाँ। सिगरेट का धुआँ हवा में फैला हुआ है। संगीतकारों का एक छोटा समूह गिटार और ग्रीक बूज़ौकी बजा रहा है। नृत्य जोश से भरा और पसीने से तर है। दुल्हन का नाम बीबी है, और उसके गर्वित माता-पिता लाज़ारे और ईवा क्रिस्पिस हैं, जो निको के दादा-दादी हैं। उनका साथ इतना पुराना है कि उनके बाल एक साथ सफेद हो रहे हैं। उन्हें लकड़ी की कुर्सियों पर बिठाकर कमरे में घुमाया जाता है। ईवा गिरने के डर से अपनी कुर्सी की लीवर वाली पीठ को कसकर पकड़े रहती है। लेकिन लाज़ारे आनंद ले रहे हैं। वे अपने हाथों को "ऊपर, ऊपर, ऊपर" के इशारे में उठाते हैं।
छोटा निको सात साल का है। वह संगीत की धुन पर अपने पैर पटकता है।
“और ऊपर जाओ, नैनो!” वह चिल्लाता है। “और ऊपर जाओ!”
बाद में, एक मेज के चारों ओर, परिवार चाशनी में भीगे हुए बकलावा और अखरोट केक के टुकड़े काटता है। वे गाढ़ी कॉफी पीते हैं, सिगरेट पीते हैं और कई भाषाओं में बातचीत करते हैं, जैसे ग्रीक, हिब्रू या लाडिनो, जो उनके समुदाय में बोली जाने वाली यहूदी-स्पेनिश भाषा है। बच्चे अपनी मिठाई खा चुके हैं और उनमें से कुछ फर्श पर खेल रहे हैं।

"ओह, मैं तो बहुत थक गई हूँ," बीबी ने बैठते हुए कहा।
बीबी अपने माता-पिता की तीन संतानों में से सबसे आखिर में शादी के मंडप तक पहुंची है। नाचने से उसका शरीर पसीने से तरबतर हो गया है और वह अपने माथे से पसीना पोंछ रही है।
"तुमने अपने चेहरे पर वो चीज़ क्यों पहनी थी?" निको पूछता है।
“इसे घूंघट कहते हैं,” उसके दादाजी ने बीच में टोकते हुए कहा, “और वह इसे इसलिए पहनती थी क्योंकि उसकी माँ भी घूंघट पहनती थी, उसकी नानी भी पहनती थी, और प्राचीन काल से लेकर आज तक सभी औरतें घूंघट पहनती आई हैं। जब हम आज वही काम करते हैं जो हजारों साल पहले किया जाता था, तो क्या तुम जानते हो कि इससे हम क्या बन जाते हैं, निको?”
“बूढ़ा?” लड़के ने पूछा।
सब लोग हंसते हैं।
लाज़ार्रे कहते हैं, "जुड़ाव। परंपरा ही वह तरीका है जिससे आपको पता चलता है कि आप कौन हैं।"
“मैं जानता हूँ मैं कौन हूँ!” लड़के ने अपने अंगूठे अपनी छाती की ओर इशारा करते हुए कहा। “मैं निको हूँ!”
“तुम यहूदी हो,” उसके दादाजी कहते हैं।
और एक यूनानी।
"सबसे पहले एक यहूदी।"
बीबी अपने नए पति टेड्रोस के हाथ पर थपथपाती है।
“खुश हो?” वह पूछती है।
“खुश,” वह कहता है।
लाज़ारे ने मेज पर हाथ पटका और चौड़ी मुस्कान बिखेरी।
“अगला, एक पोता-पोती!”
“ओह पापा,” बीबी कहती है, “मुझे पहले शादी की पोशाक उतारने दीजिए।”
"आमतौर पर ऐसा ही होता है," लाज़ार्रे ने आँख मारते हुए कहा।
बीबी शरमा जाती है। लाज़ारे निको को उठाकर अपनी गोद में बिठा लेता है। वह उसके गालों को सहलाता है।
“ऐसा ही एक और कैसा रहेगा?” वह कहता है। “कितना सुंदर लड़का है।”

मेज के उस पार, सेबेस्टियन अपनी फोर्क को थपथपाते हुए देखता रहता है, चुपचाप इस तथ्य को आत्मसात करता है कि उसका भाई, न कि वह, वह व्यक्ति है जिसकी तरह उसका दादा बनना चाहता है।

बाद में उसी रात, परिवार सैरगाह पर टहल रहा था। रात की हवा गर्म थी और पानी से हल्की-हल्की हवा बह रही थी। फैनी और उसके पिता भी वहीं थे, और फैनी निको और सेबेस्टियन के बगल में धीरे-धीरे चल रही थी, बारी-बारी से पत्थरों पर ठोकर मार रही थी। निको की माँ, टान्ना, अपनी सोई हुई जुड़वां बेटियों को स्ट्रोलर में धकेल रही थी। आगे उसे शानदार व्हाइट टॉवर दिखाई दिया, जो थेरमाइक खाड़ी की ओर देख रहा था।

“कितनी अच्छी रात थी,” वह कहती है।

वे खिड़की में अखबार रखे एक बंद दुकान के पास से गुज़रे। लेव ने अखबारों की मुख्य खबरें पढ़ीं। उसने अपने पिता को कोहनी मारी।

“पापा,” वह धीमी आवाज में कहता है, “क्या आपने जर्मनी में जो हो रहा है उसके बारे में पढ़ा है?”

लाज़ार्रे कहते हैं, "वह आदमी पागल है। वे जल्द ही उससे छुटकारा पा लेंगे।"

या फिर यह फैल सकता है।

“आपका मतलब यहाँ से है? हम जर्मनी से बहुत दूर हैं। इसके अलावा, सैलानिका एक यहूदी शहर है।”

"अब उतना नहीं जितना पहले हुआ करता था।"

“लेव, तुम बहुत ज्यादा चिंता करते हो।” वह दुकान की खिड़की की ओर इशारा करते हुए कहता है, “देखो कितने सारे यहूदी अखबार हैं। देखो हमारे पास कितने सारे आराधनालय हैं। ऐसी चीजों को कोई नष्ट नहीं कर सकता।”

लेव अपने बच्चों को पत्थर को लात मारते हुए देखता है। उसे उम्मीद है कि उसके पिता सही हों। परिवार चांदनी रात में आगे बढ़ता है, उनकी बातचीत पानी पर गूंजती रहती है।

हम 1941 में हैं।

दरवाजा खुलता है। लेव धूल से सनी सिपाही की वर्दी पहने लड़खड़ाते हुए अंदर आता है। बच्चे दौड़कर उसके पैरों और कमर से लिपट जाते हैं, जैसे ही वह अकड़कर सोफे की ओर बढ़ता है। उस रात को तीन साल बीत चुके हैं, लेकिन लेव दस साल बूढ़ा लग

रहा है। उसका चेहरा दुबला-पतला और धूप से झुलसा हुआ है, उसके काले बालों में चांदी जैसे बाल बिखरे हुए हैं। उसकी कभी ताकतवर रही भुजाएँ अब पतली और दागदार हैं। उसका बायाँ हाथ फटी पट्टियों में लिपटा है, जिन पर सूखा खून जमा हुआ है।

“पिताजी को बैठने दीजिए,” तन्ना ने उनके कंधे को चूमते हुए कहा। “हे भगवान, हे भगवान, उन्हें घर वापस लाने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।”

लेव ने मानो पहाड़ चढ़कर आया हो, वैसे ही गहरी साँस ली। वह सोफे पर बैठ गया। उसने अपना चेहरा ज़ोर से मल लिया। लाज़ार्रे उसके बगल में बैठ गया। उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने अपने बेटे की जांघ पर हाथ रखा। लेव दर्द से कराह उठा।

छह महीने पहले, लेव ने अपना तंबाकू का कारोबार छोड़ दिया और इटली के खिलाफ युद्ध में शामिल हो गए, जिसने एक यूनानी क्रूजर को उड़ाने के तुरंत बाद ग्रीस पर आक्रमण कर दिया था। हालाँकि इतालवी तानाशाह मुसोलिनी जर्मनों को यह दिखाना चाहता था कि वह उनके बराबर है, लेकिन यूनानियों ने जमकर मुकाबला किया और उसके आक्रमण का प्रतिरोध किया। उनके अखबारों की सुर्खियाँ एक-एक शब्द की थीं:

"नहीं!"

नहीं, यह राष्ट्र इटालियंस या किसी और के द्वारा उत्पीड़ित नहीं होगा! ग्रीस अपने सम्मान के लिए लड़ेगा! हर जगह से पुरुषों ने स्वेच्छा से भाग लिया, जिनमें सैलानिका के कई यहूदी भी शामिल थे, हालांकि उस समुदाय के बुजुर्ग सदस्यों को संदेह था।

“यह तुम्हारी लड़ाई नहीं है,” लाज़ार्रे ने अपने बेटे से कहा।

"यह मेरा देश है," लेव ने विरोध जताया।

“आपका देश, आपकी जनता नहीं।”

"अगर मैं अपने देश के लिए नहीं लड़ूंगा, तो मेरे लोगों का क्या होगा?"

लेव ने अगले दिन अपना नाम लिखवा लिया और यहूदी पुरुषों से भरी एक ट्राम में सवार हो गया, जो सभी लड़ने के लिए बेताब थे। मैंने इतिहास में अनगिनत बार ऐसा होते देखा है, युद्ध के जोश से भरे हुए लोग। इसका अंत शायद ही कभी अच्छा होता है।

शुरुआत में यूनानी आक्रमण बेहद सफल रहा। उनके अथक प्रयासों ने इटालियन सेना को पीछे धकेल दिया। लेकिन जैसे-जैसे सर्दी बढ़ती गई और हालात बिगड़ते गए,

यूनानियों के संसाधन कम होते गए। उनके पास पर्याप्त सैनिक नहीं थे। रसद भी पर्याप्त नहीं थी। अंततः इटालियन सेना ने शक्तिशाली जर्मन सेना से मदद मांगी, और यूनानी सैनिकों के लिए यह अंत था। वे उन घोड़ों की तरह थे जो खुले मैदान में दौड़ पड़े हों और वहां शेरों से भरे मैदान को देखकर हैरान रह गए हों।

“क्या हुआ?” लाज़ार ने अपने बेटे से पूछा।

“हमारी बंदूकें, हमारे टैंक, वे बहुत पुराने थे,” लेव ने कर्कश आवाज में कहा। “हमने सब कुछ झेला। हम भूखे थे। ठंड से कांप रहे थे।”

वह ऊपर देखता है, उसकी आँखों में विनती का भाव होता है।

“पापा, अंत में हमारे पास गोलियां भी नहीं बची थीं।”

लाज़ार्रे उन अन्य लोगों के बारे में पूछता है जिन्हें वे जानते थे, यहूदी पुरुष जिन्होंने लेव की तरह लड़ने के लिए अपना नाम दर्ज कराया था। लेव हर नाम पर अपना सिर हिलाता है। तन्ना अपना हाथ अपने मुंह पर रख लेती है।

सेबेस्टियन कमरे के दूसरी तरफ से अपने पिता को देखता है। उन्हें इतना कमजोर देखकर निको कुछ बोल नहीं पाता। लेकिन निको पर इसका कोई असर नहीं होता। वह अपने पिता के पास जाता है और उन्हें घर वापसी पर स्वागत के लिए बनाई गई कुछ चित्रकारी देता है। लेव उन्हें लेता है और जबरदस्ती मुस्कुराता है।

"जब मैं चली गई थी, तब क्या तुम अच्छे बच्चे बनकर रहे, निको?"

“हमेशा नहीं,” निको कहता है। “कभी-कभी मैं माँ की बात नहीं सुनता था। मैं अपना सारा खाना खत्म नहीं करता था। और टीचर कहती हैं कि मैं बहुत ज्यादा बोलता हूँ।”

लेव थके हुए अंदाज़ में सिर हिलाता है। "बस इसी तरह ईमानदार बने रहो। सच्चाई ज़रूरी है।"

"भगवान हमेशा देख रहे होते हैं," निको कहते हैं।

"यह सही है।"

“क्या हमने युद्ध जीत लिया, पापा?”

लेव अपनी ही सलाह को तोड़ता है और झूठ बोलता है।

"बिल्कुल, निको।"

“मैंने तुमसे कहा था, सेबेस्टियन,” निको अपने भाई की ओर मुस्कुराते हुए कहता है।

तान्ना अपने बेटे को अपने साथ ले जाती है। "चलो, निको, सोने का समय हो गया है।" वह अपने पति की ओर देखती है, और अपने आँसुओं को रोकने की कोशिश

करती है।
लाज़ार खिड़की तक उठता है और पर्दे हटाता है।
“पापा,” लेव ने लगभग सुनाई न देने वाली आवाज़ में कहा, “ऐसा होने वाला है। जर्मन आ रहे हैं।”
लाज़ार्रे पर्दे बंद कर देता है।
“वे नहीं आ रहे हैं,” वह कहता है। “वे यहीं हैं।”
हम 1942 में हैं।
सलोनिका के मुख्य सार्वजनिक सभा स्थल लिबर्टी स्क्वायर में एक गर्म शनिवार की सुबह। लेव के युद्ध से लौटने को एक साल से अधिक समय हो चुका है। उसके तुरंत बाद, जर्मन सेना ने टैंकों, मोटरसाइकिलों, सैनिकों की कतारों और एक संगीत बैंड के साथ शहर पर आक्रमण कर दिया। तब से, भोजन की कमी हो गई है। धार्मिक सेवाएं बंद हैं। नाज़ी सैनिक सड़कों पर घूमते हैं और यहूदी परिवारों का जीवन बुरी तरह से प्रतिबंधित है। दुकानों और रेस्तरां की खिड़कियों पर बोर्ड लगे हैं: यहूदियों का प्रवेश वर्जित। हर कोई डरा हुआ है।
आज जुलाई की धूप चिलचिलाती है। आसमान में आसमान में एक भी बादल नहीं है। चौक का नज़ारा विचित्र, लगभग अवास्तविक सा है। यह यहूदी पुरुषों की कतारों से खचाखच भरा है, कंधे से कंधा मिलाकर, नौ हज़ार की संख्या में, एक-दूसरे से कुछ इंच की दूरी पर खड़े हैं। उन्हें नाज़ी सेनाओं ने इकट्ठा होने का आदेश दिया था, जिन्होंने अब शहर पर नियंत्रण कर लिया है।
“ऊपर, नीचे! ऊपर, नीचे!” अधिकारी चिल्लाते हैं। यहूदी पुरुष अपने हाथ फैलाकर बैठते हैं, फिर उठते हैं, फिर बैठते हैं, फिर उठते हैं। यह कसरत जैसा लगता है, लेकिन इसका कोई अंत नहीं है; अगर कोई आदमी रुकता है, आराम करता है या थककर गिर जाता है, तो उसे पीटा जाता है, लात मारी जाती है और कुत्तों से हमला करवाया जाता है।
लेव भी यहाँ पकड़े गए लोगों में से एक है। वह हिम्मत नहीं हारता। पसीने से तरबतर होकर वह ऊपर-नीचे होता रहता है। उसकी नज़र चौक की ओर खुलती बालकनी पर पड़ती है। वहाँ कुछ जर्मन युवतियाँ तस्वीरें खींच रही हैं और हँस रही हैं। वे कैसे हँस सकती हैं? वह नज़रें हटा लेता है। उसे युद्ध की याद आती है। उसे सर्दियों की कड़ाके की ठंड याद आती है। वह खुद से कहता है, वह इसे सह सकता है। काश, अभी उसे

ठंड मिल जाती!

“ऊपर, नीचे! ऊपर, नीचे!”

लेव एक बूढ़े आदमी को घुटनों के बल गिरते हुए देखता है। एक जर्मन अधिकारी उसकी दाढ़ी खींचता है, चाकू निकालता है और उसके चेहरे से बाल काट देता है। आदमी चीखता है। लेव मुंह फेर लेता है। एक और आदमी जो गिर गया है, उसे पेट में लात मारी जाती है, फिर सड़क पर घसीटा जाता है। उस पर पानी की बाल्टी उड़ेल दी जाती है और उसे वहीं दर्द से कराहते हुए छोड़ दिया जाता है। आसपास खड़े लोग कुछ नहीं करते।

“ऊपर, नीचे! ऊपर, नीचे!”

इसे "ब्लैक सब्बाथ" के नाम से जाना जाने लगा, जिसे जर्मनों ने जानबूझकर यहूदियों के पवित्र दिन का उल्लंघन करने के लिए चुना था, ताकि जो पुरुष अन्यथा आराधनालय में प्रार्थना कर रहे होते, उन्हें बिना किसी स्पष्ट उद्देश्य के सार्वजनिक रूप से अपमानित किया जा सके।

लेकिन क्रूरता का भी कोई न कोई मकसद होता है। जर्मन मुझे बदलना चाहते थे। वे सैलानिका के यहूदियों को सत्य के एक नए रूप को स्वीकार करवाना चाहते थे, एक ऐसा रूप जिसमें न स्वतंत्रता थी, न आस्था और न आशा। केवल नाज़ी शासन।

लेव खुद को समझाता है कि वह हार नहीं मानेगा। उसकी मांसपेशियां इतनी थक चुकी हैं कि कांप रही हैं। उसे जी मिचला रहा है, लेकिन उल्टी करने की हिम्मत नहीं हो रही। वह अपने बच्चों, बेटियों एलिसाबेथ और अन्ना, और बेटों सेबेस्टियन और निको के बारे में सोचता है। वे ही उसे हिम्मत देते हैं।

“ऊपर, नीचे! ऊपर, नीचे!”

लेव को नहीं पता कि इस समय निको घटनास्थल की ओर आ रहा है। उसे मोहल्ले में बेफिक्र घूमने की आदत है, हालांकि उसकी माँ ने उसे ऐसा करने से मना किया था। लेकिन फिर भी वह चुपके से निकल जाता है और कई ब्लॉक दूर से सुनाई देने वाली आवाज़ का पीछा करता है।

लिबर्टी स्क्वायर के किनारे पहुँचते ही वह भीड़ के ऊपर से देखने के लिए अपने पंजों पर खड़ा हो जाता है। एक जर्मन गार्ड उसे देख लेता है।

“इधर आओ, लड़के। क्या तुम इसे और अच्छे से देखना चाहते हो?”

निको मुस्कुराता है और गार्ड उसे ऊपर उठा लेता है।

"देखो उन गंदे यहूदियों का क्या हाल होता है?"
निको असमंजस में है। वह जानता है कि वह यहूदी है। निको के सुनहरे बालों और निडरता को देखकर गार्ड ने कुछ और ही अनुमान लगाया था।
“वे क्या कर रहे हैं?” निको पूछता है।
“हम उन्हें जो भी करने को कहेंगे, वे वही करेंगे।” गार्ड मुस्कुराता है। “चिंता मत करो। वे सब जल्द ही चले जाएंगे।”
निको पूछना चाहता है कि वे कहाँ जा रहे हैं, लेकिन गार्ड अचानक चौकन्ना हो जाता है। एक वाहन आ रहा है जिसमें यात्री सीट पर एक छोटा अधिकारी बैठा है। यह उडो ग्राफ है। वह इस ऑपरेशन का प्रभारी है।
गार्ड ने सलाम करते हुए अपना हाथ उठाया। उडो ने सिर हिलाया। फिर, उनकी पहली लेकिन शायद आखिरी मुलाकात में, उडो की नज़र निको पर पड़ी। उसने आँख मारी। निको ने भी आँख मारने की कोशिश की।
वाहन आगे बढ़ता है, थके-हारे पुरुषों की कतारों के पास से गुजरता है, चिलचिलाती धूप में ऊपर-नीचे होता हुआ।

झूठ कैसे पनपता है

कभी-कभी मैं लोगों को खाते हुए देखता हूँ। मुझे यह दिलचस्प लगता है। भोजन ही वह पदार्थ है जो हमें जीवित रखता है, इसलिए मुझे लगता है कि आप वही भोजन चुनेंगे जो आपके लिए सबसे अधिक पौष्टिक हो। लेकिन इसके बजाय, आप वही चुनते हैं जो आपके स्वाद को भाता है। मैं आपको बुफे रेस्टोरेंट में देखता हूँ, आप थोड़ा यह, थोड़ा वह लेते हैं और बाकी को अनदेखा कर देते हैं, भले ही आप जानते हों कि वह अधिक स्वास्थ्यवर्धक है।
मैं यह बात समझता हूँ, क्योंकि तुम मेरे साथ यही करते हो। तुम यहाँ से सत्य का एक छोटा सा अंश चुनते हो, वहाँ से एक छोटा सा अंश। तुम उन हिस्सों को नज़रअंदाज़ कर देते हो जो तुम्हें नापसंद हैं, और जल्द ही तुम्हारी थाली भर जाती है। लेकिन जिस प्रकार उचित भोजन की अनदेखी अंततः शरीर को सड़ा देती है, उसी प्रकार सत्य को चुन-चुनकर लेना अंततः आत्मा को सड़ा देगा।
सन् 1889 में एक बड़े ऑस्ट्रियाई परिवार में जन्मे एक लड़के की कहानी लीजिए। उसके पिता उसे लगातार पीटते थे, शिक्षक उसे डांटते थे, और उसकी माँ, जो एकमात्र ऐसी व्यक्ति थी जो उसकी परवाह करती थी, अठारह वर्ष की उम्र में ही चल

बसी। वह उदास और अंतर्मुखी हो गया। वह भटकता रहा, खुद को चित्रकार समझता रहा, लेकिन कला जगत में उसे कोई स्वीकृति नहीं मिली। समय के साथ, वह एक अकेला व्यक्ति बन गया। वह खुद को "भेड़िया" कहने लगा। उसमें दूसरों को दोष देने की प्रवृत्ति विकसित हो गई। यह उनकी गलती है, मेरी नहीं। आत्म-धोखे का एक सिलसिला शुरू हो गया।

जब युद्ध का आह्वान होता है, तो भेड़िया स्वेच्छा से आगे आता है। उसे युद्ध की स्पष्टता और उसके चुने हुए सत्य पसंद हैं, क्योंकि युद्ध में सभी सत्य चुने हुए होते हैं। युद्ध का एकमात्र वास्तविक सत्य यह है कि किसी को भी इसमें शामिल नहीं होना चाहिए।

संघर्ष का अंत बुरा होता है। जब उसका देश आत्मसमर्पण कर देता है, तो वुल्फ अस्पताल में घायल पड़ा रहता है, सरसों गैस और अपमान से झुलसा हुआ। वह इस हार को स्वीकार नहीं कर पाता। उसके लिए यह कमजोरी का प्रतीक है, एक ऐसी चीज जिससे वह घृणा करता है, मुख्यतः इसलिए क्योंकि उसके भीतर बहुत कमजोरी है। जब उसके देश के नेता शांति संधि पर सहमत होते हैं, तो वह उन्हें एक दिन उखाड़ फेंकने की कसम खाता है।

वह दिन जल्द ही आ जाएगा।

वह एक राजनीतिक दल में शामिल होता है। वह दल के शीर्ष पर पहुंच जाता है। वह छत पर गोली चलाता है और घोषणा करता है, "क्रांति शुरू हो गई है!"

वह झूठ के सहारे सत्ता पर काबिज होता है। वह अपने देश की समस्याओं के लिए यहूदियों को दोषी ठहराकर शुरुआत करता है, और जितना अधिक वह उन पर उंगली उठाता है, उतना ही वह ऊपर उठता जाता है। वे ही समस्या हैं! वे ही हमारी बदनामी का कारण हैं! वह यहूदियों पर गुप्त शक्तियों, छिपे हुए प्रभाव का इस्तेमाल करने, इतना बड़ा झूठ गढ़ने का आरोप लगाता है कि कोई उस पर सवाल न उठाए, और यह आरोप खुद उस पर भी आश्चर्यजनक रूप से लागू होता है। वह घोषणा करता है कि यहूदी "एक बीमारी" हैं, जिसे जर्मन स्वास्थ्य को बहाल करने के लिए जड़ से उखाड़ फेंकना होगा।

ऐसे झूठ वुल्फ को ताकत, अपार शक्ति दिलाते हैं, और लोग उसके भाषणों पर जयकार करते हैं। वह चांसलर, फिर राष्ट्रपति और फिर सर्वोच्च नेता बनता है। वह अपने दुश्मनों को मौत के घाट उतार देता है। हर नई सफलता के साथ उसकी हीनता कम होती जाती है। वह नफरत से भरे झूठों का ढेर लगाता है, फिर उन्हें अपनी

सेनाओं को परोसता है। सेनाएँ बढ़ती जाती हैं। वे सीमा पार उसका पीछा करते हैं, "जर्मनी सर्वोपरि" के मोहक झंडे तले अपने पड़ोसियों को कुचलने की उम्मीद में।

वे भेड़िये का आदेश क्यों मानते हैं? भीतर से, सभी मनुष्य जानते हैं कि दूसरों के प्रति क्रूरता करना—उन्हें यातना देना, उन्हें मारना—न तो अच्छा है और न ही न्यायसंगत। वे इसे कैसे बर्दाश्त कर सकते हैं?

क्योंकि वे खुद को एक कहानी सुनाते हैं। वे मेरी एक अलग छवि गढ़ लेते हैं और उसे कुल्हाड़ी की तरह इस्तेमाल करते हैं। आपको क्या लगता है मैंने उन दूसरे फरिश्तों से बहस क्यों की? नेकी? दया? मैंने उन्हें चेतावनी देने की कोशिश की थी। जो लोग मेरा अपमान करते हैं, वे बाकी सभी सद्गुणों को कुचल देंगे और इस प्रक्रिया में खुद को श्रेष्ठ साबित कर लेंगे।

भेड़िये के छल और भी शक्तिशाली होते जा रहे हैं। वह अपने बुरे इरादों को छिपाने के लिए शब्दों का जाल बुनता है। यह एक पुराना हथकंडा है। अगर आप झूठ बोलकर बच निकलना चाहते हैं, तो पहले भाषा बदल दीजिए।

इसलिए वह अपने आप को कानूनी अधिकार देने के लिए "जनता की पीड़ा दूर करने वाला कानून" वाक्यांश का प्रयोग करता है। वह भूमि अधिग्रहण को उचित ठहराने के लिए "रहने की जगह" वाक्यांश का उपयोग करता है। वह हत्या के लिए "भेजा" या "हटा दिया" जैसे नरम शब्दों का प्रयोग करता है। और वह "अंतिम समाधान" वाक्यांश का प्रयोग अपनी अंतिम योजना के लिए एक व्यंजना के रूप में करता है: महाद्वीप के नक्शे से यहूदियों का सफाया करना।

उसे असंतुष्ट, अलग-थलग पड़े, क्रोधित और महत्वाकांक्षी लोगों के बीच वफादार अनुयायी मिलते हैं; उन वयस्कों में जो खुशी-खुशी अपने पड़ोसियों पर हमला करते हैं और उन युवाओं में जो बिना किसी डर के दूसरों को जमीन पर गिराने का आनंद लेते हैं।

वह उन्हें उडो ग्राफ जैसी कड़वी, खोई हुई आत्माओं में पाता है, जिसकी माँ ने उसके पिता को एक यहूदी व्यक्ति के लिए छोड़ दिया था, और जिसके पिता ने बाद में एक ब्लेड और बाथटब से आत्महत्या कर ली थी।

जर्मन विश्वविद्यालय में विज्ञान की पढ़ाई करने वाला उडो, वुल्फ की तरह अकेला और बिना दोस्तों वाला बदमाश बन जाता है। जब वह चौबीस साल का होता है, तो वह एक सार्वजनिक चौक पर वुल्फ को बोलते हुए सुनता है। वह उसे एक नए साम्राज्य,

एक हजार साल तक चलने वाले जर्मन प्रभुत्व के साम्राज्य के बारे में बात करते हुए सुनता है। उसे ऐसा लगता है मानो उसे व्यक्तिगत रूप से आमंत्रित किया गया हो: इस व्यक्ति का अनुसरण करो और अपने दयनीय जीवन के दर्द को कम करो।
इसलिए उडो वुल्फ की सेना में शामिल हो जाता है। वह इस उद्देश्य के प्रति पूरी तरह समर्पित हो जाता है। वह पदोन्नति पाता है और समय के साथ नाज़ी एसएस में मध्य स्तर के कमांडर, हॉप्टस्टर्मफ्यूहरर के पद तक पहुँच जाता है।
फिर, 1942 की गर्मियों में, वुल्फ ने उडो को पदोन्नत किया और उसे एक भयावह योजना को अंजाम देने के लिए सैलानिका भेजा, जिसका उद्देश्य शहर से सभी यहूदी नागरिकों को खत्म करना था। और यहीं से हम उस गर्म जुलाई की सुबह लिबर्टी स्क्वायर पहुंचते हैं। यहीं पर उडो की पहली मुलाकात निको क्रिस्पिस से होती है और वह उसे आँख मारता है, मानो सब कुछ ठीक हो जाएगा।
ऐसा बिल्कुल नहीं होगा। झूठ का अंत हमेशा अंधकार में ही होता है। लेकिन यह कहानी अभी खत्म नहीं हुई है।

एक सच्ची और प्रेमपूर्ण दयालुता

1942 की शरद ऋतु में एक रविवार को, लाज़ार्रे निको, फैनी और सेबेस्टियन को उस स्थान पर ले जाता है जहाँ उसके माता-पिता को दफनाया गया था, जो सैलानिका के पूर्वी भाग में शहर के द्वार के ठीक बाहर स्थित था। उस समय, यह दुनिया का सबसे बड़ा यहूदी कब्रिस्तान था, और कुछ कब्रें सैकड़ों साल पुरानी थीं।
“नैनो,” निको ने पहाड़ी पर चढ़ते हुए पूछा, “यहां दफनाए गए सबसे बुजुर्ग व्यक्ति कौन हैं?”
"ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं जिसे मैं जानता था," लाज़ार्रे कहते हैं।
"यहां 1600 के दशक की कब्रें हैं," सेबेस्टियन कहते हैं।
“सचमुच?” फैनी कहती है।
"यह सच है, मैंने इसे पढ़ा है," सेबेस्टियन कहते हैं।
"मैं कहीं भी दफनाया जाना नहीं चाहता," निको कहता है।
"हम तुम्हें समुद्र में फेंक सकते हैं," सेबेस्टियन कहता है।
“यह अच्छा नहीं है,” फैनी कहती है।
निको उसे देखकर मुस्कुराता है।
“मैं तो बस मजाक कर रहा था,” सेबेस्टियन कहता है। उसे शर्म से चेहरा लाल होने

का एहसास होता है।
वे ईंट और पत्थर से बने बड़े-बड़े स्मारक चिह्नों के बीच से गुज़रते हैं, जो ज़मीन पर दूर-दूर तक फैले हुए हैं। अंत में, उन्हें लाज़ार्रे के माता-पिता की कब्रें मिल जाती हैं। लाज़ार्रे गहरी साँस लेता है और अपनी आँखें बंद कर लेता है। वह थोड़ा झुकता है और प्रार्थना करने लगता है, अपनी दाढ़ी सहलाता है और मन ही मन हिब्रू भाषा में कुछ बुदबुदाता है।
निको देखता रहता है। फिर वह भी अपनी आंखें बंद कर लेता है और आगे-पीछे झूलने लगता है।
"उसे तो शब्द भी नहीं पता," सेबेस्टियन फुसफुसाते हुए फैनी से कहता है।
"तो फिर वह ऐसा क्यों कर रहा है?"
मुझे नहीं पता। वो ऐसे ही हैं।
जब वह काम खत्म कर लेता है, तो लाज़ार्रे घुटनों के बल बैठ जाता है और अपनी जेब से एक कपड़ा निकालता है। उसके पास पानी की एक छोटी बोतल होती है, और वह कपड़े को गीला करके समाधि-पत्थर को पोंछने लगता है।
“नैनो, तुम ऐसा क्यों कर रही हो?” निको ने पूछा।
"आपके परदादा और परदादी के सम्मान में।"
"क्या मैं मदद कर सकता हूँ?"
लाज़ार्रे कपड़े का एक टुकड़ा फाड़ता है। निको उसे लेकर पत्थर के सामने बैठ जाता है। फैनी उसके बगल में बैठ जाती है और सेबेस्टियन भी। जल्द ही चारों मिलकर मार्करों से धूल साफ करने लगते हैं।
“इसे,” लाज़ारे ने धीरे से कहा, “हम चेसेड शेल एमेट कहते हैं। सच्ची और प्रेमपूर्ण दया। आप जानते हैं कि सच्ची और प्रेमपूर्ण दया क्या होती है? है ना? बच्चों? मेरी तरफ देखो।”
वे पोंछना बंद कर देते हैं।
“जब आप किसी के लिए ऐसा कुछ करते हैं जिसका कभी बदला नहीं चुकाया जा सकता। जैसे मृतकों की कब्रों की सफाई करना। यही सच्ची और प्रेमपूर्ण दयालुता है।”
वह अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहता है, "जब आपको बदले में कुछ मिलता है तो अच्छा व्यवहार करना आसान होता है। लेकिन जब आपके अच्छे काम के बारे में

आपके अलावा कोई नहीं जानता, तो यह मुश्किल हो जाता है।"
बच्चे फिर से सफाई करने लगते हैं। जब वे दोनों कब्रों को साफ कर लेते हैं, तो निको उठकर दूसरी कब्र की ओर चल पड़ता है।
"चलो," वह पीछे मुड़कर कहता है।
“कहाँ?” सेबेस्टियन पूछता है।
हमें भी उनका काम करना चाहिए।
सेबेस्टियन उठता है। फैनी भी उठती है। जल्द ही तीनों पानी में कपड़े भिगोकर एक-एक करके अजनबियों की कब्रों की सतह को पोंछने लगते हैं। लाज़ार्रे अपनी आँखें बंद करके कृतज्ञता की प्रार्थना बुदबुदाता है।
बाद में वे पतझड़ की धूप में घर लौटते हैं। निको अपने दादाजी का हाथ पकड़े हुए है। फैनी एक मधुर गीत गा रही है। सेबेस्टियन भी गुनगुना रहा है। यह आखिरी बार होगा जब वे उस कब्रिस्तान में जाएंगे। तीन महीने बाद, वह पूरी जगह नष्ट हो जाएगी।

सबसे पहले, वे आपका कारोबार छीन लेते हैं...

निको को अपने पिता की सिगरेट की दुकान की महक बहुत पसंद थी, जो परिवार के तंबाकू निर्यात व्यवसाय के दफ्तरों के ठीक नीचे भूतल पर थी। निको स्कूल के बाद दौड़कर वहाँ जाता, दरवाजा खोलता और उस मीठी, लकड़ी जैसी खुशबू में डूब जाता। जीवन भर वह उस खुशबू को अपने पिता से जोड़कर देखता रहा।
जनवरी 1943 में एक दिन, लेव एक शेल्फ पर सिगार का नया डिब्बा रख रहा था, तभी दो आदमी दुकान में दाखिल हुए। निको कोने में एक नोटपैड पर कार्टून बना रहा था। सेबेस्टियन कैश रजिस्टर के पीछे झाड़ू लगा रहा था।
“शुभ दोपहर,” लेव ने कहा।
दोनों आदमी यूनानी थे, एक लंबा और दूसरा छोटा और मोटा। लेव ने लंबे वाले को एक नियमित ग्राहक के रूप में पहचाना जो अपनी पाइप के लिए महंगा तंबाकू खरीदता था। दोनों आगंतुक एक-दूसरे को हैरानी से देखने लगे।
“क्या कोई समस्या है?” लेव ने पूछा।
“माफ़ कीजिए,” लंबे आदमी ने कहा, “बस... आपको यहाँ देखकर हमें आश्चर्य हुआ।”
आपको आश्चर्य क्यों होगा? यह मेरी दुकान है।
उस छोटे कद के आदमी ने कागज का एक टुकड़ा ऊपर उठाया हुआ था।

लेकिन नहीं, आप देखिए," उन्होंने कहा, "ऐसा नहीं है।"

लेव आगे बढ़ा और उस कागज को ध्यान से देखने लगा। जैसे ही उसने शब्द पढ़े, उसे एक अजीब सी ठंडक महसूस हुई।

यहूदी संपत्ति के निपटान के लिए सेवा

हम आपको सूचित करते हैं कि वोट्सी स्ट्रीट पर स्थित ज्यू लेव क्रिस्पिस के नंबर 10 पर स्थित दुकान आपको सौंप दी गई है। आपसे अनुरोध है कि उपरोक्त दुकान प्राप्त करने के लिए आज ही उपर्युक्त सेवा में आएं।

लेव ने उन शब्दों को दोबारा पढ़ा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि किस बात से उसे ज़्यादा तकलीफ़ हो रही है—उसकी दुकान पर कब्ज़ा होने से, या इस बात से कि विदेशी ताकतें उसे "यहूदी लेव क्रिस्पिस" कहकर पुकार रही थीं।

"हमें लगा कि आप चले गए हैं," उस आदमी ने कहा।

लेव ने तेवर चढ़ाते हुए कहा, "मैं अपनी ही दुकान क्यों छोड़ूंगा?"

"पिताजी?" निको ने कहा।

लेव उन आदमियों की ओर बढ़ा। "देखिए, मैंने यह दुकान खोली है। मैंने ऊपर की मंजिल पर अपना कारोबार खड़ा किया है। यहाँ जो कुछ भी आप देख रहे हैं, तंबाकू, सिगार, पाइप, सब कुछ, मैंने खुद खरीदा है।"

"शायद हमें कल वापस आना चाहिए," उस छोटे कद के आदमी ने हकलाते हुए कहा। उनके साथी ने गला साफ किया। "लेकिन जैसा कि आप देख सकते हैं, श्री क्रिस्पिस, यह दुकान हमें दे दी गई है। यह स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है—"

"मुझे परवाह नहीं कि इसमें क्या लिखा है!" लेव चिल्लाया और कागज़ छीन लिया। "क्या तुम्हें ज़रा भी शर्म नहीं है? यह मेरी दुकान है!"

निको का मुंह खुला रह गया। सेबेस्टियन ने अपनी झाड़ू कसकर पकड़ ली। तभी एक गाड़ी आकर रुकी और दो नाज़ी अधिकारी बाहर निकले। लेव ने अपने हाथों में पकड़े कागज़ को देखा और उसे अजनबियों की ओर वापस धकेल दिया।

दस मिनट बाद, लेव, निको और सेबेस्टियन को दरवाजे तक ले जाया गया और पीछे से धक्का देकर बाहर निकाल दिया गया। यह आखिरी बार था जब उन्होंने उस तंबाकू की दुकान में कदम रखा था। उन्हें अपने कोट भी ले जाने की अनुमति नहीं थी।

...फिर वे आपकी पूजा छीन लेते हैं

अगले शनिवार को, लाज़ार्रे, निको और सेबेस्टियन सुबह की प्रार्थना के लिए आराधनालय जा रहे थे। लाज़ार्रे हर शनिवार को लड़कों को आराधनालय ले जाने पर ज़ोर देता था, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे सभी रीति-रिवाजों का पालन करें और

हिब्रू में लिखे ग्रंथों को पढ़ना सीखें।
निको ने अपनी आधी बाजू की कमीज़ के ऊपर एक बनियान पहनी हुई थी। सेबेस्टियन ने जैकेट, टाई, सस्पेंडर्स पहने थे और क्योंकि वह बार मिट्ज्वा की उम्र पार कर चुका था, इसलिए उसने अपने दादाजी की तरह अपना टैलीट बैग खुद उठाया हुआ था। धूप खिली हुई थी और दोनों लड़के प्रतिस्पर्धा करते हुए, एक फुटपाथ से दूसरे फुटपाथ पर कूदते हुए चल रहे थे, और कोशिश कर रहे थे कि उनके बीच की दरारों पर न गिरें।
"तुम चूक गए," सेबेस्टियन ने कहा।
“तुमने भी,” निको ने जवाब दिया।
नहीं, मैंने नहीं किया।
निको ने ऊपर देखा।
अरे, ये रही फैनी!
सेबेस्टियन ने सड़क के उस पार देखा तो फैनी और उसके पिता भी आराधनालय जा रहे थे। जब फैनी ने उन्हें हाथ हिलाकर अभिवादन किया, तो निको ने भी हाथ हिलाकर अभिवादन किया, लेकिन सेबेस्टियन ने नीचे देखा।
"तुम उसे चूमना चाहते हो," निको ने फुसफुसाते हुए कहा।
मैं ऐसा नहीं करता/करती।
"हाँ आप कीजिए।"
मैं ऐसा नहीं करता!
“कौन किसे चूम रहा है?” लाज़ारे ने कहा।
“निको झूठ बोल रहा है,” सेबेस्टियन ने कहा।
"वह झूठ नहीं बोलता," लाज़ार्रे ने कहा।
“मैं झूठ नहीं बोल रहा। तुम उसे चूमना चाहते हो। तुमने मुझे बताया था।”
“तुम्हें कुछ नहीं बोलना चाहिए!” सेबेस्टियन ने कहा। उसका चेहरा लाल हो गया था।
निको ने लाज़ार्रे की ओर देखा, जिसने उंगली हिलाई।
"अगर उसने तुम्हें कोई राज़ बताया है, तो तुम्हें उसे गुप्त रखना चाहिए।"
मुझे माफ करना, नैनो।
अपने भाई से माफी मांग लो।
"माफ़ करना, सेबेस्टियन।"

सेबेस्टियन ने अपने होंठ कसकर बंद कर लिए।
“रेस लगाएं?” निको ने कहा।
सेबेस्टियन के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई। वह जानता था कि वह अपने छोटे भाई से तेज़ है। वह यह भी जानता था कि फैनी उन्हें दौड़ते हुए देख लेगी।
"जाओ!" वह चिल्लाया और दौड़ने लगा।
निको चिल्लाते हुए उसका पीछा करने लगा, "हे!" लेकिन सेबेस्टियन उससे काफी आगे निकल चुका था और हंस रहा था, इसलिए निको भी हंसने लगा। सेबेस्टियन कोने पर पहुंचा, इस उम्मीद में कि फैनी की निगाहें उस पर टिकी होंगी। जैसे ही निको ने मोड़ लिया, उसे उसके कदमों की आहट सुनाई दी।
अचानक, सेबेस्टियन ने गाड़ी रोक दी, और निको पीछे से उससे टकरा गया, जिससे वह लगभग गिर ही गया। वहाँ, आराधनालय के द्वार पर, तीन नाज़ी सैनिक खड़े थे, उनके कंधों पर राइफलें थीं। वे सिगरेट पी रहे थे। उनमें से एक ने सेबेस्टियन की टैलिट (यहूदी धार्मिक पोशाक) पर ध्यान दिया।
उन्होंने कहा, "आज कोई चर्च नहीं, यहूदी।"
सेबेस्टियन ने घबराकर सांस ली। वह पीछे हट गया। उसने देखा कि कुछ अन्य जर्मन लोग बक्से लेकर आराधनालय से बाहर निकल रहे थे।
निको थोड़ा आगे बढ़ा। "लेकिन हम शनिवार को तो हमेशा जाते ही हैं।"
सिपाही ने सुनहरे बालों वाले लड़के को ध्यान से देखा।
“तुम यहाँ क्यों जाओगे, लड़के? तुम उसके जैसे यहूदी सूअर तो नहीं हो ना?”
निको ने सेबेस्टियन की ओर देखा, जिसने अपना सिर हिलाया, वह चाहता था कि निको मना कर दे।
“मैं यूनानी और यहूदी हूँ,” निको ने कहा। “लेकिन सूअर नहीं।”
“तुम्हारे ये सुनहरे बाल कहाँ से आए?” सिपाही मुस्कुराया। “शायद तुम्हारी माँ को जर्मन पसंद थे?”
“हां,” दूसरे ने कहा। “शायद वह लगभग दस साल पहले बर्लिन गई थी?”
वे हँसे, लेकिन निको को समझ नहीं आया कि क्यों। इससे पहले कि वह कुछ कह पाता, उसने अपने कंधों पर दो हाथ महसूस किए। उसने ऊपर देखा तो उसके दादाजी खड़े थे।
“आओ, लड़कों,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।

वह उन्हें कोने से घुमाकर ले गया, जहाँ उनकी मुलाकात फैनी और उसके पिता से हुई, जिन्होंने लाज़ार्रे की फुसफुसाहट सुनी कि फिलहाल, सैलानिका की कई अन्य चीजों की तरह, यह आराधनालय भी अब उनका नहीं रहा।

“क्या हम घर जा रहे हैं, नैनो?” निको ने पूछा।

"प्रार्थना किए बिना नहीं।"

लेकिन केलिया बंद है।

हमें इमारत की जरूरत नहीं है।

वे पाँचों बंदरगाह की ओर चल पड़े। पानी के किनारे एक खाली पक्की सड़क देखकर, लाज़ार्रे ने अपनी प्रार्थना पुस्तक निकाली और जप करने लगा, और बाकी लोग भी उसके साथ झूमने लगे। फैनी लड़कों के पास खड़ी थी, जबकि उसके पिता जर्मन सैनिकों पर नज़र रखे हुए थे। वे आधे घंटे तक ऐसा करते रहे, इस दौरान पक्षी ऊपर से उड़ते रहे और उत्सुक दर्शक उन्हें देखते रहे। जब निको ने धीरे से पूछा, "हमें किस लिए प्रार्थना करनी चाहिए?" तो लाज़ार्रे ने आँखें बंद रखते हुए उत्तर दिया, "संसार की सभी अच्छाइयों के लिए प्रभु का धन्यवाद करो।"

वह रुका।

और प्रार्थना करें कि यह युद्ध समाप्त हो जाए।

...फिर वे आपको घर ले जाते हैं

ग्यारह साल की उम्र तक निको सिर्फ एक ही घर को जानता था। वह क्लीसोरस स्ट्रीट नंबर 3 पर स्थित एक दो मंजिला पंक्तिबद्ध मकान था, जिसकी दीवारें सफेद प्लास्टर से बनी थीं, दरवाज़ा लकड़ी का था और हर खिड़की पर भूरे रंग के शटर लगे थे। उसके सामने बहुत पहले लगाया गया एक बबूल का पेड़ था; बसंत ऋतु आते ही उसके पत्ते सफेद हो जाते थे।

अंदर मुख्य मंजिल पर एक रसोईघर, एक भोजन कक्ष और दो शयनकक्ष थे, और ऊपर वाले फ्लैट में दो कमरे थे जहाँ निको के दादा-दादी रहते थे। बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ सड़क की ओर खुलती थीं। तंबाकू का कारोबार खूब फल-फूल रहा था, और लेव, जो कड़ी मेहनत करता था और पैसे बचाता था, घर को अच्छे से सजा कर रखता था, जिसमें एक आरामदायक सोफा और एक बड़ी घड़ी थी। कुछ साल पहले उसने अपनी पत्नी के लिए चीनी मिट्टी के बर्तनों का एक नया सेट खरीदा था, जिसे वह लकड़ी की अलमारी में गर्व से सजाकर रखती थी।

यह घर शहर के केंद्र के पास एक वांछनीय क्षेत्र में था, लाडादिका जैतून के तेल बाजार के करीब और एक चर्च, एक मस्जिद और एक आराधनालय से कुछ ही ब्लॉक की दूरी पर, जो उस सैलानिका को दर्शाता है जहां कई दशकों तक यहूदी, ईसाई और मुसलमान इतने सद्भाव से एक साथ रहते थे कि शहर में सप्ताह में तीन बैंक अवकाश, शुक्रवार, शनिवार और रविवार को मनाया जाता था।

लेकिन सद्भाव और मानवता का रिश्ता क्षणभंगुर होता है। कुछ न कुछ तो हमेशा ही घटित हो जाता है।

और इसी के साथ हम 28 फरवरी, 1943 के बरसात वाले रविवार के दिन पर पहुँचते हैं।

उस सुबह, भारी बोरियाँ लिए युवाओं का एक समूह निको के घर पहुँचा। वुल्फ के शासनकाल में, सैलानिका में यहूदियों को स्कूल जाने या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करने की अनुमति नहीं थी। उनकी हर संपत्ति, यहाँ तक कि पालतू जानवर भी, घोषित करनी पड़ती थी। उनके सभी रेडियो ज़ब्त कर लिए गए थे। यहाँ तक कि उनका भोजन भी जर्मनों को सौंपना पड़ता था—गेहूं, मक्खन, पनीर, तेल, जैतून, फल, खाड़ी में पकड़ी गई मछलियाँ—सब कुछ जर्मनों ने अपने युद्ध प्रयासों के लिए ले लिया था। यहूदी पुरुषों को उनके घरों से निकाल कर दूर-दूर तक श्रम परियोजनाओं में भेज दिया गया, जहाँ उन्हें चिलचिलाती धूप में लंबे समय तक काम करने के लिए मजबूर किया गया। जो पुरुष बच गए, वे तभी लौटे जब सैलानिका के यहूदी समुदाय ने अपनी अस्थायी स्वतंत्रता के बदले जर्मनों को दो अरब ड्रैक्मा दिए।

इस तरह के व्यवहार का विरोध करना जोखिम भरा था। जर्मनों का सैलानिका में रोज़मर्रा की ज़िंदगी के लगभग सभी पहलुओं पर नियंत्रण था। उन्होंने यहूदी अख़बारों को बंद कर दिया। उन्होंने उनकी पुस्तकालयों को तोड़ डाला। उन्होंने हर यहूदी व्यक्ति को अपने कपड़ों पर पीला तारा पहनने के लिए मजबूर किया। स्थानीय सरकार की मिलीभगत से, उन्होंने उस प्राचीन यहूदी कब्रिस्तान को भी तहस-नहस कर दिया, जहाँ लाज़ार्रे और बच्चे कुछ महीने पहले गए थे। उन्होंने तीन लाख कब्रों को नष्ट कर दिया, हड्डियों को कुरेदकर सोने के दाँत ढूँढे, जबकि यहूदी परिवार अपने मृतकों के अवशेषों के बीच रो रहे थे। अगर दूसरे इंसानों के प्रति इस तरह की उपेक्षा को व्यक्त करने के लिए कोई सच्चा शब्द होता, तो मैं उसे ज़रूर बताता। लेकिन ऐसा कोई शब्द नहीं है। नाज़ियों ने यहूदी कब्रों के पत्थरों को भी निर्माण सामग्री के रूप में बेच दिया, और

उनमें से कुछ पत्थर सड़कों के फुटपाथ या चर्चों की दीवारों में इस्तेमाल किए गए।
फिर भी, शायद यहूदी समुदाय के लिए सबसे बड़ा आघात उनके बच्चों के लिए स्कूलों का बंद होना था। बुजुर्गों ने विलाप करते हुए कहा, "अगर हम सीखना बंद कर देंगे तो हमारा कोई भविष्य नहीं है।" इसलिए उन्होंने एक-दूसरे के घरों में गुप्त कक्षाएं शुरू कर दीं। नाज़ियों के संदेह से बचने के लिए वे जगह बदलते रहे।
उस सुबह, मेहमानों की मेजबानी करने की बारी क्रिस्पिस परिवार की थी। बच्चों द्वारा लाए गए थैले किताबों से भरे हुए थे, और वे किताबें अब रसोई की मेज पर फैली हुई थीं। लेव ने विद्यार्थियों को उनकी सीटों पर बैठने का निर्देश दिया। उन्होंने अपने बेटों को पुकारा। “निको! सेबेस्टियन!”
उस समय निको घर में अपनी पसंदीदा जगह पर छिपा हुआ था: अपने दादा-दादी के कमरों की ओर जाने वाली सीढ़ियों के नीचे की तंग जगह में। उस तंग जगह में कोई हैंडल नहीं था; दरवाजा उंगलियों से खोलना पड़ता था। निको अक्सर घुटनों के बल बैठकर अंदर दुबक जाता, बाहर की चहल-पहल सुनता, उसकी माँ रसोई में खाना काट रही होती, उसकी चाचियाँ गपशप कर रही होतीं, उसके दादा और पिता तंबाकू श्रमिकों की मजदूरी पर बहस कर रहे होते। अंधेरे में दुबक कर वह सुरक्षित महसूस करता था। वह तब तक इंतजार करता जब तक उसे अपनी माँ या पिता की आवाज़ सुनाई न दे, "निको! खाना तैयार है!" कभी-कभी वह अपना नाम दो बार पुकारे जाने के लिए एक पल और इंतजार कर लेता था।
इसी बीच, सेबेस्टियन अपने माता-पिता के बेडरूम में एक दर्पण के सामने खड़ा होकर अपना चेहरा देख रहा था। वह जानता था कि फैनी बाकी बच्चों के साथ बाहर है, और उसने अपने सस्पेंडर्स को ठीक करने और अपने काले बालों को इधर-उधर करने में अतिरिक्त समय बिताया था, ताकि वह खुद को और अधिक सलीके से दिखा सके।
उसके संवरने का काम अचानक दरवाज़े पटकने और भारी कदमों की आहट से बाधित हो गया। उसने कुछ अजीब पुरुषों की आवाज़ें सुनीं। उसने अपनी माँ को चिल्लाते हुए सुना। उसने दरवाज़ा खोला और देखा कि जर्मन सैनिकों की काली और भूरी वर्दी पहने हुए लोग फर्नीचर के बीच घूम रहे थे और एक ऐसी भाषा में आदेश दे रहे थे जिसे वह समझ नहीं पा रहा था। उनके साथ आए एक मूंछ वाले आदमी ने—सेबेस्टियन ने उसे यहूदी पुलिस के सदस्य श्री पिंटो के रूप में पहचाना—उन चीख-पुकार का लाडिनो में अनुवाद किया।

“अपना सामान ले लो! पाँच मिनट! तुम्हें पाँच मिनट में यहाँ से निकलना होगा!”
इसके बाद भ्रम और आतंक का एक शोरगुल मच गया, जो संक्षिप्त, असंगत वाक्यों में घटित हुआ।
"हम कहाँ जा रहे हैं?"
"पाँच मिनट!"
"तन्ना, जो कुछ भी हाथ लगे, ले लो!"
“बच्चों, अब आप सबको घर जाना होगा!”
"पाँच मिनट!"
“निको कहाँ है?”
“सेबेस्टियन!”
"हम कहाँ जा रहे हैं?"
“चार मिनट!”
“निको!”
“रोटी। रोटी ले लो!”
"क्या तुम्हारे पास पैसे हैं?"
"लड़कियों के लिए जूते!"
"सेबेस्टियन, अपने भाई को ढूंढो!"
“वह यहाँ नहीं है, पापा!”
“तीन मिनट!”
लेव, मैं इसे नहीं उठा सकता!
"हम कहाँ जा रहे हैं?"
खाना पकाने के लिए कुछ सामान ले आओ!
“दो मिनट!”
"हम कहाँ जा रहे हैं?"
देखते ही देखते वे फुटपाथ पर आ गए, हल्की-हल्की बारिश उनके सिर पर पड़ रही थी। लेव के पास एक सूटकेस और एक बैग था। सेबेस्टियन ने अपने कपड़े हाथों में ले रखे थे। टान्ना ने अपनी बेटियों का हाथ थाम रखा था और पुलिस अधिकारियों से गुहार लगा रही थी।
“हमारा बेटा!” वह चिल्लाई। “हमारा एक और बेटा है! हमें उसे ढूंढना होगा!”

जर्मन उदासीन थे। आस-पास की गलियों में, अन्य यहूदी परिवारों को उनके घरों से बेदखल किया जा रहा था। वे अपने घरों के पास दुबके हुए थे, अपना सामान ऐसे पकड़े हुए थे मानो किसी आग ने उन्हें भगा दिया हो। लेकिन वहाँ कोई आग नहीं थी, केवल नाज़ी सैनिक सिगरेट पी रहे थे, उनमें से कुछ हँस रहे थे, इस अफरा-तफरी का आनंद ले रहे थे। उन्होंने लाठियाँ और राइफलें उठाईं और यहूदियों को एग्नाटिया स्ट्रीट की ओर धकेल दिया।

“चलो!” एक जर्मन सैनिक ने क्रिस्पिस परिवार पर चिल्लाते हुए कहा। टान्ना रो रही थी। “निको!” सैनिक ने फिर से चिल्लाकर कहा, “चलो!” और लेव ने चीखकर कहा, “कृपया! हमें हमारे बेटे को ढूंढने दो!” एक अन्य सैनिक ने अपनी राइफल लेव की छाती में घोंप दी, जिससे वह फुटपाथ पर गिर पड़ा।

सेबेस्टियन अपने पिता की मदद के लिए झपटा, लेकिन टान्ना ने उसे खींच लिया। लेव जैसे ही उठने की कोशिश कर रहा था, सेबेस्टियन ने अपने अब वीरान हो चुके घर की ओर देखा। दूसरी मंजिल की खिड़की से उसे एक हलचल दिखाई दी। पर्दे खुले। बाहर झाँकते हुए दो चेहरे थे: निको और फैनी।

सेबेस्टियन के शरीर में एक सिहरन दौड़ गई। उसे अपने भाई को ज़िंदा देखकर खुश होना चाहिए था। उसे अपनी माँ को चिल्लाकर कहना चाहिए था, "वह सुरक्षित है! वह अंदर है!" उसका एक हिस्सा ऐसा करना चाहता था। लेकिन दूसरा हिस्सा—जो महसूस करता था कि अगर किसी को फैनी की रक्षा करनी चाहिए तो वह उसे ही करनी चाहिए—चुपचाप गुस्से से कांप रहा था।

इसलिए उसने एक शब्द भी नहीं कहा। और उस चुप्पी से उसने अपने भाई का जीवन हमेशा के लिए बदल दिया।

कभी-कभी, जिन सच्चाइयों को हम नहीं बोलते, वही सबसे ज़ोर से गूंजती हैं।

* * *

यहूदी परिवारों को बेघरों की तरह अपना सामान ढोते हुए सड़कों से ले जाया गया, वे अल्काज़ार सिनेमा, वियना होटल और एग्नाटिया स्ट्रीट पर स्थित कई दुकानों और अपार्टमेंटों के सामने से गुज़रे। निवासी अपनी बालकनियों पर खड़े होकर यह सब देख रहे थे। लेव ने ऊपर देखा तो उनमें से कुछ लोग जयकारे लगा रहे थे या व्यंग्यपूर्वक विदाई का इशारा कर रहे थे। उसने नज़रें फेर लीं।

जब वे वर्दारिस स्क्वायर पहुंचे, तो परिवारों को समुद्र की ओर ले जाया गया और रेलवे

स्टेशन के पास एक जर्जर इलाके में ले जाया गया जिसे बैरन हिर्श क्वार्टर के नाम से जाना जाता था, जिसे 1917 की भीषण आग के बाद बेघरों के लिए बनाया गया था। इसमें ज्यादातर जर्जर एक मंजिला इमारतें या झोपड़ियां थीं।

जर्मनों ने नाम पुकारे। उनके पास किसी तरह से सैलानिका में मौजूद सभी यहूदियों की सूचियाँ थीं, जिनमें प्रत्येक परिवार में कितने सदस्य थे, कौन पुरुष था, कौन महिला, उनकी उम्र, उनका कद-काठी जैसी जानकारियाँ थीं, जिनसे पीड़ित हैरान रह गए। परिवारों को इस या उस इमारत में प्रवेश करने का आदेश दिया गया।

“आने वाले दिनों में आपको और निर्देश मिलेंगे!” एक पुलिस अधिकारी ने चिल्लाकर कहा। “यहां से निकलने की कोशिश मत करना, वरना अंजाम भुगतना पड़ेगा!”

उस रात, क्रिस्पिस परिवार अपने नए "घर" में सोया, जो एक गंदा, एक मंज़िला फ्लैट था जिसमें न बाथरूम था, न बिस्तर और न ही सिंक। वे इस जगह को दो अन्य परिवारों के साथ साझा कर रहे थे, कुल मिलाकर चौदह लोग थे, जिनका जल्दबाजी में पैक किया गया सामान अब दीवार के सहारे ढेर लगा हुआ था। यही उस जीवन का बचा हुआ हिस्सा था जिसे वे उस सुबह तक जानते थे।

तान्ना को अपनी खोई हुई रसोई, शयनकक्ष या अपने प्यारे बर्तनों से भरी अलमारी की कोई परवाह नहीं थी। वह अपने बेटे के लिए रोती रही। "लेव, तुम्हें निको को ढूंढना ही होगा! हम उसे ऐसे ही नहीं छोड़ सकते!"

इसलिए लेव गलियों में खोजबीन करने निकला, तो उसने पाया कि बैरन हिर्श को लकड़ी की दीवारों और कांटेदार तारों से घेर दिया गया था। उसने तंबाकू के कारोबार से परिचित एक व्यक्ति को देखा, जो एक छोटा कद काठी वाला, दाढ़ी वाला व्यापारी था, जिसका नाम जोसेफ था। वह बैरिकेड को ऐसे घूर रहा था मानो कोई गणित का सवाल हल कर रहा हो।

“हम यहां से कैसे निकलेंगे?” लेव ने पूछा।

जोसेफ मुड़ा।

“क्या तुमने नहीं सुना? जर्मनों ने कहा है कि बाहर निकलने की कोशिश करने वाले किसी भी यहूदी को देखते ही गोली मार दी जाएगी।”

उडो को रहने की जगह मिल गई

जैसे ही क्लीसोरस स्ट्रीट पर शाम ढलने लगी, तापमान गिरने लगा और बारिश हल्की बर्फ में बदलने लगी। क्रिस्पिस परिवार के अब खाली पड़े पंक्तिबद्ध मकान के सामने

एक वाहन आकर रुका और उडो ग्राफ बाहर निकले। उन्होंने एक सिपाही को अपना सूटकेस लाने का आदेश दिया। वे बबूल के पेड़ के पास रुके और उसकी नई उगती सफेद पत्तियों के नीचे उंगली फेरने लगे। फिर वे मुख्य तल की सीढ़ियों पर चढ़ गए, रास्ते में उन्हें अपने अनुवादक पिंटो मिले, जिन्होंने उनके लिए दरवाजा खुला रखा था। उडो ने चारों ओर देखा। वह शहर के केंद्र के पास और नाज़ी मुख्यालय के नजदीक एक जगह चाहता था। यह ठीक रहेगा।

“सबसे बड़ा कमरा ढूंढो और मेरा सामान वहाँ रख दो,” उसने पिंटो से कहा। वह क्रिस्पिस के घर पर अपना दावा जता रहा था, ठीक उसी तरह जैसे सभी कीमती यहूदी घरों पर जर्मन अधिकारियों ने कब्ज़ा कर लिया था और उनमें मौजूद सभी चीज़ों पर अपना अधिकार जमा लिया था। नाज़ी सैनिकों ने तो अलमारियों में मिले सूट भी पहन लिए और सुंदर पोशाकें अपनी पत्नियों को घर भेज दीं।

उडो को इसमें कुछ भी गलत नहीं लगा। बल्कि इसके विपरीत। उसे यह सब बहुत दयनीय लगा, जिस तरह ये यहूदी इतनी विनम्रता से अपना सब कुछ त्याग रहे थे, मानो चूहे को बिल से बाहर निकाला जा रहा हो। उसके अनुसार, इससे यह साबित होता था कि वे ऐसी चीजों के लायक थे ही नहीं।

वह सोफे पर बैठ गया और कुछ देर तक उछला। अगर उसे इसी देश में रहना था, तो कम से कम दिन के अंत में एक आरामदायक सोफे की तो उम्मीद कर ही सकता था। वुल्फ से मिले इस बड़े काम से वह खुश था, जिसमें उसे सैलानिका के पूरे यहूदी समुदाय—पचास हज़ार लोगों—को देश निकाला देने की निगरानी करनी थी, लेकिन मन ही मन वह चाहता था कि यह काम उसके घर के पास और उसकी मातृभूमि के ठंडे आसमान के करीब होता। उसे ग्रीस में कुछ भी पसंद नहीं था, न उसकी गर्मी और न ही उसके शोरगुल वाले लोग। वह उनकी कई भाषाएँ समझ नहीं पाता था। और यहाँ का खाना अजीब और तैलीय था।

जैसे ही वह गद्दी पर बैठा, उसने उस परिवार की बची-खुची चीजों पर नजर डाली जो आज सुबह यहाँ रहते थे। कोने में कुछ खिलौने। एक पुराना हरा मेज़पोश। अलमारी में चीनी मिट्टी की प्लेटें। एक शादी में परिवार की एक फ्रेम की हुई तस्वीर।

“पिंटो, कितना समय हुआ है?” उडो ने पूछा।

“अभी आठ बज चुके हैं, महोदय।”

"देखो, इस घर में ब्रांडी है या नहीं। या व्हिस्की। या कुछ और।"

"जी श्रीमान।"

उडो सोफे पर पीछे झुक गया और अपनी वर्दी की जेब से एक छोटी नोटबुक निकाली। वह हर दिन के अंत में नोट्स लिखता था - अपनी उपलब्धियाँ, अपने विचार, अपने सहयोगियों के नाम। वुल्फ की कहानी एक किताब में पढ़ने के बाद, उसे लगा कि एक दिन उसकी अपनी कहानी भी लिखी जाएगी। वह चाहता था कि सारी जानकारी सटीक हो।

लिखते समय, उसे अपनी बंदूक का दबाव अपनी जांघ पर महसूस हुआ। उसे याद आया कि उसने कल से गोली नहीं चलाई थी। एक वरिष्ठ अधिकारी ने उससे एक बार कहा था कि एक अच्छे सैनिक को दिन में कम से कम एक बार अपनी पिस्तौल चलानी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे पेट साफ करना।

उडो ने अपनी लूगर पिस्तौल उठाई और धीरे-धीरे उसे अपनी दृष्टि के सामने घुमाते हुए निशाना खोजने लगा। उसकी नज़र फ्रेम में लगी तस्वीर पर पड़ी। उसने ट्रिगर दबाया और गोली चला दी, जिससे फ्रेम मेज से उड़ गया, शीशा चकनाचूर हो गया और ज़मीन पर गिरने से पहले बुरी तरह उछल गया।

तभी उडो को एक ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। वह उत्सुकता से उठा और सीढ़ियों की ओर गया। उसने एक संकरे कमरे के दरवाज़े के फ्रेम में अपना नाखून गड़ा दिया। जब दरवाज़ा खुला, तो उसने अंदर झाँका और उसका सामना एक सुनहरे बालों वाले लड़के से हुआ जिसकी नीली आँखें फटी हुई थीं।

“अच्छा, तो अब,” उसने निको से पूछा, “यहाँ हमारे पास क्या है?”

स्वीकार

आप खुद से जितने भी झूठ बोलते हैं, उनमें शायद सबसे आम झूठ यह है कि अगर आप बस यह या वह कर लें, तो आपको स्वीकार कर लिया जाएगा। इसका असर आपके सहपाठियों, पड़ोसियों, सहकर्मियों और प्रेमियों के साथ आपके व्यवहार पर पड़ता है। लोग पसंद किए जाने के लिए बहुत कुछ करते हैं। उनकी ज़रूरतें मेरी समझ से परे हैं।

मैं आपको बस इतना ही बता सकता हूँ: यह अक्सर व्यर्थ होता है। सच्चाई यह है (यहाँ मैं खुद का ही जिक्र कर रहा हूँ) कि लोग अंततः प्रभावित करने के प्रयासों को समझ जाते हैं। कभी जल्दी, कभी धीरे, लेकिन वे समझ जाते हैं।

उडो ग्राफ को प्रभावित करने की कोशिश करने वाला व्यक्ति याक्की पिंटो नाम का

एक यहूदी गोदी मजदूर था, जिसने अपने जीवन का अधिकांश समय स्वीकृति पाने की चाह में बिताया था। मूंछों वाला, दुबला-पतला, अविवाहित, तिरपन वर्ष का पिंटो शहर के पूर्वी छोर पर रहता था और हर सुबह गोदी तक एक घंटा पैदल चलकर जाता था। उसके बहुत कम दोस्त थे और शिक्षा भी न के बराबर थी। वह हकलाकर बोलता था। युद्ध से पहले, वह ज्यादातर अपनी नाव और सिगरेट के साथ ही समय बिताता था।

लेकिन पिंटो की दादी का जन्म हैम्बर्ग में हुआ था। पिंटो के बचपन के दौरान वह उनके परिवार के साथ रहती थीं और उन्होंने उनसे ही जर्मन भाषा सीखी थी।

जब नाज़ियों ने सैलानिका में प्रवेश किया, तो उन्होंने जुडेनराट नामक एक संस्था बनाई। इस शब्द का अनुवाद "यहूदी परिषद" होता है, लेकिन मैंने भाषा के तोड़-मरोड़ के प्रभाव के बारे में पहले भी बात की है। वास्तव में, कोई "परिषद" बनाने की कोशिश नहीं की जा रही थी, बल्कि यह दिखावा मात्र था कि यहूदियों का अपने भाग्य पर कुछ नियंत्रण है। जुडेनराट में शामिल होने वालों को जर्मनों द्वारा उनके आदेशों का पालन करने का ज़िम्मा सौंपा गया था, जैसा कि उनके नियंत्रण में स्थापित यहूदी "पुलिस" को भी सौंपा गया था। और यद्यपि इन पदों पर आसीन कुछ लोगों ने नाज़ियों के घोर अत्याचारों से बचने की कोशिश की, लेकिन अधिकांश को साथी यहूदियों द्वारा अविश्वासनीय सहयोगी के रूप में देखा गया।

पिंटो ने लगभग तुरंत ही यहूदी सभा में शामिल होने के लिए स्वेच्छा से आवेदन कर दिया था, और उडो ग्राफ ने पाया कि उनके जर्मन भाषा के कौशल उपयोगी हो सकते हैं। वह इन यूनानी यहूदियों द्वारा बोली जा रही निरर्थक भाषा का अनुवाद कर सकते थे।

“तुम्हारा काम आसान है,” उडो ने उससे कहा था। “तुम मेरी कही हुई बातों का अनुवाद करो और मुझे ठीक-ठीक बताओ कि वे क्या कह रहे हैं। कोई झूठ नहीं। कोई हेरफेर नहीं।”

पिंटो सहमत हो गया। वास्तव में, जब उसे नीचे नाज़ी मुहर लगे अपने आधिकारिक दस्तावेज़ मिले तो वह मुस्कुराया। उसका मानना था कि दुश्मन के साथ काम करने से वह उनके प्रकोप से सुरक्षित रहेगा।

यह तो मूर्खतापूर्ण विचार है। क्या भेड़िये के बगल में चलने मात्र से मेमने की रक्षा हो जाएगी?

* * *

"उसका नाम निको है, लेकिन लोग उसे चियोनी कहते हैं," पिंटो ने कहा, जब लड़का बैठक के कमरे की दीवार के सहारे खड़ा होकर घबराकर अपने कपड़े खींच रहा था।

“चियोनी का क्या मतलब है?” उडो ने पूछा।

"बर्फ़।"

"बर्फ क्यों गिर रही है?"

“क्योंकि...” पिंटो जर्मन शब्द “शुद्ध” के उच्चारण में अटक गए। “क्योंकि वह झूठ नहीं बोलता।”

“झूठ नहीं बोलता?” उडो उत्सुक हो गया। उसने निको की ओर मुड़कर पूछा, “बताओ, झूठ न बोलने वाले लड़के, क्या हम पहले मिल चुके हैं?”

पिंटो ने अनुवाद किया। निको ने उत्तर दिया।

मैंने तुम्हें एक बार चौराहे पर देखा था। तुम एक ट्रक में थे।

उडो को याद आ गया। वह लड़का जिसने आँख मारने की कोशिश की थी।

"आपकी आयु कितनी है?"

“ग्यारह। लगभग बारह।”

तुम झूठ क्यों नहीं बोलते?

मेरे दादाजी कहते हैं कि यह पाप है।

“मैं समझ गया।” उडो रुका। “बताओ, निको, क्या तुम यहूदी हो?”

"हाँ।"

"क्या आप भगवान को मानते हैं?"

"हाँ।"

क्या आप आराधनालय में प्रार्थना करते हैं?

“अब नहीं। किसी ने इसे ले लिया।”

उडो मुस्कुराया।

“लेकिन उससे पहले, निको। क्या तुम उपस्थित थे?”

“मैं हर शनिवार को जाता था।” उसने अपनी नाक रगड़ी। “और हाँ, मैं पासओवर सेडर में सवाल पूछता हूँ, भले ही मेरी बहनें मुझसे छोटी हैं। सबसे छोटी को सवाल पूछने चाहिए, लेकिन वे अभी बोलती नहीं हैं, इसलिए मैं पूछता हूँ।”

उडो ने लड़के के चेहरे को गौर से देखा। उसकी नीली आँखें बिल्कुल एक-दूसरे से सटी

हुई थीं। उसके दाँत अच्छे थे, गाल मुलायम थे, ठुड्डी नाजुक थी, बाल सुनहरे थे और नाक किसी भी तरह से यहूदी नहीं दिखती थी। अगर बच्चे ने अपनी वंश परंपरा का खुलासा न किया होता, तो उडो उसे आर्यन युवाओं का एक उत्तम उदाहरण मान सकता था।

उसने उसे और परखने का फैसला किया।

“तुम सीढ़ियों के नीचे क्यों छिपे हुए थे?”

“बहुत शोर था। सब लोग डरे हुए लग रहे थे। इसलिए मैं अंदर ही रहा।”

क्या तुम अकेले छिपे हुए थे?

"नहीं।"

उडो की आंखें चौड़ी हो गईं। "तुम्हारे साथ और कौन था?"

"फैनी।"

“फैनी कौन है?”

“वो मेरी क्लास में है। मेरे भाई को वो पसंद है। वो उसे चूमना चाहता है।”

उडो हँसा। पिंटो भी उसके साथ हँसा।

और फैनी अब कहाँ है?

वह घर चली गई।

उडो खड़ा हो गया।

"क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ, निको?"

“नहीं। लेकिन आपके पास काला कोट है। मेरी माँ कहती है कि मुझे काले कोट वाले पुरुषों से दूर रहना चाहिए।”

"क्यों?"

मुझे नहीं पता। वह यही कहती है।

उडो ने अपनी ठुड्डी खुजलाई। उसे लड़के की आवाज में माँ का डर महसूस हुआ।

“क्या मैं अब अपने परिवार के साथ जा सकता हूँ?” निको ने कहा।

उडो खिड़की के पास गया। उसने पर्दा हटाया। उसने लैंप की रोशनी में क्लेइसौरास स्ट्रीट पर बर्फ की हल्की परत देखी।

स्नो, उसने सोचा। और वे इस लड़के को "स्नो" कहते हैं। क्या यह किसी तरह का संकेत था? उडो संकेतों में विश्वास करता था। शायद उसे इसी घर में आना था, इस लड़के को ढूंढना था, और किसी उद्देश्य के लिए उसका उपयोग करना था।

“मेरे पास एक विचार है, निको। तुम अपने परिवार के लिए हीरो कैसे बन सकते हो। क्या तुम्हें यह पसंद आएगा?”

निको रोने लगा। इस घटना का उस पर गहरा असर पड़ रहा था। उसे अपने पापा की याद आ रही थी। उसे अपनी मम्मी की याद आ रही थी। बाहर अंधेरा हो चुका था।

“क्या वे घर वापस आ सकते हैं?” उसने पूछा।

“मैं आपको एक बात बताता हूँ,” उडो ने होंठों को चटकाते हुए कहा। “अगर आप मेरी बात मान लें, तो आप सब फिर से एक साथ हो सकते हैं।”

वह आगे झुका, उसकी ठुड्डी निको की आंखों से बस कुछ इंच की दूरी पर थी।

"अब, क्या आप मेरी मदद करेंगे?"

निको ने जैसे कुछ निगल लिया हो। उसे आश्चर्य हुआ कि क्या फैनी घर पहुँच गई होगी। काश वह उसके साथ चला गया होता।

रुको। फैनी को क्या हुआ?

हमने उसे आखिरी बार निको के साथ खिड़की के पर्दों से झांकते हुए देखा था। लेकिन वह वहां क्या कर रही थी?

अच्छा। याद रखें, बच्चे तो बच्चे ही होते हैं। चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी विकट क्यों न हों, वे अपनी उम्र के अनुरूप ही क्षण बनाएंगे।

बारह साल की फैनी उस उम्र में थी जब उसके मन में अक्सर लड़कों के बारे में ख्याल आते थे, कि वे कैसे दिखते हैं और कैसे उसे देखते हैं, और खासकर एक लड़के, निको के बारे में, जो जैसा कि बताया गया है, स्कूल में उसके सामने वाली डेस्क पर बैठता था। वह कुछ बड़े लड़कों की तुलना में कम गंभीर दिखता था, जिनके चेहरे पर मुंहासे और होंठों के ऊपर नए उगे बाल होते थे। निको लगभग... सुंदर था। कक्षा के दौरान, फैनी पीछे से उसे देखती रहती थी, देखती थी कि कैसे उसके घने सुनहरे बाल उसकी सफेद कमीज के कॉलर के ठीक ऊपर आकर रुकते थे, कैसे कभी-कभी सुबह जब वह बैठता था तो वे गीले होते थे। वह कल्पना करती थी कि वह हाथ बढ़ाकर उसके बालों में हाथ फेरे।

जिस दिन फैनी और अन्य छात्र क्रिस्पिस के घर पहुँचे, उसने निको को ढूँढा लेकिन वह वहाँ नहीं मिला। वह सीढ़ियों पर गई, जहाँ उसने देखा कि तहखाने का दरवाज़ा थोड़ा खुला हुआ है। उसने निको को बाहर झाँकते हुए देखा। वह मुस्कुराया लेकिन दरवाज़ा वापस बंद कर दिया। फैनी ने दरवाज़ा खटखटाया।

तुम अंदर क्या कर रहे हो?
निको ने धीरे से दरवाजा खोला।
मैं कभी-कभी यहाँ ठहरता हूँ।
"क्या मैं इसे देख सकता हूँ?"
"काफी अंधेरा है।"
कोई बात नहीं। मैं फिर भी इसे देखना चाहता हूँ।
"ठीक है।"
उसने उसे अंदर रेंगने दिया। उसने अपने पीछे दरवाजा बंद कर लिया। निको सही था। अंधेरा था, और अंदर ज्यादा जगह नहीं थी। उसका चेहरा देखे बिना उसके इतने करीब होने पर उसे अजीब सा लग रहा था—थोड़ा चक्कर आ रहा था, थोड़ी गर्मी लग रही थी, लेकिन खुशी थी।
“तुम यहाँ कब तक रहोगे?” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
“यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है,” उसने फुसफुसाते हुए जवाब दिया। “कभी-कभी मैं बाहर लोगों की बातें सुनता हूँ।”
"क्या यह जासूसी करने जैसा नहीं है?"
मुझे नहीं पता। शायद। क्या आपको लगता है कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए?
अंधेरे में फैनी मुस्कुराई, उसे खुशी थी कि उसने उसकी राय पूछी। "मुझे लगता है यह ठीक है। अगर आपका इरादा जासूसी करने का नहीं है, तो इसे जासूसी नहीं कहते।"
फैनी ने दूसरे बच्चों को बातें करते और कुर्सियाँ खींचते सुना। उसे पता था कि किसी भी पल उन्हें स्कूल के लिए बुलाया जा सकता है। उसे उम्मीद थी कि स्कूल बुलाए जाने से पहले उसे निको से एक सवाल पूछने का मौका मिल जाए, एक ऐसा सवाल जिसकी वह काफी समय से अपने मन में तैयारी कर रही थी। सवाल था: "निको, क्या तुम मुझे पसंद करते हो?"
वह यह सवाल पूछ भी नहीं पाई। तभी एक तेज़ आवाज़ हुई, फिर भारी कदमों की आहट और जर्मन लोगों के चिल्लाकर आदेश देने की आवाज़ें आईं, साथ ही चीज़ों के इधर-उधर खिसकने की आवाज़ें भी सुनाई दीं। डरी हुई फैनी ने निको का हाथ पकड़ा और अपना हाथ उसकी कलाई और उंगलियों तक ले गई।
बाहर, उन्हें फर्श पर कुछ घसीटने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। दरवाजे खुल रहे थे। दरवाजे बंद हो रहे थे। उन्होंने निको की माँ को उसका नाम पुकारते हुए सुना, लेकिन

वे दोनों इतने डरे हुए थे कि हिल भी नहीं पा रहे थे।
“हमें क्या करना चाहिए?” फैनी ने फुसफुसाते हुए कहा।
"मेरे पिता कहते हैं कि अगर जर्मन आ जाएं तो छिप जाना," निको ने कहा।
तो क्या हमें यहीं रुकना चाहिए?
"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"
फैनी के घुटने कांपने लगे। उसने निको का हाथ कसकर पकड़ लिया। वे कुछ मिनट तक उसी तरह बैठे रहे। आखिरकार, बाहर कोई आवाज़ न सुनकर, निको ने चुपके से तहखाने का दरवाज़ा खोला। घर खाली था। वे दबे पांव खिड़कियों तक गए, पर्दे खींचे और नीचे देखा तो निको का परिवार सैनिकों से घिरा हुआ था। निको ने पर्दे बंद कर दिए और वे जल्दी से तहखाने में वापस चले गए।
फैनी रो रही थी। उसने अपने हाथों से आंसू पोंछे।
“मुझे बहुत डर लग रहा है,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
“चिंता मत करो,” निको ने कहा। “मेरे पापा मजबूत हैं। उन्होंने युद्ध जीता है। वे हमारे लिए वापस आएंगे।”
"क्या मैं फिर से आपका हाथ पकड़ सकता हूँ?"
"ठीक है।"
वे अंधेरे में टटोलते रहे जब तक कि उनकी पकड़ मजबूत नहीं हो गई।
“माफ़ कीजिए, मेरी उंगलियां गीली हैं,” फैनी ने कहा।
"कोई बात नहीं।"
आपको क्या लगता है वे कहाँ जा रहे हैं?
मुझे नहीं पता। शायद उस जगह पर जहां आपको सवालों के जवाब देने पड़ते हैं और फिर वे आपको घर आने देते हैं।
मुझे जर्मनों से नफरत है। क्या आपको जर्मनों से नफरत नहीं है?
आपको लोगों से नफरत नहीं करनी चाहिए।
आप उनसे नफरत कर सकते हैं। यह अलग बात है।
आपको लोगों को पसंद करना चाहिए।
फैनी ने गहरी सांस ली। सवाल पूछने का यह सही समय नहीं था, लेकिन ऐसा करने से उसे थोड़ा कम डर लगा।
“निको?”

"क्या?"
"क्या आपको मैं पसंद हूं?"
उसने जवाब देने में कुछ पल लगाए। फैनी के गले में एक गांठ सी आ गई।
“हां, मुझे तुम पसंद हो, फैनी,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
* * *
एक घंटे बाद, उन्होंने धीरे से दरवाजा खोला। घर तो सुनसान ही था, अब सड़कें भी सुनसान थीं। निको एक कोठरी में गया और फैनी को अपने भाई का रेनकोट दिया। उन्होंने कहा, "इसे अपने सिर पर इस तरह लगा लो कि वे तुम्हें पहचान न सकें।"
"ठीक है।"
अब तुम कहाँ जाओगे?
“मेरे पिताजी की दुकान पर। वो वहीं होंगे। वो हमेशा वहीं रहते हैं।”
"अच्छा।"
"अगर वह वहां नहीं है, तो क्या मैं वापस आ सकता हूँ?"
"हाँ।"
"धन्यवाद, निको।"
अचानक, बिना सोचे-समझे, फैनी आगे की ओर झुकी और निको की गर्दन में अपनी बाहें डालकर अपना चेहरा उसके चेहरे के पास ले आई। उसने अपने होंठ उसके गाल पर हल्के से छुए और बहुत ही कम समय के लिए उसके होंठों को स्पर्श किया।
“बाय,” उसने धीरे से कहा।
निको ने पलकें झपकाईं।
“बाय,” उसने कर्कश आवाज में कहा।
वह चुपके से दरवाजे से बाहर निकलकर सड़क पर चली गई।
* * *
उसके पिता की दवा की दुकान पश्चिम दिशा में, एग्नाटिया स्ट्रीट से एक मील से भी कम दूरी पर थी। फैनी ने निको द्वारा दी गई रेनकोट पहनी हुई थी, जो उसके दुबले-पतले शरीर के लिए बहुत बड़ी थी। उसने कॉलर को कानों तक खींच लिया।
चिकने पत्थरों पर चलते हुए वह उनके चुंबन के बारे में सोचने लगी। आखिर चुंबन था ही, है ना? उसने पहले कभी किसी लड़के को चुंबन नहीं दिया था। और हालांकि वह चाहती थी कि शुरुआत वह लड़का करे, फिर भी उसके लिए चुंबन मायने रखता था,

और यह तथ्य कि उसने कोई आपत्ति नहीं जताई और शायद उसे अच्छा भी लगा, उसे चक्कर आने लगा। वह पहले से ही सोच रही थी कि वह उससे दोबारा कब मिलेगी। इससे फैनी के कदमों में एक हल्कापन आ गया, और वह हल्कापन उसकी पूरी यात्रा के दौरान बना रहा, ठीक उस क्षण तक जब वह एक मोड़ पर मुड़ी और अपनी जगह पर ही जम गई।

सड़क पर यहूदियों का एक जुलूस धीरे-धीरे बारिश में सिर झुकाए चल रहा था, जिससे सड़क पर भीड़ उमड़ पड़ी थी। वे बक्से या सूटकेस लिए हुए थे। कुछ लोग ठेले धकेल रहे थे। उन्हें भी उनके घरों से निकाला जा रहा था और मवेशियों की तरह बैरन हिर्श मोहल्ले की ओर ले जाया जा रहा था।

फैनी को दूर से अपने पिता की आवाज सुनाई दी।

“प्लीज़! इसमें बस एक मिनट लगेगा!”

उसने उसे उसकी दवा की दुकान के सामने देखा, जहाँ वह राइफल पकड़े हुए एक जर्मन सैनिक से विनती कर रहा था।

“ये दवाइयाँ हैं, समझ नहीं आ रही?” फैनी के पिता ने कहा। “लोगों को दवाइयाँ चाहिए होती हैं। अगर वे बीमार पड़ जाएँ, या उनका एक्सीडेंट हो जाए, या उन्हें चोट लग जाए तो क्या होगा? तुम समझ सकती हो ना? मुझे अंदर जाने दो और एक थैला दवाइयों से भर लेने दो। मैं तुरंत वापस आ जाऊँगा और हम चल देंगे।”

फैनी ने चैन की सांस ली। उसके पिता बहुत बातूनी थे। उनकी दुकान, दवाइयों की बिक्री के कारण, खुली रहने दी गई थी जबकि अन्य यहूदी दुकानें बंद थीं। फैनी को पूरा यकीन था कि उसके पिता अंदर आ ही जाएंगे। उनके आते ही वह पीछे के दरवाजे से जाकर उनके साथ शामिल हो जाएगी। उसने देखा कि जो सिपाही अपना सिर हिला रहा था, उसने आसमान की ओर देखा, मानो वह झुंझला गया हो। आखिरकार, वह एक तरफ हट गया।

“धन्यवाद,” उसके पिता ने कहा। “मुझे बस एक मिनट लगेगा।”

वह सिपाही को पीछे छोड़ते हुए दरवाजे की ओर बढ़ गया।

फैनी के मन में आगे जो कुछ हुआ, वह मानो पानी में धीमी गति से घटित हो रहा था। जैसे ही उसके पिता दवाखाने में प्रवेश करने लगे, एक अन्य नाज़ी ने पहले वाले को रास्ते से हटा दिया, अपनी पिस्तौल उठाई और फैनी के पिता को पीठ में दो बार गोली मार दी। उनकी मृत्यु दरवाजे के हैंडल पर हाथ रखे हुए हुई।

फैनी चीखी, लेकिन उसे अपनी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। उसके दिमाग में हर तरफ़ एक धड़कता हुआ धमाका था, मानो कुछ ही इंच दूर कोई बम फटा हो और वातावरण से सारी आवाज़ें सोख ली हों। वह हिल नहीं पा रही थी। वह साँस नहीं ले पा रही थी। बेहोश होने से पहले उसे बस इतना याद था कि दो बाँहें उसके नीचे थीं, और उसका शरीर दूसरों के साथ बस्ती की ओर एक लंबी, घिसटती हुई यात्रा में शामिल हो रहा था।

सेबेस्टियन को मुश्किल से नींद आ रही थी।

बेचारा लड़का निको के बारे में अपने माता-पिता को न बताने के अपराधबोध से व्याकुल था। नए आवास में पहली रात उसने पेट दर्द से कराहते हुए फर्श पर बिताई। अपनी माँ का चेहरा देखते-देखते उसकी हालत और खराब हो जाती। फैनी के बारे में सोचते-सोचते उसकी हालत और बिगड़ जाती। उसे एक बुरा सपना आया जिसमें निको आग के अंदर से चिल्ला रहा था, और जब वह पसीने से तरबतर होकर जागा, तो सेबेस्टियन ने सब कुछ सच-सच बताने का फैसला किया।

किस्मत का खेल देखिए, उसे ऐसा करना ही नहीं पड़ा। सुबह 8:00 बजे से ठीक पहले, खिड़की के बाहर से हल्की सी दस्तक सुनाई दी। सेबेस्टियन, जो कल के कपड़े ही पहने हुए था, ने सबसे पहले यह आवाज सुनी। वह घिसटते हुए दरवाजे तक पहुंचा, और जब उसने दरवाजा खोला, तो उसकी धड़कनें तेज हो गईं। दरवाजे पर एक बूढ़ी औरत खड़ी थी जिसे उसने बेकर की पत्नी, श्रीमती पालिती के रूप में पहचाना। उनके बगल में, रेनकोट पहने हुए, फैनी खड़ी थी।

“तुम्हारे पिता और माता कहाँ हैं?” श्रीमती पालिती ने पूछा।

इससे पहले कि वह कुछ जवाब दे पाता, उसने उन्हें दरवाजे की ओर भागते हुए सुना। उसने फैनी का ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश की, लेकिन उसकी निगाहें कहीं खोई हुई थीं, मानो वह आंखें खुली रखकर सो गई हो।

जब लेव और टान्ना आए, तो महिला ने कहा, "फैनी के पास आपके बेटे के बारे में खबर है।"

उसने फैनी को कोहनी मारी।

“हम तुम्हारे घर में थे,” लड़की ने धीमी आवाज़ में कहा। “सीढ़ियों के नीचे। हम छिपे हुए थे।”

“हे भगवान!” टान्ना ने अपने हाथों को पकड़ते हुए कहा। “क्या वह ठीक है? वह अब

कहाँ है? क्या वह सुरक्षित है?”
"जब मैं वहां से निकला तब वह वहीं था।"
“तुम क्यों चली गई? तुमने उसे क्यों छोड़ दिया?”
मैं अपने पिता को ढूंढने गया था।
क्या तुम्हारे पिता उसे लेने गए थे?
बेकर की पत्नी ने तन्ना की ओर देखा और हल्के से अपना सिर हिलाया।
उन्होंने कहा, "अब वह भगवान के साथ हैं।"
“ओह, नहीं,” लेव ने धीरे से कहा।
“ओह, फैनी,” टान्ना कराह उठी। “ओह, फैनी, इधर आओ।” फैनी के चेहरे से आंसू टपक रहे थे। वह टान्ना की ओर ऐसे झुकी जैसे उसके पैर बंधे हों।
सेबेस्टियन को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसके मन में फैनी को गले लगाने, उसके बालों को अपने कंधे पर महसूस करने और उसके कान में कुछ दिलासा देने वाली बातें फुसफुसाने की गहरी इच्छा थी।
लेकिन उसने बस इतना ही कहा, "तुम मेरा रेनकोट रख लो।"

निको सफेद टावर का सपना देखता है

सैलानिका एक बेहद खूबसूरत और ऐतिहासिक शहर है, और कई कहानियां इन दोनों को जोड़ती हैं। परिवार से दूर अपनी पहली अकेली रात में, निको बिस्तर पर लेटा हुआ था, आंसू रोकने की कोशिश कर रहा था, और उसे ऐसी ही एक कहानी याद आ रही थी। उस कहानी ने उसे सुकून दिया, और वह उसे याद करते-करते सो गया।
कहानी भव्य श्वेत मीनार के बारे में थी, जो पंद्रहवीं शताब्दी में थेसालोनिकी को आक्रमणों से बचाने के लिए बनाया गया एक किला था। यह शहर के हर निवासी के लिए एक गौरवपूर्ण स्थल था, और निको के दादा लाज़ार्रे निको, सेबेस्टियन और फैनी को निको का आठवां जन्मदिन मनाने के लिए वहाँ ले गए थे। गोमांस के स्टू, पाइन नट्स के साथ चावल और मिठाई के रूप में तुर्की पुडिंग के विशेष दोपहर के भोजन के बाद, लाज़ार्रे और बच्चे खाड़ी के किनारे सैरगाह पर चले। वे पुराने होटलों और छोटे-छोटे मेजों और रंगीन शामियानों वाले खुले कैफे से गुज़रे, जो ग्राहकों को धूप से बचाते थे। जल्द ही वे मीनार तक पहुँच गए, और उन्होंने उसके चारों ओर बने मंडप, रेस्तरां और हरे-भरे पार्क को देखा।
“मेरे पास एक सरप्राइज है,” लाज़ार्रे ने कहा। “यहीं रुको।”

निको, फैनी और सेबेस्टियन ने देखा कि लाज़ार्रे एक गार्ड के पास गया और वे दोनों एक चीड़ के पेड़ के नीचे बातें करने लगे। लाज़ार्रे ने उस आदमी को कुछ पैसे दिए। फिर उसने बच्चों को जल्दी आने का इशारा किया।

“हम कहाँ जा रहे हैं, नैनो?” निको ने पूछा।

लाज़ार्रे मुस्कुराया। "ऊपर।"

निको ने अपने भाई के हाथ पर थप्पड़ मारा और सेबेस्टियन ने मुस्कुराकर जवाब दिया। फैनी खुशी से उछल पड़ी। जल्द ही वे तीनों किले के अंदर बनी घुमावदार सीढ़ियों पर चढ़ने लगे, और बीच-बीच में धातु की जाली से ढकी छोटी-छोटी खिड़कियों से बाहर झांकते रहे। उन बच्चों को ऐसा लग रहा था मानो वे घंटों से चढ़ाई कर रहे हों। आखिरकार, वे एक मेहराबदार दरवाजे से गुजरे और छत पर पहुँच गए, जहाँ नीला आसमान उनके चेहरे पर पड़ रहा था और पूरा थेसालोनिकी शहर उनके सामने फैला हुआ था।

यह नज़ारा उनके द्वारा पहले देखे गए किसी भी दृश्य से बिल्कुल अलग था। पश्चिम में शहर की छतें और बंदरगाह थे, उत्तर में पहाड़ी और प्राचीन किला, पूर्व में सजे-धजे बगीचों वाले आलीशान घर और दक्षिण में खाड़ी और उत्तरी एजियन सागर, और बर्फ से ढका माउंट ओलंपस किसी चित्र की तरह स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

“अब मैं आप सबको एक कहानी सुनाना चाहता हूँ,” लाज़ार्रे ने कहा। “क्या आप जानते हैं कि इसे व्हाइट टॉवर क्यों कहते हैं?”

बच्चों ने कंधे उचका दिए।

“यह कभी एक जेल हुआ करती थी। यह गंदी और अंधेरी थी और बाहर कैदियों की हत्या के खून के धब्बे थे। यहां इतनी सारी फांसी दी गई थीं कि इसे 'खून का टावर' कहा जाता था।”

“एक दिन, ज़िम्मेदार लोगों ने इसे साफ़ करने का फैसला किया। लेकिन यह महंगा और मुश्किल था। कोई भी यह काम नहीं करना चाहता था।”

"अंततः, एक कैदी ने आवाज़ उठाई। उसने अकेले ही पूरे टावर को सफेद रंग से रंगने की पेशकश की, बशर्ते कि उसके अपराध को माफ कर दिया जाए और उसे रिहा कर दिया जाए।"

“पूरा टावर?” निको ने पूछा।

"पूरा टावर," लाज़ार्रे ने कहा।

“क्या उसने ऐसा किया?”
“हाँ। इसमें काफी समय लगा, एक साल से भी ज्यादा, लेकिन उन्होंने यह काम अकेले ही पूरा किया। और, जैसा वादा किया गया था, उन्हें जाने दिया गया। तब से हम इसे व्हाइट टॉवर कहने लगे।”
“क्या आप जानते हैं कि वह आदमी कौन था?” सेबेस्टियन ने पूछा।
“बहुत कम लोगों को याद होगा,” लाज़ार्रे ने कहा, “लेकिन मुझे याद है। उनका नाम नाथन गुइडिली था।” वे थोड़ी देर रुके। “वे भी हमारी तरह यहूदी थे।”
बच्चों ने एक-दूसरे की ओर देखा। सूरज डूब रहा था और क्षितिज नारंगी रंग का हो रहा था। लाज़ारे ने अपने पोतों के हाथ पकड़े।
उन्होंने कहा, "उस कहानी में एक सबक है। क्या आप जानते हैं कि वह क्या है?"
लाज़ार्रे के समुद्र की ओर देखने पर लड़के इंतजार करते रहे।
उन्होंने कहा, "क्षमा पाने के लिए एक व्यक्ति कुछ भी कर सकता है।"

एक और दृष्टांत

बहुत समय पहले, सत्य के देवदूत ने लोगों के बीच जाकर सकारात्मक शक्ति का संदेश बांटने का निश्चय किया। लेकिन अफसोस, सत्य के आने पर लोग उससे मुंह मोड़ लेते थे। वे अपनी आंखें ढँक लेते थे। वे दूसरी दिशा में भाग जाते थे।
सत्य हताश हो गया और एक गली में छिप गया। तभी परेबल, जो यह सब देख रहा था, सत्य के पास आया।
“क्या हुआ?” पैरेबल ने पूछा।
“सब लोग मुझसे नफरत करते हैं। मुझे आते देख ही मुंह फेर लेते हैं।”
“देखो तो ज़रा,” पैरेबल ने कहा। “तुम बिलकुल नंगे हो। ज़ाहिर है, वे भागेंगे। वे तुमसे डरते हैं।”
कई रंग-बिरंगे वस्त्रों से सजे पैरेबल ने उनमें से एक वस्त्र उतारकर मुझे सौंप दिया।
“लो। इसे पहनो और फिर से कोशिश करो।”
सत्य ने वही किया जो उसे कहा गया था। और निश्चित रूप से, नए और मनमोहक रंगों से सजे सत्य का उन्हीं लोगों द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया गया, जो कभी भाग गए थे।
तो इससे हमें क्या सीखने को मिलता है?
कुछ लोग कहते हैं कि यही कारण है कि दृष्टांत कथाएँ मनुष्यों को वह सिखाती हैं जो

कठोर सत्य नहीं सिखा सकता। व्यक्तिगत रूप से, मुझे नहीं पता कि आप सब किस बात से इतना डरते हैं।

परन्तु फिर।

इससे आगे क्या होगा, इसका स्पष्टीकरण मिल सकता है।

पुनर्वास का झूठ

मैं इस कहानी में छिपे बड़े-बड़े झूठों के बारे में पहले ही बात कर चुका हूँ। कैसे वुल्फ ने अपनी बुराई को छिपाने के लिए भाषा को तोड़-मरोड़ कर पेश किया। कैसे उसके नाज़ी साथियों ने भी उसका अनुसरण किया और अनगिनत सूचियाँ, प्रपत्र और आधिकारिक दिखने वाले दस्तावेज़ तैयार किए, जो सब उनकी क्रूरता को छुपाने के लिए बनाए गए थे।

सैलानिका में झूठ हर जगह फैला हुआ था, कुछ झूठ इतने छोटे थे जैसे कि यहूदियों को अपने रेडियो जमा करने के बदले में दी गई नकली गुलाबी रसीदें, और कुछ इतने बड़े थे जैसे कि यह वादा कि उनके घर खाली करने के बाद उनमें कोई छेड़छाड़ नहीं की जाएगी, जबकि सच्चाई यह थी कि कुछ ही घंटों बाद अधिकारी अंदर घुस आए और छिपे हुए पैसे की तलाश में फर्श की लकड़ियों को उखाड़ दिया।

फिर भी, सबसे बड़ा झूठ वह था जिसे नाजियों ने अंत तक के लिए बचाकर रखा था। पुनर्वास का झूठ एक काल्पनिक "मातृभूमि" से संबंधित था, जहाँ यहूदियों को बसाया जाएगा, वे रहेंगे, काम करेंगे, अपने परिवार का पालन-पोषण करेंगे और उन्हें अकेला छोड़ दिया जाएगा। वुल्फ जानता था कि किसी भी समुदाय को एक हद तक ही परेशान किया जा सकता है; अगर उन्हें पता चल जाए कि उनका अंत निश्चित है, तो वे मरते दम तक लड़ सकते हैं। उसने पहले ही अपने लक्ष्यों को अपमानित और कमजोर कर दिया था, उन्हें भूखा रखा था, उनकी आजीविका छीन ली थी, उन्हें घुटनों पर ला दिया था। लेकिन बैरन हिर्श जैसी जर्जर यहूदी बस्तियों में भी वे सार्वजनिक दृष्टि में बने रहे। और सार्वजनिक दृष्टि में, वुल्फ अपनी सबसे घिनौनी मंशा को पूरा नहीं कर सका, जिसे उसने 1942 की गर्मियों में जर्मनी के वानसी में एक झील के किनारे स्थित विला में हुई एक बैठक के दौरान अपने जनरलों को आकार देने का निर्देश दिया था।

वहीं पर निको, सेबेस्टियन, फैनी और हमारी कहानी के अन्य पात्रों के बारे में ही नहीं, बल्कि ब्रिटिश द्वीपों के तटों से लेकर सोवियत संघ के पहाड़ों तक फैले ग्यारह मिलियन यहूदियों में से हर एक के बारे में अंतिम निर्णय लिया गया। नाश्ते, कॉन्यैक

और सिगरेट के बीच दो घंटे से भी कम समय में लिए गए उस निर्णय को एक वाक्य में सारांशित किया जा सकता है:

उन सब को मार दो।

ज़ाहिर है, इसका मतलब था छिपाना। बुराई अंधेरे में छिपती है। इसलिए नहीं कि उसे शर्म आती है। बल्कि अंधेरा ज़्यादा कारगर होता है। कम उलझनें। कम आक्रोश। भेड़िया (वुल्फ) ने अपने अंतिम आतंक के लिए ऑशविट्ज़, ट्रेब्लिंका, डाचाऊ जैसी जगहों पर मौत के शिविर बना लिए थे। लेकिन एक रसद संबंधी चुनौती बाकी थी: वह अपने पीड़ितों को वहाँ कैसे पहुँचाता? ऐसी कौन सी झूठी कहानी होती जिससे इतने सारे लोग अपने ही नरसंहार की यात्रा पर जाने के लिए मूर्ख बन जाते?

उसे एक भ्रम की जरूरत थी। एक ऐसा आवरण जो मुझे पूरी तरह से भुला देने के लिए काफी हो।

पुनर्वास का झूठ यहीं से जन्म लिया।

* * *

लेव ने यह झूठ पहली बार बैरन हिर्श यहूदी बस्ती में अपनी दूसरी रात को सुना। वह और कुछ अन्य लोग एक छोटे से बैरल में आग जलाकर खुद को गर्म कर रहे थे। तभी बैट्रस नाम का एक युवा मछुआरा पास आया और उसने बताया कि उसने एक नाज़ी अधिकारी को अपने अधीनस्थों से बात करते हुए सुना था। अधिकारी ने कहा कि सैलानिका के यहूदियों को उत्तर में कहीं बसाया जाएगा जहाँ वे रह सकेंगे और काम कर सकेंगे। शायद पोलैंड।

“पोलैंड?” लेव ने कहा। “पोलैंड ही क्यों?”

“कौन जाने?” बैट्राउस ने कहा। “कम से कम हम सुरक्षित तो रहेंगे।”

लेकिन यह यहाँ से बहुत दूर है। और जर्मनी के ज़्यादा करीब है। अगर वे हमसे इतनी नफरत करते हैं, तो वे हमें अपने करीब क्यों लाएंगे?

“शायद हमें नियंत्रित करने के लिए?” दूसरे व्यक्ति ने कहा।

“यह बात समझ में आती है,” दूसरे ने कहा।

"ऐसा बिल्कुल नहीं है," लेव ने कहा।

"यहाँ रहने से तो यह बेहतर है।"

“आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? यह आपका घर है।”

"अब और नहीं।"

मैं नहीं जा रहा!
और अगर हम यहीं रहे तो यहाँ हमारे लिए क्या है? हमारी दुकानें तो चली गईं। हमारे घर चले गए। क्या आप इस कूड़े के ढेर में रहना जारी रखना चाहते हैं?
"पोलैंड से बेहतर।"
"आपको कैसे मालूम?"
कुछ देर तक दोनों पुरुषों के बीच बहस चलती रही, फिर वे बिना किसी समझौते के तितर-बितर हो गए। लेकिन पुनर्वास का झूठ उनके साथ घर चला गया और गेहूँ के खेत में बहने वाली हवा की तरह बस्ती में फैल गया।

उडो को एक चाल की जरूरत थी

उसने सिगरेट का कश लिया और अपनी डेस्क को घूरने लगा। कागज़ात का ढेर लगा हुआ था। सूचियाँ। घोषणापत्र। और मौत के शिविरों के लिए रेलगाड़ियों के कार्यक्रम। इतने सारे! हर पड़ाव का मिनट-दर-मिनट ब्यौरा। वुल्फ के निर्देश स्पष्ट थे। रेल की कार्यकुशलता में कोई बाधा नहीं आनी चाहिए।
उडो मन ही मन सोचता था कि उसके नेता को ट्रेनों से इतना लगाव क्यों है। क्या यह उनका विशाल आकार था? या उनकी डरावनी गर्जना? कारण चाहे जो भी हो, वह जानता था कि अगर कोई गड़बड़ हुई तो क्या परिणाम होंगे। उसने फ्रांस में हुई एक घटना के बारे में सुना था, जहाँ प्लेटफार्म पर मौजूद यहूदियों ने विद्रोह कर दिया और भाग गए। उस अफरा-तफरी में दो जर्मन सैनिक मारे गए थे। वुल्फ बहुत क्रोधित हुआ था।
उडो को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसे यह सुनिश्चित करना था कि उसके नियंत्रण में रहने वाले यहूदी बिना किसी विरोध के उन ट्रेनों में सवार हो जाएं। उसके पास पुनर्वास का झूठ पहले से ही मौजूद था। लेकिन अपने अधिकारियों द्वारा जर्मन भाषा में यह झूठ बोलना शायद ही भरोसेमंद लगता। उडो को किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत थी जो यहूदियों को उनकी अपनी भाषा में इस विचार पर विश्वास दिला सके।
और यहीं से निको क्रिस्पिस की एंट्री हुई।
वह लड़का क्लीसोरस स्ट्रीट स्थित घर में उडो के साथ रह रहा था। पिंटो के शब्दों में, वह सचमुच बेहद ईमानदार था और उडो के हर सवाल का बिना किसी झिझक के जवाब देता था। अफसोस की बात है कि उसके पास और उपयोगी जानकारी नहीं थी, जैसे कि पहाड़ों में भागे यहूदी कहाँ छिपे हैं, या पड़ोसियों के घरों में सोना और गहने

कहाँ छिपे हो सकते हैं।
फिर भी, उडो को यकीन हो गया था कि वह लड़का किसी काम आ सकता है। वह यहूदी समुदाय में कई लोगों को जानता था, जहाँ उसका परिवार काफी सक्रिय था। अगर वह रेलवे प्लेटफॉर्म पर कामकाज सुचारू रूप से चलाने में मदद कर सके, तो उसे ज़िंदा रखने की सारी मेहनत सार्थक हो जाएगी।
निको ने पहले कभी किसी रेलवे स्टेशन के अंदर कदम नहीं रखा था।
अपने परिवार को ले जाए जाने के दो सप्ताह बाद, उसने पहली बार उस इमारत को देखा। बाहर से वह एक बड़े घर जैसी दिखती थी, जिसकी छतें ढलानदार थीं और पहली मंजिल पर बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ थीं। प्रवेश द्वार के चारों ओर पाँच कांच के पैनल लगे थे, जिनमें से दो लंबे और तीन छोटे थे। सामने की हल्की दीवारों पर नाजियों ने विजय के प्रतीक, विशाल 'V' लटका रखे थे।
निको इमारत में दाखिल हुआ और छत की ओर देखने लगा। उडो एक तरफ था, पिंटो दूसरी तरफ।
“क्या आपको यकीन है कि हम इस लड़के पर भरोसा कर सकते हैं?” उडो ने जर्मन में पूछा।
“उसे देखो,” पिंटो ने जवाब दिया। “उसे लगता है कि वह किसी साहसिक यात्रा पर है।”
निको देखने में भले ही विचलित लग रहा था, लेकिन असल में वह ध्यान से सुन रहा था और दोनों व्यक्तियों द्वारा बोली जा रही जर्मन भाषा को आत्मसात कर रहा था। विभिन्न भाषाओं को समझने की उसकी क्षमता और ग्रीक, लाडिनो, फ्रेंच, हिब्रू और कुछ अंग्रेजी बोलने की उसकी पूर्व-ज्ञातता ने इस प्रक्रिया को और भी तेज़ कर दिया।
“आज मैं तुम्हें तुम्हारा काम दिखाने जा रहा हूँ, निको,” उडो ने पिंटो की ओर इशारा करते हुए कहा। “क्या तुमने इससे पहले कभी कोई नौकरी की है?”
“असली वाला नहीं,” निको ने जवाब दिया।
"अच्छा, यह तुम्हारा पहला मौका होगा। और अगर तुम इसे अच्छे से कर लेते हो, तो तुम्हें क्या मिलेगा, यह तुम्हें पता है?"
"एक पीला तारा?"
उडो ने अपनी हंसी दबाई। "हां। मैं तुम्हें एक पीला सितारा दूंगा।"
और क्या मेरा परिवार घर वापस आ पाएगा?

"यदि आप अपना काम अच्छे से करते हैं।"
“मेरे पापा कहते हैं कि मैं मेहनती हूँ। लेकिन मेरा भाई मुझसे ज़्यादा मेहनत करता है। वो हमेशा दुकान में झाड़ू लगाता है। मैं झाड़ू लगाने में बहुत बुरा हूँ।”
उडो ने अपना सिर हिलाया। लड़का लगातार जानकारी देता जा रहा था।
वे हॉल के बीच में रुक गए। उडो के आदेश पर स्टेशन को कर्मचारियों से खाली करा दिया गया था, इसलिए अंदर केवल वे तीनों ही थे।
“ठीक है, निको। मेरी बात सुनो।” उसने प्लेटफॉर्म की ओर इशारा करते हुए कहा, “कल जब तुम आओगे, तो वहाँ बहुत सारे लोग होंगे। और एक ट्रेन भी होगी। लोगों को पता नहीं होगा कि ट्रेन कहाँ जा रही है। उनमें से कुछ भ्रमित हो सकते हैं। शायद डरे हुए भी हों।”
वे क्यों डरेंगे?
"अच्छा, अगर आपको पता ही न हो कि आप कहाँ जा रहे हैं, तो क्या आपको डर नहीं लगता?"
"कभी-कभी।"
“आपका काम उनकी मदद करना है। आप उन्हें बताएँगे कि ट्रेन कहाँ जा रही है ताकि वे इतना डरे नहीं। क्या आप ऐसा कर सकते हैं?”
"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"
“अच्छा। अब, अगर आपको कोई परिचित दिखे, तो वे शायद सोचेंगे कि आप कहाँ थे। आप उन्हें बताएँगे कि आप छिपे हुए थे। और आपने एक बहुत महत्वपूर्ण जर्मन को कहते सुना है कि ट्रेनें उत्तर की ओर पोलैंड जा रही हैं। और वहाँ सबको नौकरी मिल जाएगी।”
लेकिन मैं सचमुच छिप नहीं रहा हूँ।
"जब मैंने तुम्हें ढूंढा, तब तुम छिपे हुए थे, है ना?"
"हाँ।"
"तो, यही सच है।"
निको ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "मुझे लगता है ऐसा ही है।"
“अच्छा। अब, चलो तुम्हारी परीक्षा लेते हैं।” उडो ने अपनी बाहें मोड़ लीं। “तुम लोगों को क्या बताओगे?”
"ट्रेनें उत्तर दिशा की ओर जा रही हैं।"

"और क्या?"
वहां नौकरियां होंगी।
और आपको कैसे पता चला?
मैंने तुम्हें यह कहते हुए सुना।
“बिल्कुल सही। आप यह भी कह सकते हैं कि सभी यहूदी परिवार फिर से एक साथ आ जाएंगे।”
सभी यहूदी परिवार फिर से एक साथ आ जाएंगे।
“शाबाश।” उन्होंने प्लेटफार्म के दरवाजे की ओर इशारा किया। “अब बाहर जाओ और अभ्यास करो।”
निको की आँखें चौड़ी हो गईं। छल-कपट के साये में भी बच्चे जिज्ञासु हो सकते हैं, और वह लड़का, जिसने अपने जीवन में कभी ट्रेन की सवारी नहीं की थी, पटरियों को अपनी आँखों से देखने के लिए सचमुच उत्साहित था। वह दरवाज़े से बाहर निकल भागा।
“अब ज़ोर से बोलो, निको!” उडो चिल्लाया। “ट्रेनें पोलैंड जा रही हैं!”
“ट्रेनें पोलैंड जा रही हैं!” निको चिल्लाया।
“वहाँ हमारे नए घर होंगे!”
“वहाँ हमारे नए घर होंगे!”
और यहूदी परिवार एक साथ रहेंगे!
“परिवार एक साथ होंगे!”
निको रुक गया और उसने अपना सिर एक तरफ झुकाया, मानो वह अपनी आवाज को दूर पिएरिया पहाड़ों की ओर गूंजते हुए देख रहा हो।
मैंने भी देखा। मैंने उस लड़के को देखा, जो जीवन भर मेरे प्रति वफादार रहा, एक निर्दयी धोखेबाज के बहकावे में आ गया। कहावत कहती है कि जब ईश्वर ने सत्य को धरती पर फेंका तो वह बहुत दुखी हुआ। शायद। लेकिन जब निको क्रिस्पिस ने उन रेल की पटरियों पर अपने जीवन का पहला झूठ बोला, तो मैं रो पड़ा। मैं जंगल में छोड़े गए बच्चे की तरह रोया।

एक बहुत बड़ी शादी

पहली ट्रेन के रवाना होने से एक रात पहले, बैरन हिर्श यहूदी बस्ती में दर्जनों यहूदी एक झोपड़ी के बाहर जमा हुए। ठंड और उमस थी, इसलिए वे एक-दूसरे से सटकर

बैठे रहे और ठंड से बचने के लिए एक-दूसरे के कंधे रगड़ते रहे। हर कुछ मिनटों में, एक छोटा समूह दरवाजे से अंदर जाता रहा।

उस दिन सुबह ही जर्मनों ने घोषणा की थी कि सभी यहूदियों को अगली सुबह निकलने की तैयारी करनी चाहिए और एक निश्चित वजन और आकार का एक थैला पैक करके रखना चाहिए। इसके अलावा लोगों को कुछ भी पता नहीं था। केवल अफवाहें थीं, जिनमें उनके आगमन पर लागू होने वाले नियमों के बारे में एक अजीब अफवाह भी शामिल थी।

विवाहित जोड़ों को अपने फ्लैटों के लिए प्राथमिकता दी जाएगी।

यह सब कहाँ से शुरू हुआ, यह कोई नहीं कह सकता था। लेकिन अगर यह सच होता तो? यह समझते हुए कि बाद में स्थिति बदलने का कोई मौका नहीं होगा, परिवारों ने जल्दी से शादियाँ तय कर दीं। अनुकूलता मायने नहीं रखती थी। उम्र मायने नहीं रखती थी। प्यार में की गई शादियाँ भविष्य की योजना बनाने के बारे में होती हैं; डर में की गई शादियाँ उस डर से बचने के बारे में होती हैं।

उस रात, एक रब्बी ने झोपड़ी में एक साथ पाँच जोड़ों को इकट्ठा किया। मोमबत्ती की रोशनी में, उन्होंने उन्हें संक्षिप्त रस्मों का पालन करवाया, जिनसे उनका वैवाहिक बंधन स्थापित हो गया। कुछ बुजुर्ग पुरुष थे, जिनका विवाह इटली के साथ युद्ध में शामिल विधवाओं से हुआ था। अन्य किशोर थे। उन्होंने हिब्रू शब्दों की एक श्रृंखला को दोहराया, उन्हें धीमी और बेजान आवाज़ में बुदबुदाते हुए। कोई पीठ थपथपाना नहीं था। कोई नृत्य नहीं था। कोई केक नहीं था। उन्होंने अंगूठियों का आदान-प्रदान किया, जो कभी-कभी गोल पेपर क्लिप से बनी होती थीं, फिर वे बाहर निकल गए, ताकि अगले समूह के लिए जगह बन सके।

जब आखिरी समूह का नाम पुकारा गया, तो सेबेस्टियन पीछे की ओर घिसटता हुआ खड़ा था। उसने रोने से खुद को रोकने के लिए अपने जबड़े भींच लिए थे। उसने अभी-अभी अपना पंद्रहवाँ जन्मदिन मनाया था, जिसे उसके परिवार ने अतिरिक्त रोटी और एक टॉफी देकर मनाया था। अब वह रिवका नाम की एक गोल-मटोल सोलह वर्षीय लड़की के बगल में खड़ा था, जिसे वह मुश्किल से जानता था, सिवाय इसके कि उसका एक भाई था जो स्कूल में सेबेस्टियन को धक्का देता रहता था। उसके हाथ में उसकी दादी द्वारा दी गई अंगूठी थी। उसने उसे इतनी ज़ोर से दबाया कि उसकी हथेली पर निशान पड़ गया।

सेबेस्टियन ने इस विचार का कड़ा विरोध किया। उसने अपने माता-पिता से कहा कि वह शादी के लिए बहुत छोटा है, और उसे वह लड़की पसंद भी नहीं है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि यह सुरक्षा का मामला है, कि जब यह भयानक परीक्षा समाप्त हो जाएगी तो वह इसे किसी तरह ठीक कर लेगा, लेकिन अभी उसे उनकी बात माननी होगी। सेबेस्टियन गुस्से से लाल चेहरा किए, चिल्लाते हुए भाग गया कि उसे "एक बेवकूफ़ फ्लैट" नहीं चाहिए। वह बैरिकेड्स की ओर भागा और कंटीले तारों को घूरने लगा, उसकी आँखों में आँसू भरे थे।

मुझे उस बेचारे लड़के पर तरस आया। लेकिन वह सच नहीं बोल रहा था। रिवका नाम की लड़की से शादी न करने की उसकी असली वजह यह थी कि उसका दिल फैनी पर आ गया था। उसे डर था कि किसी और से शादी करने से वह कलंकित हो जाएगा, उसे किसी और का मान लिया जाएगा, और वह हमेशा के लिए फैनी से दूर हो जाएगा। उनके स्थानांतरण के बाद बीते हफ्तों में, सेबेस्टियन और फैनी ने बस्ती में कुछ समय साथ बिताया था, दूसरे बच्चों के साथ ताश खेलते थे या जो भी किताबें मिलती थीं, उन्हें पढ़ते थे। अपने पिता की मृत्यु के सदमे से उबर न पाने वाली फैनी ज्यादा बोलती नहीं थी। फिर भी, सेबेस्टियन के लिए, वे पल उस अंतहीन उदास दिन में एकमात्र रोशनी की तरह थे।

अब, नवविवाहित जोड़े के बीच खड़े होकर, सेबेस्टियन को फिर से फैनी का चेहरा याद आया और उसने प्रार्थना की कि उसे कभी पता न चले कि वह क्या करने वाला है। उसने नज़रें झुकाए हुए रिवका की उंगली में अंगूठी पहना दी। पंद्रह साल की उम्र में, सेबेस्टियन क्रिस्पिस ने अपनी नई पत्नी की ओर देखे बिना ही पति का रूप धारण कर लिया, मानो किसी चीज़ को न देखने से वह गायब हो जाएगी।

तीन विश्वासघात

जब प्रभु गुणों का वितरण कर रहे थे, तब विश्वास को भी उदारतापूर्वक बांटा गया। मनुष्य और पशु दोनों को अपना-अपना हिस्सा मिला। लेकिन विश्वासघात का क्या? वह केवल मानव जाति के लिए था।

और इसी के साथ हम एक तारीख पर आते हैं:

10 अगस्त, 1943

हमारी कहानी में आज तीन विश्वासघातों का दिन था। ये सभी घटनाएँ बैरन हिर्श रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर, सुबह के समय घटीं, जब सैलानिका से ऑशविट्ज़ के मृत्यु

शिविरों के लिए अंतिम ट्रेन रवाना हो रही थी।
पिछले महीनों में अठारह बार लोगों को ले जाया गया था। उडो ग्राफ के अनुसार, सब कुछ ठीक-ठाक रहा। तय समय पर। कोई घटना नहीं हुई। उडो ने प्रक्रिया को सुचारू बनाने के लिए कुछ छोटे-मोटे हथकंडे अपनाए थे, जैसे यहूदियों को अपने पैसे पोलिश ज़्लॉटी में बदलने के लिए कहना और उन्हें ऐसे क्रेडिट स्लिप देना जिन्हें कभी भुनाया नहीं जाएगा। उडो बड़े मज़े से देखता था कि कैसे ये भूखे-प्यासे मूर्ख अपनी आखिरी मुद्रा भी खुशी-खुशी सौंप देते थे, इस भरोसे में कि नाज़ी अंत में उनके साथ सही व्यवहार करेंगे। उसने तो गार्डों से सामान ऐसे उठवाया जैसे वे कुली हों।
लेकिन उसकी सबसे कारगर तरकीब निको क्रिस्पिस थी। उसने मन ही मन सोचा, यह एक छोटी सी प्रतिभा का कमाल था। लड़के ने ठीक वैसा ही किया जैसा उसे निर्देश दिया गया था, प्लेटफार्म पर मौजूद भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए, नौकरियों, घरों और "पुनर्वास!" के वादे फुसफुसा रहा था। इससे यात्रियों के चिंतित मन में भरोसे की वह आखिरी किरण जगी जिसकी उन्हें ट्रेन के दरवाजे तक पहुंचने के लिए ज़रूरत थी।
निको, जिसने उडो द्वारा दिया गया पीला सितारा पहना हुआ था, ने जर्मन अधिकारी को यह कहते हुए सुनने की अपनी कहानी इतनी विश्वसनीय ढंग से सुनाई कि परिवारों का पुनर्मिलन होगा, कि कुछ यात्रियों ने कृतज्ञतापूर्वक उसे गले लगा लिया। कई लोग निको को आस-पड़ोस या आराधनालय से जानते थे—वे उसे चियोनी कहते थे—और उसे जीवित देखकर वे इतने उत्साहित हो गए कि उन्होंने उसकी कहानी पर विश्वास कर लिया। उडो को यह झूठा यहूदी हथकंडा अपनाने पर गर्व था और उसने फैसला किया कि वुल्फ के साथ अपनी अगली बातचीत में वह इसे साझा करेगा, और शायद वे सैन्य रणनीति पर चर्चा करेंगे।
* * *
इस दौरान उडो ने लड़के को अपने पुराने कमरे में सोने दिया। इससे उसे कुछ शांति मिली। खाने की मेज पर उडो उसे रोटी और मांस जल्दी-जल्दी खाते हुए देख रहा था।
“धीरे-धीरे,” उडो ने कहा। “पहले चबाओ और फिर निगलो।”
"लेकिन मुझे बहुत भूख लगी है," निको ने जर्मन बोलने की कोशिश करते हुए कहा।
“सेहर हंग्रीग,” उडो ने सुधार किया। “बहुत भूखा। ‘बहुत’ शब्द से पहले आता है।”
“बहुत भूख लगी है,” निको ने दोहराया।
उडो कभी-कभी उस लड़के को देखता रहता था, यह देखकर उत्सुक होता था कि वह

अपना खाली समय कैसे बिताता है, कभी शब्दकोश पढ़ता है, कभी किसी खिलौने से खेलता है, या कभी खिड़की से बाहर देखता रहता है। उडो की अपनी कोई संतान नहीं थी। उसने कभी शादी नहीं की थी। उसने खुद से कहा कि युद्ध जीतने के बाद, वह एक अच्छी, चरित्रवान और सुंदर दिखने वाली जर्मन महिला ढूंढेगा। उसे पूरा यकीन था कि एक वरिष्ठ अधिकारी होने के नाते उसके पास कई विकल्प होंगे। बच्चे तो ज़रूर होंगे।

इस बीच, निको की मासूमियत देखकर वह दंग रह गया। आखिर, लड़का अब बारह साल का हो चुका था। जब उडो उस उम्र का था, तब तक वह अपनी पहली सिगरेट पी चुका था, अपनी पहली बियर पी चुका था और बर्लिन के अपने पड़ोस के बड़े लड़कों से लड़-झगड़ कर खूब मुसीबत में पड़ चुका था।

लेकिन यह बच्चा अलग था। एक रात जब उडो ने सिरदर्द की शिकायत की, तो निको ने उसके बेडरूम का दरवाजा खटखटाया और गर्म पानी में भीगा हुआ तौलिया उसे दिया। एक और रात, जब उडो ब्रांडी पी रहा था, तो निको एक जर्मन किताब लेकर उसके पास आया और उसे थमा दिया।

"क्या आप चाहते हैं कि मैं इसे पढ़ूँ?"

निको ने सिर हिलाया।

"आपको?"

"हाँ।"

उडो अचंभित रह गया। वह जानता था कि एक छोटे यहूदी बच्चे को कहानी सुनाने से कहीं ज़्यादा ज़रूरी काम उसके पास थे। लेकिन जल्द ही उसने खुद को पन्ने पलटते हुए पाया, यहाँ तक कि अपनी आवाज़ में भी उतार-चढ़ाव लाने लगा।

जैसा कि उडो ने बताया, निको झुककर उडो के कंधे से सट गया। इस स्पर्श से उडो चौंक गया, क्योंकि उसने पहले कभी किसी बच्चे को इतना करीब नहीं देखा था। मैं आपको बताना चाहूँगा कि इससे उस आदमी का दिल पिघल गया और उसके भविष्य के कार्यों में नरमी आई। लेकिन मुझे सच्चाई बतानी है।

इससे उसमें जरा भी बदलाव नहीं आया।

* * *

अंतिम ट्रेन के आने का दिन आ गया, उमस भरी, गर्म सुबह थी और बारिश की आहट सुनाई दे रही थी। जब युद्ध शुरू हुआ था तब सैलानिका में पचास हज़ार से ज़्यादा

यहूदी थे; जब तक यह ट्रेन स्टेशन से रवाना हुई, तब तक छियालीस हज़ार यहूदियों को निर्वासित किया जा चुका था। नाज़ियों का इरादा शहर से एक-एक यहूदी को पूरी तरह से मिटा देने का था।

सुबह 10:00 बजे के कुछ ही देर बाद, लेव, तन्ना, ईवा, लाज़ारे, सेबेस्टियन, जुड़वां बेटियां बीबी और टेड्रोस, फैनी और बेकर की पत्नी सड़क पर उतरे और धीरे-धीरे रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़े। किसी अज्ञात कारण से, अन्य परिवारों के आने-जाने के बावजूद, उन्हें बैरन हिर्श की बस्ती में महीनों तक छोड़ दिया गया था।

जुड़वा बच्चों ने एक-दूसरे का हाथ पकड़ रखा था। बड़ों के पास एक-एक बैग था। लेव ने टान्ना के कंधे पर हाथ रखा, जो अपने सबसे छोटे बेटे के ठिकाने के बारे में बिना किसी जानकारी के शहर छोड़ने के विचार से रो रही थी। सेबेस्टियन पीछे-पीछे घिसटता हुआ चल रहा था, लेकिन रिवका और उसके परिवार से एक कदम आगे था, जो उसके साथ ही ट्रेन में जाने वाले थे। रिवका मुस्कुराई। सेबेस्टियन ने नज़रें फेर लीं। रेलवे स्टेशन पर, पिंटो ने सामान रखने वाले डिब्बे का निरीक्षण किया।

इस आखिरी परिवहन ने उन्हें उत्साहित कर दिया था। उडो ग्राफ ने सैलानिका में "यहूदी समस्या" का समाधान हो जाने के बाद जर्मनी लौटने की योजना का जिक्र किया था। पिंटो को मन ही मन उम्मीद थी कि वह तब चुपके से एथेंस चले जाएंगे और अपेक्षाकृत सुरक्षित माहौल में युद्ध समाप्त होने का इंतजार करेंगे।

उसने उन हज़ारों लोगों के लिए ज़रा भी पछतावा नहीं दिखाया जिन्हें उसने निर्वासित करने में मदद की थी। उसे बस ज़िंदा रहना था; यही उसने खुद से कहा। लेकिन मैं इससे भी गहरी सच्चाई जानता था। पिंटो इस आखिरी परिवहन का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था क्योंकि वह मवेशी गाड़ियों के बंद होते ही अपनी ओर घूरते हुए और अधिक हताश चेहरों को नहीं देख सकता था। वे धंसी हुई आँखें। वे झुके हुए मुँह। उसने सोचा, ज़िंदा और मुर्दों के बीच कितनी कम दूरी है। सचमुच कुछ इंच। एक दरवाज़े की चौड़ाई जितनी।

पचास गज दूर, निको ने अपने पैर फैलाए।

उसे समय सारिणी, उडो और पिंटो की योजनाओं या इस तथ्य के बारे में कुछ भी पता नहीं था कि यह ऑशविट्ज़ जाने वाली आखिरी ट्रेन थी। उसे बस इतना पता था कि उसने एक और शुक्रवार खो दिया है। युद्ध से पहले, ऐसी ही किसी सुबह, उसकी माँ रसोई में सब्त की तैयारी कर रही होतीं, अच्छे बर्तन और मोमबत्ती स्टैंड निकालतीं,

खाना चलातीं और निको की पसंदीदा, तेल और चीनी से छिड़की हुई रोटी, पैन अज़ेते वाई असुकार तैयार करतीं।

शुक्रवार की रातों में उसे अपने परिवार की सबसे ज़्यादा याद आती थी - शोर, गाना-बजाना, प्रार्थना से पहले दादाजी के खाँसने की आवाज़, या फिर प्रार्थना के दौरान हँसते-हँसते उसके भाई का उसे मेज़ के नीचे लात मारना। कभी-कभी, जब उडो ग्राफ़ बाहर होते थे, तो निको अपनी पुरानी रसोई में जाता, अलमारियाँ खोलता और रोटी, शराब और मोमबत्तियों पर प्रार्थना करता, ताकि वह प्रार्थना के शब्द न भूल जाए।

सुबह 10:30 बजे, निको ने स्टेशन में भीड़ को प्रवेश करते देखा। पिछले दिनों की तरह, वे तेज़ी से उमड़ पड़े, प्लेटफार्म भर गया, जर्मन अधिकारी उन्हें धकेलते हुए रैंप से ऊपर ले जा रहे थे और डिब्बों में भर रहे थे। निको उस अफरा-तफरी में घुस गया। उसने गहरी सांस ली। उसे लोगों के बीच धंसना, उनके उदास चेहरे देखना, उन्हें अपने सूटकेस सौंपते देखना या पहाड़ों की ओर ऐसे देखना जैसे किसी चीज़ को हमेशा के लिए अलविदा कह रहे हों, अच्छा नहीं लग रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वे इतने चिंतित क्यों दिख रहे थे, क्योंकि वे नई नौकरियों और घरों में जा रहे थे, शायद यहाँ से भी बेहतर।

लेकिन उसने अपना काम किया, जैसा कि हेर ग्राफ ने निर्देश दिया था। उसने यह अपने परिवार को घर वापस लाने के लिए किया। उसने उस दिन की कल्पना की जब वे सब फिर से एक साथ होंगे, और कैसे उसकी माँ उसे अच्छा लड़का होने के लिए धन्यवाद देगी और कैसे उसके दादाजी उसका सिर सहलाकर सहमति में सिर हिलाएंगे। निको उस पल का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था। हर रात, जब वह उडो ग्राफ को अपने माता-पिता के शयनकक्ष में सोते हुए देखता, तो उसे लगता कि उसे एक जीवन से निकालकर एक नए जीवन में डाल दिया गया है। वह अपना पुराना जीवन वापस चाहता था।

उडो स्टेशन के दरवाजे के अंदर से देख रहा था।

अब एक घंटे से भी कम समय बचा था, और उसका काम पूरा हो जाता। वह अपने अंतिम कागजात दाखिल करके इस गंदे बंदरगाह और बदबूदार मछली बाजार वाले शहर से निकल सकता था। वह जर्मनी में अपने घर जाना चाहता था। ठंडे, स्वच्छ जर्मनी में। वुल्फ से मिलना चाहता था। अधिक रणनीतिक जिम्मेदारियों वाले एक नए कार्य पर चर्चा करना चाहता था।

उसने खुद से कहा, अब एक घंटे से भी कम समय बचा है, बशर्ते सब कुछ योजना के अनुसार हो।

और फिर, कुछ योजना के मुताबिक नहीं हुआ। उडो ने ऊपर देखा तो दो जर्मन संदेशवाहक उसकी ओर तेज़ी से आ रहे थे, उनके जूतों की आवाज़ स्टेशन के फर्श पर गूंज रही थी। उन्होंने सलाम किया और उसे एक लिफाफा थमा दिया।

जब उडो ने डिब्बे से सामान निकाला तो उसने प्रतीक चिन्ह पहचान लिया। यह उसके वरिष्ठ अधिकारी, ओबरफ्यूहरर का था। निर्देश संक्षिप्त और सीधे थे।

आप परिवहन के माध्यम से ऑशविट्ज़ की यात्रा करेंगे।

आपके नए ऑर्डर वहां आपका इंतजार कर रहे होंगे।

उडो दंग रह गया। उसने कागज़ पलटकर देखा कि कहीं कुछ और तो नहीं लिखा है। बस यूँ ही? उसे शिविर में भेज रहे हैं? ट्रेन से? यह ठीक नहीं था। यह उसके लायक नहीं था। इन घृणित यहूदियों के बीच और समय बिताना? क्यों?

उसके शरीर में संदेह हावी हो गया। उसकी सांसें तेज हो गईं। उसकी गर्दन के पिछले हिस्से में गर्मी महसूस होने लगी।

कोई मुझसे दुश्मनी रखता है।

पहला विश्वासघात।

* * *

उडो के गुस्से ने उसे दरवाजे से बाहर और प्लेटफार्म पर धकेल दिया, जहां वह दुबले-पतले और थके हुए यहूदी यात्रियों से टकराता हुआ आगे बढ़ा, जिनमें एक झुकी हुई, भूरे बालों वाली बूढ़ी औरत, हांफता हुआ एक मोटा, दाढ़ी वाला आदमी, और दो युवा मूंछ वाले आदमी, जो स्पष्ट रूप से भाई थे, एक रुमाल में लिपटी रोती हुई महिला को सहारा दे रहे थे।

“मुझसे दूर रहो!” उडो गुस्से से चिल्लाया। उसने अपने दो सैनिकों को पकड़ा और उन्हें क्लीसोरस स्ट्रीट नंबर 3 पर जल्दी जाने और अपना सारा सामान लाने का आदेश दिया। वे दौड़ पड़े। भीड़ के बीच से गुजरते हुए उडो ने झुंझलाहट में आदेश दिए। “तेज़ चलो! बहुत देर लगा रहे हो! जल्दी करो, गंदे सूअरों!” यात्री उसकी निगाहों से बचते हुए एक-दूसरे के करीब आ गए।

दूर से ही पिंटो ने उडो को आते देखा। उसने मुस्कुराते हुए आगे कदम बढ़ाया। उसे पता नहीं था कि अभी-अभी क्या हुआ है, इसलिए उसने सोचा कि इस ट्रेन के जाने के बाद वह जर्मन से उसकी योजनाओं के बारे में पूछेगा।

उनका समय इससे बुरा नहीं हो सकता था।
“मेरी योजनाएँ?” उडो ने झल्लाकर कहा। “मेरी योजनाएँ बदल गई हैं! और तुम्हारी भी!”
उडो ने अपने एक अधिकारी को देखा। उसने पिंटो की ओर इशारा करते हुए चिल्लाकर कहा, "इसे भी जाना होगा!"
पिंटो जम गया। उसने अभी क्या सुना? एक लंबे यात्री ने उसे धक्का दिया और वह लगभग गिर ही गया था। टोपी पहने एक आदमी ने उसकी बांह पर ज़ोर से टक्कर मारी। जब तक पिंटो ने अपना संतुलन संभाला, उडो पीठ फेरकर प्लेटफार्म पर आगे बढ़ चुका था।
“रुको! श्रीमान ग्राफ!”
इसके बाद पिंटो को जो कुछ पता चला, वह यह था कि एक जर्मन गार्ड उसकी पीठ पर राइफल रखकर उसे एक रैंप की ओर धकेल रहा था।
“नहीं! नहीं!” पिंटो चिल्लाया। “मैं हॉन्टस्टर्मफ्यूहरर के साथ हूँ! मैं हेर ग्राफ के साथ हूँ!”
संरक्षित वर्ग के सदस्य के रूप में बोले गए वे उनके अंतिम शब्द थे। उन्हें भीड़ में धकेल दिया गया और वे भीड़ में गुम हो गए, उन हताश चेहरों में से एक बन गए जिनसे वे इतनी बेसब्री से भागना चाहते थे।
दरवाजा जोर से बंद हो गया।
दूसरा विश्वासघात।
* * *
“ट्रेन उत्तर की ओर जा रही है,” निको ने लोगों के बीच से गुजरते हुए फुसफुसाया। “सब ठीक है। डरो मत।”
सबके चेहरे उसकी ओर मुड़ गए। चिंतित आँखें। कांपते होंठ।
"क्या कहा आपने?"
“मैंने यह बात एक जर्मन अधिकारी से सुनी। वे हमें पोलैंड भेज रहे हैं। हमें नए घर और नौकरियां मिलेंगी।”
“नौकरियां?”
“हां। और हमारे परिवार फिर से एक साथ होंगे।”
निको जहाँ भी जाता, उसके पीछे फुसफुसाहटें गूंजने लगतीं। क्या तुमने सुना? हमें

नौकरियाँ मिलेंगी। हालात इतने बुरे नहीं हैं। आप सोच सकते हैं कि ये बंदी यात्री उसकी बात पर विश्वास क्यों करेंगे? लेकिन हताशा के क्षणों में लोग वही सुनते हैं जो वे सुनना चाहते हैं, भले ही उनके सामने कुछ भी हो रहा हो।

निको भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ता रहा। कुछ चेहरे उसे जाने-पहचाने लगे। उसने बेकर की पत्नी को देखा, जो उसे देखकर फूट-फूटकर रोने लगी।

“चियोनी! तुम ज़िंदा हो!”

“जी हां, श्रीमती पालिति! हमारा पुनर्वास हो रहा है! डरिए मत।”

“निको, नहीं—”

इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, एक गार्ड ने उसे आगे धकेल दिया। निको आगे बढ़ गई। प्लेटफार्म पर इतना शोर था कि कान बहरे हो रहे थे, इतने सारे लोग रो रहे थे, सवाल पूछ रहे थे, गार्ड आदेश चिल्ला रहे थे।

“परिवार फिर से मिल जाएँगे,” निको ने फुसफुसाते हुए कहा। उसने अपना हाथ मुँह के किनारे पर रखा, मानो कोई राज़ बता रहा हो। “नौकरियाँ होंगी। मैंने एक जर्मन अधिकारी से सुना है!”

उसे अपनी बगलों में पसीना टपकता महसूस हुआ। आज यहाँ बाकी दिनों के मुकाबले ज़्यादा लोग थे। वह चाहता था कि जल्दी से काम खत्म करके घर वापस चला जाए।

और फिर निको ने फैनी को देखा।

वह अपने सामने खड़ी एक महिला का हाथ पकड़े हुए थी। उसका सिर झुका हुआ था। उसके काले बाल टोपी के नीचे दबे हुए थे। निको आगे बढ़ा और उसके इतने करीब पहुँच गया कि उसका नाम पुकार सके।

"फैनी!"

उसने ऊपर देखा और धीरे-धीरे प्रतिक्रिया दी, मानो हिलने-डुलने से पहले उसके मुंह से कुछ छीलना पड़ रहा हो।

“फैनी! कोई बात नहीं! हम सब साथ होंगे! वे हमें किसी सुरक्षित जगह ले जा रहे हैं!”

फैनी ने अपना सिर झुकाया। वह मुस्कुराई। फिर उसके चेहरे के भाव बदल गए और उसकी निगाह निको के पीछे किसी पर पड़ी—तभी लड़के ने महसूस किया कि दो मोटे हाथों ने उसे बांहों के नीचे से पकड़कर जमीन से ऊपर उठा लिया।

“लोगों को ये बताना बंद करो!” एक भारी आवाज में बड़बड़ाहट सुनाई दी। “ये झूठ है। ये हमें मरने के लिए ले जा रहे हैं।”

निको गिर पड़ा। उसके जूते प्लेटफार्म पर ज़ोर से टकराए और वह लुढ़क गया। उसने ऊपर देखा तो एक लंबा-चौड़ा आदमी उसे घूर रहा था, फिर वह ट्रेन में चढ़ा और गायब हो गया। खुद को संभालते हुए, हथेलियों को पोंछते हुए, निको ने फैनी को ढूंढने की कोशिश की, लेकिन वह भी भीड़ में कहीं खो गई थी।

निको के पेट में जलन होने लगी। उस समय तक, वह बस वही कर रहा था जो उसे करने को कहा गया था, उसे पूरा यकीन था कि वह सही काम है। वह आदमी उससे ऐसा क्यों कहेगा? क्या यह झूठ है? निको को अपने दादाजी की याद आई। निको, कभी झूठ मत बोलना। भगवान हमेशा देख रहे हैं। नहीं। ऐसा नहीं हो सकता। क्या वे हमें मरने के लिए ले जा रहे हैं? सच नहीं! हेर ग्राफ ने वादा किया था कि उन सबको नौकरियां मिलेंगी। परिवारों का पुनर्मिलन होगा। वह बड़ा आदमी झूठा था! उसे झूठा होना ही चाहिए!

निको ने घूमकर हाउप्टस्टर्मफ्यूहरर को ढूँढ़ा, वह उनसे यह सवाल पूछने के लिए बेताब था, लेकिन वहाँ बहुत सारे लोग थे। उस विशालकाय व्यक्ति के शब्द उसके कानों में बार-बार गूँज रहे थे। कुछ क्षणों के लिए, उसे केवल वही शब्द सुनाई दे रहे थे।

फिर निको ने कुछ और सुना।

वह इस बात को सुनने के लिए उस सुबह से तरस रहा था जब वह सीढ़ियों के नीचे उस तंग जगह में छिपा हुआ था।

उसकी मां की आवाज।

“निको!”

हजारों आवाजों के शोर में भी यह बात साफ थी। लड़का मुड़ा और उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। वहाँ उसकी माँ थी, प्लेटफार्म से लगभग चालीस फीट दूर। वहाँ उसके पापा उसके बगल में खड़े थे। वहाँ उसके दादा, दादी, चाची, चाचा, बड़ा भाई और दो छोटी बहनें, सभी अविश्वास से उसे घूर रहे थे।

“माँ!” वह चीख उठा।

अचानक वे सब उसका नाम पुकारने लगे, मानो उनकी पूरी भाषा एक शब्द में सिमट गई हो: निको! उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसके पैर बिना सोचे-समझे दौड़ने लगे। उसने अपनी माँ को भी दौड़ते हुए देखा।

और फिर, पल भर में, वह उसे देख नहीं सका। धूसर वर्दी पहने तीन लोग उसके सामने आ गए और उसे घेर लिया।

“नहीं!” उसने अपनी माँ की चीख सुनी। निको को लगा कि किसी ने उसे पीछे से पकड़ लिया है और उसकी गर्दन पर एक जोरदार मुक्का मारा गया है।
उडो ग्राफ.
“मेरा परिवार!” निको चिल्लाया।
मैंने कहा था कि तुम उन्हें देखोगे।
मैं उनके साथ जाना चाहता हूँ! मुझे उनके साथ जाने दो!
उडो ने अपने जबड़े कस लिए। उसने मन ही मन कहा, मुझे उसे जाने देना चाहिए। उससे पीछा छुड़ा लेना चाहिए। यही नियम होता। लेकिन वह जानता था कि जिस रास्ते पर यह ट्रेन जा रही है, वहाँ निको की निश्चित मौत उसका इंतज़ार कर रही है। और उसी क्षण, अपने ही वरिष्ठों द्वारा धोखा महसूस करते हुए, उडो ने नियमों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।
“नहीं,” उसने कहा। “तुम यहीं रहो।”
इस समय तक, निको के पूरे परिवार को लकड़ी के डिब्बे में ठूंस दिया गया था। निको उन्हें देख नहीं पा रहा था। वह बेतहाशा रोने लगा और जर्मन की पकड़ से छूटने के लिए छटपटाने लगा।
मुझे जाने दो!
"आराम से, निको।"
“तुमने वादा किया था! तुमने वादा किया था!”
“निको—”
मैं पोलैंड जाना चाहता हूँ! मैं अपने नए घरों में जाना चाहता हूँ—”
"नए घर नहीं हैं, बेवकूफ यहूदी!"
निको एकदम जम गया। उसका मुंह खुला रह गया। उसकी आंखें फटी रह गईं।
लेकिन... मैंने सबको बता दिया था...
उडो ने नाक सिकोड़ी। बच्चे के चेहरे पर जो सन्नाटा छाया हुआ था, वह इतना स्तब्ध और टूटा हुआ था कि उडो ने उससे नज़रें फेर लीं।
“तुम एक माहिर झूठे थे,” उसने कहा। “शुक्र मनाओ कि तुम जिंदा हो।”
भाप की सरसराहट सुनाई दी। ट्रेन के इंजन गर्जना करते हुए चालू हो गए। उडो ने एक नाज़ी सैनिक को इशारा किया, जिसने तुरंत निको को खींचकर दूर कर दिया। फिर, उस बच्चे की ओर देखे बिना, जिसे उसने दो टुकड़ों में तोड़ दिया था, उडो गुस्से में

आगे वाले डिब्बे की ओर चल पड़ा। उसे इस परिवहन में चढ़ना पड़ रहा था, उसके योगदान को पहचाना नहीं जा रहा था, और इस बात से भी गुस्सा था कि यह नखरेबाज़ बच्चा उसकी जान बचाने के उसके प्रयासों की सराहना नहीं कर रहा था।
कुछ मिनट बाद ट्रेन चल पड़ी। निको को पकड़े हुए सिपाही को निको की देखभाल करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, इसलिए उसने निको को छोड़ दिया और सिगरेट पीने चला गया। निको दौड़कर प्लेटफार्म पर पहुंचा और पटरियों पर कूद गया। वह बुरी तरह लड़खड़ाया और गिरने से बचने के लिए उसने अपने हाथों का सहारा लिया। वह उठा और दौड़ता रहा, अपने हाथों और घुटनों पर लगी खरोंचों की परवाह किए बिना। प्लेटफार्म से देख रहे तीन जर्मन सैनिक हंसने लगे।
“तुम्हारी ट्रेन छूट गई, लड़के!” उनमें से एक चिल्लाया।
“तुम्हें काम पर जाने में देर हो जाएगी!” दूसरे ने चिल्लाकर कहा।
निको भागा। वह प्लेटफार्म से आगे निकलकर खुली जगह में चला गया जहाँ पटरियों के चारों ओर बजरी बिछी हुई थी। उसने अपनी बाहों को तेज़ी से हिलाया और पैरों को दौड़ाया, पटरी के बीच से होते हुए और मोड़ वाली पटरियों को पार करते हुए, उसके पैर क्षैतिज लकड़ी के तख्तों पर ज़ोर से पड़ रहे थे। सुबह की तेज़ धूप में, वह उस गायब होती ट्रेन का पीछा करता रहा जब तक कि उसकी साँस फूलने लगी, वह दौड़ नहीं पा रहा था और उसे ट्रेन दिखना बंद हो गई। फिर वह सिसकते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। उसकी छाती जल रही थी। उसके जूतों के तलवों से खून बह रहा था।
लड़का तो बच गया। लेकिन निको क्रिस्पिस की उसी दोपहर मौत हो गई और उसका नाम फिर कभी नहीं लिया गया। यह विश्वासघात से हुई मौत थी, उस दिन कई विश्वासघात हुए थे - एक ट्रेन प्लेटफॉर्म पर तीन विश्वासघात और उन घुटन भरे डिब्बों के अंदर अनगिनत विश्वासघात, जो अब नरक की ओर जा रहे थे।

भाग II

धुरी

सत्य एक सीधी रेखा है, लेकिन मानव जीवन एक लचीला अनुभव है। आप गर्भ से निकलकर एक नई दुनिया में कदम रखते हैं, और उस क्षण से आगे आप खुद को ढालते और समायोजित करते रहते हैं।
मैंने आपसे कई उतार-चढ़ावों से भरी कहानी का वादा किया था। तो चलिए, मैं

आपको उन महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में बताता हूँ जो हमारे चार किरदारों में से तीन के जीवन में एक ही सप्ताह में घटित होती हैं और जिनमें से प्रत्येक उनके जीवन को हमेशा के लिए बदल देती है।

हम कहानी की शुरुआत फैनी से करते हैं, जो ट्रेन से गिर जाती है।

वह अब नदी के किनारे, झाड़ियों के घने जंगल में छिपी हुई है। वह अपने हाथों को ठंडे पानी में डुबोती है और उसे अपने बाएं पैर और कोहनी पर डालती है, जो देखने में किसी खुरपी से खरोंचे हुए लगते हैं। उसके घाव गीले हो जाते हैं और फैनी दर्द से कराह उठती है।

वह कल सुबह से ही चल रही है। उसे भूख लगी है और वह थक चुकी है। उसे समझ नहीं आ रहा कि क्या वह अब भी ग्रीस में है। वह नदी किनारे के पेड़ों और उनके चारों ओर की काली मिट्टी को गौर से देखती है। क्या ये ग्रीक पेड़ हैं? ग्रीक पेड़ क्या होते हैं? वह कैसे पता लगाएगी?

ट्रेन से भागने की घटना उसके दिमाग में बार-बार कौंधती है: डिब्बे की खिड़की से तेज़ी से नीचे गिरना, ज़मीन पर ज़ोर से गिरना जिससे उसकी साँसें रुक जाती हैं, अचानक पलट जाना, कठोर, बेकाबू एहसास, आसमान/ज़मीन/आसमान/ज़मीन, जब तक कि वह आखिरकार रुक नहीं जाती, पीठ के बल ज़मीन पर पड़ी हुई, साँस लेने के लिए तड़प रही है। वह वहीं पड़ी रहती है, उसके शरीर में दर्द की लहर दौड़ती है और ट्रेन की आवाज़ धीमी होती जाती है। तभी उसे दूर से एक तेज़ आवाज़ सुनाई देती है, जिसका मतलब है कि ट्रेन ब्रेक लगा रही है।

किसी ने उसे भागते हुए देखा है।

वह अपने पैरों पर खड़ी होने की कोशिश करती है, उसका शरीर इतना दर्द कर रहा है कि ऐसा लगता है जैसे कांच से भरा कोई थैला उठाया जा रहा हो और उसके अंदर की सारी चीजें हिल रही हों। उसे एक गोली चलने की आवाज सुनाई देती है। फिर दूसरी।

वह भागती है।

वह तब तक दौड़ती है जब तक उसकी सांस फूलने लगती है। फिर वह लड़खड़ाती है। फिर वह और दौड़ती है। वह घंटों तक इसी तरह विशाल खुले मैदानों में दौड़ती रहती है, दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं देता, और अंत में, जैसे ही सूरज डूबने लगता है, उसे एक घुमावदार नदी के किनारे घने जंगल दिखाई देते हैं। वह मुट्ठी भर पानी गटकती है,

फिर एक बड़े पेड़ के तने के पास दुबक जाती है और छिप जाती है, क्योंकि उसे किसी भी क्षण नाज़ी गार्डों की आहट सुनाई देने का डर रहता है।
जब फैनी की नींद और नहीं खुल पाती, तो वह गहरी नींद में डूब जाती है। सपने में वह निको को ट्रेन स्टेशन पर देखती है, जो उसका नाम पुकार रहा होता है, लेकिन वह जवाब नहीं दे पाती। फिर वह गायब हो जाता है, और उसकी जगह सेबेस्टियन आ जाता है, जो उसे ट्रेन के डिब्बे में पकड़कर आगे धकेल रहा होता है। उसे ले जाओ!
वह हांफते हुए जाग उठी। पेड़ों की डालियों से छनकर सूरज की रोशनी आ रही थी और उसे पक्षियों के चहचहाने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। सेबेस्टियन की छवि अभी भी उसके मन में थी और उसे गुस्से की आग भड़क उठी। उसने ऐसा क्यों किया? उसने उसे बाकियों से अलग क्यों कर दिया? वह उस खिड़की से बाहर नहीं जाना चाहती थी। वह किसी जानवर की तरह पीछा नहीं किया जाना चाहती थी, न ही नदी किनारे माथे पर धूल और गर्दन में चुभते पत्थरों के साथ सोना चाहती थी। वह ट्रेन जहाँ भी जा रही थी, वह इससे बेहतर ही होना चाहिए था।
वह धूप में आंखें सिकोड़ती है। उसे अपनी सांसों की आवाज सुनाई देती है। उसे घुटन भरी तन्हाई महसूस होती है, जो उसके छोटे होते जाने के साथ-साथ बढ़ती जाती है, जब तक कि हर चहचहाता कीड़ा, नदी की हर कलकल, चीखती हुई ये शब्द न कह दे, “अकेली, फैनी! तुम बिल्कुल अकेली हो!”
वह आंसुओं के नए सैलाब को रोकने के लिए अपनी आँखें बंद कर लेती है। कुछ ही क्षण बाद, एक महिला की आवाज़ सुनकर वह चौंक जाती है।
"यहूदी?"
वह मुड़कर देखती है तो उसे कपड़ों की टोकरी लिए एक बुजुर्ग महिला दिखाई देती है। महिला ने एक लंबी भूरे रंग की स्कर्ट और सफेद सूती ब्लाउज के ऊपर भूरे रंग की जैकेट पहनी हुई है, जिसकी आस्तीनें ऊपर की ओर मोड़ी हुई हैं।
“ज़िसडो?” महिला दोहराती है।
फैनी का दिल ज़ोर से धड़क रहा है। वह इस महिला की भाषा नहीं समझ पा रही है, जिसका मतलब है कि वह अब ग्रीस में नहीं है।
“ज़िसडो?” महिला एक बार फिर पूछती है, इस बार फैनी की छाती की ओर इशारा करते हुए। फैनी नीचे देखती है। महिला उसके स्वेटर पर बने पीले तारे की ओर इशारा कर रही है। भाषा हंगेरियन है।

इस शब्द का अर्थ है "यहूदी"।
अब बारी है सेबेस्टियन की भूमिका में आए बदलाव की, क्योंकि ट्रेन अपने असली गंतव्य पर पहुंच गई है।
दरवाजे खुलते हैं और यात्री चिलचिलाती धूप से अपनी आंखों को बचाते हैं। एक पल के लिए सब शांत हो जाता है। फिर लंबे काले कोट पहने जर्मन सैनिक उन पर चिल्लाने लगते हैं।
"हटो! हटो! बाहर निकलो! हटो!"
सेबेस्टियन, लेव और परिवार के बाकी सदस्य पीछे की ओर दुबके बैठे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे कोई उन्हें गहरी नींद से जगा रहा हो। इस डिब्बे में आठ दिन बिताने के बाद उनके हाथ-पैर सुन्न पड़ गए हैं और सोचने-समझने की शक्ति कम हो गई है। उन्होंने सिर्फ रोटी के टुकड़े और सॉसेज के छोटे-छोटे टुकड़े खाए हैं। उन्होंने लगभग पानी भी नहीं पिया है। उनके गले में जलन हो रही है। मल-मूत्र इकट्ठा करने वाली धातु की बाल्टी पहले ही दिन भर गई थी; उसके बाद लोग कोनों में शौच करने लगे और उसकी दुर्गंध से ट्रेन के अंदर की हर हवा दूषित हो गई।
यात्रियों को उतरने में समय लगता है, क्योंकि कई लोग मर चुके हैं। जीवित बचे लोगों को मृतकों के बीच से लड़खड़ाते हुए, उनके बेजान शरीरों पर सावधानी से कदम रखते हुए आगे बढ़ना पड़ता है, मानो उन्हें जगाना न चाहें। जैसे ही वे सूर्य के प्रकाश की ओर बढ़ते हैं, लेव नीचे देखता है और उसे दाढ़ी वाला वह आदमी दिखाई देता है जिसने फैनी से फुसफुसाकर कहा था, "अच्छा इंसान बनो," और जिसका चेहरा जर्मन अधिकारी ने लोहे की जाली से काट दिया था। वह एक तरफ लेटा हुआ है, उसके शरीर में सांस नहीं बची है, उसकी नाक और गाल सूखे खून और मवाद से सने हुए हैं।
लेव ने कहा, "सेबेस्टियन, हम उसे यहाँ नहीं छोड़ सकते। वह एक रब्बी है। उसके पैर ले जाओ।"
वे सब मिलकर उसे उठाते हैं और लड़खड़ाते हुए रैंप से नीचे उतरते हैं, उनके पीछे टान्ना और लड़कियाँ, फिर लाज़ार्रे और ईवा, और उनके पीछे बीबी और टेड्रोस। उनके पैर कीचड़ भरी ज़मीन पर पड़ते हैं। नाज़ी सैनिक हर जगह मौजूद हैं।
“हम हर हाल में साथ रहेंगे!” लेव चिल्लाया। “समझे? हम साथ रहेंगे!”
आगे जो कुछ घटता है, वह दृश्यों और ध्वनियों का एक ऐसा सैलाब है, जिसे पंद्रह वर्षीय सेबेस्टियन एक भयंकर तूफान की तरह आत्मसात कर लेता है, मानो बिजली,

हवा, बारिश और गरज सब एक साथ आ गिरे हों। सबसे पहले चीख-पुकार शुरू होती है। अधिकारी जर्मन में आदेश चिल्ला रहे हैं, और यात्री अपने प्रियजनों के यहूदी नाम पुकार रहे हैं। आरोन! लूना! इडा! कुत्ते भौंकते हैं और अपने दांत दिखाते हैं, अपनी पट्टियों को खींच रहे हैं। पटरियों के पास लाशों का ढेर लगा रहे दो सैनिक मृत रब्बी को सेबेस्टियन की पकड़ से छीन लेते हैं। और चीख-पुकार। रोजा! इसाक! एक नाज़ी चिल्लाता है, "औरतें इधर आओ!" और सेबेस्टियन देखता है कि पत्नियों को पतियों से, माताओं को बच्चों से अलग किया जा रहा है, उनके हाथ हवा में लटके हैं। नहीं! मेरे बच्चे! वह मुड़कर देखता है कि उसकी अपनी माँ, चाची और दादी को भी खींचा जा रहा है, वे अपने पतियों से मदद के लिए चिल्ला रही हैं। सेबेस्टियन उनकी दिशा में दौड़ता है, तीन कदम ही बढ़ा पाता है कि उसके सिर पर एक जोरदार प्रहार होता है जिससे वह लड़खड़ा जाता है; एक गार्ड ने उसे लकड़ी के डंडे से ज़ोर से मारा है। उसे पहले कभी खोपड़ी पर चोट नहीं लगी थी। उसकी आँखें धुंधली हो जाती हैं जब वह अपनी गर्दन के पीछे हाथ फेरता है। उसे खून का गर्म रिसाव महसूस होता है, जिससे उसकी उंगलियाँ चिपचिपी हो जाती हैं। तभी उसके पिता उसे पीछे की ओर खींचते हुए चिल्लाते हैं, “मेरे साथ रहो, सेबी! मेरे ठीक बगल में रहो!” वह अपनी माँ को ढूंढने की कोशिश करता है, लेकिन वह सैकड़ों चेहरों में खो जाती है जो इधर-उधर भाग रहे हैं। भाग रहे हैं। सब लोग क्यों भाग रहे हैं?

रुको। उसकी बहनें! उसकी छोटी बहनें कहाँ हैं? वह उन्हें खो बैठा है। कुत्ते ज़ोर-ज़ोर से भौंक रहे हैं। इतने सारे गार्ड, इतनी सारी राइफलें, और धारीदार वर्दी पहने ये दुबले-पतले लोग पागल चींटियों की तरह आँगन में इधर-उधर भाग रहे हैं। सेबेस्टियन ट्रेन की तरफ देखता है; उसे सूटकेसों का ढेर लगा हुआ दिखाई देता है।

और चीख-पुकार। याफ़ा! एली! जोसेफ़! और आदेश। चलो! तुम सब! आदमियों को पाँच-पाँच की कतारों में बाँटा गया और आगे बढ़ाया गया, अलग-अलग वर्दी पहने नाज़ी अधिकारियों के सामने से, जिनमें से कुछ ने काले रंग के कड़े कॉलर वाली वर्दी पहनी हुई थी। जब ये अधिकारी इशारा करते, तो कैदियों को कतार से खींचकर ले जाया जाता। ऐसा लगता है कि बूढ़े और कमज़ोर लोगों को चुना जा रहा है, लेकिन यह कहना मुश्किल है। जब सेबेस्टियन वहाँ से गुज़रता है, तो एक निरीक्षण अधिकारी उसे ऊपर से नीचे तक ऐसे देखता है जैसे किसी फर्नीचर का अध्ययन कर रहा हो। वह नज़रें हटा लेता है और सेबेस्टियन अपने पिता की जैकेट के पीछे हाथ रखकर

लड़खड़ाता हुआ आगे बढ़ता है, धुंधली सी उलझन में घसीटा जा रहा है, अभी भी उसे नहीं पता कि वह किस देश में है, वह कौन सी हवा में साँस ले रहा है, या यहाँ तक कि उसके पास यह सवाल पूछने का भी समय नहीं है: यह सब क्यों हो रहा है? उसके साथ? उसके माता-पिता के साथ? उसके बाकी परिवार के साथ और उस ट्रेन में सवार सभी लोगों के साथ?

उसके भाई के बारे में सोचने का समय नहीं है।

निको रेल की पटरियों पर घूमता है।

आखिरी ट्रेन के चले जाने के घंटों बाद भी, वह पटरी के किनारे लड़खड़ाते हुए चल रहा है, इस उम्मीद में कि ट्रेन फिर से दिखाई देगी। वह पश्चिम की ओर चलता रहता है और अंततः गैलिकोस नदी और उस पर बने धातु के पुल तक पहुँचता है। रात होते ही, वह उस पुल के पास बैठ जाता है और गहरी नींद में सो जाता है।

राइफल से सीने में धक्का लगने से उसकी नींद खुल जाती है। वह चिलचिलाती धूप में आंखें सिकोड़ता है और एक नाज़ी सैनिक का चेहरा देखता है, जो जर्मन भाषा में चिल्लाता है:

“तुम यहाँ क्या कर रहे हो, लड़के? खड़े रहो!”

निको अपना कीचड़ से सना चेहरा मलता है। खड़े होने की कोशिश करने पर उसके पैरों में दर्द होता है। आज सुबह वह कुछ अलग सा महसूस कर रहा है। मानो सुन्न हो गया हो। वह सिपाही से उसकी मातृभाषा में बात करता है।

“ट्रेन,” निको कहता है। “वह कहाँ गई?”

“क्या आप जर्मन बोलते हैं?” सैनिक चौंक जाता है। “आपको यह किसने सिखाया?”

निको कहते हैं, "मैं हाउप्टस्टुरमफुहरर ग्राफ के लिए काम करता हूं।"

सिपाही के चेहरे का भाव बदल जाता है।

“ग्राफ? . . . उडो ग्राफ? . . .” वह हकलाते हुए बोला। “अगर यह सच है, तो तुम उसके साथ क्यों नहीं हो?”

सैनिक सेबेस्टियन से ज़्यादा उम्र का नहीं लगता। निको अपने पैरों को घसीटता है और अपनी उंगलियों पर ज़ोर लगाकर खुद को लंबा दिखाने की कोशिश करता है।

“ट्रेन कहाँ गई?” निको ने फिर से पूछा, उसी लहजे में जैसे वह अक्सर श्री ग्राफ को अपने आदमियों से बात करते हुए सुनता था। “कल वाली? जिसमें सारे यहूदी लोग थे? मुझे बताओ।”

सिपाही अपना सिर झुकाकर सोचने लगता है कि क्या यह लड़का चालाक बन रहा है या सरासर बेवकूफ है। शायद यह कोई परीक्षा हो?

“शिविर,” वह जवाब देता है।

“शिविर?” निको को जर्मन में यह शब्द नहीं पता। “कौन से शिविर?”

मुझे लगता है कि वे इसे ऑशविट्ज़-बिरकेनौ कहते हैं। पोलैंड में।

“और वे शिविरों में क्या करते हैं?”

वह आदमी अपनी गर्दन पर दो उंगलियां फेरता है, मानो उसे काट रहा हो।

निको के शरीर में एक सिहरन दौड़ गई। उसके मन में अपनी माँ को उसका नाम पुकारते हुए, प्लेटफार्म पर उसकी ओर दौड़ते हुए देखा। उसने अपने पिता, दादा-दादी और छोटी बहनों को उसे पुकारते हुए देखा। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। वह विशालकाय व्यक्ति सही था।

निको झूठा था।

इन सब बातों के बोझ तले लड़के के कंधे झुक जाते हैं। उसका सिर भारी पत्थर की तरह लटक जाता है। उसे इस बात की परवाह नहीं कि यह सिपाही उसके साथ क्या करेगा। उसका परिवार तो अब उसके साथ नहीं है।

मैने क्या कि?

लड़के के व्यवहार और जर्मन भाषा के उसके अजीब ज्ञान से भ्रमित होकर सैनिक ने फैसला किया कि उस पर जोखिम लेना उचित नहीं है। अगर वह उसे गोली मार देता है, और वह सचमुच हॉस्टस्टर्मफ्यूहरर के लिए काम करता है, तो उसे अपनी नौकरी गंवानी पड़ सकती है। अगर वह लड़के को जाने देता है, तो किसे पता चलेगा?

वह नदी के किनारे की ओर देखता है। वह सड़क की ओर देखता है। "सुनो, लड़के," वह कहता है। "क्या तुम्हारे पास कुछ पैसे हैं?"

निको ने सिर हिलाकर मना कर दिया। सिपाही ने अपनी जेब में हाथ डाला और नोटों का एक छोटा सा बंडल निको को दे दिया।

“आप श्री ग्राफ को बता दीजिए कि स्टर्ममैन एरिक अल्मन ने आपकी मदद की। एरिक अल्मन। समझे? उनसे कहिए कि वे मुझे याद रखें। एरिक अल्मन।”

निको पैसे लेकर सिपाही को जाते हुए देखता है। वह रात होने तक पटरियों के किनारे खड़ा रहता है। आखिरकार, अंधेरे में, वह सैलॉनिका की ओर वापस चलने लगता है। वह पटरियों का पीछा करते हुए बैरन हिर्श स्टेशन तक पहुँचता है। वहाँ से वह

क्लेइसौरास स्ट्रीट की ओर जाता है। आधी रात बीत चुकी होती है जब वह अपने परिवार के घर की सीढ़ियाँ चढ़ता है। वह अपने माता-पिता के शयनकक्ष में जाता है। वह चारों ओर देखता है। एक दराज में, उसे दुकान से अपने पिता की कुछ पुरानी सिगार मिलती हैं। वह उन्हें सूंघता है और रोने लगता है। वह उस बिस्तर पर लेट जाता है जहाँ उसके माता-पिता सोते थे। वह कंबल के नीचे दुबक जाता है, यह कामना करते हुए कि काश वह जाग जाए और सब कुछ एक साल पहले जैसा हो जाए।

इसके विपरीत, जब सुबह होती है, तो घर पहले से कहीं अधिक खाली लगता है। यहां तक कि श्री ग्राफ का सामान भी गायब हो चुका होता है।

निको सीढ़ियों से नीचे उतरता है। उसे अपना पसंदीदा तहखाना दिखाई देता है। वह दरवाजा खोलता है। अंदर उसे एक भूरे रंग का चमड़े का थैला अकेला पड़ा हुआ दिखाई देता है। वह उसे बाहर निकालता है।

यह थैला उडो ग्राफ का है, जिसे उसने सुरक्षा के लिए वहाँ छिपा रखा था। सैनिकों ने जल्दबाजी में उस तंग जगह के अंदर नहीं देखा था। निको ने जब थैला खोला तो उसे अंदर कई चीजों के साथ-साथ काफी मात्रा में यूनानी और जर्मन मुद्रा, तरह-तरह के कागजात और दस्तावेज, और नाज़ी बैज वाला एक छोटा सा डिब्बा मिला।

निको उन्हें काफी देर तक देखता रहता है। वह अपने किए पर विचार करता है। सुबह के दस बजते ही वह एक फैसला लेता है। जीवन बदलने वाले कई फैसलों की तरह, यह फैसला भी चुपचाप, बिना किसी शोर-शराबे के होता है।

निको को एक साफ कमीज मिलती है और वह उसमें से एक बैज अपनी छाती पर लगा लेता है। वह कुछ पैसे अपने जूतों में छिपा लेता है। वह चमड़े के थैले में जितना खाना भर सकता है, उतना भरता है और दरवाजे से बाहर निकलकर वापस रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ता है, जहाँ वह उत्तर दिशा में जाने वाली अगली ट्रेन का टिकट खरीदता है, जो पोलैंड की ओर जाती है।

जब उत्सुकतावश टिकट विक्रेता ने उसका नाम पूछा, तो निको ने जरा भी संकोच नहीं किया। उसने एकदम सटीक जर्मन उच्चारण के साथ झूठ बोला।

“मेरा नाम,” वह कहता है, “एरिक अल्मन है।”

प्रकाश और अंधकार की दुनिया

मैं कभी-कभी स्वर्ग में बैठे देवदूतों के बारे में सोचता हूँ, वे मेरे बारे में क्या कह रहे होंगे और इस कठोर दुनिया के बारे में उनकी क्या राय होगी। अगर आप सोच रहे हैं कि

धरती पर बिताए कुछ पल मुझे यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि काश मैं अभी भी वहीं होता, तो इसका जवाब है हाँ।

इसके बाद के महीने भी कुछ ऐसे ही थे। यह पागलों का दौर था, सत्ता के नशे में चूर नाज़ी अपनी क्रूरता में डूबे हुए थे। दुनिया का अधिकांश हिस्सा इस ओर से मुंह फेर रहा था। मैं ऐसा नहीं कर सका। सच्चाई को यातना और अपमान के हर कृत्य को स्वीकार करना पड़ा, हर उस कैदी को जिसे जानवर की तरह कीचड़ में रेंगने के लिए मजबूर किया गया, शिविरों में पहुँचने वाले पीड़ितों के हर नए डिब्बे को, जिनके हाथ तख्तों को कुरेदते हुए दया की भीख मांग रहे थे, लेकिन उन्हें कोई दया नहीं दिखाई गई।

यह मानव इतिहास का एक ऐसा दौर था जब दुनिया दो हिस्सों में बंट गई थी: एक वे लोग जो इस भयावहता के बारे में कुछ नहीं कर रहे थे और दूसरे वे लोग जो इसे रोकने की कोशिश कर रहे थे। प्रकाश और अंधकार की दुनिया।

तो हाँ, ऐसे क्षण भी थे जब मैंने खुद को स्वर्ग में होने की कामना की। लेकिन ऐसे क्षण भी थे, कोमलता और अप्रत्याशित गर्माहट के क्षण:

संयोगवश, फैनी को नदी के किनारे खड़ी महिला के हवाले नहीं किया गया, बल्कि उसे महिला के घर ले जाया गया और उसे मेमने के टुकड़ों और गाजर के साथ सूप का एक कटोरा दिया गया।

सेबेस्टियन ऑशविट्ज़ में उस पहली रात मरा नहीं; वह एक गंदी चारपाई पर अपने पिता से लिपट गया, और अंधेरे में, लेव ने अपने बेटे को कांपने से रोकने के लिए उसे अपनी बाहों में कसकर पकड़ लिया।

निको ने कई दिनों तक ट्रेनों में सफर किया, इस दौरान उसने अपने खाने का भुगतान करना और बिना किसी शक के अपने टिकट दिखाना सीखा। एक दिन एक कुली ने उसका प्रभावशाली नाज़ी बैज देखा और उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा है।

“अपने परिवार से मिलने के लिए,” निको ने कहा।

प्रकाश और अंधकार की दुनिया। सबसे बड़ी क्रूरता, सबसे बड़ा साहस। सत्य के क्षेत्र में होना एक अजीब दौर था। फिर भी मैं वहीं था, मुँह मोड़ने में असमर्थ।

बारह महीने बाद

“उसे मारो!” गार्ड चिल्लाया।

सेबेस्टियन ने छोटी सी चाबुक उस आदमी की पीठ पर झटक दी।

"और जोर से!"
सेबेस्टियन ने बात मान ली। वह आदमी हिला तक नहीं। कुछ मिनट पहले ही काम के दौरान वह गिर पड़ा था और तब तक ज़मीन पर पड़ा रहा जब तक कि गार्ड ने उसे नहीं देख लिया। उसका चेहरा गहरे लाल धब्बों से भरा हुआ था और उसका मुंह कीचड़ में खुला हुआ था, मानो वह मिट्टी को चबा रहा हो।
"क्या तुम इतने कमजोर हो कि उसे जगा भी नहीं सकते?" गार्ड ने सिगरेट जलाते हुए कहा।
सेबेस्टियन ने गहरी साँस ली। उसे किसी को पीड़ा पहुँचाना बिल्कुल पसंद नहीं था। लेकिन अगर उस आदमी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, तो उसे मृत मान लिया जाएगा और उसके शरीर को लाल ईंटों वाले श्मशान में जला दिया जाएगा। उस समय, चाहे वह जीवित हो या नहीं, कोई मायने नहीं रखेगा।
“दिमाग में सपने देखना बंद करो,” गार्ड गुर्राया।
कैदियों की मौत का पता लगाने के लिए बैल की नस को झटका देना, सेबेस्टियन का उस शिविर में नवीनतम काम था जिसे जर्मन नाम कोनज़ेंट्रेशन्सलागर ऑशविट्ज़ से जाना जाता था। अपने आगमन के बाद से एक वर्ष में, सेबेस्टियन ने कई काम किए थे, हमेशा एक काम से दूसरे काम की ओर भागता रहता था (चलना मना था), जब भी कोई एसएस अधिकारी पास आता तो वह अपनी टोपी उतार देता और अपनी आँखें नीचे कर लेता था। वह दिन भर काम करता था और रात को खाने के लिए उसे केवल एक टुकड़ा रोटी और कुछ बेस्वाद सूप मिलता था। कभी-कभी पहरेदार कैदियों की भीड़ में मांस का एक टुकड़ा फेंक देते थे और उन्हें उसे पकड़ने के लिए कुत्तों की तरह लड़ते हुए देखते थे, जीतने वाला उसे अपने गले से नीचे उतार लेता था, हारने वाले रेंगते हुए भाग जाते थे।
सेबेस्टियन की तरह युवा और बलवान होने का ऑशविट्ज़ में एक सुखद लेकिन दुखद परिणाम था; आप वहाँ पहुँचते ही गैस चैंबर में मारे जाने से बच गए। इसके बजाय, आपका शरीर सप्ताह दर सप्ताह कमजोर होता गया, भूखा रखा गया, पीटा गया, ठंड से ठिठुराया गया, आपकी बीमारियों को नजरअंदाज किया गया, जब तक कि, बर्फ में पड़े इस आदमी की तरह, आप गिर नहीं गए।
“उसे और जोर से मारो,” गार्ड ने गुस्से से कहा, “वरना मैं तुम्हें मारूंगा।”
सेबेस्टियन ने चाबुक झटकाया। वह इस कैदी को पहचान नहीं पाया, जो लगभग

पचास वर्ष का लग रहा था। शायद वह अभी-अभी ट्रेन से आया था और यहाँ उतरने वाले अन्य लोगों की तरह, उसके कपड़े उतार दिए गए थे, उसके शरीर के सारे बाल मुंडवा दिए गए थे, उसे पूरी रात एक स्नान कक्ष में खड़ा रखा गया था, उसके नंगे पैर ठंडे, टपकते पानी में भीगे हुए थे, और फिर सुबह उसे कठोर कीटाणुनाशक से रगड़ा गया था, और फिर उसे नग्न अवस्था में आंगन से दौड़ाकर उसके धारीदार कैदी के कपड़े और टोपी लाने के लिए भेजा गया था। शायद यह उसके जबरन श्रम का पहला दिन था, और वह पहले ही एक थकी हुई मक्खी की तरह गिर पड़ा था।

या शायद वह यहां कई सालों से रह रहा था।

"दोबारा!"

सेबेस्टियन ने आदेश का पालन किया। पता नहीं क्यों, उसे यहाँ जो काम दिए गए थे, वे बेहद भयानक थे। जहाँ दूसरे लोग ईंटें बनाते या खाइयाँ खोदते थे, वहीं सेबेस्टियन को शवों को ढोना पड़ता था, या ट्रेन यात्रा में जान गंवाने वालों के शवों को उठाना पड़ता था।

“एक बार और, फिर काम खत्म,” गार्ड ने कहा।

सेबेस्टियन ने चाबुक को जोर से झटका दिया। उस आदमी की आंखें थोड़ी सी खुलीं।

"वह जीवित है," सेबेस्टियन ने कहा।

“धिक्कार है! उठो, यहूदी! अभी!”

सेबेस्टियन उस आदमी के चेहरे को देखता रहा। उसकी आँखें किसी करवट पड़ी मछली की तरह थीं, बेजान और भावहीन। सेबेस्टियन सोच रहा था कि क्या वह निर्देशों को सुन भी पा रहा है, उनके निहितार्थों को समझना तो दूर की बात है। क्या उसे एहसास था कि यही वह निर्णायक क्षण है जब उसे इस दुनिया में रहना है या अगली दुनिया में जलाकर राख कर दिया जाना है?

मैंने कहा, उठो, यहूदी!

खुद को परवाह न करने की सीख देने के बावजूद, सेबेस्टियन का खून खौल रहा था। चलो, महोदय। आप जो भी हों, इसे याद रखें। उन्हें जीतने मत दीजिए। उठिए।

“मैं तुम्हें पाँच सेकंड का समय दे रहा हूँ!” गार्ड चिल्लाया।

उस आदमी का सिर थोड़ा ऊपर उठा, जब तक कि वह सीधे सेबेस्टियन की ओर नहीं देखने लगा। उसने एक तीखी सी घरघराहट की आवाज़ निकाली, जैसे कोई जंग लगी हुई सी चीख हो। सेबेस्टियन ने किसी दूसरे इंसान से ऐसी आवाज़ पहले कभी नहीं

सुनी थी। एक पल के लिए दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा। फिर उस आदमी की आँखें बंद हो गईं।

“नहीं, नहीं,” सेबेस्टियन ने बुदबुदाते हुए कहा। उसने चाबुक को बार-बार पटका, मानो उस आदमी को होश में लाने के लिए पीट रहा हो।

“बस करो,” गार्ड ने कहा। “हम समय बर्बाद कर रहे हैं।”

उसने दो अन्य कैदियों को इशारा किया, जो दौड़कर आए, उस आदमी को उठाया और उसे श्मशान घाट ले गए, इस बात की परवाह किए बिना कि उसमें अभी भी सांस बाकी है या नहीं। जब वे शव को ले जा रहे थे, तो उन्होंने घुटनों के बल बैठे, अपनी चाबुक को घूरते हुए, अनजाने में मौत के दूत की भूमिका निभा रहे लंबे, दुबले-पतले, काले बालों वाले लड़के की ओर देखा तक नहीं।

वह सोलह वर्ष का था।

* * *

उस रात, जिस ब्लॉक में वह, उसके पिता और दादा सोते थे, सेबेस्टियन ने किसी भी प्रार्थना में भाग लेने से इनकार कर दिया। यह एक ऐसा रिवाज था जिसे उन्होंने लाज़ार्रे के कहने पर स्थापित किया था, ताकि वे अपने अतीत, अपने विश्वास और अपने ईश्वर को न भूलें। अपनी गंदी चारपाइयों पर लेटे हुए, वे अंधेरे में धीरे-धीरे प्रार्थना कर रहे थे, जबकि एक साथी कैदी जानबूझकर खांस रहा था ताकि पहरेदार उन्हें सुन न सकें। प्रार्थना समाप्त होने पर, लाज़ार्रे, जो अब अपने पुराने मोटे शरीर का कंकाल मात्र रह गया था, हर किसी से उस दिन के लिए एक ऐसी बात बताने को कहता जिसके लिए वे आभारी थे।

एक व्यक्ति ने कहा, "मैंने एक चम्मच अतिरिक्त सूप लिया था।"

“मेरा सड़ा हुआ दांत आखिरकार गिर गया,” दूसरे ने कहा।

मुझे पीटा नहीं गया था।

मेरे पैर से खून बहना बंद हो गया।

मैं रात भर सोता रहा।

"जो गार्ड मुझे प्रताड़ित कर रहा था, उसका तबादला दूसरे ब्लॉक में कर दिया गया।"

मैंने एक पक्षी देखा।

सेबेस्टियन के पास कहने को कुछ नहीं था। वह चुपचाप सुनता रहा जब उसके पिता और दादा उसकी दादी ईवा के लिए कद्दिश की प्रार्थना बुदबुदा रहे थे। ईवा को यहाँ

आने के पहले ही दिन नाजियों ने बूढ़ा समझकर गैस चैंबर में डालकर मार डाला था। उन्होंने जुड़वां बच्चियों अन्ना और एलिज़ाबेथ के लिए भी कद्दिश पढ़ी, जिन्हें नाजी डॉक्टरों ने प्रयोगों के लिए ले लिया था, जिनके बारे में सौभाग्य से किसी को पता नहीं था। उन्होंने बीबी और टेड्रोस के लिए भी कद्दिश पढ़ी, जो पहली सर्दी भी नहीं झेल पाए। और अंत में, उन्होंने तन्ना के लिए भी कद्दिश पढ़ी, जिसकी यहाँ आने के पाँचवें महीने में टाइफस से मृत्यु हो गई। उसके ब्लॉक की महिलाओं ने उसकी बीमारी के लक्षणों को छिपाने की कोशिश की, काम पर जाते समय उसे भूसे से ढक देती थीं। लेकिन एक नाजी गार्ड ने उसे अपने बिस्तर पर कांपते हुए देख लिया, और उसी दोपहर उसे मौत के घाट उतार दिया गया। श्मशान की चिमनी से निकले काले धुएँ से निकली राख के अलावा उसे दफनाने के लिए कुछ नहीं बचा था।

प्रार्थना समाप्त होने के बाद, लाज़ारे और लेव सेबेस्टियन के पास सिमटकर बैठ गए। दोनों बड़े पुरुषों ने किशोर के प्रति सुरक्षात्मक भाव दिखाया, शायद इसलिए कि अब वह उनके परिवार का आखिरी बच्चा बचा था।

“क्या बात है, सेब्बी?”

मुझे प्रार्थना करने का मन नहीं कर रहा है।

हम तब भी प्रार्थना करते हैं जब हमारा मन नहीं करता।

“किसलिए?”

"इसका अंत करने के लिए।"

सेबेस्टियन ने सिर हिलाया। "यह तब तक खत्म नहीं होगा जब तक हम मर नहीं जाते।"

“इस तरह बात मत करो।”

“यह सच है।”

सेबेस्टियन ने नज़रें फेर लीं। “आज एक आदमी। वो एक मिनट के लिए ज़िंदा था। मैंने उसे वापस लाने की कोशिश की। लेकिन उन्होंने उसे फिर भी जला दिया।”

लाज़ार्रे ने लेव की ओर देखा। कहने को क्या था?

"उस आदमी की आत्मा के लिए प्रार्थना करो," लाज़ार्रे ने फुसफुसाते हुए कहा।

सेबेस्टियन चुप रहा।

लेव ने आगे कहा, "और अपने भाई के लिए प्रार्थना करो।"

मुझे ऐसा क्यों करना चाहिए?

क्योंकि हम चाहते हैं कि ईश्वर उसकी रक्षा करे।
"जैसे कि वह हम पर नजर रखता था?"
“सेब—”
“निको नाजियों के लिए काम कर रहा था, पापा।”
हमें नहीं पता कि वह क्या कर रहा था।
“वह हमें धोखा दे रहा था। वह झूठ बोल रहा था!”
“वह कभी झूठ नहीं बोलता,” लाज़ार्रे ने कहा। “उन्होंने उसके साथ कुछ तो किया होगा।”
"तुम हमेशा उसका बचाव क्यों करते हो?"
“सेब, अपनी आवाज़ धीमी करो,” उसके पिता ने फुसफुसाते हुए कहा। उन्होंने अपने बेटे के कंधे को छुआ। “तुम्हें अपने भाई को माफ करना होगा। तुम यह जानते हो।”
“नहीं। अगर आप चाहें तो मैं प्रार्थना करूँगी। लेकिन उसके लिए नहीं। मैं किसी और चीज़ के लिए प्रार्थना करूँगी।”
लेव ने आह भरी। "ठीक है। किसी अच्छी बात के लिए प्रार्थना करो।"
सेबेस्टियन उन सभी अच्छी चीजों के बारे में सोचने लगा जिनके लिए वह प्रार्थना कर सकता था, उन सभी अच्छी चीजों के बारे में जो वह चाहता था लेकिन अब उसे नहीं मिल सकती थीं। एक गर्म भोजन। एक दिन की चैन की नींद। इस नरक से बाहर निकलकर कभी पीछे मुड़कर न देखने की आजादी।
अंत में, जैसा कि अक्सर युवा पुरुष करते हैं, उसने अपने दिल की इच्छा के लिए प्रार्थना की।
उसने फैनी को एक बार फिर देखने की प्रार्थना की।

घास की रातें

नदी किनारे फैनी को ढूंढने वाली महिला गिजेला नाम की एक मोटी हंगेरियन दर्जी थी, जिसके पति सैंडोर की दो साल पहले युद्ध में मृत्यु हो गई थी।
हंगरी ने वुल्फ के साथ एक तरह से गठबंधन कर लिया था, इसलिए ज़ाहिर तौर पर सैंडोर नाज़ी विचारधारा के लिए लड़ रहा था। लेकिन गिज़ेला युद्ध की एक कड़वी सच्चाई जान चुकी थी: दुःख किसी का पक्ष नहीं लेता। सैंडोर की मृत्यु हो गई। उसका शव घर भेज दिया गया। वह तीस वर्ष की उम्र में विधवा हो गई, एक खाली बिस्तर पर सोती रही। कारण कोई मायने नहीं रखता था।

जब गिजेला ने फैनी को नदी किनारे छिपा हुआ देखा, तो वह जान गई कि वह एक यहूदी है, जिससे वह त्रासदी से भागी हुई शरणार्थी बन गई। यह एक ऐसी बात थी जो उन दोनों में समान थी।

इसलिए वे दोनों रात होने तक साथ-साथ इंतज़ार करते रहे। फिर गिज़ेला चुपके से फैनी को वापस पहाड़ी पर बसे उस गाँव में ले गई जहाँ वह रहती थी। उसने बच्ची को सूप का एक कटोरा दिया, जिसे उसने पल भर में चट कर लिया, और अपने घर के पीछे बने छोटे से मुर्गीखाने में सोने की जगह बना दी। उसने फैनी को कुछ पुराने कपड़े दिए और पीले तारे वाली अपनी पोशाक को चूल्हे में जला दिया। वह उसे समझाना चाहती थी कि यही बेहतर है, क्योंकि उसके कई हंगेरियन पड़ोसी यहूदियों को नाज़ियों के बराबर ही खतरा मानते थे, और अगर उन्हें पता चल जाता कि वह किसी यहूदी को पनाह दे रही है, तो दोनों को जान से मार दिया जा सकता था। लेकिन उस औरत और बच्ची के बीच एक शब्द भी नहीं बोला गया। वे एक-दूसरे से बात नहीं कर रही थीं, बल्कि एक-दूसरे पर चिल्ला रही थीं, और अपनी बात समझाने के लिए हाथों का इस्तेमाल कर रही थीं।

गिजेला ने हंगेरियन भाषा में जमीन पर हाथ मारते हुए कहा: “यहीं रहो। तुम्हें यहीं रहना होगा। यहीं। इसी जगह पर।”

फैनी ने ग्रीक भाषा में उत्तर दिया: "भोजन के लिए धन्यवाद।"

गिजेला: "बाहर सुरक्षित नहीं है।"

फैनी: “मैं ट्रेन में थी। मैं बच निकली।”

गिजेला: “यहां के लोग यहूदियों को पसंद नहीं करते। मेरे लिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हम सब ईश्वर की संतान हैं।”

फैनी: "क्या आपको पता है कि ट्रेन कहाँ जा रही थी?"

गिज़ेला: “यहाँ। तुम्हें यहीं रहना होगा। समझे?”

फैनी: "उन्होंने मेरे पिता को मार डाला।"

गिज़ेला: “सूप? क्या आपको सूप पसंद है?”

फैनी: “मुझे आपकी बात समझ नहीं आई। मुझे खेद है।”

गिजेला: "मुझे आपकी बात समझ नहीं आई। मुझे खेद है।"

गिजेला ने आह भरी, फिर हाथ बढ़ाकर फैनी का हाथ पकड़ लिया। उसने उसका हाथ अपने सीने से लगा लिया।

“गिजेला,” उसने धीरे से कहा।
फैनी ने भी वही इशारा दोहराया।
“फैनी,” उसने कहा।
पहली रात के लिए इतना ही काफी था। गिज़ेला ने अपने पीछे लकड़ी का दरवाजा बंद कर दिया, और फैनी भूसे के बड़े ढेर पर गहरी नींद में सो गई।
* * *
अगले कुछ महीनों में, गिज़ेला और फैनी ने अपने दिनचर्या में एक नियमितता बना ली। फैनी सूर्योदय से पहले उठकर घर में प्रवेश करती, जहाँ वह और गिज़ेला साथ में ओटकेक और जैम का नाश्ता करतीं और हंगेरियन भाषा में बातें करतीं। बाद में, जब गिज़ेला कपड़े धोने या सिलवाने के लिए गाँव का चक्कर लगातीं, तो फैनी मुर्गीखाने में छिप जातीं। सूरज ढलने पर, वह गिज़ेला के साथ रात के खाने के लिए वापस आतीं, जिसमें वे जो कुछ भी इकट्ठा कर पातीं, जैसे आलू, लीक, ब्रेड सूप, खातीं। कभी-कभार, गिज़ेला खमीर के आटे से पकौड़ी बनातीं, जिसमें थोड़ा सा दही पनीर भरा होता। फैनी आटा बेलने में उनकी मदद करतीं।
रविवार को गिजेला कैथोलिक चर्च जाती और लड़की के जीवित रहने के लिए मौन प्रार्थना करती। वह अपने साथ लाल माला की एक थैली ले जाती और भगवान से प्रार्थना करते समय उसे आपस में जोड़े रखती।
समय के साथ, उनके बीच एक रिश्ता पनपा। उनकी शब्दावली बढ़ी। फैनी और गिज़ेला अपने परिवारों के बारे में बातें साझा करने लगीं और उन्होंने पाया कि दोनों ने अपने जीवन में जो दुख झेले थे, उनसे वे एक-दूसरे से जुड़ गई थीं। गिज़ेला ने बताया कि मुर्गीखाना कभी उस घोड़े का अस्तबल हुआ करता था जिसे उसे अपने पति की मृत्यु के बाद बेचना पड़ा था। फैनी ने बताया कि कैसे चलती ट्रेन से गिरने के बाद वह सख्त घास पर लुढ़कती हुई भागी और गोलियों की आवाज सुनकर जान बचाई।
गिज़ेला ने सिर हिलाया। “जब यह युद्ध समाप्त हो जाएगा, तो तुम्हें भागना नहीं पड़ेगा। तब तक, तुम किसी पर भरोसा नहीं कर सकते, समझे? पड़ोसियों पर नहीं। पुलिस पर नहीं। किसी पर भी नहीं।”
“युद्ध कब समाप्त होगा?” फैनी ने पूछा।
"जल्द ही।"
“गिसेले?”

"हाँ?"
जब यह समाप्त हो जाएगा...
"हाँ?"
मैं सबको कैसे ढूंढूंगा?
सर्दी का मौसम आ गया, और अपने साथ 1944 का साल भी ले आया।
जैसे-जैसे युद्ध बढ़ता गया, आपूर्ति कम होती गई। खाने-पीने की चीजें कम होती गईं। रोटी भी महंगी हो गई। गिज़ेला ने अतिरिक्त सिलाई और धुलाई का काम अपने ऊपर ले लिया। वह लगभग पूरी रात सिलाई करती, सुबह नदी में कपड़े धोती और दोपहर में सामान पहुँचाती। कुछ शामों को जब फैनी चुपके से घर में आती, तो उसे गिज़ेला सिलाई की मेज पर सिर नीचे करके सोती हुई मिलती। वह उस पहले दिन से कहीं अधिक उम्रदराज लग रही थी जब वे जंगल में मिली थीं।
“मैं आपकी मदद करती हूँ,” फैनी ने कहा। “मैं अपनी माँ के साथ कपड़े सिला करती थी।”
“ठीक है,” गिजेला ने कहा।
रात के खाने के बाद, वे दोनों घंटों साथ-साथ सिलाई करती रहीं, गिज़ेला फैनी को बटन लगाने या कपड़े की चौखट सिलने की बारीकियां सिखाती रहीं। यह सिलसिला कई हफ्तों तक चलता रहा। एक रात, गिज़ेला ने एक कपड़ा नीचे रखा और फैनी के हाथ पर अपना हाथ रख दिया।
"क्या मैं तुम्हें कुछ बता सकता हूँ?"
"हाँ?"
“मुझे विश्वास है कि भगवान ने तुम्हें मेरे पास भेजा है। सैंडोर के युद्ध में जाने से पहले, हम एक बच्चा पैदा करने की उम्मीद कर रहे थे। उसने कहा कि उसे एक बेटी चाहिए। मैंने उससे पूछा, 'बेटा क्यों नहीं?' उसने कहा कि बेटा सैनिक बन सकता है और सैनिक युद्ध में जाकर शहीद भी हो सकता है। उसने कहा कि वह नहीं चाहता कि मैं अपने बच्चे को खोने के गम से परेशान होऊं।”
उसने अपने होंठ दबाए। "इसके बजाय, मैंने अपना पति खो दिया।"
फैनी ने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया।
"मैं जो कह रही हूँ," गिज़ेला ने फुसफुसाते हुए कहा, "वह यह है कि जब यह युद्ध समाप्त हो जाएगा, अगर तुम मेरे साथ रहना चाहो तो रह सकते हो।"

फैनी को अपने भीतर एक गर्माहट महसूस हुई, ऐसी गर्माहट जो उसने लंबे समय से महसूस नहीं की थी। तेरह साल की उम्र में, उसके पास इसे समझाने के लिए शब्द नहीं थे। लेकिन मैं तुम्हें बता सकती हूँ कि इसे क्या कहते हैं।

अपनापन।

* * *

अगले दिन, गिज़ेला के जाने के बाद, फैनी ने उसकी मदद करने का और भी ज़्यादा प्रयास करने का निश्चय किया। सिलाई का बहुत सारा काम अभी भी अधूरा था, और भूसे में छिपकर, गिज़ेला द्वारा दी गई उन्हीं कुछ किताबों के साथ समय बिताने में उसे व्यर्थ सा महसूस हो रहा था। वह मुर्गीखाने से घर तक चुपके से जाती थी, पड़ोसियों की नज़र से बचने के लिए ज़मीन पर रेंगती हुई। अंदर पहुँचकर वह काम में जुट गई। खिड़की से धूप को अंदर आते देख उसे ताज़गी और प्रेरणा का एहसास हुआ। सैलानिका में शुरू हुए उस सारे पागलपन के बाद यह पहली बार था जब उसे सामान्य जीवन का अनुभव हुआ था।

दोपहर तक, तीन गिलास पानी पीने के बाद, उसे शौचालय जाने की ज़रूरत महसूस हुई। बाहर निकलते समय वह सावधानी बरत रही थी। लेकिन कुछ मिनट बाद जब वह घर लौटी, तो सिलाई कक्ष में घुसते ही उसका सामना हरे रंग के ओवरकोट और उसी रंग की टोपी पहने, कपड़ों का एक गट्ठा लिए एक अधेड़ उम्र की महिला से हुआ।

महिला के चेहरे पर हैरानी के भाव थे। उसकी घनी भौहें ऊपर उठ गईं।

“तुम कौन हो?” उसने पूछा।

फैनी उस महिला को देखकर—या यूं कहें कि किसी को भी देखकर—इतनी चौंक गई कि वह कोई प्रतिक्रिया नहीं दे पाई।

“मैंने आपका नाम पूछा था,” महिला ने कहा।

फैनी ने घबराकर निगल लिया। वह ठीक से सोच नहीं पा रही थी।

“गिजेला...” उसने फुसफुसाते हुए कहा।

“तुम गिज़ेला नहीं हो। मैं गिज़ेला को जानता हूँ। गिज़ेला ने ही इन शर्टों के बटन ठीक किए थे।”

“मेरा मतलब था... मैं गिज़ेला की मदद करती हूँ।” फिर उसने आगे कहा, “चोकोलोम,” जो हंगरी में एक बुजुर्ग महिला को संबोधित करने का तरीका है।

महिला ने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया, मानो वह फैनी के आसपास की हवा को

सूंघ रही हो।
“ये कैसी बोली है? क्या आप बल्गेरियाई हैं?”
"नहीं।"
“तुम्हारे बाल। क्या तुम यूनानी हो? तुम कहाँ से आए हो?”
"मुझें नहीं पता । । ।"
“क्या तुम्हें नहीं पता कि तुम कहाँ से आए हो?”
मैं यहीं का रहने वाला हूँ। यहीं का!
“तुम झूठ बोल रहे हो। गिज़ेला कहाँ है? क्या उसे पता है कि तुम उसके घर में हो? मैं गिज़ेला से मिलना चाहता हूँ!”
फैनी का दिल इतनी तेज़ी से धड़क रहा था कि उसे लगा जैसे वह वहीं ज़मीन पर गिर जाएगी। उसके दिमाग में बस भागने का ही ख्याल था। और उसने वही किया। पिछले दरवाजे से निकलकर वह जंगल की ओर भागी, और उस औरत की चीखती हुई आवाज़, "कहाँ जा रही हो, लड़की?" उसके पीछे धीरे-धीरे गायब हो गई।
* * *
सूरज डूबने तक फैनी पेड़ों में छिपी रही। वह सायरन की आवाज़ या सैनिकों के भारी जूतों की आहट सुनने का इंतज़ार करती रही। पर कुछ सुनाई नहीं दिया। आखिरकार, उसने गिज़ेला के रसोईघर में बत्ती जलते हुए देखी। आमतौर पर यही संकेत होता था कि फैनी के लिए मुर्गीखाने से बाहर आना सुरक्षित है। वह घुटनों के बल रेंगती हुई घर तक पहुँची और फिर दरवाज़े पर हल्के से दस्तक दी। गिज़ेला ने दरवाज़ा खोल दिया।
“क्या हुआ?” गिजेला ने पूछा। “तुम ज़मीन पर क्यों हो?”
फैनी ने दाएं-बाएं नजर डाली। सब कुछ सामान्य लग रहा था।
“फैनी? क्या हुआ?”
उस पल, फैनी सच कबूल कर सकती थी। वह गिज़ेला को उस सफ़ेद बालों वाली महिला के साथ हुई मुलाक़ात के बारे में बता सकती थी। शायद हालात कुछ और होते।
लेकिन झूठ कई रूपों में सामने आता है; कभी-कभी तो यह सुरक्षा का दिखावा करता है। फैनी नहीं चाहती थी कि गिज़ेला डर जाए या यह सोचे कि फैनी का वहाँ रहना बहुत खतरनाक है। इसलिए उसने उस घटना का ज़िक्र तक नहीं किया।
“सब ठीक है,” फैनी ने उठते हुए कहा। “मुझे माफ करना अगर मैंने तुम्हें डरा दिया।”

मैंने आपकी सिलाई देखी। धन्यवाद।
"आपका स्वागत है।"
“लेकिन, फैनी, कृपया दोबारा ऐसा करने की कोशिश मत करना। यह खतरनाक है। कोई तुम्हें देख सकता था।”
फैनी ने सिर हिलाया। "हाँ। आप सही कह रहे हैं।"
गिज़ेला एक पल के लिए रुकी, फिर अपने बेडरूम में गई और मालाओं की थैली लेकर वापस आई। उसने सफेद दस्ताने पहने हुए थे, वही दस्ताने जो वह चर्च जाते समय पहनती थी।
क्या आपको ये मोती दिख रहे हैं?
"हाँ।"
"क्या तुम्हे पता है कि वे क्या है?"
आप उनके साथ प्रार्थना करें।
“जी हाँ। लेकिन ये सामान्य माला के मोती नहीं हैं। ये मटर के दाने हैं। जेक्विरिटी मटर के दाने।”
वे बहुत सुंदर हैं।
गिज़ेला ने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा, “ये ज़हर हैं। अगर आप एक भी खा लें तो आपकी मौत हो सकती है।”
फैनी उन छोटी लाल चीज़ों को घूर रही थी। वे कितनी मासूम लग रही थीं। गिज़ेला ने उन्हें वापस थैली में रख दिया। “मेरे पति ने जाने से पहले ये मुझे दिए थे। उन्होंने इन्हें आयात करने वाले किसी व्यक्ति को बहुत पैसे दिए थे। मेरे पास दो सेट हैं। एक मेरा और एक उनका।”
उसने गहरी सांस ली। "मैं चाहती हूं कि तुम्हारे पास एक हो।"
"क्यों?"
क्योंकि मैं दुश्मन को जानता हूं। मैं जानता हूं कि वे क्या कर सकते हैं।
गिज़ेला ने सीधे फैनी की ओर देखा। "अगर हम कभी पकड़े गए, अगर कभी कोई उम्मीद न बची और वे तुम्हारे साथ कुछ बुरा बर्ताव करने वाले हों? कभी-कभी..."
“क्या?” फैनी ने कहा।
"कभी-कभी दूसरों के हाथों इस दुनिया को छोड़ने की बजाय अपने हाथों से इस दुनिया को छोड़ना बेहतर होता है।"

उसने थैली को फैनी की हथेली में थमा दिया, फिर उठी और कमरे से बाहर चली गई।
अगले पाँच महीनों तक, जैसे-जैसे गर्मी आती-जाती रही, उनका रोज़मर्रा का काम चलता रहा - सिलाई करना, कपड़े धोना, खाना-पीना और सोना। फैनी मुर्गीखाने में ही रही और उसे मुर्गियों की बीट की अमोनिया जैसी गंध की भी आदत हो गई। वह चीखती-चिल्लाती बूढ़ी औरत को लगभग भूल ही गई थी।
लेकिन सिर्फ इसलिए कि आप झूठ को भूल जाते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि झूठ भी आपको भूल जाता है।
* * *
मैंने पहले भी बताया है कि यह महान सच्चाइयों और धोखों की कहानी है। आपको इसमें बड़ी और छोटी बातें आपस में जुड़ी हुई मिलेंगी।
जब हंगरी के नेता मिक्लोस होर्थी ने नाज़ी सेना के साथ गठबंधन किया, तो उन्होंने नाज़ी सेना के दुश्मनों के साथ चल रही अपनी बातचीत के बारे में झूठ बोला। और जब नाज़ी सेना को इस बात का पता चला, तो उन्होंने भी झूठ बोला और होर्थी को एक दिखावटी बैठक में आमंत्रित किया ताकि नाज़ियों के आक्रमण के दौरान उन्हें उनके देश से बाहर निकाला जा सके।
जब होर्थी को पता चला कि उसे धोखा दिया गया है, तो वह बहुत क्रोधित हुआ। वुल्फ से मिलने से पहले, उसने अपने कपड़ों में एक पिस्तौल छिपा ली, और नाज़ी नेता को बेरहमी से मार डालने की योजना बनाई। लेकिन अपने कमरे से निकलने से ठीक पहले उसने बंदूक वापस रख दी, और बाद में कहा कि किसी की जान लेना उसके बस की बात नहीं है। शायद, अगर उसने ऐसा कर दिया होता, तो युद्ध जल्दी समाप्त हो जाता, और निको, फैनी, सेबेस्टियन और उडो के साथ जो हुआ, वह कभी न होता।
लेकिन यह तो कल्पना है। और मैं कल्पनाओं में विश्वास नहीं करता।
वास्तविकता यह है: होर्थी को तुरंत हटा दिया गया, एक कठपुतली सरकार स्थापित की गई, और नाज़ी सेनाओं ने, युद्ध को हाथ से फिसलते हुए भांपते हुए, एक खूंखार जानवर की तरह हंगरी पर धावा बोल दिया। वुल्फ ने अपने शीर्ष अधिकारियों को सभी हंगेरियन यहूदियों को मृत्यु शिविरों में भेजने का आदेश दिया। इस कार्य में उन्हें एरो क्रॉस नामक एक घृणित हंगेरियन राजनीतिक आंदोलन से भरपूर समर्थन मिला, जो वुल्फ के विकृत दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करते हुए मानता था कि हंगरीवासियों में भी नस्लीय शुद्धता है जिसे संरक्षित करने की आवश्यकता है।

एरो क्रॉस नाज़ी संगठन जितना ही क्रूर था, और उसके सैनिक ग्रामीण इलाकों में धावा बोलते हुए उन सभी को पकड़ लेते थे जिन्हें वे अवांछित समझते थे। उन्होंने स्कूलों, आराधनालयों, बेकरियों, लकड़ी के गोदामों, दुकानों, अपार्टमेंटों और घरों पर छापे मारे।

और अक्टूबर की एक सुबह, सूरज उगने से पहले, वे एक पहाड़ी गाँव में उमड़ पड़े और हरे रंग का कोट पहने एक अधेड़ उम्र की महिला की सूचना का अनुसरण किया, जिसने उन्हें बताया, "उस घर में रहने वाली महिला एक यहूदी को छिपा रही है।" उन्होंने सामने का दरवाजा तोड़ दिया और अंदर एक दर्जी और एक किशोर को ओटकेक खाते हुए पाया।

उनमें से एक ने चिल्लाकर पूछा, "यह लड़की कौन है?"

“यह मेरी बेटी है!” गिज़ेला ने जवाब दिया। “हमें अकेला छोड़ दो!”

एक सिपाही ने उसे लाठी से पीटा और कहा कि यह अच्छी बात है कि वह यहूदियों से इतना प्यार करती है, क्योंकि अब उसे उन्हीं के साथ मरना होगा। फैनी चीख उठी जब एरो क्रॉस उसे घसीटते हुए उस बूढ़ी औरत के पास से ले गया, जिसने सीने पर हाथ बांधे सहमति में सिर हिलाया। फैनी अविश्वास से देखती रह गई।

उसका छोटा सा झूठ आखिरकार उसके लिए मुसीबत बन गया।

युद्ध में बार-बार होने वाली भयावह घटनाओं की कोई सीमा नहीं होती।

चौदह महीने पहले मवेशियों से भरी गाड़ी में ठूंस दिए जाने के बाद, फैनी नाहमियास को एक और गाड़ी में ठूंस दिया गया, इस बार वह बुडापेस्ट जा रही थी, जहाँ बम गिर रहे थे और इमारतें खंडहर में तब्दील हो चुकी थीं। बाद में उसे उसके दूसरे यहूदी बस्ती में ले जाया गया और नौ अन्य लोगों के साथ एक अंधेरे कमरे में सोने के लिए मजबूर किया गया, जिनके नाम वह कभी नहीं जान पाई।

फिर, नवंबर 1944 में, फैनी और दर्जनों अन्य यहूदियों को बंदूक की नोक पर शहर की सड़कों से गुज़ारा गया। अंधेरा था, लगभग आधी रात हो चुकी थी। बर्फ़ हवा में उड़ रही थी। कैदियों को एक लंबे पुल पर घसीटा गया, फिर सीढ़ियों से नीचे डेन्यूब नदी के किनारे ले जाया गया। वहाँ, ठंड से कांपते हुए, उन्हें अपने जूते उतारने के लिए मजबूर किया गया। उनके शरीरों को रस्सी से एक साथ बांध दिया गया, तीन या चार के समूह में। फैनी की नज़र एक युवा एरो क्रॉस सैनिक पर पड़ी, जो उसके सुंदर चेहरे को घूर रहा था। "इससे दर्द नहीं होगा," उसने बुदबुदाते हुए कहा और नज़रें फेर लीं।

कैदियों को तेज़ी से बहते अंधेरे पानी की ओर मोड़ दिया गया। फैनी यह देखने की कोशिश कर रही थी कि यह कतार कितनी लंबी है। कम से कम सत्तर-अस्सी लोग थे, जिनमें से कई बच्चे थे, बर्फ उनके सिर और नंगे पैरों पर गिर रही थी। कुछ मिनटों तक सैनिक इकट्ठा होकर इधर-उधर इशारा करते रहे। अंत में, कतार के दूसरे छोर पर, एरो क्रॉस का एक गार्ड आगे बढ़ा, अपनी बंदूक उठाई और एक यहूदी आदमी के सिर पर गोली चला दी। उसने देखा कि वह और उससे बंधे हुए शरीर बर्फीली नदी में गिर रहे हैं, और तेज़ धारा उन्हें बहा ले जा रही है।

वह अगले समूह की ओर बढ़ा और फिर से गोली चलाई।

फैनी ने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था, मानो किसी ने दरवाज़े पर मुक्का मारा हो। उसने गिज़ेला के बारे में सोचा और सोचा कि क्या वह अभी भी ज़िंदा है। उसने अपने पिता के बारे में सोचा, यह जानते हुए कि वह मर चुके हैं, और सैलॉनिका के अपने पड़ोसियों के बारे में, जो शायद मर चुके होंगे। उसने ट्रेन में दाढ़ी वाले उस आदमी के बारे में सोचा, जिसने उसके कान में फुसफुसाया था, "अच्छी इंसान बनो। दुनिया को बताओ कि यहाँ क्या हुआ था।" उसे एहसास हुआ कि वह अब ऐसा कभी नहीं कर पाएगी। वह बुरी तरह काँप रही थी, उसके घुटने, उसके हाथ, उसका जबड़ा। अपने साथी कैदियों के रोने के बीच, उसने खुद से कहा कि यह सब एक पल में खत्म हो जाएगा, वह मर सकती है और स्वर्ग में अपने प्रियजनों के साथ हो सकती है। इस दुनिया में अब याद करने लायक कुछ भी नहीं बचा था।

उसे अचानक चीखने-चिल्लाने और शोरगुल की आवाज़ सुनाई दी। ठंडी हवा उसके चेहरे पर लगी और अचानक उसे निको की याद आ गई। उसकी छवि इतनी स्पष्ट थी कि उसे लगा जैसे निको उसका नाम पुकार रहा हो।

"फैनी?"

उसकी सांसें रुक गईं।

“फैनी? क्या तुम हो?”

आँखें खोलते ही उसने देखा कि उसके सामने वही लड़का खड़ा है जिसे उसने कभी चूमा था, और अब वह पहले से कहीं ज़्यादा लंबा है। उसने नाज़ी अधिकारी का कोट पहना हुआ है। उसे देखते ही वह बेहोश हो गई, और उसकी कलाई से बंधे दोनों लोग भी उसके पीछे-पीछे ज़मीन पर गिर पड़े और वह खून से लथपथ नदी में गिरने ही

वाली थी।

निको, लाइ टू लाइ से

अब मुझे आपको निको की कहानी सुनानी होगी। मेरे लिए यह दर्दनाक है, ठीक वैसे ही जैसे एक माँ अपने बेटे के जेल में बिताए समय के बारे में बता रही हो।

वह लड़का जिसने कभी झूठ नहीं बोला, उसने 1943 में सैलानिका की उन रेल पटरियों पर अपनी ईमानदारी का चोला उतार दिया। जब वह लगभग चौदह वर्ष की आयु में डेन्यूब नदी के किनारे प्रकट हुआ, तब तक वह मुश्किल से ही पहचानने योग्य था - न तो मेरे लिए, और न ही फैनी जैसे उन लोगों के लिए जो उसे उसके सांसारिक रूप में जानते थे।

निको के लिए किशोरावस्था अचानक नहीं आई, बल्कि उस पर झपट पड़ी। उसकी लंबाई छह इंच बढ़ गई। उसके प्यारे चेहरे के भाव और भी तीखे हो गए। उसकी आवाज़ भारी होकर मधुर बैरिटोन बन गई और उसका वज़न बाईस पाउंड बढ़ गया। इसमें उसके छल का वज़न शामिल नहीं है, जिसका हिसाब लगाना असंभव है।

लेकिन उन्हीं धोखों ने उसे ज़िंदा रखा। निको, जैसा कि उडो ने उसे नाम दिया था, "एक अच्छा छोटा झूठा" बन गया, और उसने जीवन भर की ईमानदारी को लगभग रातोंरात मिटा दिया। यह कोई नई बात नहीं है। क्या आदम ने एक सेब का टुकड़ा खाने से ही स्वर्ग नहीं खो दिया था? क्या लूसिफ़र अपने शाश्वत निष्कासन से पहले एक अच्छा फ़रिश्ता नहीं था? हम सभी एक दुर्भाग्यपूर्ण कार्य से अपने भाग्य की दिशा बदल सकते हैं, और इसकी कीमत बहुत भारी हो सकती है।

निको को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी।

उसने मुझे खो दिया।

वह अब सच नहीं बोल सकता था। वह सच से ऐसे दूर भागता था जैसे शैतान की सांस से। सच बोलने से उसे बस यही याद आता था कि उसकी ईमानदारी उसके परिवार को मौत के मुंह में धकेल सकती है। हममें से कौन जवाबदेही के ऐसे धधकते सूरज को देखकर अंधा न हो जाए?

इस प्रकार झूठ बोलना निको की नई भाषा बन गई। वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के लिए अनगिनत झूठों का सहारा लेता था। रास्ते में मिले कुछ लोगों ने इस काम में उसकी मदद की।

लेकिन सबसे पहले, पासपोर्ट ने उनकी मदद की।

वह पासपोर्ट हॅन्स डेग्लर नामक एक हट्टे-कट्टे जर्मन सैनिक का था, जो सैलानिका में यहूदियों को पकड़ रहा था। एक रात वह एक ग्रीक शराबखाने में बुरी तरह नशे में धुत हो गया और एक छत से गिर गया, जहाँ वह एक महिला के साथ संबंध बना रहा था। अगली सुबह उसका शव एक सुनसान कार के बगल में एक गली में पड़ा हुआ मिला। उडो ने उस युवक का पासपोर्ट अपने पास रखा था, जर्मनी पहुँचने पर उसे जमा करने की योजना थी। यह उस दिन से पहले की बात है जब विश्वासघात हुआ था, और निको को संयोगवश तहखाने में छिपा हुआ चमड़े का थैला मिला था, जिसमें पैसे और बैज के अलावा, अब मृत हंस डेगलर का पहचान पत्र भी था। आपको यह अजीब लग सकता है कि एक पुराने उत्पीड़क के एक थैले से इतने सारे फायदे कैसे हो सकते हैं। लेकिन जो लोग आपको सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं, अगर आप उनसे बच जाते हैं, तो वे अनजाने में आपको अच्छाई की ओर ले जा सकते हैं।

निको युगोस्लाविया की सीमा से कुछ ही दूरी पर स्थित छोटे से ग्रीक शहर एडेसा में उत्तर की ओर जा रही एक ट्रेन से उतरा, ताकि वह किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर सके जिसके पास कैमरा हो। उसका मकसद हंस डेगलर के पासपोर्ट पर अपनी तस्वीर लगाना था, जिससे उसकी उम्र अठारह वर्ष घोषित हो जाए। निको जानता था कि यह थोड़ा मुश्किल है, लेकिन उसके पास और क्या विकल्प था? नाज़ी सैनिक कभी भी "कागज़ात" दिखाने की ज़िद कर सकते थे। जर्मन पासपोर्ट होने पर शायद वे उसे छोड़ दें।

अपनी कमीज़ पर बैज लगाए कस्बे में घूमते हुए निको की निगाहें उस पर टिक गईं, लेकिन किसी ने उसे चुनौती नहीं दी। एडेसा के लोग, सैलानिका के लोगों की तरह, नाज़ी सेना के प्रकोप का सामना कर चुके थे। वे और अधिक परेशानी नहीं चाहते थे। निको ने घंटों फोटोग्राफर की तलाश की, लेकिन उसे कोई नहीं मिला। दिन ढलने के बाद, थका हुआ और पसीने से तरबतर, वह एक नाई की दुकान के पास से गुजरा और खिड़की में ग्राहकों की तस्वीरें देखीं। घंटी की झनझनाहट के साथ ही वह अंदर चला गया। एक लंबा, चेचक के दाग वाला आदमी बाहर आया, जिसने आधी बाजू का कुर्ता पहना हुआ था और उसकी मूंछें इतनी घनी थीं जितनी निको ने पहले कभी नहीं देखी थीं।

“मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ?” उस आदमी ने निको के बैज को देखते हुए कहा। निको ने खुद को याद दिलाया कि वह एक जर्मन की भूमिका निभा रहा है।

उसने गंभीर दिखने की कोशिश की।
उन्होंने कहा, "मुझे एक फोटो चाहिए।"
वह आदमी असमंजस में पड़कर उसे घूरने लगा।
“फोटो? आपको फोटो चाहिए?”
“हां,” निको ने खिड़की में लगी तस्वीरों की ओर इशारा करते हुए कहा, “एक तस्वीर।”
“ठीक है। पहले, बाल कटवाते हैं। ठीक है?”
उस आदमी ने नाई की कुर्सी की ओर इशारा किया। निको को बाल कटवाने की कोई इच्छा नहीं थी, लेकिन वह किसी को शक में नहीं डालना चाहता था। वह बैठ गया, और बीस मिनट बाद, उसके सुनहरे बाल छोटे-छोटे काट दिए गए और वह बूढ़ा दिखने लगा। मूंछों वाला नाई पीछे गया, एक पुराना कैमरा लेकर बाहर आया और कई तस्वीरें खींचीं।
“दो दिन बाद वापस आना,” उस आदमी ने दो उंगलियां उठाते हुए कहा। निको कुर्सी से उठा और जाने लगा। उस आदमी ने गला साफ किया और भुगतान की तलाश में अपनी हथेली रगड़ी। निको ने अपना थैला खोला और कुछ यूनानी सिक्के निकाले। उसने देखा कि वह आदमी उसे घूर रहा है, इसलिए उसने जल्दी से थैले की ज़िप बंद कर दी।
“एक छोटी सी तस्वीर,” निको ने कहा।
“क्या?” उस आदमी ने कहा।
निको ने तब तक दोहराया जब तक कि उस आदमी को बात समझ नहीं आ गई। एक छोटी सी तस्वीर। पासपोर्ट साइज की। उसे यही चाहिए था।
“मैं वापस आऊंगा,” निको ने कहा।
अगली दो रातें निको ने रेलवे स्टेशन पर ही बिताईं। उसने अपने बैग में रखी रोटी और सॉसेज खाई और बाथरूम के सिंक से पानी पिया। उसे पास ही एक किताबों की दुकान मिली और उसने जर्मन भाषा की एक वाक्यांश पुस्तिका खरीदी, जिसका उसने घंटों अध्ययन किया और काल्पनिक बातचीत करके शब्दों का अभ्यास किया।
तीसरे दिन जब वह नाई की दुकान पर लौटा, तो मूंछों वाला आदमी इंतजार कर रहा था, और उसने निको को पीछे के कमरे में आने का इशारा किया।
“मेरे पास आपकी तस्वीर है,” उसने कहा।

निको जैसे ही दरवाजे से अंदर आया, दो किशोर लड़कों ने उसे तुरंत पकड़ लिया और उसे नीचे गिरा दिया, जबकि नाई ने उसका बैग फाड़ दिया। उसने खाने-पीने की चीजों, कपड़ों और पैसों की तलाशी ली, लेकिन जब उसने बैज देखे तो वह पीछे हट गया।

“आप किसके लिए काम कर रहे हैं? आपके पास नाज़ी बैज क्यों हैं?”

निको दोनों लड़कों की पकड़ से छूटने के लिए छटपटा रहा था।

मैं महाप्रभु उडो ग्राफ के लिए काम करता हूँ! और वह तुम्हें मरवा देगा!

तभी उसे एहसास हुआ कि उसने यह बात ग्रीक भाषा में कही थी।

नाई ने किशोर लड़कों की ओर देखा और उन्हें निको को ऊपर उठाने का इशारा किया।

“तुम सैलानिका से हो,” उस आदमी ने कहा। “तुम्हारे लहजे से मुझे यही पता चल रहा है। तुम देखने में जर्मन जैसे लगते हो, और उनकी भाषा भी बोलते हो, लेकिन तुम हममें से ही एक हो। एक यूनानी। दिखावा क्यों कर रहे हो?”

निको ने गुस्से से कहा, "मेरा बैग वापस दो।"

“तुम यह बैग रख सकते हो, लेकिन इसमें जो कुछ भी है, मैं उसे अपने पास रखूंगा। जब तक तुम मुझे यह नहीं बताओगे कि तुम क्या कर रहे हो।”

मुझे पासपोर्ट के लिए एक फोटो चाहिए।

"आप कहां जा रहे हैं?"

निको हिचकिचाया। "शिविरों की ओर।"

“शिविर? जर्मन शिविर?”

नाई ने किशोरों को देखा और हंसने लगा।

“कोई भी स्वेच्छा से उन शिविरों में नहीं जाता। वे आपको वहाँ एक बंदी जानवर की तरह ले जाते हैं। और आप कभी वापस नहीं आते।”

निको ने अपने जबड़े कस लिए।

“बताओ, लड़के,” उस आदमी ने कहा। “शिविरों में कौन है जिनसे तुम्हें इतनी बेसब्री से मिलने की ज़रूरत है?”

"इससे तुम्हारा कोई संबंध नहीं।"

“क्या आप यहूदी हैं?” नाई ने पूछा।

"नहीं।"

हम तुम्हारी पैंट उतारकर जल्दी ही देख सकते हैं।

निको ने अपनी मुट्ठियाँ भींच लीं। किशोर लड़कों ने एक-दूसरे को घूरकर देखा। नाई ने उन्हें हाथ हिलाकर जाने का इशारा किया।

"छोड़ो कोई बात नहीं। शायद वह यहूदी हो, शायद यहूदी न हो, लेकिन एक लड़का जो जर्मन बोलता हो और उसे शिविरों में जाने के लिए पासपोर्ट की जरूरत हो। यह कुछ दिलचस्प बात है।"

वह एक तरफ हट गया और बैग में तलाशी लेने लगा। कपड़ों और सॉसेज के नीचे, उसे नीचे की तरफ कुछ और कागज़ मुड़े हुए मिले। उसने एक कागज़ निकाला और मन ही मन मुस्कुराया। फिर वह किशोर लड़कों की ओर मुड़ गया।

“उसे अपने दादाजी के पास ले जाओ,” उसने कहा।

ये लोग कौन थे?

नाई का नाम ज़ाफ़ी मंटिस था, और किशोर लड़के उसके बेटे क्रिस्टोस और कोस्टास थे। वे रोमानी थे, जिन्हें उन दिनों अक्सर "जिप्सी" कहा जाता था। वे भी नाज़ियों से छिप रहे थे, और नाई की दुकान उनके असली इरादों को छुपाने का एक बहाना थी।

वे तीनों निको को कस्बे के बाहरी इलाके में ले गए, जो एक सुनसान इलाका था जहाँ सिर्फ दो इमारतें खड़ी थीं। निको ने एक इमारत के पीछे तंबुओं का एक समूह देखा, और कुछ महिलाओं को एक बड़े धातु के टब में बच्चों को नहलाते हुए देखा। उसे सीढ़ियों से ऊपर ले जाया गया। दूसरी मंजिल पर, मैंटिस ने एक दरवाजे पर चार बार दस्तक दी, थोड़ी देर रुका, फिर तीन बार और दस्तक दी, और फिर एक बार और दस्तक दी।

दरवाजा खुला और एक छोटा, दाढ़ी वाला आदमी, जिसने एक अहाता पहन रखा था, ने उन्हें अंदर आने दिया।

“यह कौन है?” उसने पूछा।

"हमारी सोने की खान," मैंटिस ने कहा।

निको ने चारों ओर देखा। वहाँ पेंट के डिब्बे, कैनवस और ईज़ल पर टंगी हुई तरह-तरह की कलाकृतियाँ थीं। पीछे की तरफ, फर्श से छत तक एक बड़ा तिरपाल लटका हुआ था, और उसके सामने कुछ स्टूल रखे थे, मानो मॉडलों के लिए हों।

“इसे देखो,” मैंटिस ने निको का बैग खोलकर कागज़ निकालते हुए कहा। “पहचान पत्र। जर्मन दस्तावेज़!”

दाढ़ी वाले आदमी के चेहरे पर अचानक भय की एक झलक दिखाई दी।

“शांत हो जाओ,” मैंटिस ने कहा। “ये उसके नहीं हैं। वह एक भागा हुआ यहूदी है। या शायद भागा हुआ यहूदी नहीं है। देखो।”

दाढ़ी वाले आदमी ने कागजों को एक बल्ब के सामने उठाया। फिर वह निको की ओर मुड़ा। उसकी नीली अशकुन पर पेंट के दाग लगे हुए थे।

“ये तुम्हें कहाँ से मिले?”

“जब तक तुम मेरा बैग वापस नहीं करोगे, मैं तुम्हें कुछ नहीं बताऊंगा,” निको ने कहा।

“और वो फोटो भी जिसके लिए मैंने तुम्हें पैसे दिए थे।” वह बहादुरी दिखाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसकी आवाज़ कांप रही थी।

“वह जर्मन बोलता है,” मैंटिस ने कहा।

“सच में?” दाढ़ी वाले आदमी ने भौंहें चढ़ाते हुए पूछा। “क्या तुम इसे पढ़ भी सकते हो?”

निको ने सूंघा और सिर हिलाया। उस आदमी ने अपनी जेब में हाथ डाला और एक मुड़ा हुआ कागज निकाला।

“जल्दी बताओ। इस पर क्या लिखा है?”

निको ने पढ़ा। यह निर्देशों के एक अनुच्छेद के नीचे नामों की एक आधिकारिक सूची थी। निको ने उडो ग्राफ की मेज पर इस तरह के कागजात देखे थे।

इसमें लिखा है कि इन लोगों को 28 अगस्त को गिरफ्तार कर रेलवे स्टेशन ले जाया जाएगा। उनके बैग का वजन छह किलो से अधिक नहीं होना चाहिए। और ट्रेन में चढ़ने से पहले महिलाओं और बच्चों को पुरुषों से अलग किया जाएगा।

मंटिस ने भौंहें चढ़ा लीं। "अट्ठाईसवीं तारीख? वो तो परसों है।"

निको ने कागज वापस कर दिया।

“क्या आप सब यहूदी हैं?” उसने पूछा।

दाढ़ी वाले आदमी ने अपना सिर हिलाया।

“और भी बुरा,” उसने बुदबुदाते हुए कहा।

इससे बुरा और क्या हो सकता है?

मुझे बीच में बोलने दीजिए। रोमानी लोग पूरे यूरोप में खानाबदोश समुदायों में रहते थे, जिनका समृद्ध इतिहास, दृढ़ आस्था, संगीत और नृत्य के प्रति प्रेम और परिवार के प्रति गहरी निष्ठा थी। लेकिन नाज़ी सेना उन्हें यहूदियों के समान ही विषैला मानती थी। उसने उन्हें ज़िग्यूनर (गैर-यहूदी) करार दिया और उन्हें "राज्य का शत्रु" कहा। जहाँ भी

नाज़ी सेना को रोमानी लोग मिलते, वे उन्हें मृत्यु शिविरों में भेज देते या देखते ही मार डालते। नाज़ी सेना के सैनिक उन "जिप्सी सूअरों" के प्रति विशेष रूप से क्रूर थे जिनसे वे इतनी घृणा करते थे, उनकी महिलाओं का बलात्कार करते, उनके पुरुषों को फाँसी पर लटका देते और उन्हें खेल-खेल में सिर में गोली खाने या बिजली के तारों से टकराने में से किसी एक को चुनने के लिए मजबूर करते थे।

युद्ध समाप्त होने से पहले ही यूरोप में रहने वाले आधे से ज़्यादा रोमानी लोग विलुप्त हो गए। कुछ लोगों का कहना है कि हर चार में से तीन को मौत के घाट उतार दिया गया। उनके वंशज इस काल को पोराजमोस कहते हैं, जिसका अर्थ है "निगल जाना", या फर्राजिमोस, जिसका अर्थ है "काट-छाँट करना", या समुदरिपेन, जिसका अर्थ है "सामूहिक नरसंहार"। उनके द्वारा कई शब्दों का प्रयोग करना स्वाभाविक है। भला क्या एक शब्द इतनी भयावहता का वर्णन कर सकता है?

लेकिन वापस अटारी की ओर चलते हैं।

निको को याद आया कि कैसे उसके परिवार को जबरदस्ती ट्रेनों में बिठाया गया था। उसने उस विशालकाय आदमी के बारे में सोचा जिसने उसे बगल से उठाकर ले गया था। वे हमें मरने के लिए ले जा रहे हैं।

“तुम्हें अभी इस शहर को छोड़ना होगा,” निको ने चेतावनी दी।

दोनों आदमियों ने एक-दूसरे को सिर हिलाकर सहमति दी। मंटिस ने चमड़े का थैला बंद किया और उसे मंटिस को सौंप दिया।

"शिविरों तक पहुंचने की कोशिश करने में आपको शुभकामनाएँ।"

उसने अपने बेटों की ओर मुड़कर कहा, "इसे वापस दुकान पर ले जाओ।"

“रुको,” दाढ़ी वाले आदमी ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “लड़के को एक फोटो चाहिए।”

मंटिस ने उपहास उड़ाते हुए कहा, "हमें उसकी मदद क्यों करनी चाहिए?"

"क्योंकि उन्होंने हमारी मदद की।"

दाढ़ी वाले आदमी ने निको की ओर मुड़कर कहा, “तुमने जिस कागज़ का अनुवाद किया था, उसे एक नाज़ी अधिकारी के यहाँ काम करने वाली नौकरानी ने चुरा लिया था। हम उसे पढ़ नहीं पाए। अब तुम्हारी वजह से हमें पता चल गया है कि हमें कहाँ जाना है।”

निको ने सिर हिलाया। उसे उन पर तरस आया। वे भी उसी की तरह बस ज़िंदा रहने

की कोशिश कर रहे थे।
“यह मेरा बेटा मंटिस है,” दाढ़ी वाले आदमी ने इशारा करते हुए कहा। “और ये मेरे पोते हैं, क्रिस्टोस और कोस्टास। आप मुझे पापो कह सकते हैं, जैसे वे कहते हैं। इसका मतलब है ‘दादा’।”
“पापो,” निको ने दोहराया।
“और हम आपको क्या कहकर पुकारें?”
निको ने निगल लिया।
"एरिक जर्मन है।"
"ठीक है, एरिक अल्मन, आपको जिस पासपोर्ट के लिए मदद चाहिए वह कहाँ है?"
निको हिचकिचाया। उसके मन में कहीं न कहीं यह ख्याल था कि वह इन लोगों के साथ पहले ही बहुत कुछ साझा कर चुका है। लेकिन दाढ़ी वाले आदमी की आँखों में कुछ ऐसा था जिसने उसे अपने दादाजी की याद दिला दी। इससे उसके मन में एक लालसा और भरोसे की याद जाग उठी। उसने अपना जूता उतारा, उसके अंदर से हैंस डेगलर का पासपोर्ट निकाला और उसे सौंप दिया। पापो ने भूरे रंग के कवर पर काले चील और स्वास्तिक के साथ 'ड्यूश रीच' शब्द देखे। उसके चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान फैल गई।
“जर्मन पासपोर्ट? आपने हमें दूसरा उपहार दे दिया है, एरिक अल्मन।”
“तुम इसे नहीं रख सकते!” निको चिल्लाया।
"ओह, मैं इसे रखना नहीं चाहती।"
उसने तिरपाल को पीछे खींचकर एक ड्राफ्टिंग टेबल, स्याही की बोतलें, रसायनों के जार और एक सिलाई मशीन को दिखाया।
उन्होंने कहा, "मैं इसकी नकल करना चाहता हूं।"
पेंट से सने हुए अपने एप्रन के बावजूद, पापो एक कलाकार नहीं था।
वह जालसाज था।
उसका परिवार एक साल से ज़्यादा समय से समुदाय को जाली दस्तावेज़ मुहैया करा रहा था। पहचान पत्र। विवाह प्रमाण पत्र। रोमानी होने से बचने के लिए वे हमेशा नामों की वर्तनी बदलते रहते थे। चित्रकार के स्टूडियो के भेष में छिपी यह छोटी सी कार्यशाला वाकई प्रभावशाली थी। निको ने कागज़ों के ढेर, रबर स्टैम्प, रंगीन पानी के कप, तरह-तरह के रंग और यहाँ तक कि अलग-अलग रंगों के पासपोर्टों का एक ढेर

भी देखा।
"मैंने इससे पहले कभी जर्मन वाला नहीं खाया है," पापो ने कहा।
“क्या आप इसमें मेरी तस्वीर लगा सकते हैं?” निको ने पूछा।
पापो ने पन्नों का मुआयना किया। “मुझे इस नीले स्टैंप को मिटाकर दूसरा बनाना होगा। लेकिन मैं लैक्टिक एसिड का इस्तेमाल कर सकता हूँ। यह अच्छे से काम करता है।”
निको को समझ नहीं आ रहा था कि वह आदमी क्या कह रहा है। लेकिन वह मोहित हो गया था। इस वीरान इमारत में, एक ऐसी जगह थी जहाँ नए सिरे से शुरुआत की जा सकती थी, जहाँ पुरानी पहचान मिटाई जा सकती थी और नई पहचान बनाई जा सकती थी। निको जैसे रंग बदलने वाले निको के लिए यह एकदम सही जगह थी।
"मुझे सिखाओ कि तुम क्या करते हो," निको ने कहा।
“तुम्हें सिखाऊं?” पापो ने कहा।
"हाँ।"
"नहीं।"
"मैं आपका भुगतान करूंगा।"
“सुनो, बेटा,” मैंटिस ने कहा। “हम कुछ ही घंटों में सामान पैक करके निकल रहे हैं। हम कल रात तक चले जाएंगे।”
निको ने अपने जबड़े कस लिए। "तो मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।"

उडो को नई नौकरी मिल गई है

मुझे क्षमा करें। मुझे एहसास है कि निको, फैनी और सेबेस्टियन के विस्तृत विवरण में, मैंने उनके उत्पीड़क, हमारे चौथे पात्र, उडो ग्राफ के घटनाक्रम को नजरअंदाज कर दिया है।
निको के परिवार के साथ ही उडो भी उसी दिन ऑशविट्ज़ नामक शिविर में पहुँचा। ट्रेन के डिब्बे से उतरते ही उसने यात्रियों और पहरेदारों के बीच मची अफरा-तफरी का मंजर देखा। यह सब देखकर वह कांप उठा। भयानक दुर्गंध, लाशों के ढेर, और कीचड़ में धारीदार पजामे पहने हुए कंकालनुमा आकृतियाँ। आखिर वह यहाँ क्या कर रहा था?
एक घंटे के भीतर ही जवाब आ गया। जब आने वाले कैदियों को धकेला जा रहा था, लाठियों से पीटा जा रहा था, उनके बाल काटे जा रहे थे, उन्हें कीटाणुरहित किया जा

रहा था या गैस चैंबरों में ले जाया जा रहा था, तब उडो को शिविर के सुदूर कोने में स्थित एक आलीशान विला में ले जाया गया, जो ईंटों से बना एक भव्य भवन था और जिसके चारों ओर सुंदर बगीचे थे। वहां के कर्मचारी—एक चौकीदार और कई नौकरानियां—उडो के गुजरते समय अपनी निगाहें नीचे रखते थे। अंदर पहुँचकर उसने खिड़कियों से बाहर देखा। उसने ऊँची दीवारें और बड़े-बड़े पेड़ देखे जिनसे शिविर का अधिकांश दृश्य, विशेष रूप से श्मशान की विशाल चिमनी, दिखाई नहीं दे रही थी। वह जगह किसी देहाती घर जैसी लग रही थी, सुखद, लगभग ग्रामीण परिवेश जैसी।

उडो को महोगनी की मेज वाले एक अध्ययन कक्ष में ले जाया गया। उस पर वोदका की एक बोतल रखी थी। इंतज़ार करते हुए उसे बाहर से लगातार इंजन की आवाज़ सुनाई दे रही थी। बाद में उसे पता चला कि कैदियों को गैस से मारने के दौरान, एक गार्ड अपनी मोटरसाइकिल के इंजन को इतनी तेज़ आवाज़ में चलाता था ताकि अंतिम साँस ले रहे लोगों की दबी हुई चीखें सुनाई न दें।

अचानक, एसएस का एक उच्च पदस्थ अधिकारी कमरे में दाखिल हुआ, उसके जूतों की खट-खट की आवाज़ पॉलिश किए हुए लकड़ी के फर्श पर गूंजी। उसने दो गिलास वोदका से भरे, एक गिलास उडो को दिया और उसे बताया कि उसे इस शिविर के संचालन में सहायता करने के लिए तुरंत बुलाया गया है। यह व्यक्ति नया कमांडेंट था। जब उडो ने उलझन में पड़कर पूछा कि पिछले कमांडेंट का क्या हुआ, तो नए अधिकारी ने अपनी आवाज़ धीमी कर ली।

“उसका एक महिला कैदी के साथ दुर्भाग्यपूर्ण संबंध था। एक अंतरंग संबंध। परिणामस्वरूप एक बच्चा हुआ। पूरी जांच होने तक उसे जर्मनी वापस भेज दिया गया है।”

कमांडेंट रुका। "मुझे उम्मीद है कि हमें आपके साथ ऐसी कोई समस्या नहीं होगी, श्रीमान सुरक्षा हिरासत शिविर प्रमुख?"

उस शब्द का अर्थ था "शिविर निदेशक"। तो यही उसकी नई नौकरी थी। इसीलिए उडो को बुलाया गया था। यह कोई विश्वासघात नहीं था। यह पदोन्नति थी।

“ऐसी कोई समस्या नहीं है, कमांडर,” उडो ने कहा।

“अच्छा। अब। इस जगह पर हमारा एक सर्वोपरि नियम है। जो रखने लायक है उसे रखो, बाकी सब से छुटकारा पाओ।”

"क्या आप अधिक विशिष्ट हो सकते हैं?"

उस आदमी ने अपना गिलास नीचे रख दिया। “कैसा रहेगा? जब ये गंदे यहूदी आएँ, तो इन्हें कचरे की तरह छाँट लो। बूढ़ी औरतें, बच्चों वाली माताएँ, कमज़ोर बूढ़े आदमी, ज़रा सा भी विरोध करने वाला कोई भी व्यक्ति? उन्हें तुरंत मार डालो।”

“बाकी सभी, बलवान पुरुष, उपयोगी महिलाएं, आप उन्हें काम पर लगाइए। आपने द्वार पर लगा चिन्ह देखा था ना? ‘Arbeit macht frei’? ‘काम आपको मुक्त करता है’?”

कमांडेंट मुस्कुराया। "बेशक, हमारा मतलब सचमुच 'मुफ्त' से नहीं है।"

उडो ने मुस्कुराने की कोशिश की। उसके पेट में गुड़गुड़ाहट हो रही थी। उसने वोदका का एक घूंट लिया और सोचने लगा कि उसे कितने लोगों को खत्म करना है।

* * *

ऑशविट्ज़ पहुँचने से पहले, उडो मुख्य रूप से हत्याओं से जुड़े रसद कार्यों में लगा हुआ था। दुश्मन को घेर लो, उसे घुटने टेकने पर मजबूर कर दो, फिर उसे कहीं और भेज दो। लेकिन यह अलग था। उन्हें तुरंत मार देना? इस बात ने उडो को सोचने पर मजबूर कर दिया। अगर उसका विवेक थोड़ा भी संवेदनशील होता, तो वह ऐसा करने से हिचकिचाता। वहाँ से चला जाता। कोई और काम माँग लेता।

लेकिन या तो आप भगवान की सेवा करते हैं या मनुष्य की, और यदि आप मनुष्य को चुनते हैं, तो आपको जिन आदेशों का पालन करना होगा या आपकी क्रूरता की कोई सीमा नहीं हो सकती है।

इस प्रकार उडो एक संहारक बन गया और उसने पाया कि वह इसमें काफी कुशल था। उसके निर्देशानुसार, आने वाली ट्रेनों से कैदियों को जल्दबाजी में उतारा जाता था और अक्सर कुछ ही घंटों के भीतर उन्हें गैस चैंबरों में ले जाया जाता था। यद्यपि उनमें से प्रत्येक किसी न किसी का भयभीत माता-पिता या रोता हुआ बच्चा था, फिर भी उन्हें समान निर्दयता से मृत्यु के घाट उतार दिया जाता था, मानो मेज से चावल झाड़ दिए गए हों। उडो अपनी नोटबुक डायरी में विस्तृत विवरण रखता था - संख्याएँ, हिसाब-किताब, और उन दिनों में उसे होने वाला गर्व जब किसी दिन का संहार सुचारू रूप से संपन्न हो जाता था।

उसने अपने हाथों को खून से रंगने में भी जरा भी देर नहीं की। ऑशविट्ज़ से पहले उसने खुद ज्यादा हत्याएं नहीं की थीं। उसने एक बूढ़े यहूदी रब्बी को गोली मार दी थी जो सैनिकों से सैलानिका के एक आराधनालय को जलाने से रोकने की गुहार लगा

रहा था। और उसने बैरन हिर्श यहूदी बस्ती से भाग निकले दो आदमियों को भी गोली मार दी थी, जब एक एसएस सैनिक की राइफल में कुछ गड़बड़ हो गई थी। उडो को बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई, जिस तरह से सैनिक राइफल को संभालने में जूझ रहा था, जबकि दोनों यहूदी घुटनों के बल बैठे थे। उडो उनकी सिसकियों को सहन नहीं कर सका, इसलिए उसने अपनी लूगर बंदूक से तुरंत उनका काम तमाम कर दिया।

लेकिन वे कुछ चुनिंदा घटनाएं थीं, और उडो ने अपनी गोलियों से उन्हें शांत करने के बाद शवों को घूरते हुए, थोड़ी सी खेद और यहां तक कि क्रोध का अनुभव किया था, कि टकराव इस हद तक बढ़ गया था।

शिविर में, यह सोचकर कि उसके कार्यों से पहरेदार प्रेरित होंगे, उडो ने प्रतिदिन कम से कम एक यहूदी को गोली मारने पर जोर दिया, और शनिवार को दो यहूदियों को। उनकी मृत्यु के बाद, उसने उनकी कलाई पर नीली स्याही से गुदे हुए नंबर मांगे। उसने उन नंबरों को अपनी नोटबुक में एक सूची में लिख लिया।

ऑशविट्ज़ में अपने पूरे समय के दौरान, उडो को एक भी कैदी का नाम पता नहीं चला।

एक को छोड़कर।

सेबेस्टियन क्रिस्पी।

उसके छोटे झूठे का भाई।

उडो को वह ट्रेन के प्लेटफार्म पर मिला था। उसे याद आया कि कैसे, जब निको का परिवार चिल्ला रहा था, रो रहा था और उसकी ओर दौड़ रहा था, तब केवल बड़ा भाई ही शांत रहा था।

फिर, ट्रेन के डिब्बे में, जब उडो ने उस बच्चे को खिड़की से बाहर फेंक दिया, तो सभी यात्रियों ने दूसरी तरफ देख लिया, सिवाय एक के, यानी उसके भाई के, जिसने उडो को घूरकर देखा। उडो उसे गोली मार सकता था। उसने इसके बारे में सोचा था।

इसके बजाय, ऑशविट्ज़ के अंदर पहुँचने के बाद, उडो ने गार्डों को निर्देश दिया कि वे लड़के को केवल सबसे जघन्य कार्य ही सौंपें।

“अगर आप उससे इतनी नफरत करते हैं, तो उसे मार क्यों नहीं डालते?” एक बार एक अधिकारी ने पूछा था।

“शरीर को मारना आसान है,” उडो ने कहा। “आत्मा को मारना एक चुनौती है।”

सेबेस्टियन कमजोर होता जाता है, फिर मजबूत होता जाता

है

लड़के के मनोबल को तोड़ना उतना आसान नहीं था जितना उडो ने सोचा था। माँ और भाई-बहनों से बिछड़ने के बाद, भूख और थकावट से उसकी छोटी-मोटी ईर्ष्याएँ दूर हो गईं, और सेबेस्टियन जल्दी ही परिपक्व हो गया। वह मजबूत हो गया। साहसी हो गया। अलग-अलग काम करने से उसे शिविर और उसमें जीवित रहने के तरीकों का व्यापक ज्ञान प्राप्त हुआ। वह कूड़ेदान से आलू के छिलके उठा लेता था। वह कटोरे से कुत्ते का खाना निकाल लेता था। उसने अन्य यूनानी कैदियों से संबंध बनाए, जो उसे यह जानकारी देते थे कि किस ब्लॉक में सबसे कम निरीक्षण होते हैं, या किन गार्डों का ध्यान भटकाया जा सकता है। उन्होंने एक-दूसरे को पहचानने के लिए उपनाम बना लिए थे।

"आज बिग इयर्स से सावधान रहें, वह युद्ध के मूड में है।"

मैंने वैम्पायर को शौचालय के बाहर सोते हुए देखा।

“कल फेरेट ने दो कैदियों को गोली मार दी, उससे दूर रहो।”

सेबेस्टियन का संपर्क कुछ पोलिश नागरिकों से भी हुआ, जिन्हें यहूदी कैदियों के साथ दिहाड़ी मजदूर के रूप में काम करने के लिए लाया गया था। दोनों समूहों को आपस में बात करने की अनुमति नहीं थी। लेकिन एक सुबह सेबेस्टियन ने खुद को एक मोटे गर्दन वाले मजदूर के बगल में बजरी खोदते हुए पाया, जिसने एक आंख पर पट्टी बांध रखी थी।

“तुम तो बिल्कुल कंकाल जैसे हो,” उस आदमी ने फुसफुसाते हुए उससे कहा। “यहाँ तुम्हारे साथ क्या कर रहे हैं?”

सेबेस्टियन ने घबराकर निगल लिया। उसने इस बारे में सोचा ही नहीं था कि दूसरे लोग उसे कैसे देखते हैं। कैदियों में से कोई भी एक-दूसरे की शक्ल-सूरत पर टिप्पणी नहीं करता था। सभी एक जैसे ही दुबले-पतले थे—बाल बिल्कुल मुंडे हुए, चोट के निशान, घाव, चिकनाई से सने, हड्डी जैसे पतले। लेकिन पोलिश व्यक्ति का सवाल: यहाँ तुम्हारे साथ क्या किया जा रहा है? यह आदमी, जो स्पष्ट रूप से पास में ही रहता था, अपने मोहल्ले में हो रही घटनाओं से इतना अनजान कैसे हो सकता था?

सेबेस्टियन का एक हिस्सा शुरू से सब कुछ याद करना चाहता था - मवेशी गाड़ियों में जानवरों को रखना, उन्हें अलग करना, कीटाणुनाशक छिड़काव करना, पिटाई करना, सुबह की सजाएं, शाम को बेस्वाद सूप परोसना, खांसी, उल्टी, टाइफस, स्कार्लेट

फीवर, और उनके बिस्तरों में मृत पाए जाने वाले शव।
दूसरी ओर, अगर यह बात पहरेदारों तक पहुँच जाती, तो उसे पूरे शिविर के सामने फाँसी दे दी जाती, और उसके पिता और दादा भी उसके साथ फाँसी पर लटका दिए जाते। नाज़ियों ने एक घातक चाल चली थी; खाना चुराते पकड़े गए हर कैदी के बदले पाँच को यातनाएँ दी जातीं। भागने की हर कोशिश के बदले दस को मार डाला जाता। सेबेस्टियन सच कैसे बता सकता था, जब नाज़ी मुझे उसके गले में जकड़ रहे थे?
"क्या आप मेरे लिए कुछ खाना ला सकते हैं?" उसने आखिरकार धीमी आवाज़ में कहा।
आँख पर पट्टी बांधे उस आदमी ने अपना सिर हिलाया और खुदाई करता रहा, मानो कह रहा हो, मैंने ये सब क्यों किया? लेकिन अगले दिन, जब पहरेदार कहीं और थे, उसने चुपके से सेबेस्टियन को एक आलू और सार्डिन मछली का एक डिब्बा दे दिया, जिसे सेबेस्टियन ने अपने मोहल्ले में वापस आने तक अपने अंडरवियर में छिपा लिया। उसने उसे अपने पिता और दादा के साथ बाँटा।
“आज रात, मैं हमारे प्रतिभाशाली सेबेस्टियन का आभारी हूँ,” लाज़ार्रे ने होंठों को चाटते हुए कहा। “मुझे नहीं लगता कि आलू का स्वाद इससे पहले कभी इतना अच्छा लगा होगा।”
लेव मुस्कुराया और अपने बेटे के सिर पर हाथ फेरा। उसने उसकी कॉलरबोन के ऊपर बने घुमावदार निशान को देखा, जो शुत्ज़हाफ्टलागरफ्यूहरर ग्राफ द्वारा कैदियों के एक समूह पर कुत्तों को छोड़ने का आदेश देने के बाद कुत्ते के काटने से बना एक निशान था।
“इससे कितना फायदा हो रहा है?” लेव ने पूछा।
सेबेस्टियन ने नीचे की ओर देखा। "अभी भी दर्द हो रहा है।"
"जब आप कॉलर वाली शर्ट पहनेंगे, तो आपको इसका पता भी नहीं चलेगा।"
सेबेस्टियन मुस्कुराया। "मैं कॉलर वाली कमीज़ कब पहनूंगा?"
“एक दिन,” लेव ने कहा।
लाज़ारे थोड़ा आगे झुके और बोले, “कभी भी अपने ज़ख्मों से शर्मिंदा मत हो। आखिरकार, ज़ख्म ही हमारे जीवन की कहानी बयां करते हैं, वो सब कुछ जो हमें चोट पहुँचाता है और वो सब कुछ जो हमें ठीक करता है।”
सेबेस्टियन ने घाव को हल्के से छुआ।

“मुझे तुम पर गर्व है, सेब,” लेव ने फुसफुसाते हुए कहा। उसकी आँखों में आँसू आ गए। “मुझे कभी एहसास नहीं हुआ कि तुम कितने मजबूत हो। मुझे माफ़ करना। शायद मैंने तुम पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया।”

“कोई बात नहीं, पापा,” सेबेस्टियन ने जवाब दिया।

"आई लव यू बेटा।"

सेबेस्टियन कांप उठा। उसने उन शब्दों के बारे में सोचा, और उन कई बार के बारे में जब उसने चाहा था कि उसके पिता उससे ये शब्द कहें। लेकिन अब, शब्द उतने महत्वपूर्ण नहीं थे। भोजन महत्वपूर्ण था। पानी महत्वपूर्ण था। पहरेदारों की निगाहों से बचना महत्वपूर्ण था। यह एक दुखद सच्चाई है जो मैंने मनुष्यों में देखी है। जब तक आप किसी प्रियजन को वह बात सुनाते हैं जो वे सुनना चाहते हैं, तब तक अक्सर उन्हें उसकी आवश्यकता नहीं रह जाती।

* * *

1944 की गर्मियों के अंत में, एक रात, कैदियों को दूर से आ रही धमाकों की आवाज़ से झटका लगा। अगले दिन, वे जो काम कर रहे थे, उसकी जगह उन्होंने हवाई हमले से बचाव के लिए आश्रय स्थलों का जल्दबाजी में निर्माण शुरू कर दिया।

उनमें से एक ने फुसफुसाते हुए कहा, "हम पर बमबारी हो रही है।"

“वे हमें मुक्त कराने आ रहे हैं!” दूसरे ने फुसफुसाते हुए कहा।

"लेकिन अगर वे हम पर हमला कर दें तो क्या होगा?"

“युद्ध का अंत हो गया! क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा?”

अफसोस की बात है कि यह अंत नहीं था। मित्र देशों की सेनाएँ बमबारी कर रही थीं, लेकिन सीधे मौत के शिविर पर नहीं, बल्कि उसके आसपास के कारखानों पर। दिन-रात हवाई जहाजों की गड़गड़ाहट आसमान में गूंजती रही। जर्मन सैनिक अपने आश्रयों की ओर भागे, जहाँ कैदियों का जाना मना था। कैदी केवल कीचड़ भरे मैदान में एक-दूसरे के ऊपर लेट सकते थे।

इन छापों के दौरान, लाज़ारे को एक वायरस लग गया, संभवतः अपने साथी कैदियों के नीचे बिताए घंटों के कारण। वह दिन-प्रतिदिन कमजोर होता गया और अपने काम करने में उसे बहुत कठिनाई होने लगी। हर कदम एक चुनौती जैसा लगता था। वह झुका हुआ था, पाइप क्लीनर की तरह मुड़ा हुआ, उसकी रीढ़ की हड्डियाँ त्वचा के नीचे से दिखाई दे रही थीं।

जैसे-जैसे लाज़ार्रे की खांसी बढ़ती गई, लेव और सेबेस्टियन को डर सताने लगा कि वह अगले "चयन" में पास नहीं हो पाएगा। नाज़ी कमज़ोरों को बाहर निकालने और नए लोगों के लिए जगह बनाने के लिए इस तरह की छंटनी प्रक्रिया का इस्तेमाल करते थे। हाल ही में शिविर में हंगेरियन यहूदियों की बाढ़ आ गई थी और ब्लॉक क्वार्टर पूरी तरह से भर गए थे। कुछ कैदियों को जाना ही पड़ेगा।

रात के खाने के बाद जब सूप परोसा गया, तो लेव ने सेबेस्टियन से कहा, "अपना हिस्सा उसे दे दो।" सेबेस्टियन ने वैसा ही किया। लेव ने भी वैसा ही किया। उन्हें उम्मीद थी कि इससे बूढ़े आदमी का स्वास्थ्य सुधर जाएगा। लेकिन जब चुनाव का दिन आया, तो उसकी हालत में कोई खास सुधार नहीं हुआ था।

उस दोपहर कैदियों को नंगा करके एक बड़े कमरे में ठूंस दिया गया। एक-एक करके उन्हें आंगन पार करके निरीक्षण अधिकारी को अपना नंबर लिखा कार्ड देने को कहा गया। वह अधिकारी दो सेकंड की सरसरी नज़र के आधार पर तय करेगा कि किसे फांसी दी जाएगी और किसे नहीं।

“अपने दादाजी को पीछे ले जाओ,” लेव ने फुसफुसाते हुए कहा। उसने और सेबेस्टियन ने लाज़ार्रे को अन्य कैदियों के एक समूह के पीछे छिपा दिया। उन्हें उम्मीद थी कि कोटा पूरा हो जाने पर इंस्पेक्टर को शायद ज्यादा परवाह न हो।

"याद रखना, नैनो," सेबेस्टियन ने कहा, "अपना सिर ऊपर रखो, सीना ताने रखो, जितनी तेजी से हो सके चलो, मजबूत दिखो।"

लाज़ार्रे ने सिर हिलाया, लेकिन वह मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था। उसके आगे केवल कुछ ही नग्न पुरुष बचे थे। अचानक, उसे ज़ोर-ज़ोर से खाँसी आने लगी और वह दर्द से झुक गया।

लेव ने अपने होंठ दबा लिए। उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसने सेबेस्टियन की ओर देखा, जिसने अपने पिता के चेहरे पर कुछ ऐसा देखा जो उसने पहले कभी नहीं देखा था। फिर, एक फुर्तीले अंदाज़ में, लेव ने अपने पिता के हाथ से उनका कार्ड छीन लिया, अपना नंबर लाज़ार्रे की हथेली में थमा दिया और आँगन में निकल गया। इंस्पेक्टर के सामने से नग्न अवस्था में दौड़ते हुए, सीना ताने, आसमान की ओर देखते हुए, वह अपने पिता को बचा रहा था और खुद को दोषी ठहरा रहा था।

बुडापेस्ट

फैनी ने ब्रेड पर जैम लगाया और झटपट उसे खा लिया। बुडापेस्ट की एक अपार्टमेंट

बिल्डिंग के तहखाने में भी, वह जल्दी-जल्दी खा रही थी, मानो खाना किसी भी क्षण छीन लिया जाएगा।

उसके आसपास बाईस और बच्चे थे, कुछ पाँच साल के, कुछ सोलह साल के। वे चुपचाप खाना खा रहे थे, चम्मच-कांटे की आवाज़ न हो, इसका पूरा ध्यान रखते हुए। उन सभी को डेन्यूब नदी के किनारे से बचाया गया था और वे लगभग तीन सप्ताह से इस तहखाने में छिपे हुए थे।

फैनी को जो जानकारी मिली, उससे यही लगा कि वह कुछ बेहद रहस्यमय घटनाओं के कारण बच गई थी। एक मशहूर हंगेरियन अभिनेत्री नदी किनारे ठीक उसी समय पहुँची जब एरो क्रॉस सैनिकों ने फाँसी देना शुरू किया था। वह अपने साथ सोना और फर लेकर आई थी और पहरेदारों के बीच घूमकर कैदियों को रिहा करने के लिए रिश्वत देने लगी। फैनी ने उस महिला को कभी नहीं देखा—वह उससे पहले ही बेहोश हो गई थी—लेकिन बड़े लड़कों ने बताया कि वह बेहद आकर्षक, मोहक और गाढ़ी आँखों के मेकअप और चमकीली लाल लिपस्टिक के साथ बहुत सुंदर लग रही थी। उन्होंने यह भी बताया कि कभी-कभी वह सैनिकों के साथ छेड़छाड़ करती हुई प्रतीत होती थी।

हालांकि, उनके प्रयास आंशिक रूप से ही सफल रहे। एरो क्रॉस ने उन्हें बच्चों को ले जाने की अनुमति दी, लेकिन वयस्कों को नहीं। बच्चों को गाड़ियों में बिठाकर आधी रात को एक खाली अपार्टमेंट बिल्डिंग में ले जाया गया, जो जाहिर तौर पर अभिनेत्री का निवास स्थान नहीं था, बल्कि शहर के दूसरे छोर पर स्थित था। उन्हें जल्दी से नीचे ले जाया गया और सोने के लिए कंबल दिए गए।

तहखाने में, उन्हें दिन में दो बार एक रसोइया खाना खिलाता था, जिसके बारे में फैनी को लगता था कि वह अभिनेत्री के लिए काम करता था। उनके पास पढ़ने के लिए किताबें थीं और साथ में खेलने के लिए एक बोर्ड गेम भी था। हर दिन, जब रसोइया खाना देने आता था, तो फैनी उससे एक ही सवाल पूछती थी। क्या आपने निको नाम के किसी लड़के को देखा है? क्या वह उस रात नदी किनारे था?

जवाब हमेशा एक ही होता था। कोई भी उस नाम को नहीं जानता था। जब दिसंबर आया और रसोइया ने तोहफे के तौर पर हरी स्प्रिंकल्स वाली चीनी कुकीज़ लाईं, तो फैनी को आश्चर्य हुआ कि क्या उसने यह सब कल्पना ही की थी।

मैं आपको बता सकता हूँ कि उसने ऐसा नहीं किया।

तो निको डेन्यूब नदी पर क्या कर रहा था?

यह सब जालसाजी से शुरू हुआ, एक ऐसी कला जिसे उसने रोमानी शरणार्थियों के साथ रहते हुए निखारा। ग्रीस और यूगोस्लाविया की सीमा के पास घने जंगलों में छिपकर, पापो ने निको को स्याही और रंगों के बारे में सिखाया, लकड़ी के ब्लॉकों से स्टैम्प बनाना, कागज में छेद करना और ड्राई क्लीनिंग की दुकानों से लिए गए लैक्टिक एसिड से निशान मिटाना सिखाया। निको की चित्रकारी की प्रतिभा उसके काम आई; वह इसमें माहिर था, और 1943 की सर्दियों तक, वह दर्जनों पहचान पत्र और खाद्य राशन प्रमाणपत्रों के पैकेट बना चुका था, जिनसे रोमानी शरणार्थियों को जीवित रहने में मदद मिली। अब उसके पास अपने तीन पासपोर्ट भी थे - हंगेरियन, पोलिश और सबसे महत्वपूर्ण, जर्मन पासपोर्ट जिस पर हंस डेगलर का नाम लिखा था।

रात में, निको रोमानी परिवारों के साथ उनकी छोटी-छोटी अलाव के पास बैठता था, ताकि नाजियों की नज़र से बचा जा सके। वह प्याज़ के साथ खरगोश के स्टू के बर्तन में से थोड़ा-थोड़ा खाता और लकड़ी के गिटारों पर बजने वाले गाने सुनता। वह बुजुर्गों के भावपूर्ण गायन को सुनता और उसे सैलानिका में सब्त की शामें याद आ जातीं, कैसे उसके दादाजी ऊँची आवाज़ में हिब्रू प्रार्थनाएँ पढ़ते थे, और कैसे निको और सेबेस्टियन उनकी आवाज़ के ऊँचे सुरों पर लड़खड़ाने पर अपनी हँसी दबा लेते थे। निको को उन यादों की बहुत याद आती थी। वह उन्हें फिर से देखने के लिए बेताब था।

एक सुबह, मैंटिस की नींद खुली तो उसने देखा कि निको पूरी तरह से कपड़े पहने हुए था और अपने चमड़े के बैग की ज़िप बंद कर रहा था।

“तुम क्या कर रहे हो, लड़के?”

"मुजे जाना है।"

"अपने परिवार को ढूंढने के लिए?"

मेरा परिवार जर्मनी में सुरक्षित है।

मंटिस ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "क्या सच में?"

“हां। ऐसा ही है। खैर, मुझे जाना होगा।”

"ज़रा ठहरिये।"

मंटिस अपने तम्बू में लौट गया। कुछ ही देर बाद, वह पापो के साथ लौटा, जिसके पास दो रोटियाँ, जैम का एक डिब्बा और कलम, स्याही, टिकट और तीन चोरी किए

गए हंगेरियन पासपोर्ट से भरा एक थैला था। उसने गर्मजोशी से मुस्कुराते हुए थैला निको को सौंप दिया।

मुझे पता था कि यह दिन आने वाला है।

मुझे माफ करना, पापो।

“सावधान रहो। किसी पर भरोसा मत करो।”

निको का गला भर आया। उसका एक हिस्सा यहीं रहना चाहता था, रात में जलने वाली आग, मधुर गीत और उन रोमानी लोगों के साथ जिन्होंने बिना सवाल किए उसे अपना लिया था। उसे ऐसा लगता था जैसे वह उसका परिवार हो। लेकिन उसके असली परिवार को उसकी ज़रूरत थी। जालसाजी की कला सीखकर, उसकी योजना थी कि वह इतने जाली दस्तावेज़ तैयार करे जिससे वे लोग आज़ाद हो सकें।

“हर चीज के लिए धन्यवाद,” उसने पापो से कहा।

हमें आपका धन्यवाद करना चाहिए। आपने हमारी जान बचाई।

मंटिस ने गहरी सांस छोड़ी। "जानते हो, अगर तुम उन शिविरों में जाओगे, तो वे तुम्हें पल भर में मार डालेंगे।"

निको ने कोई जवाब नहीं दिया।

"मैं तुमसे यह कहूंगा, एरिक अल्मन, या तुम्हारा जो भी नाम हो, तुममें वाकई बहुत हिम्मत है।"

हवा से जमी हुई मिट्टी पर पत्ते उड़ने लगे। पापो, निको को उनके शिविर के किनारे तक ले गया।

“Always remember this,” he said. “Si khohaimo may pachivalo sar o chachimo.”

“इसका क्या मतलब है?” निको ने पूछा।

“कुछ झूठ पर विश्वास करना सच पर विश्वास करने से ज्यादा आसान होता है।”

* * *

इसी सिद्धांत को अपनाते हुए, निको पैदल चला, ट्रेनों में सफर किया, वैगनों और कारों में लिफ्ट ली और युगोस्लाविया से होते हुए हंगरी तक का सफर तय करके पोलैंड की ओर बढ़ा, जहाँ उसने अपनी सुविधानुसार अलग-अलग पहचानें अपनाईं। बेलग्रेड में, उसने एक छात्र होने का नाटक किया और एक हफ्ते तक स्कूल के लंचरूम में खाना खाया। ओसिजेक में, उसने एक प्रिंटर के प्रशिक्षु के रूप में काम पाया, और वहाँ कुछ

समय के लिए रुककर कागज और अन्य सामग्री चुराई ताकि वह और जालसाजी कर सके। उसके पास हमेशा एक कहानी तैयार रहती थी, अगर कोई अधिकारी उसे रोक लेता। वह एक हंगेरियन संगीतकार था जो अपने दादा-दादी से मिलने आया था। वह एक पोलिश एथलीट था जो अपने चाचा के साथ छुट्टियों पर आया था। कुछ झूठ सच से ज्यादा आसानी से विश्वास करने योग्य होते हैं। निको का सच, कि वह ग्रीस का एक यहूदी लड़का था जिसे एक नाज़ी हॉस्पस्टर्मटफ्यूहरर ने पढ़ाया था, जिसने ट्रेन प्लेटफॉर्म पर अपने ही लोगों को धोखा दिया था, जिसे रोमानी लोगों ने जालसाजी की कला सिखाई थी, और अब वह एक ऐसे मौत के शिविर की यात्रा कर रहा था जहाँ से उसे बचा लिया गया था, उसकी झूठी कहानियों की तुलना में कहीं कम विश्वसनीय था।

एक रात, हंगरी के शहर कप्सोवा में, निको एक व्यस्त सड़क पर चल रहा था, तभी नाजियों का एक समूह गाड़ियों में आया और एक डिपार्टमेंटल स्टोर के अंदर घुस गया। स्टोर के मालिक, तीन यहूदी भाई, बंदूक की नोक पर बाहर लाए गए और स्टोर की खिड़कियों के सामने कतार में खड़े कर दिए गए। एक दुबला-पतला और गठीला युवा जर्मन सैनिक ने अपना कोट और टोपी उतारकर एक बेंच पर रख दी। जब दोनों भाइयों को बांधा जा रहा था, तब सैनिक ने उन्हें बुरी तरह पीटा।

देखने के लिए भीड़ जमा हो गई, कुछ लोग हर वार पर खुशी से चिल्ला रहे थे। “फिर से मारो!” “आखिरकार मार ही दिया!” जर्मन सैनिक जोश में आ गया, और जब दोनों भाई बेहोश हो गए, तो उसने उन्हें और वार करने के लिए उठाने का आदेश दिया। जब आखिरकार उसने वार करना बंद किया, तो उसकी उंगलियों के जोड़ छिल गए थे और उसकी कमीज़ की आस्तीन खून से सनी हुई थी। उसने अपने साथी सैनिकों से बधाई के थप्पड़ खाए और संतुष्टि से सांस छोड़ी।

लेकिन जब वह अपना कोट और टोपी लेने गया, तो वे गायब थे।

निको पहले ही कई ब्लॉक दूर जा चुका था।

* * *

जैसे-जैसे सप्ताह बीतते गए, निको ने अपनी विभिन्न पहचानों के तहत मिले लोगों से हंगेरियन भाषा सीखी। उसे सेगेद के एक कैफे में बर्तन धोने का काम मिल गया। रसोइए को वह पसंद आ गया और काम के बाद ताश खेलते समय वह उसे कुछ वाक्यांश सिखाता था। आठ अलग-अलग भाषाओं के कुछ अंश पहले से ही सीखे हुए

निको ने एक प्रणाली बना ली थी। कुछ मुख्य क्रियाएँ (करना, चाहना, देखना, बनाना, जाना, आना, खाना, सोना), कुछ मुख्य संज्ञाएँ (भोजन, पानी, कमरा, मित्र, परिवार, देश) सीखें, सभी सर्वनाम याद करें, और फिर बाकी को पूरा करना शुरू करें।

एक रात, निको ने जर्मन सैनिक का कोट और टोपी पहनी और शहर के केंद्र की ओर चल पड़ा। हालाँकि वह नाज़ी वर्दी के हिसाब से काफ़ी जवान दिख रहा था, फिर भी किसी ने उससे कोई सवाल नहीं किया। बल्कि इसके विपरीत, सबने बनावटी मुस्कान दिखाई और उसके रास्ते से हट गए।

शहर के केंद्र के पास, निको ने एक सिनेमाघर के सामने लोगों की भीड़ देखी। वह यह देखने के लिए पास गया कि क्या हो रहा है। वहाँ, भीड़ के बीचोंबीच, लहराते बालों वाली एक खूबसूरत महिला खड़ी थी, जिसके बारे में उसने सुना था कि वह वहाँ चल रही नई फिल्म की अभिनेत्री है। वह फिल्म के प्रचार के लिए सेगेड आई थी। उसने एक चमकीला गाउन और सफेद दस्ताने पहने हुए थे, और लोग ऑटोग्राफ लेने के लिए उसके चारों ओर जमा हो गए थे।

“कैटलिन!” वे चिल्लाए। “इधर आओ, कैटलिन!”

निको ने अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी कोई फ़िल्म नहीं देखी थी। जब थिएटर के सामने भीड़ उमड़ रही थी, तो वह चुपके से पीछे की तरफ गया और उसे एक खुला दरवाज़ा मिल गया। वह अंदर घुस गया और पीछे की सीट पर बैठ गया। जब बाकी सीटें भर गईं और हॉल में अंधेरा छा गया, तो उसे एक पल के लिए घबराहट हुई। फिर स्क्रीन रोशन हो उठी।

फिल्म एक हंगेरियन काउंट के बारे में थी, जो एक जादुई टाइम मशीन के ज़रिए दो सदियाँ पीछे जाकर एक महिला का हाथ जीतने की कोशिश करता है। उस महिला का किरदार थिएटर के बाहर खड़ी अभिनेत्री निभा रही थी। निको न सिर्फ फिल्म, उसके दृश्यों, एक्शन और जीवंत किरदारों से मंत्रमुग्ध हो गया, बल्कि कहानी और समय में पीछे जाने के विचार से भी। पूरा अनुभव जादुई था। कुछ पलों के लिए उसने युद्ध, ट्रेनों या अपने झूठ के बारे में नहीं सोचा। वह बस स्क्रीन को देखता रहा, उसका मुँह खुला रह गया। वह नहीं चाहता था कि फिल्म खत्म हो।

लेकिन यह सब अचानक ही खत्म हो गया। एक ज़ोरदार शोर ने शांति भंग कर दी, जिससे निको को वह पल याद आ गया जब उसका घर सैनिकों से घिर गया था और वह एक तंग जगह में छिपा हुआ था। बत्तियाँ जल उठीं और निको ने जर्मन भाषा में

चीखते हुए लोगों को सुना। एसएस सैनिक। उन्होंने घर में मौजूद लोगों को बाहर आने का आदेश दिया।

“जल्दी करो!” वे चिल्लाए। और तेज़!

निको ने तब तक इंतज़ार किया जब तक कि थिएटर लगभग खाली नहीं हो गया, फिर अपने हाथ पीठ पीछे करके धीरे-धीरे बाहर निकला, मानो उसने थिएटर खाली कराने में मदद की हो। जब उसने दूसरे नाज़ियों को देखा, तो वह पीछे हट गया, उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। नकली कागज़ात पेश करना या इस पोशाक में अकेले सड़कों पर घूमना एक बात थी। लेकिन असली नाज़ियों के सामने नाज़ी की भूमिका निभाना बिल्कुल अलग बात थी। निको के लिए सौभाग्य की बात यह थी कि उस समय युद्ध में जर्मन सैनिकों की संख्या कम हो रही थी, और नाज़ी युवाओं को ज़्यादा से ज़्यादा तैनात किया जा रहा था। किसी किशोर को जबरन सेवा में लगाना कोई असामान्य बात नहीं थी।

इस थिएटर में मौजूद सैनिक—केवल पाँच ही थे—फिल्म के मालिक और अभिनेत्री को लेकर ज़्यादा चिंतित थे, जिन पर वे दुष्प्रचार फैलाने का आरोप लगा रहे थे। वे चिल्लाते हुए कह रहे थे कि फिल्म "वर्जित" है और प्रोटोकॉल का "उल्लंघन" है। उन्होंने अभिनेत्री को ज़बरदस्ती एक वाहन की पिछली सीट पर बिठा दिया, संभवतः उसे गिरफ्तार करने के लिए।

निको जानता था कि उसे मौका देखकर चुपचाप निकल जाना चाहिए। लेकिन जिस महिला को उसने कुछ ही पल पहले एक विशाल स्क्रीन पर देखा था, उसने उसे वहीं रोक दिया। वह किसी दूसरी दुनिया की लग रही थी। बेहद आकर्षक। यहां तक कि वाहन में भी, उसने डर का कोई संकेत नहीं दिखाया। उसने अपने हाथ गोद में रखे और सीधे आगे देखती रही।

नाज़ियों का कुछ दर्शकों से झगड़ा शुरू हो गया, जो थिएटर मालिक से अपने पैसे वापस मांग रहे थे। हाथापाई छिड़ गई और सैनिकों ने बीच-बचाव करने के लिए हस्तक्षेप किया। एक सैनिक निको के पास से दौड़ता हुआ गुजरा और उसकी वर्दी देखकर उसने वाहन की ओर इशारा करते हुए जर्मन में चिल्लाया, "औरत पर नज़र रखो!"

निको ने सिर हिलाया और जल्दी से गाड़ी की ओर चल दिया। अभिनेत्री सीधे आगे देखती रही, मानो डरी हुई होने के बजाय गुस्से में हो।

“क्या यहाँ से निकलने का कोई रास्ता है?” निको ने हंगेरियन भाषा में फुसफुसाते हुए पूछा।

वह मुड़ी और निको के रोंगटे खड़े हो गए। वह इतनी खूबसूरत थी कि उसकी आंखों की एक झलक ही किसी को भी स्तब्ध कर सकती थी। उस महिला ने एक पल के लिए उसे देखा, फिर लिपस्टिक लगे होंठों के नीचे दो उंगलियां दबा लीं।

“मेरा ड्राइवर वहाँ है,” उसने कहा।

चौक के उस पार एक काली गाड़ी खड़ी थी, जिसके अंदर एक आदमी बैठा था। बिना सोचे समझे, निको ने गाड़ी का दरवाजा खोल दिया।

"जाना।"

अभिनेत्री ने दोनों ओर देखा, मानो यह कोई चाल हो। फिर, जैसे ही थिएटर के पास लड़ाई का शोर बढ़ता गया, वह तेज़ी से बाहर निकली और इंतज़ार कर रही गाड़ी की ओर भागी।

निको ने गाड़ी का दरवाज़ा बंद किया, सिर झुकाया और कोने की ओर चल पड़ा। जैसे ही वह अकेला हुआ, उसने नाज़ी कोट और टोपी उतार दी और तेज़ी से उस कैफ़े की ओर चल पड़ा जहाँ वह काम करता था, ताकि अपना बैग ले सके। उसकी साँसें तेज़ चल रही थीं और वह बार-बार पलकें झपका रहा था, मानो उसे विश्वास ही न हो रहा हो कि उसने अभी-अभी क्या किया है। अगर नाज़ियों ने उसे ढूंढ लिया तो क्या होगा? वह कितनी बड़ी मुसीबत में पड़ जाएगा? उसने एक अजनबी के लिए इतना बड़ा जोखिम क्यों उठाया?

जैसे ही उसे अपना बैग मिला, वह ट्रेन स्टेशन की ओर भागा। वह एक गली में घुस गया और तेजी से भागा। जैसे ही वह दूसरी तरफ निकला, उसे टायरों की तेज आवाज सुनाई दी और आती हुई कार से टकराने से ठीक पहले वह पीछे हट गया।

इसका पिछला दरवाजा खुल गया।

"अंदर आ जाओ," अभिनेत्री ने कहा।

* * *

उनका नाम कैटलिन कराडी था और एक समय वह हंगरी की सबसे बड़ी फिल्म स्टार थीं। एक गरीब मोची की बेटी के रूप में पली-बढ़ीं, वह गायिका और फिल्म आइकन बनीं और अपार प्रसिद्धि प्राप्त की। उनकी अनोखी आवाज़ ने लाखों प्रशंसकों को आकर्षित किया और उनके मोहक अंदाज़ और फैशन शैली को हज़ारों हंगेरियन

महिलाओं ने अपनाया, जिन्होंने उन्हीं की तरह कपड़े पहने, बाल संवारे और मेकअप किया।

कैटलिन का निजी जीवन अक्सर खबरों में रहता था, जिससे उनकी प्रसिद्धि और भी बढ़ गई। लेकिन जब युद्ध शुरू हुआ, तो वह जर्मन विरोधी थीं, और चूंकि उनका हर काम या बात तुरंत सार्वजनिक हो जाती थी, इसलिए उन्हें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी। जैसे-जैसे हंगरी नाज़ी नियंत्रण में आता गया, उनके गाने प्रतिबंधित कर दिए गए और अंततः उनकी फिल्में भी।

जिस रात उसने चुपके से निको को अपनी कार में बिठाया, वे बुडापेस्ट के लिए रवाना हुए और उसने उसे अपने अपार्टमेंट में रहने दिया, जो निको ने अब तक देखे किसी भी अपार्टमेंट से कहीं अधिक आलीशान था। एक बड़े बैठक कक्ष के बीचोंबीच एक झूमर लटका हुआ था और हर खिड़की पर लेस के पर्दे लगे हुए थे।

“तो,” उसने अपने लिए एक गिलास वाइन डालते हुए कहा। “आपने मुझे अपना नाम नहीं बताया।”

"उसका डेगलर," निको ने कहा।

“क्या आप जर्मन हैं?”

"हाँ।"

वह मुस्कुराई। "युवक, मैं एक अभिनेत्री हूँ। क्या तुम्हें नहीं लगता कि मैं बता सकती हूँ कि कोई दिखावा कर रहा है या नहीं?"

निको ने अपना जर्मन पासपोर्ट दिखाया, जिसे देखकर वह मुस्कुरा उठी।

“और भी बेहतर,” उसने कहा। “एक ऐसा अभिनेता जिसके पास डिग्री हो।”

उसने कंधे उचकाते हुए कहा, “कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने सालों से अपना असली नाम इस्तेमाल नहीं किया है। मेरे मैनेजर ने ही ‘काराडी’ नाम रखा था। उन्हें लगा कि यह हंगेरियन जैसा लगता है।” उसने अपनी वाइन की चुस्की ली। “आजकल, हर कोई वही बन जाता है जो उसे बनना पड़ता है।”

निको ने उस महिला को गौर से देखा। उसके गालों का रंग। उसकी पलकों पर लगी लिपस्टिक का तरीका।

“क्या तुम्हें डर नहीं लगता कि वे फिर से तुम्हारे पास आएंगे?” उसने पूछा।

"ओह, मुझे पता है वे मेरे पीछे आएंगे। अगर आप युद्ध के दौरान किसी बात के लिए खड़े होते हैं, तो आपको उसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।"

उसने निको की आंखों में सीधे देखा।
“आप किस बात के लिए खड़े हैं... हैंस डेगलर?”
निको हिचकिचाया। उससे यह सवाल पहले कभी नहीं पूछा गया था। वह किन सिद्धांतों पर चलता था? उसे बस अपने दादाजी की याद आई, जो उसकी नज़र में सबसे सिद्धांतवादी व्यक्ति थे। उसे वह कहानी याद आई जो उन्होंने निको और सेबेस्टियन को व्हाइट टॉवर में सुनाई थी, उस कैदी की कहानी जिसने चित्रकारी के ज़रिए आज़ादी पाने का प्रस्ताव रखा था।
"माफी पाने के लिए एक आदमी कुछ भी कर सकता है," निको ने कहा।
कैटलिन खिलखिलाकर हंस पड़ी। "एक स्कूली बच्चे का चेहरा, एक नाज़ी के कपड़े और एक दार्शनिक के शब्द।"
आपको फिल्मों में होना चाहिए।
निको को कैटलिन बेहद दिलचस्प लगी। कैटलिन को निको मनोरंजक लगा।
उस रात वे भोर तक जागते रहे, निको फिल्मों के बारे में अनगिनत सवाल पूछता रहा। कपड़े कहाँ से आए? कहानियाँ किसने लिखीं? उन्होंने ऐसा कैसे दिखाया कि मानो वह समय में पीछे चली गई हो? कैटलिन उसकी मासूमियत से मोहित हो गई, और इससे उसे इस चिंता से कुछ राहत मिली कि सेगेड में जो हुआ था, वह जल्द ही उसका पीछा करते हुए यहाँ भी आ जाएगा।
ज्यादा समय नहीं लगा। दो दिन बाद, जर्मन वाहन उसके अपार्टमेंट भवन पर पहुंचे और उसे गिरफ्तार कर जेल ले जाया गया। यह पहली बार नहीं था। और न ही आखिरी बार होगा। हंगरी के अधिकारियों ने उस पर जासूसी का आरोप लगाया और जेल की कोठरी में उसे पीटा और यातनाएं दी गईं। यह सिलसिला कई महीनों तक चलता रहा।
अंततः, एक सरकारी अधिकारी की मदद से कैटलिन को रिहा कर दिया गया। लेकिन कैद के दौरान नाजियों ने उसके अपार्टमेंट को पूरी तरह से खाली कर दिया था। वह खाली कमरों में लौटी। पर्दे भी गायब थे।
वह कोने में गिर पड़ी और अपने घुटनों को अपनी छाती से लगा लिया। उसके पैरों और हाथों पर गहरे घाव थे। उसका कभी खूबसूरत चेहरा अब बैंगनी रंग के धब्बों से भरा हुआ था।
आँसू पोंछते हुए उसे बैठक की खिड़की के बाहर एक आवाज़ सुनाई दी। उसने गहरी

साँस ली। उसने देखा कि खिड़की के फ्रेम में पहले एक हाथ, फिर दो हाथ दिखाई दिए, उसके बाद सुनहरे बालों का गुच्छा और निको का मुस्कुराता हुआ चेहरा नज़र आया। उसने शीशे को ऊपर धकेला और उसमें से गिर पड़ा।

“तुम फिर से?” उसने कहा।

"तुम ठीक हो?"

"क्या मैं ठीक दिख रही हूँ?"

"नहीं।"

“वे कमीने।” उसने खाली कमरे की ओर इशारा करते हुए कहा। “उन्होंने मुझे पूरी तरह लूट लिया। सब कुछ छीन लिया।”

निको मुस्कुराया।

उन्होंने कहा, "सब कुछ नहीं।"

आशीर्वाद के शब्द

यहूदी लोग किसी की मृत्यु की खबर मिलने पर एक प्रार्थना पढ़ते हैं। प्रार्थना के शब्द हिब्रू भाषा में हैं, लेकिन उसका अनुवाद लगभग इस प्रकार है:

हे प्रभु हमारे परमेश्वर, सत्य के न्यायाधीश, आप धन्य हैं।

किसी की मृत्यु पर कहने के लिए इतनी सारी बातें थीं, फिर भी मेरा ज़िक्र क्यों? सच्चाई का ज़िक्र ही क्यों? क्षमा क्यों नहीं माँगी? दया क्यों नहीं माँगी? एक शानदार स्वर्ग में शांति की कामना क्यों नहीं की?

शायद ऐसा इसलिए है क्योंकि जिन झूठों के साथ आप मरते हैं, प्रभु सबसे पहले उन्हें ही हटा देते हैं—वे झूठ जो आपने बोले हैं, और वे झूठ जो आपके बारे में बोले गए हैं। या शायद मैं आपकी सोच से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हूं।

* * *

चयन के दौरान लेव ने अपने पिता के साथ नंबर कार्ड बदल लिए थे, और जर्मनों का उसे पकड़ने आना तय था। रात में, अपने बिस्तरों पर, लाज़ार ने अपने बेटे से विनती की कि वह अपनी गलती मान ले, एसएस सैनिकों को बताए कि वह केवल अपने बूढ़े पिता को बचाने की कोशिश कर रहा था। लेकिन लेव ने अपना सिर हिला दिया।

"तब वे हम दोनों को ही मार डालेंगे।"

वह बिल्कुल सही था। इसलिए लेव चुप रहा, उसके पिता रोते रहे, और सेबेस्टियन इंतज़ार करता रहा, इतना बेबस कि उसके हाथ-पैर सुन्न पड़ गए। तीसरी सुबह, एक

सर्द, बरसाती दिन, एसएस गार्डों ने "चुने गए" लोगों के नंबर पढ़े और हाज़िरी की कतारों से लोगों को खींच लिया। लेव भी उनमें से एक था। उसने एक गहरी साँस ली और सेबेस्टियन ने अपने पिता के हाथों को काँपते देखा। उन्हें ले जाने से ठीक पहले, वह अपने बेटे के गले लग गया।

“सेबी, मैं तुमसे प्यार करता हूँ,” लेव ने फुसफुसाते हुए कहा। “कभी हार मत मानना। मेरे लिए ज़िंदा रहना, ठीक है? नैनो का ख्याल रखना। और एक दिन अपने भाई को ढूंढ निकालना। चाहे कितना भी समय लगे। उसे बताना कि तुमने उसे माफ़ कर दिया है।”

“नहीं, पापा,” सेबेस्टियन ने विनती की। “प्लीज, प्लीज मुझे छोड़कर मत जाइए…”

लेव को घसीटते हुए ले जाते समय एक गार्ड ने सेबेस्टियन के चेहरे पर थप्पड़ मारा। सेबेस्टियन की आँखों से गर्म आँसू बहने लगे। वह चीखना चाहता था। वह इन सैनिकों को मार डालना चाहता था, अपने पिता को पकड़कर भाग जाना चाहता था। लेकिन वह कहाँ जाता? उनमें से कोई कहाँ जाता?

अचानक उसने ये शब्द सुने:

“हे प्रभु हमारे परमेश्वर, सत्य के न्यायाधीश, आप धन्य हैं।”

उसके दादाजी झुके हुए थे और हिब्रू भाषा में प्रार्थना बुदबुदा रहे थे। सेबेस्टियन के अंदर ऐसा क्रोध भड़क उठा जिसने उसकी आत्मा को झुलसा दिया। उसने उसी क्षण कसम खाई कि वह फिर कभी प्रार्थना नहीं करेगा। यहाँ कोई ईश्वर नहीं था। कहीं भी कोई ईश्वर नहीं था।

“काम पर वापस जाओ!” नाज़ी अधिकारी चिल्लाया।

एक बिगुल बजा। कैदी अपने-अपने कामों में जुट गए। घने बादलों ने सुबह के आकाश को ढक लिया।

बीस मिनट बाद, लेव क्रिस्पिस इस दुनिया से चले गए, सिर में लगी एक गोली ने उनकी आत्मा को उनके शरीर से अलग कर दिया, जिसे एक कीचड़ भरी खाई में फेंक दिया गया था, जिसे एक दिन पहले सेबेस्टियन सहित एक दर्जन थके-हारे कैदियों ने खोदा था।

किसी बेटे को कभी अपने पिता की कब्र नहीं खोदनी चाहिए। मैं यह सोचना चाहूंगा कि यह उस सच्चाई का हिस्सा था जिसका न्याय प्रभु ने तब किया जब लेव स्वर्ग के द्वार पर पहुंचा।

लेकिन मैं तो यहीं तुम्हारे साथ हूँ। तो मुझे कैसे पता चलेगा?

चार दिन तक बर्फबारी

युद्ध का अंत केवल मृतकों को ही देखने को मिलता है। लेकिन हर युद्ध का अपना अंत होता है, और द्वितीय विश्व युद्ध का अंत नाजियों की पराजय के साथ हुआ। हालांकि, यह पराजय हर जगह एक समान नहीं थी। इसके बजाय, कई महीनों तक युद्ध का अंत होता रहा, कुछ लोग मुक्ति का जश्न मना रहे थे, जबकि अन्य अंतिम, क्रूर परिणामों का सामना कर रहे थे।

मुझे 27 जनवरी, 1945, शनिवार के एक दिन को चार अलग-अलग दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करने की अनुमति दें, ताकि यह दिखाया जा सके कि फैनी, सेबेस्टियन, उडो और निको के लिए युद्ध का अंत अलग-अलग तरीके से कैसे हुआ।

इन चारों घटनाओं में बर्फ शामिल थी।

फैनी कैदियों की एक लंबी कतार में चल रही थी।

उसे नहीं पता था कि आज कौन सा दिन है। उसे नहीं पता था कि कौन सा महीना है। बस इतना पता था कि कड़ाके की ठंड है, और उसे और बाकी लोगों को हर रात जमी हुई ज़मीन पर सोना पड़ता है, और उन्हें गर्म रखने के लिए एक चादर तक नहीं होती।

नाज़ियों ने अपने अंतिम हताश प्रयासों में, पकड़े गए यहूदियों को वापस उनकी मातृभूमि की ओर मार्च कराया, ताकि वे मुक्तिदाताओं को अपने साथ हुए अत्याचारों के बारे में न बता सकें, और उनकी हत्या करने से पहले उनके श्रम का जो कुछ भी बचा था, उसका उपयोग कर सकें।

यह कल्पना करना कठिन है कि यातना शिविरों को जलाकर वीरान कर दिए जाने के बावजूद, जो लोग बच गए थे, उनकी यातनाएँ समाप्त नहीं हुईं। इसके बजाय, उन्हें निर्धन और कमजोर अवस्था में इकट्ठा किया गया और बिना भोजन-पानी के सैकड़ों मील पैदल चलने के लिए मजबूर किया गया। जो लोग गिर जाते, आराम करने के लिए रुकते, या शौच करने के लिए भी बैठते, उन्हें तुरंत गोली मार दी जाती और उनके शवों को सड़क के किनारे बिना दफनाए छोड़ दिया जाता।

आप शायद पूछेंगे कि विश्व प्रभुत्व स्थापित करने के अपने अंतिम दिनों में, जब सैन्य युद्ध लड़ने को थे, तब भेड़िया असहाय यहूदियों को मारने की इतनी परवाह क्यों कर रहा था? लेकिन एक पागल से सवाल करना मकड़ी से पूछताछ करने जैसा है। दोनों ही तब तक जाले बुनते रहते हैं जब तक कोई उन्हें कुचलकर खत्म न कर दे।

फैनी और कैटलिन कराडी द्वारा छिपाए गए अन्य बच्चों का पता एक रात तब चला जब एक पड़ोसी ने एरो क्रॉस को इमारत में असामान्य रूप से बड़ी मात्रा में भोजन की आपूर्ति के बारे में सूचना दी। सैनिक तहखाने में घुस आए और चिल्लाते हुए आदेश देने लगे और राइफलें लहराने लगे। सबसे छोटे बच्चों को ले जाया गया। फैनी जैसी किशोरियों को टेलेकी स्क्वायर स्थित एक नजरबंदी बैरक में ले जाया गया, जहाँ वे भूखे वयस्कों की भीड़ के साथ अपने भविष्य के बारे में अनजान होकर इंतजार करती रहीं।

फिर एक सुबह, उन्हें कड़ाके की ठंड में बाहर निकलने के लिए मजबूर किया गया, जहाँ वे सड़क पर खड़ी एक लंबी कतार में अन्य हजारों यहूदियों के साथ शामिल हो गए। उस कतार के दोनों ओर नाज़ी गार्ड तैनात थे, जो एक ही दिशा में चिल्ला रहे थे। "मार्च!"

वे ऑस्ट्रियाई सीमा की ओर पैदल जा रहे थे।

बाद में इस यात्रा को "मौत का सफर" कहा जाने लगा, क्योंकि इसमें कई लोगों पर गोलियां चलाई गईं और कई लोग गिरकर मर गए। फैनी को बचने का एकमात्र तरीका यही सूझा कि वह अपने आगे चल रहे लोगों के कीचड़ से सने जूतों के निशानों पर कदम रखे और सीधे आगे देखती रहे, कभी रुके नहीं, कभी पीछे मुड़कर न देखे, चाहे उसके बगल में खड़ी एक बूढ़ी औरत बर्फ में गिर पड़ी हो, चाहे सांस फूल रहा एक दुबला-पतला आदमी पेशाब करने के लिए रुका हो और एक एसएस सैनिक ने उसे ज़मीन पर धकेल दिया हो। फैनी ने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं, क्योंकि उसे पता था कि गोली आने वाली है। धमाका! वह कांप उठी और आगे बढ़ती रही।

युद्ध के निरंतर शिकंजे ने उस बेचारी लड़की के खून से एड्रेनालाईन को पूरी तरह से निचोड़ दिया था। उसका शरीर दुबला-पतला हो गया था, गाल पिचके हुए थे। भावनात्मक रूप से वह इतनी कमजोर हो गई थी कि गिज़ेला द्वारा दी गई लाल माला की छोटी थैली को बार-बार छू रही थी, और उसके भीतर से एक आवाज़ फुसफुसा रही थी, "बस करो। हम एक क्षणभंगुर हैं। एक माला निगल लो। इस सब से छुटकारा पा लो।"

अगर उसके दिमाग में बार-बार आने वाली एक याद न होती, तो शायद वह उस आवाज के आगे आत्मसमर्पण कर देती: सैलानिका से आने वाली भीड़ भरी ट्रेन का डिब्बा, और उस दाढ़ी वाले अजनबी के वे आखिरी शब्द:

“एक अच्छा इंसान बनो। दुनिया को बताओ कि यहाँ क्या हुआ।”
ऐसा करने का एकमात्र तरीका जीवित रहना था। यही उसकी आखिरी उम्मीद थी। इसलिए उसने एक पैर उठाया, फिर दूसरा, और खुद को जगाए रखने के लिए अपने चेहरे पर बर्फ के टुकड़े मारे और पहरेदारों की नज़र न होने पर मुंह में बर्फ ठूंसकर खुद को हाइड्रेटेड रखा।
मार्च के अपने पांचवें दिन, उसने खुद को एक छोटे लड़के के बगल में पाया, जिसकी उम्र शायद सात साल थी, जो अपनी पीठ पर बोझ लेकर सीधा खड़े रहने के लिए संघर्ष कर रहा था।
“अपना बैग उतार दो,” फैनी ने फुसफुसाते हुए कहा। “इसे यहीं छोड़ दो।”
“मैं नहीं खा सकता,” लड़के ने कहा। “मेरे पास उसमें पनीर है। पहुँचने पर मुझे खाना पड़ेगा।”
फैनी सोच रही थी कि उसे पनीर कैसे मिला होगा, या उसके पास सामान का थैला कैसे आया होगा, जबकि बाकी लोगों को तो छोटा सा थैला भी नहीं दिया गया था। लेकिन इससे कोई फायदा नहीं हो रहा था। वह लड़खड़ाता, रोता और कई बार बर्फ में गिर पड़ा। पहरेदारों के देखने से पहले ही फैनी ने उसे उठा लिया।
मुझे पैकेट दे दो, मैं इसे पकड़ कर रखूंगा।
"नहीं ये मेरा है।"
वह फिर गिर गया और फैनी ने उसे उठाया। उसने अगले तीन घंटों तक उसकी बांह को अपनी पकड़ में रखा, जब तक कि ऐसा नहीं लगा कि वह बेहोश हो जाएगा।
“मैं आपकी मदद करती हूँ,” फैनी ने कहा। “मैं वादा करती हूँ कि मैं इसे वापस कर दूंगी।”
लड़के ने अब विरोध करना बंद कर दिया। फैनी ने थैला अपने कंधे पर टांग लिया। वह भारी था, जिससे उसके कदम और भी भारी हो गए। वह सोचने लगी कि क्या सच में उसके अंदर पनीर है।
“तुम कहाँ रहते हो?” उसने लड़के से पूछा।
"रहने की कोई जगह नहीं।"
"आपका परिवार कैसा है?"
मेरे पास कोई नहीं है।
उन्होंने खुद को सुधारते हुए कहा, "अब और नहीं।"

वह फिर रोने लगा, और फैनी ने उसे चुप रहने को कहा, इससे वह थक जाएगा। उसके कंधे दुख रहे थे। उसके पैर दर्द कर रहे थे। जब रात हुई, तो प्रदर्शनकारी रुक गए और उसने लड़के से सोने को कहा और शायद कल उन्हें आज़ादी मिल जाएगी।
“तो फिर मैं कहाँ जाऊँगा?” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
तुम मेरे साथ रह सकते हो।
"कहाँ?"
हमें कोई न कोई जगह मिल जाएगी।
वे एक-दूसरे के बगल में सो गए। भोर होते ही फैनी नाजियों के आदेशों की चीख-पुकार से जाग उठी। उसके आसपास के कैदी धीरे-धीरे उठे, लेकिन छोटा लड़का नहीं उठा। फैनी ने उसे धक्का देकर जगाया।
"जाग जाओ, लड़के।"
वह हिला तक नहीं।
"जाग जाओ। चलो।"
उसे छोड़ दो!
एक एसएस गार्ड उसके ऊपर मंडरा रहा था, उसकी बंदूक तनी हुई थी।
“नहीं, कृपया गोली मत चलाओ! वह बस सो रहा है।”
"मार्च!"
वह सामान ढोते हुए लड़खड़ाती हुई आगे बढ़ी, पीछे से आती भीड़ उसे धकेल रही थी। उसने लड़के के छोटे से शरीर पर एक नज़र डाली। उसने कद्दिश के शब्द याद करने की कोशिश की, लेकिन उसे केवल पहली दो पंक्तियाँ ही याद आईं, जिन्हें उसने धीरे से बुदबुदाया। उसके बगल में खड़ा एक आदमी यह सुन गया और उसके साथ बुदबुदाने लगा।
पांच घंटे बाद, भारी पलकों के साथ, उसने बैग को अपने कंधों से फेंक दिया और उसे कीचड़ में छोड़ दिया। उसने उसे खोला तक नहीं।
* * *
मैंने पहले ही चेतावनी दी है कि यह एक ऐसी कहानी है जिसमें कई उतार-चढ़ाव आ सकते हैं, जिससे आपको कुछ घटनाओं के संयोग पर संदेह हो सकता है। मैं केवल आगे जो हुआ उसकी पुष्टि कर सकता हूँ:
उस दिन, शनिवार, 27 जनवरी, 1945 को, आसमान में अंधेरा छाया हुआ था, और

खबर आई कि मौत का मार्च ऑस्ट्रियाई सीमा के पास स्थित हेग्येशालोम कस्बे की ओर बढ़ रहा है। यह सुनकर फैनी कांप उठी। ऑस्ट्रिया? नहीं! एक बार जब वे वुल्फ की जन्मभूमि में प्रवेश कर गए, तो कोई भी उसकी मदद नहीं करेगा, चाहे वह भाग भी जाए। उसे कुछ करना ही था। लेकिन क्या?

फैनी के विचार-विमर्श के ठीक उसी क्षण बर्फ गिरने लगी। और जैसे ही हवा ने बर्फ को तेज आंधी में बदल दिया, अचानक हंगरी के शरणार्थियों का एक बड़ा समूह नाज़ी मार्च के लंबवत सड़क पर चलता हुआ दिखाई दिया। एसएस गार्डों ने सीटी बजाई और चिल्लाकर शरणार्थियों को रास्ता देने की कोशिश की। लेकिन शरणार्थी हताशा में हाथ फैलाकर उन पर टूट पड़े।

“हमें खाना दो... हमें पानी दो! कृपया! थोड़ा पानी दो!”

भीड़ के हंगामे में फैनी को मौका मिल गया। गार्ड व्यस्त थे। उसने गहरी सांस ली और सिर झुकाकर कतार से निकल गई। वह झटपट शरणार्थियों के समूह में घुस गई और वहां पहुँचकर हंगेरियन भाषा में उनके द्वारा चिल्लाए जा रहे शब्दों को दोहराने लगी। नाराज़ जर्मन शरणार्थियों को बार-बार इशारा करते रहे। “रास्ते से हटो! हमारे पास तुम्हारे लिए कुछ नहीं है! हटो!”

फैनी पीले रंग के रेनकोट पहने एक आदमी के पास गई और उसके कंधे पकड़ लिए। अपनी आखिरी कोशिश में उसने चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान बिखेरी, और उस आदमी ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया। उसने अपना रेनकोट उतारकर फैनी को ओढ़ा दिया और अपना हाथ उसकी गर्दन पर ही रखा। वे दोनों एसएस गार्डों की अधीर निगाहों के बीच से चौराहे से होते हुए आगे बढ़े। फैनी का दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि उसे लगा मानो सैनिक उसकी धड़कन सुन सकते हों।

सिर नीचे करो। एक कदम बढ़ाओ। एक कदम बढ़ाओ।

कुछ ही क्षणों बाद, एसएस सैनिकों ने हवा में गोलियां चलाईं और अपने कैदियों को उत्तर की ओर सीमा की ओर ले जाने लगे। पश्चिम की ओर बढ़ रहे शरणार्थी चकाचौंध कर देने वाले सफेद बादलों में गायब हो गए। फैनी के घुटने कांपने लगे। रेनकोट पकड़े हुए व्यक्ति ने उसकी ठोड़ी पकड़ी और उसे अपनी ओर घुमाते हुए एक हंगेरियन शब्द दोहराया।

"साँस लेना।"

साँस लेना।

और फैनी के लिए, यही युद्ध का अंत था।

उडो ने अपने जूते उतार दिए।

उसने उन्हें अंगीठी में फेंक दिया, जो पहले से ही उसकी वर्दी, टोपी और ओवरकोट को जला रही थी। वर्षों में पहली बार, वह अधिकार के किसी भी प्रतीक के बिना कपड़े पहने हुए था। बस एक फलालैन की कमीज, काली पतलून, काम के जूते और एक ऊनी कोट जो उसने शिविर में भोजन पहुंचाने वाले एक स्थानीय किसान से लिया था।

यह 27 जनवरी, 1945 का दिन था। पिछले कुछ दिनों से ऑशविट्ज़ के आसपास धमाकों की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। रूसी सेना उनके दरवाज़े पर खड़ी थी, और बचे हुए कैदियों को वापस जर्मनी ले जाने का आदेश आ चुका था, लेकिन केवल उन्हीं को जो पैदल चलने में सक्षम थे। बाकी सभी - कमज़ोर, बीमार या बुज़ुर्ग - को वहीं छोड़ दिया जाना था। उन्हें मारने का भी समय नहीं था।

उडो ने अपनी वर्दी को आग की लपटों में जलते हुए देखा। अगर वह मुझसे मुकाबला करने वाला आदमी होता, तो उसे पता होता कि सब कुछ खत्म हो चुका है। भेड़िया का अंत हो चुका था। साम्राज्य कुचल दिया गया था। लेकिन अपनी नस्ल को श्रेष्ठ मानने वाले उडो ने इस युद्ध के अगले कदमों पर ही ध्यान केंद्रित किया, जिसका अर्थ था अपने सारे बुरे कामों के सबूत मिटा देना।

उसने पहले ही गैस चैंबर और श्मशानगृहों को ध्वस्त कर दिया था और वहाँ नियुक्त सभी यहूदियों की हत्या कर दी थी, ताकि वे कभी भी इसके बारे में गवाही न दे सकें। चोरी के सामान से भरे गोदाम जला दिए गए। रिकॉर्ड नष्ट कर दिए गए। धीरे-धीरे, उडो अपने सारे सबूत मिटा रहा था।

लेकिन इन सबमें समय लग रहा था, और उसे नहीं पता था कि उसके पास कितना समय बचा है। उसका कमांडेंट पहले ही भाग चुका था। धिक्कार है उस कायर पर। उडो काम पूरा करने के लिए वहीं रुका रहा। अब, जब कैदियों को निकाल लिया गया था और उसके गार्ड या तो उनके साथ मार्च कर रहे थे या रूसियों से लड़ रहे थे, तो खुद को बचाना ज़रूरी था। वुल्फ में वापस जाना था। अगले दिन लड़ने के लिए ज़िंदा रहना था।

भागने की उसकी योजना सीधी-सादी थी। उसने पहले ही एक पोलिश मज़दूर को अपने कागज़ात के लिए पैसे दे दिए थे और इस तरह उसे जोसेफ़ वाल्काज़ नाम की एक नई पहचान मिल गई थी। वह इन आम नागरिकों के कपड़ों में शिविर से

निकलेगा, पास के कस्बे में घुलमिल जाएगा और पहले से तय की गई गाड़ी से जर्मन सीमा तक जाएगा। वहाँ पहुँचकर उसके परिचित उसका स्वागत करेंगे।

उडो को यह नहीं पता था कि ठीक उसी क्षण, बर्फ में घुलमिल चुके सफेद कोट पहने रूसी सेना तेजी से ऑशविट्ज़ के द्वार की ओर बढ़ रही थी। उनके घुड़सवार सैनिक और जीपें जल्द ही अंदर घुसने वाली थीं। अगर उडो बीस मिनट पहले निकल जाता, तो शायद वह उनसे बच जाता। लेकिन उसने उन बीस मिनटों का इस्तेमाल अपनी लूगर बंदूक के लिए गोलियां ढूंढने और उसे अपने साथ ले जाने के बारे में सोचने में किया। अगर दुश्मन को उसके पास यह बंदूक मिल जाती, तो यह उसके लिए घातक साबित हो सकता था। दूसरी ओर, क्या वह बिना सुरक्षा के भागने की हिम्मत कर सकता था?

पिस्तौल पकड़े हुए उसका दिमाग बार-बार विचारों में उलझ रहा था। किसी कारणवश, उसे सैलानिका की वह रात याद आ गई जब उसने गोली चलाई और तहखाने में एक ज़ोरदार आवाज़ सुनी और वहाँ छिपे हुए निको नाम के यूनानी लड़के को पाया, जिसने उडो को लगभग पचास हज़ार यहूदियों के सफल निर्वासन की योजना बनाने में मदद की थी।

वह कैसा युग था! कितनी शक्ति! कितना नियंत्रण! उडो को जर्मनी के सर्वोच्च राष्ट्र के लिए अपनी उपलब्धियों पर गर्व का अनुभव हुआ और उसने इसे एक संकेत समझा कि उसे अपनी बंदूक अपने पास रखनी चाहिए। उसने गोलियां भरीं, लूगर को अपनी कमर में लगाया, फिर किसान का कोट पहना और सिर पर टोपी डाल ली। अपनी अधिकारी की वर्दी को अंगीठी में जलते हुए छोड़कर वह दरवाजे से बाहर निकल गया।

* * *

आगे क्या हुआ, इसे समझने के लिए त्रिभुज के तीनों शीर्षों के बारे में सोचने की कोशिश करें।

पहला बिंदु रूसी सैनिक थे, जो शिविर को मुक्त कराने के लिए पहाड़ी की ओर बढ़ रहे थे।

दूसरा केंद्र बिंदु उडो ग्राफ था, जो अपने नागरिक वेश में उनकी ओर बढ़ रहा था।

तीसरा छोर कांटेदार तारों की बाड़ थी, जिसके पीछे ऑशविट्ज़ के कमज़ोर बचे हुए लोग खड़े थे, जो बैसाखियों के सहारे या फटे-पुराने कंबलों में लिपटे हुए थे, और अभी

भी वही गंदी धारीदार वर्दी पहने हुए थे जो उनकी दुबली-पतली हड्डियों पर लटक रही थी। जैसे ही रूसी सैनिक पास आए, ये कैदी, जो बोलने में असमर्थ थे, बस उत्सुकता और असमंजस से देखते रहे, ठीक वैसे ही जैसे नदी के उस पार कोई हिरण पास आते हुए इंसान को देखता है।

उडो ने सैनिकों को देखा और गहरी सांस ली। उसने अपने पैरों की ओर देखा। अब भागना नामुमकिन था। वह बस चलता रहा, हाथों को जेब में डाले, मानो उसे इससे कोई लेना-देना ही न हो। "तुम किसान हो। तुम यहाँ से गुज़र रहे हो। तुमने कोई सामान पहुँचाया है।" लोग अक्सर टकराव का सामना करते समय झूठ बोलते हैं। उडो बार-बार यही दोहराता रहा। "एक किसान। पत्तागोभी और आलू। चलते रहो।"

पहले घुड़सवार सैनिक उसके पास से गुजरे। उडो ने अपनी हंसी रोकने की कोशिश की। एक जीप भी गुजरी।

वे इतने मूर्ख हैं कि तुम्हें पहचान ही नहीं पाएंगे। अपनी योजना पर कायम रहो।

एक और जीप। तीसरी। यह चाल कारगर साबित हो रही थी।

और फिर, एक आवाज।

“उसे रोको! कोई उसे रोको!”

आवाज कर्कश और तनावपूर्ण थी, और कांटेदार तार के पीछे से आ रही थी। यह किसी घायल जानवर की चीख जैसी लग रही थी।

“उसे रोको! वह हत्यारा है! उसे रोको!”

उडो ने बगल में देखा तो उसे एक अकेला पुरुष कैदी बाकी कैदियों को धकेलते हुए, कूदते हुए, हाथ हिलाते हुए, बाड़ के पार इशारा करते हुए और चिल्लाते हुए दिखाई दिया। उडो तुरंत समझ गया कि वह कौन है।

बड़ा भाई।

सेबेस्टियन क्रिस्पी।

वह मरा क्यों नहीं?

* * *

अब, मुझे आपको यह बताना चाहिए कि सोलह वर्ष की आयु में सेबेस्टियन उस दिन बीमारों और बुजुर्गों के बीच चिल्लाने क्यों लगा था।

जब यह खबर फैली कि एसएस ऑशविट्ज़ से बचे हुए लोगों को बाहर निकालने की योजना बना रहा है, तो सेबेस्टियन ने एक फैसला किया। वह कहीं नहीं जाएगा। उसके

दादा, लाज़ार्रे, अभी भी जीवित थे, कमजोर और चलने में असमर्थ, लेकिन जीवित थे। उन्हें जुएँ हो गई थीं, और जुओं ने उन्हें टाइफस से संक्रमित कर दिया था। उस बीमारी के प्रभाव से उनकी आँखों में मवाद की एक पतली परत जम गई थी जिससे वे लगभग अंधे हो गए थे। उन्हें अस्पताल ले जाया गया था, जहाँ सेबेस्टियन ने शिविर के गोदामों से चुराई गई वस्तुओं का आदान-प्रदान किया ताकि गार्ड बूढ़े व्यक्ति को फाँसी न दे दें।

पिछली बार जब उनसे बात हुई थी, तब सेबेस्टियन ने कहा था, "मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊंगा, नैनो। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं यहीं रहूंगा।"

“मूर्खता मत करो...” लाज़ार्रे ने कर्कश स्वर में कहा। “मैं जल्द ही मर जाऊंगा... अगर भागने का मौका मिले तो भाग जाओ।”

"लेकिन-"

"मेरे बारे में मत सोचो, सेबेस्टियन!"

लेकिन, नैनो—”

लाज़ार्रे ने अपने पोते का हाथ पकड़कर धीरे से दबाया, जिससे लड़का अपना वाक्य पूरा नहीं कर पाया। अगर वह ऐसा करता, तो सेबेस्टियन ये शब्द जोड़ देता:

"तुम ही हो जो मेरे पास बची हो।"

* * *

अंततः, उडो ग्राफ के एक कार्य ने सेबेस्टियन का भाग्य बदल दिया। जनवरी 1945 तक, ऑशविट्ज़ अब वह कुशल हत्या केंद्र नहीं रह गया था जो कभी हुआ करता था। शिविर में व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई थी। पकड़े जाने के डर से पहरेदार अपनी चौकियाँ छोड़कर जा रहे थे। शिविर का अधिकांश भाग इतनी अव्यवस्था और अराजकता में डूबा हुआ था कि कैदियों के आने-जाने का पता लगाना एक चुनौती बन गया था।

जब खाली करने का आदेश आया, तो सेबेस्टियन सुबह हाजिरी के तुरंत बाद चुपके से निकल गया, एक फावड़ा और एक पाइप का टुकड़ा ढूंढा और आखिरी बचे श्मशान घाट के पास एक लकड़ी के बक्से पर बर्फ जमा करने लगा। चूंकि इमारत का अब इस्तेमाल नहीं हो रहा था, इसलिए उसने सोचा कि गार्ड वहां नहीं देख रहे होंगे। और चूंकि वह व्यस्त दिख रहा था, इसलिए मौजूदा अफरा-तफरी में किसी ने उसे रोकने की जहमत नहीं उठाई। उसकी योजना थी कि जब तक सबको बाहर नहीं निकाला

जाता, तब तक वह बर्फ में दबे बक्से के अंदर छिपा रहेगा।
जब डिब्बा बर्फ से ढक गया, तो उसने पाइप को बीचोंबीच तब तक ठोका जब तक उसे लकड़ी के टूटने की आवाज सुनाई नहीं दी। फिर वह फावड़ा साथ लेकर अंदर घुस गया।
उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि इससे उसकी जान कैसे बचेगी।
कुछ ही मिनटों बाद, श्मशान घाट के दूसरी ओर, उडो के आदेश पर कई एसएस गार्डों ने दीवारों में खोदे गए छेदों में डायनामाइट के पैकेट भर दिए और फिर इमारत को नष्ट करने के लिए उन्हें विस्फोटित कर दिया। विस्फोट से पत्थर और मलबा चारों ओर उड़ गया, जिसमें बर्फ से ढका एक बक्सा भी शामिल था, जिसे अब कोई भी नहीं छूना चाहता था।
उस दोपहर, हजारों कैदियों को ऑशविट्ज़ से बाहर निकाला गया और वे जर्मन सीमा की ओर चल पड़े।
सेबेस्टियन दो दिनों तक पाइप के जरिए सांस लेते हुए क्रेट के अंदर ही रहा।
जब वह अपनी बची-खुची ताकत का इस्तेमाल करते हुए फावड़े से ढक्कन खोलकर बाहर निकला, तो उसने सूरज की रोशनी से बचने के लिए अपनी आँखें झपकाईं। शिविर सुनसान था। उसे आँगन में तेज़ हवा चलने की आवाज़ सुनाई दी। उसने खड़े होने की कोशिश की, फिर बर्फ में गिर पड़ा; उसके पैर इतने कमज़ोर थे कि उसके दुबले-पतले शरीर का भार भी नहीं संभाल पा रहे थे। वह काफी देर तक नीचे पड़ा रहा, गहरी साँसें लेता रहा और सोचता रहा कि अब आगे क्या करे।
जब वह आखिरकार उठा, तो लड़खड़ाते हुए शिविर के पिछले द्वार की ओर बढ़ा। वहाँ उसने कांटेदार तार की बाड़ के पास कैदियों का एक समूह खड़ा देखा। न कोई गार्ड, न कोई कुत्ते, न कोई सायरन, न कोई अलार्म। वे सब एक साथ huddled थे, मानो किसी बस का इंतजार कर रहे हों।
वह घिसटते हुए समूह में शामिल हुआ और उसने भी वही देखा जो बाकी लोग देख रहे थे: रूसी सेना पास आ रही थी। सेबेस्टियन के शरीर में राहत की लहर दौड़ गई, जिसके बाद चिंता की एक सिहरन भी दौड़ गई।
नैनो। नैनो कहाँ है?
वह लंगड़ाते हुए अस्पताल की ओर बढ़ने लगा, तभी उसकी नज़र एक आकृति पर पड़ी। कोट और टोपी पहने एक आदमी शिविर से बाहर निकल रहा था। उस पोशाक

में भी सेबेस्टियन ने उस आदमी की चाल, उसके शरीर और झुके हुए चेहरे को पहचान लिया।

सुरक्षात्मक हिरासत शिविर का नेता।

वह ऐसे बाहर निकल रहा था मानो दिनभर के काम के बाद घर जा रहा हो, और उसे कोई रोक नहीं रहा था। नहीं। नहीं! ऐसा हो ही नहीं सकता! सेबेस्टियन का गला सूख चुका था, उसने कई दिनों से बात नहीं की थी।

लेकिन वह चीखने लगा।

* * *

“उसे रोको! उस आदमी को रोको! वह हत्यारा है! वही मुखिया है!”

लड़के के शब्द बेहद गंभीर थे—लेकिन वे लाडिनो भाषा में थे, जो रूसियों को समझ नहीं आती थी। उडो चलता रहा, टोपी के नीचे पसीने की बूँदें महसूस करता रहा। उसे नज़रअंदाज़ करो। वे उसकी भाषा नहीं समझते। तुम एक किसान हो। तुम्हें पीछे मुड़कर देखने की कोई ज़रूरत नहीं है।

“उसे रोको!” सेबेस्टियन चीखा। “कोई उसे रोको!”

एक पांचवीं जीप गुजरी। उडो ने सोचा, अब ज्यादा दूर नहीं है। वह चौराहे पर मुड़कर शहर में गायब हो जाएगा।

और फिर, उस कांटेदार तार के दूसरी तरफ से, चीखता हुआ एक शब्द आया, एक ऐसा शब्द जिसका किसी भी भाषा में एक ही अर्थ होता है।

“नाज़ी!”

उडो कांप उठा। चलते रहो। कोई प्रतिक्रिया मत दो।

"नाजी! नाजी! नाजी!"

अचानक, एक दूसरी आवाज ने उडो की ओर चिल्लाकर पुकारा।

"आप रुक जाइए!"

उडो ने अपने जबड़े भींच लिए।

“यो! हे! तुम! रुको!”

एक रूसी सैनिक परिवहन वाहन से चिल्ला रहा था।

उस यहूदी लड़के को धिक्कार है। मुझे उसे ट्रेन में ही मार डालना चाहिए था।

अगर उडो बस रुककर सिपाही से बात करता, अपने पोलिश कागज़ात दिखाता, और चीखते-चिल्लाते किशोर को नज़रअंदाज़ कर देता, तो शायद वो बच निकलता। लेकिन

सेबेस्टियन की लगातार चीखें उडो के दिमाग में घर कर गईं। नाज़ी! नाज़ी! ये गंदा यहूदी, इतनी नफ़रत से उस पर चिल्ला रहा है। उसकी हिम्मत कैसे हुई? हाँ, उडो एक नाज़ी था, और उसे इस बात पर बहुत गर्व था। ये यहूदी कमीना उस शब्द को गाली की तरह चिल्ला रहा था!

उडो को यह मंजूर नहीं था। एक पल में ही सब कुछ बदल गया, वह कांटेदार तार की बाड़ की ओर मुड़ा, अपनी लूगर पिस्तौल निकाली और सेबेस्टियन पर गोली चला दी। गोली के प्रभाव से सेबेस्टियन बुरी तरह से छटपटाया और एक गिरी हुई कठपुतली की तरह नीचे गिर गया।

गोली लगने से पहले उडो ने यही आखिरी चीज देखी थी, गोली उसके घुटने के ठीक ऊपर लगी, जिससे वह जमीन पर गिर पड़ा, तभी दो रूसी सैनिक उसकी पीठ पर झपटे और उसे जमी हुई धरती में धकेल दिया।

बाड़ के पास वापस आकर, बाकी बचे लोग इधर-उधर बिखर गए, और वहीं एक किशोर का शव अकेला रह गया, जिसे उसकी मुक्ति के ठीक उसी क्षण गोली मार दी गई थी, और उसका खून अब सफेद बर्फ को लाल कर रहा था।

और इस तरह उडो और सेबेस्टियन के लिए युद्ध का अंत हुआ।

आधा मील दूर, निको ने दो गोलियों की आवाज सुनी।

उसके बगल में खड़े सैनिकों ने अपना सिर झुका लिया। उनकी जीप रूसी परिवहन वाहनों की कतार में चलती रही, रेल की पटरियों का अनुसरण करते हुए एक प्रवेश द्वार तक पहुँची। निको ने द्वार के ऊपर लोहे के मेहराबनुमा अक्षर देखे। जर्मन भाषा में तीन शब्द:

काम आपको आज़ाद करता है

ऑशविट्ज़।

निको कांप उठा। सत्रह महीने तक उस ट्रेन का पीछा करने के बाद जिसने उसके परिवार को उससे छीन लिया था, सत्रह महीने तक पहचान बदलते हुए, कागज़ात बदलते हुए, अलग-अलग भाषाएँ बोलते हुए, इस मुकाम तक पहुँचने के लिए हर संभव कोशिश करते हुए, आखिरकार वह यहाँ पहुँच गया था। वह अभी भी किशोर ही था, लेकिन निको क्रिस्पिस में अब जवानी का कोई नामोनिशान नहीं था, न उसके रूप में, न ही उसकी आत्मा में। युद्ध ने उसे क्रूरता, बर्बरता और उदासीनता दिखाई थी। लेकिन सबसे बढ़कर, इसने उसे झूठ बोलकर ज़िंदा रहना सिखाया था। कुछ भी—

खासकर सच—उसके रास्ते में नहीं आ सकता था।
निको का नया नाम, उनके "आधिकारिक" दस्तावेजों के अनुसार, फिलिप गोर्का था, जो पोलिश रेड क्रॉस के कार्यकर्ता थे। इससे पहले, वे जारोस्लाव स्वोबोडा नाम के एक चेक बढ़ई प्रशिक्षु थे। उससे पहले, वे क्रिस्टोफ पुस्कस नाम के एक हंगेरियन कला छात्र थे।
जिस दिन ऑशविट्ज़ को मुक्त कराया गया था, उसी दिन वह इस सोवियत परिवहन में कैसे सवार हो पाया, यह एक अविश्वसनीय कहानी है जो धोखे से भरी हुई है।
संक्षेप में, निको ने जो रास्ता अपनाया, वह इस प्रकार है।
* * *
आपको याद होगा, हंगरी में निको ने अभिनेत्री कैटलिन कराडी से कहा था कि नाजियों ने "सब कुछ" नहीं छीना था। उनके अपार्टमेंट पर छापा मारने से एक दिन पहले, निको ने चुपके से घुसकर कैटलिन के गहने और फर पास की एक गली में रखे दो कूड़ेदानों में छिपा दिए थे। हफ्तों बाद, उन्हीं चीज़ों की बदौलत कैटलिन डेन्यूब नदी पर फांसी दिए जाने वाले यहूदी बच्चों की जान बचाने के लिए सौदेबाजी कर सकीं, जिनमें फैनी भी शामिल थी, जिसे निको ने पहचान लिया था और कैटलिन को सौदे में शामिल करने के लिए मना लिया था।
क्या निको ने कभी फैनी से बात की थी?
उसे मौका ही नहीं मिला। बचाए गए बच्चों को कैटलिन के अपार्टमेंट से कुछ मील दूर एक इमारत के तहखाने में छिपा दिया गया था। इसी बीच, उसके साहसी बचाव की खबर तेजी से फैल गई। उसे फिर से गिरफ्तार कर लिया गया, इस बार एरो क्रॉस द्वारा। निको सैनिकों के जाने तक छत पर छिपकर भाग निकला, फिर अपना बैग और जाली दस्तावेज़ बनाने के औजार लेकर ट्रेन स्टेशन की ओर दौड़ पड़ा।
वहां से उन्होंने स्लोवाकिया की यात्रा की और एक बढ़ई से दो सप्ताह के लिए एक कमरा किराए पर लिया। बढ़ई ने कुछ शुल्क लेकर निको को बैलगाड़ी से पोलिश सीमा तक ले जाने की सहमति दी, जहां एक कैफे में उनकी मुलाकात पोलिश रेड क्रॉस के एक कार्यकर्ता से हुई। उस व्यक्ति ने उन्हें बताया कि रेड क्रॉस नाज़ी शिविरों को मुक्त कराने में मित्र देशों की सेना का साथ देने के लिए जुट रहा है।
उन्होंने कहा, "ओस्विएसिम के ठीक बाहर एक है।"
“क्या इसे ऑशविट्ज़ कहते हैं?” निको ने पूछा।

"मुझे भी ऐसा ही लगता है।"

निको ने गहरी सांस ली। रात ढलते-ढलते उसने जाली राशन कार्डों का एक पैकेट उस आदमी के रेड क्रॉस बैज के बदले में ले लिया। वहां से वह टाट्रा पर्वतमाला से होते हुए उत्तर की ओर गया और ज़ाकोपेन नामक स्की रिसॉर्ट शहर में एक पोलिश चर्च में शरण ली, जहां पादरी उसे निकटतम रेड क्रॉस टीम के पास ले गया, जिसमें कर्मचारियों की कमी थी और ज्यादातर महिलाएं थीं।

उन महिलाओं में से एक, पेट्रा नाम की एक युवा नर्स, उस आकर्षक नए आए व्यक्ति को पसंद करने लगी। जब उसने पेट्रा को बताया कि वह यहूदी युद्धबंदियों की मदद करना चाहता है, तो पेट्रा उसे एक धुंधली सी गली में स्थित एक घर में ले गई और सीढ़ियों से नीचे उतरते समय उसने अपनी उंगली होठों पर रख ली। नीचे पहुँचकर उसने दरवाजे के सहारे एक टॉर्च रखी देखी। उसने उसे उठाया, कमरे में प्रवेश किया और टॉर्च जला दी।

वहां, उनकी ओर देखते हुए, एक कमरा था जो बड़ी-बड़ी आंखों वाले बच्चों से भरा हुआ था।

“ये सभी यहूदी हैं,” नर्स ने फुसफुसाते हुए कहा।

निको ने टॉर्च उठाई और उसे उन नन्हे चेहरों पर घुमाया, उनकी भावहीन अभिव्यक्ति और थकी हुई, झपकती आँखों को ध्यान से देखा। उसने कभी नहीं कहा था कि वह अपनी नन्ही बहनों, एलिसाबेथ और अन्ना को देखने की उम्मीद कर रहा है। क्या वह अब उन्हें पहचान भी पाएगा?

टॉर्च की रोशनी दीवार पर लिखे कुछ शब्दों पर पड़ी, और जैसे ही निको पास पहुंचा, उसने देखा कि ये शब्द हर जगह लिखे हुए थे। अलग-अलग भाषाओं में, वहां शरण लिए हुए बच्चों ने अपने नामों के ऊपर संदेश लिखे थे: "मैं ज़िंदा हूँ" या "मैं बच गया" या "मेरे माता-पिता को बता देना कि मैं... चला गया हूँ।" साथ ही, उन्होंने अपने प्रियजनों के लिए उन्हें ढूंढने के अलग-अलग निर्देश भी लिखे थे।

निको को सीने में घुटन महसूस हुई। उसने नर्स की ओर रुख किया।

मैं ऑशविट्ज़ कैसे पहुँचूँ?

* * *

तीन दिन बाद, ज़ाकोपेन पर कब्ज़ा करने वाले नाज़ियों के अचानक चले जाने के बाद, निको को मौका मिला। अगले दिन, निको को इसका कारण समझ में आ गया। रूसी

सैनिक भूरे रंग के चमड़े के कोट और भेड़ की खाल के कॉलर पहने शहर से गुज़रे। पोलिश परिवारों ने अपने बरामदों से उनका स्वागत किया। जब वे सैनिक भोजन और आपूर्ति भरने के लिए रुके, तो निको को अपना अवसर मिल गया।

रेड क्रॉस की वर्दी पहने हुए, उन्होंने जीपों में चिकित्सा उपकरण लादने में मदद की, और इस दौरान वे हर उस व्यक्ति को बताते रहे जो उन्हें समझ सकता था कि वे जर्मन बोलते हैं और नाजी कैदियों को पकड़ने में उपयोगी साबित हो सकते हैं।

एक रूसी कप्तान मान गया। निको ने उसे एक गेस्टहाउस से चुराई हुई महंगी वोदका की बोतल भेंट की, जिससे बात और भी बढ़ गई।

“आप चिकित्सा दल के साथ जा सकते हैं,” कप्तान ने बोतल पर नज़र डालते हुए कहा। “हम सूर्योदय के समय निकलेंगे।”

* * *

तो हुआ यूं कि शनिवार, 27 जनवरी, 1945 को, ओस्विसीम को निशाना बनाते हुए वह बटालियन एक मील दूर स्थित कई शिविरों के बीच पहुँच गई, और निको का वाहन ठीक समय पर वहाँ पहुँचा। निको ने देखा कि सोवियत सैनिक अपनी राइफलों से ऑशविट्ज़ के गेट के ताले तोड़ रहे थे। यह शिविर का वह हिस्सा था जहाँ से सेबेस्टियन को उडो ग्राफ की गोली लगी थी। लेकिन निको को इस बात का पता नहीं था। इसके बजाय, उसने धारीदार वर्दी पहने हुए स्तब्ध बचे लोगों को गेट से बाहर निकलते देखा, जो अपने मुक्तिदाताओं को गले लगा रहे थे या जमी हुई ज़मीन पर पैर पटक रहे थे, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अचानक मिली इस आज़ादी का क्या करें।

इतनी दूर आ चुके निको अब खुद को रोक नहीं पाए। वे वाहन से कूदे और प्रवेश द्वार से अंदर भागे, हर दुबले-पतले चेहरे को अपने परिवार की तलाश में निहारते हुए। न वो, न वो, न वो। वे कहाँ हैं? रूसी सैनिक सैन्य मुद्रा में आगे बढ़े, बंदूकें ताने, प्रतिरोध की आशंका में। लेकिन वे सदमे में आकर जल्दी ही अपने हथियार नीचे कर लिए।

जो उन्होंने देखा, जो निको ने देखा, उस पर उनमें से कोई भी विश्वास नहीं कर सका। शिविर के सुलगते अवशेषों के बीच, भूखे कैदी बर्फ में बेसुध बैठे थे, मानो किसी ने उन्हें उनकी कब्रों से जगा दिया हो। सैकड़ों शव जमी हुई ज़मीन पर बिखरे पड़े थे, बिना दफ़नाए, उनका मांस सड़ रहा था। नष्ट हुए श्मशान के पीछे राख का एक पहाड़ था, जो कभी इंसान हुआ करते थे। मौत की दुर्गंध हर जगह फैली हुई थी।

निको के पैर कांपने लगे। उसकी सांसें रुक गईं। अब तक, अपने आस-पास के कई सैनिकों की तरह, वह भी यही मानता था कि ऑशविट्ज़ जैसी जगहें श्रम शिविर हैं। बेशक, वहां कड़ी मेहनत होती है। लेकिन यह नहीं। यह कोई कत्लगाह नहीं। उसने सचमुच उम्मीद की थी कि उसका परिवार ज़िंदा मिलेगा और आज़ादी का इंतज़ार कर रहा होगा। लेकिन भेड़िये के धोखे ने उस छोटे से झूठे को भी मूर्ख बना दिया था। अब सच्चाई को ही उसकी आंखें खोलनी थीं।

मैं सबसे कठोर सद्गुण हूं।

"हेलो? क्या यहाँ कोई ग्रीक बोलता है?"

निको एक अस्पताल के बचे-खुचे हिस्से से होकर गुजर रहा था, जो ठंड से कांपते हुए इतने बीमार लोगों से भरा था कि बाहर जाने की भी हिम्मत नहीं थी। वहाँ कोई दवा नहीं थी। कोई गोलियाँ नहीं थीं। कोई सीरम नहीं था। जाते हुए नाजियों ने एस्पिरिन तक गायब कर दी थी। हड्डी-जैसे दुबले-पतले और कराहते हुए मरीज हर जर्जर पलंग पर, गंदी ज़मीन पर हर जगह पर कब्जा किए हुए थे।

“क्या यहाँ कोई ग्रीक बोलता है?” निको ने दोहराया।

कोने से उसे घुरघुराहट की आवाज़ सुनाई दी। उसने देखा तो एक बूढ़ा आदमी अपना हाथ उठा रहा था। वह जल्दी से उसके पास पहुँचा। जब वह बिल्कुल पास पहुँचा, तभी उसने उसके जाने-पहचाने गाल, नाक और मुँह को पहचाना।

“नैनो?” निको ने फुसफुसाते हुए कहा।

“वो कौन है? यहाँ कौन है?”

निको का गला सूख गया। क्या ये सचमुच उसके जीवंत, हंसमुख, तगड़े सीने वाले दादाजी हो सकते हैं? उनका शरीर पहले से बहुत दुबला हो गया था। उनकी गर्दन निको के हाथ में समा सकती थी। उनके बाल सफेद दाढ़ी जैसे थे और उनकी आंखें भूरे रंग के चिपचिपे पदार्थ से ढकी हुई थीं।

“क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं?” बूढ़े ने कर्कश स्वर में कहा। “मुझे अब दिखाई नहीं देता। लेकिन मेरा एक पोता है...”

“हाँ, यह मैं हूँ—”

“उसका नाम सेबेस्टियन है। वही मेरा एकमात्र सहारा बचा है।”

निको ने घबराकर निगल लिया। क्या बस यही बचा है? इसका क्या मतलब है? निको ने अपने कोट की जेब में अपने पिता, माता, दादा-दादी, भाई-बहन, चाचा और चाची

के नए जाली पहचान पत्र रखे हुए थे। उसने ये सब इसलिए बनाए थे ताकि वे इस जगह से भागकर घर जा सकें। निको ने जितने भी झूठ बोले थे, उन सबका एक ही मकसद था: सैलानिका लौटना। अपने घर लौटना। उन धूप से सराबोर सब्त की सुबहों में लौटना जब वे आराधनालय जाते थे और उन तारों भरी रातों में जब वे व्हाइट टॉवर तक सैर करते थे। क्या बस यही बचा है? उसने सिर्फ सेबेस्टियन के बारे में ही क्यों पूछा?

“सर,” निको ने एक सधे हुए वयस्क लहजे में कहा, “आपके परिवार के बाकी सदस्य कहाँ हैं?”

लाज़ार ने गहरी सांस ली। फिर उसने नज़रें फेर लीं।

"मृत।"

निको ने अनजाने में ही उस शब्द को दोहरा दिया।

“मर गया?” उसने फुसफुसाते हुए कहा।

“उन्होंने उन सबको मार डाला। ये शैतान। उन्होंने उन सबको मार डाला।”

बूढ़ा आदमी बिना आँसू बहाए रोने लगा, दर्द से उसका चेहरा उतर आया, मानो वह कुछ कहना चाहता हो, पर शब्द नहीं निकल रहे हों। कोने में एक महिला तब चीखी जब एक नर्स ने उसे छुआ। कमरे के दूसरी ओर, रूसी सैनिक रोते हुए मरीजों को स्ट्रेचर पर उठा रहे थे।

मैं आपको बताना चाहूँगी कि निको ने उसी क्षण अपना ढोंग तोड़ दिया और अपने प्यारे दादाजी को गले लगा लिया। इतने कष्टों के बाद उन दोनों का पुनर्मिलन हुआ। लेकिन अपराधबोध से बढ़कर झूठ को कोई और चीज़ पुख्ता नहीं करती। इसलिए उस अस्पताल में, यह मानते हुए कि उसने अपने प्रियजनों को मृत्यु के मुँह में धकेल दिया था—कि उन्होंने उन सबको मार डाला—निको क्रिस्पिस ने मुझे हमेशा के लिए खो दिया, ठीक वैसे ही जैसे अंतरिक्ष में कोई अंतरिक्ष यात्री अपना तार खो देता है।

“आपको अस्पताल जाना होगा, महोदय,” उसने उठते हुए कहा।

मुझे नहीं लगता कि मैं सफल हो पाऊंगा।

“तुम कर लोगे। विश्वास रखो कि तुम कर लोगे।”

बूढ़े आदमी ने पलकें झपकाकर मवाद को हटाने की कोशिश की।

“तुम्हारा नाम क्या है?” उसने फुसफुसाते हुए पूछा।

निको ने अपना गला साफ किया।

“मेरा नाम फिलिप गोर्का है। मैं रेड क्रॉस में डॉक्टर हूं। आप यहीं रुकिए। मैं आपकी मदद के लिए किसी को ढूंढता हूं।”
वह मुड़ा, अपनी आंखों से आंसू पोंछे और चला गया।
और इस तरह निको के लिए युद्ध का अंत हुआ।

भाग III

1946

सत्य सार्वभौमिक है। यह बात आप अक्सर सुनते होंगे।
बकवास।
यदि मैं वास्तव में सार्वभौमिक होता, तो सही और गलत, कौन क्या पाने का हकदार है, या खुशी का क्या अर्थ है, इस पर कोई असहमति नहीं होती।
लेकिन कुछ सत्य ऐसे हैं जिनका अनुभव सार्वभौमिक रूप से होता है, और उनमें से एक है हानि। किसी कब्र के पास खड़े होकर मन में उठने वाला खालीपन। अपने तबाह घर को देखते हुए गले में अटकने वाली गांठ। हानि। जी हाँ। हानि सार्वभौमिक है। हर कोई अपने जीवन में इसका अनुभव करेगा।
1946 तक, सैलानिका तबाही का स्मारक बन चुका था। भूतों का शहर। दो हज़ार से भी कम यहूदी बचे थे, "भाग्यशाली" लोग, जो शिकार किए गए जानवरों की तरह पास के पहाड़ों में छिप गए थे, और कम भाग्यशाली लोग जो शिविरों से घसीटकर घर लौटे थे, मृत होते हुए भी किसी तरह जीवित, किसी चीज़ की तलाश में थे लेकिन अनिश्चित थे कि किस चीज़ की, क्योंकि उन्होंने अपने सभी प्रियजनों और अपने सभी परिचितों को खो दिया था।
सेबेस्टियन क्रिस्पिस, जो अब पूरी तरह से जवान हो चुका था लेकिन दुबला-पतला था, फरवरी की एक ठंडी सुबह क्लेइसौरास स्ट्रीट नंबर 3 के सामने खड़ा होकर दरवाजा खटखटा रहा था। उसने रेड क्रॉस द्वारा दिया गया कोट, एक राहत एजेंसी से मिली पैंट और कमीज, और एक दयालु पोलिश जूता व्यापारी द्वारा दिए गए जूते पहने हुए थे। एक साल पहले लगी गोली से उसका कंधा अभी भी दुख रहा था।
घनी दाढ़ी वाले एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने अंडरशर्ट पहने हुए उत्तर दिया। सेबेस्टियन सीधा खड़ा हो गया।
“नमस्कार महोदय,” उसने लाडिनो भाषा में कहा। “मेरा नाम सेबेस्टियन क्रिस्पिस है,

मैं लेव और टान्ना क्रिस्पिस का पुत्र हूँ। यह मेरा घर है।"
"क्या?" उस आदमी ने जवाब दिया।
"यह मेरा घर है," सेबेस्टियन ने ग्रीक भाषा में दोहराते हुए कहा।
"तुम क्या बात कर रहे हो?" उस आदमी ने कहा। "यह मेरा है। मैंने इसे खरीदा है।"
"किससे?"
एक जर्मन।
"उस जर्मन का उस पर कभी कोई मालिकाना हक नहीं था। उसने उसे चुरा लिया था।"
"खैर, उसने इसे जैसे भी हासिल किया हो, उसने इसे मुझे बेच दिया। मैंने पैसे चुका दिए। तो यह मेरा है।"
उसने अपना सिर झुकाया और सेबेस्टियन के कपड़ों को गौर से देखा। "वैसे तुम्हारी उम्र कितनी है? तुम तो किशोर लगते हो। अपने परिवार के पास वापस जाओ।"
सेबेस्टियन का जबड़ा कस गया। अपने परिवार के पास वापस जाना? लगभग एक साल से उसे सिरदर्द हो रहा था, जब से वह क्राकोव के एक अस्पताल में कंधे के नीचे गोली के साथ जागा था। डॉक्टरों ने कहा कि वे गोली नहीं निकाल सकते, क्योंकि वह एक प्रमुख धमनी के बहुत करीब थी। घाव के ऊपर एक गांठ बन गई थी, जो उडो ग्राफ के आतंक की एक स्थायी याद दिलाती थी।
अपने परिवार के पास वापस जाना? सेबेस्टियन ने कई सप्ताह अस्पताल के बिस्तर पर बिताए, फिर कई महीने विस्थापितों के शिविर में, जहाँ बचे हुए लोग अखबार बाँटकर अपने खोए हुए रिश्तेदारों को ढूँढ़ रहे थे। उसने बार-बार अपने दादाजी के बारे में कोई भी खबर माँगी, लेकिन जब एक यूनानी जीवित व्यक्ति वहाँ पहुँचा और दावा किया कि लाज़ार्रे की अस्पताल में मृत्यु हो गई है, तो सेबेस्टियन को शव की तलाश में जाने की अनुमति नहीं दी गई। यहाँ भी यहूदियों के साथ कैदियों जैसा व्यवहार किया जाता था। कई बार तो उन्हें पकड़े गए नाज़ियों के साथ ही कमरे साझा करने के लिए मजबूर किया जाता था।
अपने परिवार के पास वापस जाना? जैसे-जैसे महीने बीतते गए, कुछ नेक इरादे वाले यहूदी समूहों ने शरणार्थियों के लिए एक सांस्कृतिक जीवन बनाने की कोशिश की, स्कूल शिक्षकों को आमंत्रित किया और खेल आयोजनों का आयोजन किया। सेबेस्टियन से पूछा गया कि क्या वह एक संगीत कार्यक्रम में भाग लेना चाहता है।

एक संगीत कार्यक्रम? चारों ओर वुल्फ के शिकार लोग थे, जो सदमे से इतने ग्रस्त थे कि वे दिन भर मुश्किल से ही अपना काम कर पाते थे। कुछ, जो जर्मनी में भुखमरी की सबसे बुरी स्थिति से बच गए थे, बहुत अधिक भोजन जल्दी खा लेने से मर गए। उन्होंने इसे "रीफीडिंग सिंड्रोम" कहा, जो यहूदियों के सफाए का एक नया रूप था।

अपने परिवार के पास वापस जाना? अपनी ताकत वापस मिलने पर, सेबेस्टियन एक शिविर से दूसरे शिविर में भटकता रहा, थके-हारे चेहरों पर अपने जीवन के बचे हुए दो लोगों - फैनी और निको - को ढूंढता रहा। उसने सूचियाँ देखने को कहा, लेकिन नामों की कोई सीमा नहीं थी और जानकारी अधूरी थी। महीनों की व्यर्थ खोज के बाद, उसने हार मान ली और ग्रीस वापस जाने के लिए मदद मांगी। आखिरकार उसे ट्रेन से पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी और युगोस्लाविया होते हुए भेजा गया। वह खिड़कियों से तबाह हुए शहरों, बम से तबाह इमारतों, उजाड़ खेतों में चलते किसानों और गिरजाघरों के खंडहरों में खेलते बच्चों को देखता रहा।

अपने परिवार के पास वापस जाना? एथेंस पहुँचने पर, उसे एक व्यायामशाला में भेजा गया और बिस्कुट, सिगरेट और ऊज़ो (एक प्रकार की शराब) दी गई। उसके उंगलियों के निशान लिए गए। आखिरकार, एक ट्रक उसे सैलानिका ले गया। जब वह वहाँ पहुँचा, तो रात हो चुकी थी और उसके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं थी। वह बंदरगाह के पास एक बेंच पर काँपते हुए सो गया, और सुबह की मछलियाँ ला रही मछली पकड़ने वाली नावों की आवाज़ से उसकी नींद खुल गई। आँखें मलते हुए, उसने सोचा कि क्या उसके गृहनगर में हर सुबह जीवन इसी तरह चलता था, जब उसे, उसके पिता और उसके दादा को जानवरों की तरह ऑशविट्ज़ के आँगन में ले जाया जा रहा था। मछली पकड़ने वाली नावें इतनी मासूमियत से कैसे आती-जाती रहती थीं? जब इतने सारे कैदी भूख से मर रहे थे, तब दुनिया कैसे खा सकती थी? यहाँ चीजें इतनी भयानक रूप से सामान्य कैसे लग सकती थीं, जबकि सेबेस्टियन के लिए सामान्य जैसा कुछ भी नहीं बचा था?

अपने परिवार के पास वापस जाना चाहते हो?

"मेरे परिवार में सभी लोग मर चुके हैं," सेबेस्टियन ने कहा।

उस आदमी ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। "तुम यहूदी हो।"

"हाँ।"

उस आदमी ने अपनी ठुड्डी पर हाथ फेरा। "वे तुम्हें ले गए? उन ट्रेनों में?"

सेबेस्टियन ने सिर हिलाया।
मैंने कुछ बातें सुनीं। भयानक बातें। क्या वे सच थीं?
“कृपया महोदय,” सेबेस्टियन ने कहा। “मैं आपसे फिर कहता हूँ। यह मेरा घर है।”
वह आदमी सोच में डूबा हुआ सा लग रहा था, उसने बगल में देखा। फिर वह वापस मुड़ गया।
“सुनो। जो कुछ भी तुम्हारे साथ हुआ, वह बहुत बुरा हुआ। शायद सरकार मदद कर सके। लेकिन अब यह मेरा घर है।” उसने अपनी कमीज़ के ऊपर से अपनी छाती खुजलाई। “तुम्हें सच में जाना चाहिए।”
सेबेस्टियन की आंखों में आंसू आ गए।
“कहाँ?” उसने कर्कश स्वर में पूछा।
उस आदमी ने कंधे उचका दिए। सेबेस्टियन ने अपनी आँखें पोंछीं। फिर वह आगे बढ़ा, उस आदमी की गर्दन पर हाथ रख दिए और उसे छोड़ा नहीं।
अगले दिन, फैनी एग्नाटिया स्ट्रीट पर थी।
वह अपने पिता की दवा की दुकान को घूर रही थी। अब वह जूतों की दुकान थी। यहूदी बेकरी अब कपड़े धोने की दुकान बन गई थी। यहूदी दर्जी की दुकान अब वकीलों का दफ्तर थी। हालाँकि वह कुछ जगहों को पहचानती थी, लेकिन वहाँ सब कुछ बदल चुका था, और वहाँ आने-जाने वाले सभी लोग अलग लग रहे थे। उसे न तो दाढ़ी वाले यहूदी पुरुष दिखे, न ही शॉल ओढ़े यहूदी महिलाएं। उसे लाडिनो भाषा भी सुनाई नहीं दे रही थी।
फैनी ने भी घर लौटने का एक कठिन सफर तय किया था। उत्तरी हंगरी की पहाड़ियों में छिपकर, उसे अपनी असली पहचान बताने में महीनों लग गए, तब जाकर उसे लगा कि वह सुरक्षित है। आखिरकार, सेबेस्टियन की तरह, उसे भी विस्थापितों के शिविर में भेज दिया गया, यह शिविर ऑस्ट्रिया में था, वही देश जहाँ से वह उस बर्फीले दिन भागकर आई थी। वह एक चारपाई पर सोती और उसे बहुत कम खाना मिलता था। उसे डॉक्टर से मिलने के लिए कई दिन इंतजार करना पड़ा। वह लगातार शिविर के पुरुष कर्मचारियों की अवांछित हरकतों से खुद को बचाती रही, जो मानो ऐसा व्यवहार करते थे मानो उसे उनकी मदद के लिए आभारी होना चाहिए और उसकी कमर में हाथ डालने या उसकी गर्दन चूमने की कोशिश करते थे।
महीनों की कागजी कार्रवाई के बाद, आखिरकार उसे एथेंस जाने के लिए ट्रेन मिल

गई, जहाँ उसने अपना सोलहवाँ जन्मदिन एक गोदाम में चारपाई पर सोकर बिताया। फरवरी 1946 में, बुडापेस्ट से मौत के मार्च से बच निकलने के एक साल से भी अधिक समय बाद, वह रेबेका नाम की एक युवती के साथ सैलानिका लौट आई, जो नाज़ी वर्दी सिलने का काम करके शिविरों से बच निकली थी। रेबेका ने शिविर के कंबल से बनी ऊनी स्कर्ट पहनी हुई थी और उसके बाएं कान के नीचे एक निशान था। उसकी निगाहें शायद ही कभी सीधे सामने से हटती थीं।

जब वे दोनों सैलानिका पहुँचे, तो उन्हें शहर के बचे हुए दो आराधनालयों में से एक में ठहराया गया, जहाँ पहाड़ों में छिपे हुए दर्जनों यहूदी भी ठहरे हुए थे। वह शुक्रवार का दिन था। उस शाम, वर्षों में पहली बार, फैनी ने सब्त की प्रार्थना देखी। प्रार्थना स्थल में हल्की रोशनी थी, और कुछ बचे हुए लोग धीरे-धीरे प्रार्थना कर रहे थे। फैनी चुप रही। बाद में, समूह ने सूप के कटोरे और चिकन के छोटे-छोटे टुकड़े आपस में बाँटे।

उस रात, जब बाकी ज्यादातर लोग फर्श पर सो गए थे, तो यूनानी प्रतिरोध आंदोलन का हिस्सा रहे पुरुषों का एक समूह उन दो नए आने वालों के चारों ओर इकट्ठा हो गया।

उनमें से एक ने रेबेका से पूछा, "तुम्हारी कलाई पर यह क्या है?"

“मेरा नंबर।”

“किसलिए?”

"प्रत्येक कैदी के शरीर पर एक संख्या का टैटू बना हुआ था।"

“आप जैसे लोग और क्यों नहीं हैं?”

"वहां पहुंचते ही उनमें से अधिकतर की मौत हो गई।"

"मृत?"

“मारा गया।”

“कैसे मारा?”

“गैस,” रेबेका ने कहा।

“लाशों का क्या हुआ?”

जर्मनों ने उन्हें जला दिया।

एक विराम।

“क्या यह सच है?”

"बिल्कुल, यह सच है।"

दोनों आदमी एक-दूसरे को देखने लगे। उन्होंने अविश्वास से सिर हिलाया। लेकिन उनमें से एक, चौड़े कंधों वाला, मूंछों वाला आदमी, आगे झुका और उंगली से इशारा किया।

तो फिर आप यहां कैसे आए?

रेबेका ने पलकें झपकाईं। "तुम्हारा क्या मतलब है?"

“उन्होंने तुम्हें जलाया नहीं। क्यों नहीं?”

मैं...बच गया।

"कैसे?"

“मेरे पास नौकरी थी—”

“किस तरह की नौकरी? आपने किसके साथ सहयोग किया? आप अभी किसके साथ सहयोग कर रहे हैं?”

फैनी को अपनी सुनी हुई बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। लेकिन मृत्यु शिविरों की सच्चाई अधिकांश लोगों के लिए समझ से परे थी। मिलीभगत का झूठ स्वीकार करना कहीं अधिक आसान था।

“तुम्हारा क्या ख्याल है?” उस आदमी ने फैनी की ओर मुड़ते हुए पूछा।

एक अन्य व्यक्ति ने उसे रोकने की कोशिश की। "वह तो बस एक किशोरी है—"

“तुम्हारी कलाई पर नंबर कहाँ है?”

“मैं किसी शिविर में नहीं थी,” फैनी ने कहा।

“क्यों नहीं? आपने किसके साथ सहयोग किया?”

“कोई नहीं। मैं—”

"तुमने किसे दोषी ठहराया ताकि तुम जीवित रह सको?"

"इसे रोक!"

"कौन-"

“उसे अकेला छोड़ दो!” रेबेका चिल्लाई। “क्या हमारा ज़िंदा रहना ही काफी नहीं है? क्या तुम चाहते हो कि हम उस पर भी शर्म महसूस करें?”

उस आदमी ने गुस्से से दूसरों की ओर देखा। उसने अपना गला साफ किया और एक रुमाल में थूका।

“मुझसे दूर रहो,” उसने कहा।

* * *

उस रात फैनी सो नहीं पाई, क्योंकि उसे चारपाई पर जोर-जोर से खर्राटे लेते पुरुषों से डर लग रहा था। अगली सुबह, जब सूरज निकला, तो वह आराधनालय से निकली और समुद्र की ओर चल पड़ी।

बंदरगाह युद्ध में नष्ट हुए जहाजों के मलबे से भरा पड़ा था। कई कैफे बंद थे। सैलानिका में न केवल यहूदी समुदाय की कमी खल रही थी, बल्कि सुबह की रौनक, बाजारों की चहल-पहल और विभिन्न संस्कृतियों के मेलजोल की भी कमी खल रही थी। युद्ध के बाद, शहर भुखमरी और तबाही से जूझ रहा था, और लोग आपस में ही लड़ रहे थे।

फैनी पुराने सैरगाह पर केबल कार की पटरियों के समानांतर चलती रही। वह पूर्व दिशा में व्हाइट टॉवर की ओर बढ़ी, लेकिन जब उसने दूर से उसे देखा, तो उसका गला भर आया। जर्मनों ने बमवर्षकों के निशाने से बचने के लिए उसे छलावरण रंगों से रंग दिया था। सफेद रंग के बजाय, वह फीके हरे और भूरे रंगों का एक उलझा हुआ जाल था। न जाने क्यों, यह देखकर फैनी का दिल पस्त हो गया।

जैसे ही वह उस संरचना के पास पहुँची, उसे वह समय याद आ गया जब वह और क्रिस्पिस के बेटे अपने दादाजी की कृपा से शिखर तक चढ़े थे। उस दिन आकाश असीम रूप से विशाल प्रतीत हो रहा था और पानी के उस पार पहाड़ों की चोटियों पर ताज़ी बर्फ जमी हुई थी। दुनिया बेहद आकर्षक और आशाओं से भरी हुई लग रही थी। अब फैनी दुनिया से कोई वास्ता नहीं रखना चाहती थी। वह बस चुपचाप बैठना चाहती थी। एक दुकानदार ने पोछे की बाल्टी का सारा पानी पत्थर पर गिराया और झाड़ू लेकर निकल पड़ा, जिससे एक कर्कश, खुरचने जैसी आवाज़ आई। अब वह कहाँ जाएगी? क्या करेगी? वह इतने लंबे समय से छिपी हुई थी कि आज़ादी भी उसे एक जेल जैसी लग रही थी।

घर वापस पहुँचने पर कभी न रोने का वादा करने के बावजूद, फैनी की आँखों में आंसू आ गए। और ठीक उसी क्षण, जब वह अपने जीवन में सबसे अकेलापन महसूस कर रही थी, उसने अपने पीछे कदमों की आहट सुनी, और एक आदमी की आवाज़ में ये शब्द सुनाई दिए:

"मुझसे शादी करो, फैनी।"

उसने मुड़कर देखा तो उसे सेबेस्टियन दिखाई दिया, जिसका चेहरा परिपक्व और दाढ़ीदार था, उसके माथे पर घावों और सूखे खून के निशान थे, मानो वह किसी लड़ाई

में शामिल हुआ हो।
“हे भगवान!” फैनी ने कहा। “सेबेस्टियन? क्या सच में तुम हो?”
अपने अतीत के किसी जीवित व्यक्ति को देखकर वह भावुक होकर उसकी बाहों में समा गई। उसने उसके मजबूत, सुडौल कंधों और उसके छोटे बालों के स्पर्श को अपनी कनपटी पर महसूस किया।
"मैं तुम्हें हर जगह ढूंढ रहा था," सेबेस्टियन ने फुसफुसाते हुए कहा।
उन शब्दों और उनसे फैनी को जो एहसास हुआ, कि कोई अब भी उसके अस्तित्व को खोज के लायक समझता है, ने उसे एक ऐसी अनुभूति से भर दिया जो निको के उस हल्के से चुंबन के बाद से सुप्त थी। वह और सेबेस्टियन व्हाइट टॉवर की छाया में बैठे और बातचीत, सवाल, सिर हिलाना, और भी सवाल, आँसुओं में डूब गए। सेबेस्टियन ने वह बात कह दी जो वह तीन साल से कहना चाहता था। "तुम्हें ट्रेन की खिड़की तक धकेलने के लिए मुझे माफ़ कर दो।" फैनी ने कहा कि वह समझती है, और शिविरों में जो हुआ था उसे सुनने के बाद, शायद यही बेहतर था। वे उन भयानक विवरणों से दूर रहे जिन्हें वे दोनों दोबारा याद नहीं करना चाहते थे। कभी-कभी वे बस एक-दूसरे का हाथ थाम लेते थे। जब दोपहर के सूरज ने खाड़ी को नीलम नीले रंग में रंग दिया, तो सेबेस्टियन ने कहा, "चलो चलते हैं।"
शहर में हुए बदलावों को देखकर वे दंग रह गए। वे तटरेखा के साथ उत्तर की ओर बढ़े और लियोफोरोस टन एक्सोचोन के किनारे बने उन आलीशान मकानों की ओर इशारा किया जो कभी धनी यहूदी परिवारों के थे, लेकिन जर्मनों द्वारा चुरा लिए गए थे और यूनानियों द्वारा उनका पुनर्निर्माण कर दिया गया था। वे पश्चिम की ओर तब तक बढ़ते रहे जब तक वे पुराने बैरन हिर्श इलाके में नहीं पहुँच गए, जहाँ उन्हें निर्वासन से पहले कैद किया गया था, और उन्होंने देखा कि पूरा इलाका पूरी तरह से नष्ट हो चुका था।
शाम ढलते-ढलते जब चौराहों पर स्ट्रीटलाइटें जल उठीं, तब तक दोनों एक ही निष्कर्ष पर पहुँच चुके थे: सैलानिका अब उनकी नहीं रही थी। 'घर' शब्द अक्षर-अक्षर करके मिट चुका था।
भूतों का शहर किसी युवा जोड़े के लिए उपयुक्त जगह नहीं है। इसलिए जब चांदनी रात में खाड़ी के ऊपर सेबेस्टियन ने फैनी का हाथ थामा और फिर से "मुझसे शादी करो" का अनुरोध दोहराया, तो फैनी ने सिर हिलाकर कहा, "मैं करूंगी।"
उसी समय, एक इतालवी मठ में...

एक आदमी कबूलनामे के बूथ के अंदर दाखिल हुआ। उसने धुंधले चेहरे से बात की।
"क्या आपके पास कागजात हैं?"
"हाँ।"
"काफी लंबा इंतजार रहा है।"
इन चीजों में समय लगता है।
“क्या वे मुझे यात्रा बुक करने की अनुमति देते हैं?”
"हाँ।"
एक गहरी सांस। "आखिरकार।"
क्या आपके पास पर्याप्त पैसे हैं?
“यह धीरे-धीरे आया है। लेकिन अब काफी है, मुझे लगता है।”
"भगवान का धन्यवाद।"
“हे पिता, यह पैसा ईश्वर ने नहीं भेजा।”
“सभी चीजों के लिए ईश्वर ही जिम्मेदार है।”
"तुम कहते हो तो।"
“केवल ईश्वर के माध्यम से ही आप पापों की क्षमा प्राप्त कर सकते हैं।”
"जैसा आपको पसंद।"
"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि अब आप कहाँ जाएँगे?"
उडो ग्राफ दीवार से टेक लगाकर बैठ गया। अब वह कहाँ जाएगा? पिछले एक साल में वह कई जगहों पर जा चुका था। सबसे पहले, वह पोलैंड से भागा—सिर्फ इसलिए कि रूसियों ने उसे पकड़ने के बाद मूर्खता से जेल की कोठरी के बजाय अस्पताल में डाल दिया। एक सिपाही ने क्राकोव में अपने संपर्कों को सूचना दी, और दो आदमी आधी रात को उडो को चुपके से बाहर निकालने आए। रूसी गोलीबारी में उसका पैर बुरी तरह घायल हो गया था और उसे उठाकर ले जाना पड़ा, जिससे उसे बहुत शर्मिंदगी हुई।
गाड़ी सुबह तक चलती रही। ऑस्ट्रिया पहुँचने पर, उडो नाज़ी विचारधारा के प्रति सहानुभूति रखने वाले कई धनी परिवारों में से एक के यहाँ छिप गया। वह उनकी संपत्ति के पीछे बने एक गेस्टहाउस में सोता था और कभी-कभी उनके साथ रात का खाना खाता था, हालाँकि वह ऑशविट्ज़ में अपने कार्यों के बारे में किसी भी चर्चा से बचता था, खुद को एक मध्यम स्तर का अधिकारी बताता था जो केवल अपने आदेशों

का पालन कर रहा था। रात में, वह अपने कमरे में सिगरेट पीता था और विक्ट्रोला पर जर्मन संगीत सुनता था।

जब उडो चलने-फिरने लायक हो गया, तो उसे पहाड़ों के पार इटली ले जाया गया, जहाँ उसे शरण देने वाले कई मठों में से पहले मठ में पहुँचाया गया। जर्मन लोग इन सुस्थापित भागने के रास्तों को रैटनलाइन या "चूहे की राह" कहते थे, जिनका मतलब भागने के लिए होता था। इस काम में उन्हें इटली और स्पेन के कैथोलिक पादरियों से भरपूर मदद मिली। आप शायद पूछेंगे कि जो लोग खुद को ईश्वर के सच्चे अनुयायी मानते हैं, वे इतने सारे निर्दोष लोगों की मौत के लिए ज़िम्मेदार लोगों की मदद करने को क्यों तैयार होंगे? लेकिन पादरी भी मेरी बातों को किसी और की तरह आसानी से तोड़-मरोड़ सकते हैं।

“युद्ध अन्यायपूर्ण था।”

"उसके अपराधों को बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया था।"

“जेल की कोठरी में सड़ने से बेहतर है पश्चाताप करने की आजादी।”

उडो इटली के मेरानो शहर में, सारेन्टिनो आल्प्स के पास, एक गिरजाघर के पिछले कमरे में छिप गया और कई सुबह बर्फ से ढकी चोटियों को निहारता रहा, यह सोचता रहा कि वुल्फ की शानदार योजना कैसे विफल हो गई। महीनों बाद, वह रोम चला गया, जहाँ उसके नाम और पासपोर्ट के लिए कागजी कार्रवाई पूरी की गई। आखिरकार, इस नई पहचान के साथ, उडो जेनोआ बंदरगाह शहर के पास एक चर्च में पहुँचा, जहाँ उसने विदेश जाने के लिए पर्याप्त धन और उचित यात्रा दस्तावेजों का इंतजार किया। उसे मन ही मन अपमान महसूस हो रहा था कि उसे कैथोलिकों पर निर्भर रहना पड़ रहा है, जबकि उसका उनके धर्म में कोई विश्वास नहीं था और उनके आडंबरपूर्ण रीति-रिवाजों के लिए उसका कोई सम्मान नहीं था। लेकिन उनके पास शराब की कोई कमी नहीं थी। उसने इसका भरपूर फायदा उठाया।

आप कहाँ जाएँगे? दक्षिण अमेरिका सबसे स्वाभाविक गंतव्य था। उस महाद्वीप की कई सरकारों ने यह स्पष्ट कर दिया था कि यदि नाज़ी अधिकारियों को सुरक्षित पनाहगाह की आवश्यकता हो तो वे अनदेखी करने को तैयार हैं।

“अर्जेंटीना,” उसने पादरी से कहा। “मैं अर्जेंटीना जाऊंगा।”

भगवान आपकी रक्षा करें।

"जैसा आपको पसंद।"

लेकिन उडो झूठ बोल रहा था। वह कई ऐसे एसएस अधिकारियों को जानता था जिन्हें पहले ही दक्षिण अमेरिका भेज दिया गया था। अपनी रणनीति में माहिर उडो का मानना था कि अगर उनमें से किसी एक का भी पता चल गया, तो बाकी लोगों के बारे में जानकारी जुटाना आसान हो जाएगा।

नहीं। उडो ने ठान लिया था कि वह एक और दिन लड़ेगा, वुल्फ ने जो शुरू किया था उसे पूरा करेगा, और इसके लिए उसे दुश्मन को भीतर से समझना होगा। उसने पादरी को "अर्जेंटीना" बताया था, लेकिन यह सिर्फ अस्थायी था। उसने अपने मन में पहले ही एक बेहतर छिपने की जगह तय कर ली थी।

वह अमेरिका जाएगा।

भाग IV

आगे क्या हुआ?

अगर आप हमारी कहानी को एक बच्चे के स्नो ग्लोब की तरह सोचें, तो यह वह क्षण है जब हम इसे जोर से हिलाते हैं और विभिन्न टुकड़े पानी में घूमते हुए, गुरुत्वाकर्षण के साथ नाचते हुए एक नए विश्राम स्थान की ओर बढ़ते हैं।

कई दशक बीत गए। स्थान बदल गए। काम मिल गया। बच्चे पैदा हुए। लेकिन भले ही वे एक-दूसरे से दूर थे, निको, सेबेस्टियन, फैनी और उडो अब भी एक-दूसरे को प्रभावित कर रहे थे, उनके जीवन उनके सच और झूठ से आपस में गुंथे हुए थे।

पृथ्वी को हिलाइए, और बाईस साल बाद जब हमने उन्हें आखिरी बार देखा था, तो वे सभी इस तरह से आकर गिरे।

निको अमीर हो गया।

सेबेस्टियन जुनूनी हो गया।

फैनी मां बन गई।

उडो एक जासूस बन गया।

मुझे विस्तार से समझाने दीजिए:

सबसे पहले, निको की कहानी।

मेरा प्यारा बच्चा, जो हमेशा सच बोलता था, ऑशविट्ज़ के बाद हमेशा के लिए मुझसे बिछड़ गया। भेड़िये को अपने लोगों का कत्ल करते और उनकी लाशों को राख में बदलते देखकर—और यह महसूस करके कि उसने अनजाने में इसमें भूमिका निभाई थी—उस कभी ईमानदार लड़के को एक ऐसी दुनिया में भेज दिया जहाँ मेरा कोई

अस्तित्व नहीं है।

मनोवैज्ञानिक इसे "विकृत झूठ" कहते हैं। इसका तात्पर्य ऐसे झूठ से है जिनका कोई उद्देश्य नहीं होता, और न ही ये झूठ बोलने वाले व्यक्ति की मदद करते हैं। ये महज़ किसी विकार, मानसिक बीमारी के कारण लिए गए विकल्प होते हैं, या निको के मामले में, सच्चाई का आघात इतना गहरा था कि इसने उसकी आँखों को हमेशा के लिए झुलसा दिया।

निको, जिसने लगभग असंभव काम कर दिखाया था—छिपकर ऑशविट्ज़ में प्रवेश करना—अब छोटी-छोटी बातों पर भी झूठ बोलने लगा था। उसे कौन सी किताबें पसंद थीं। उसने नाश्ते में क्या खाया था। उसने अपने कपड़े कहाँ से खरीदे थे। वह खुद को रोक नहीं पा रहा था। हर सीधी बात टेढ़ी-मेढ़ी हो गई।

* * *

मैंने बताया था कि निको अमीर हो गया। झूठ बोलने से उसे यह सब करने में मदद मिली।

1946 तक, वह कैटलिन कराडी से पुनर्मिलन की उम्मीद में हंगरी लौट आया था। उसके पास अब भी जाली दस्तावेज़ बनाने के सारे औज़ार थे, लेकिन उडो के थैले से लगभग सारा पैसा गायब हो चुका था। उसे पैसों की ज़रूरत थी।

बुडापेस्ट की ओर जा रही एक ट्रेन में निको सो गया। एक कंडक्टर ने उसका टिकट और कागजात मांगकर उसे जगाया। नींद में डूबे निको ने अपने बैग में हाथ डाला और भूरा जर्मन पासपोर्ट निकालने लगा, लेकिन तभी उसे अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने गलती से हंगेरियन पासपोर्ट निकाल लिया। कंडक्टर ने इस पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन उसके बगल में बैठे यात्री ने देख लिया। वह लगभग तीस साल का लग रहा था और उसके बाएं हाथ पर एक निशान था। कंडक्टर के जाने तक वह निको को घूरता रहा। फिर वह उसकी ओर झुका और जर्मन में बोला।

"क्या आप मुझे उनमें से एक दिला सकते हैं?"

“किसमें से एक?” निको ने कहा।

"एक हंगेरियन पासपोर्ट।"

"मैं नहीं समझता।"

“हाँ, बिल्कुल। मैंने वो जर्मन पासपोर्ट देखा था। आप मुझे बेवकूफ नहीं बना सकते। आजकल दो पासपोर्ट वाला आदमी तीन पासपोर्ट भी बनवा सकता है।”

मुझे नहीं पता कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं।
“अरे, रहने दो। जर्मन कैसे बोलोगे? मुझे हंगरी का पासपोर्ट दिलवा दो, मैं तुम्हें इसका अच्छा इनाम दूंगा।” उसने हाथ आगे बढ़ाया। “मैं गुंथर हूँ। हैम्बर्ग से।”
निको ने एक पल सोचा।
“लार्स,” उसने कहा।
"से?"
स्टटगार्ट।
"तुम्हारे लहजे में कुछ खास बात है।"
"जब मैं छोटी थी तब मेरा परिवार हंगरी चला गया था।"
“अब तुम्हारी उम्र कितनी है, सोलह या सत्रह?”
"अठारह।"
"मेरी बात सुनो, लार्स। मुझे वह पासपोर्ट चाहिए।"
"जर्मनी वापस घर क्यों नहीं चले जाते?"
उसने नज़रें फेर लीं। "मैं नहीं कर सकता। मुझे कुछ काम करना है, और एक बार जब मैं उसे कर लूंगा, तो मुझे नए सिरे से शुरुआत करनी होगी।"
“ठीक है, मैं आपकी मदद नहीं कर सकता,” निको ने कहा। “मुझे खेद है।”
गुंथर ने नाक सिकोड़ी और खिड़की से बाहर देखा, मानो वह अपनी अगली चाल के बारे में सोच रहा हो।
“सुनो,” उसने फुसफुसाते हुए कहा, “मैं हम दोनों को अमीर बना सकता हूँ।”
निको ने उस आदमी के कपड़ों पर गौर किया। एक टर्टलनेक स्वेटर, ग्रे रंग की पैंट, गंदा कोट, फर की टोपी। वह ऐसा आदमी नहीं लग रहा था जो किसी को अमीर बना सके।
"कैसे?"
“कुछ समय पहले की बात है, एक ट्रेन थी, जिसमें बीस से अधिक डिब्बे थे। वह सोने, गहनों, नकदी से भरी हुई थी—वह सब कुछ जो हमने यहूदियों से छीना था। वह ट्रेन जर्मनी जा रही थी ताकि वहाँ के साम्राज्य को धन मुहैया कराया जा सके।”
"इसलिए?"
"यह रुक-रुक कर चलती थी।"
निको ने इंतजार किया।

“यह रुक-रुक कर चलती थी,” गुंथर ने दोहराया। “और उन्हीं में से एक जगह पर, कुछ बक्से... उतारे गए।”

वह अपनी सीट पर पीछे की ओर झुक गया।

“मैं उस ट्रेन में गार्ड था। हम बहुत सारे लोग थे। और हममें से कुछ लोग जानते हैं कि वे बक्से कहाँ छिपे हुए हैं।”

"कहाँ?"

उस आदमी ने मुस्कुराते हुए कहा, "ज़रूर तुम मुझसे यह सवाल पूछोगे। लेकिन मैं तुम्हें नहीं बताऊंगा। मैं बस इतना कहूंगा कि हंगरी में एक चर्च है जिसके तहखाने में जीवन भर के लिए पर्याप्त सामान है।"

उसने निको को अपनी आँखों से परखा। "मुझे नया पासपोर्ट दिलवा दो, मैं तुम्हें वहाँ ले चलूँगा।"

* * *

तीन महीने बाद, एक नम, चाँद रहित रात में, ज़ाम्बेक नामक छोटे कस्बे में एक परित्यक्त रोमनस्क चर्च के चारों ओर फैली कीचड़ भरी घास में एक बड़ा ट्रक खड़ा था। सदियों पहले निर्मित यह चर्च सत्रहवीं शताब्दी में तुर्कों द्वारा नष्ट कर दिया गया था और इसकी कभी मरम्मत नहीं की गई। युद्ध तक यह एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण था। उसके बाद, यहाँ आने वाले पर्यटकों की संख्या बहुत कम हो गई।

निको को जो बताया गया, उसके अनुसार गुंथर और उसका एक साथी गार्ड, जिन्हें नाज़ी ट्रेन में रात के समय सामान की गिनती करनी थी, उन्होंने चुपके से सोने, नकदी और गहनों से भरे कई बक्से एक वाहन में उतार दिए और फिर आधी रात को उसे यहाँ ले आए। गुंथर ने बताया कि उन्होंने एक रात के चौकीदार को रिश्वत देकर सामान को तहखाने के एक कमरे में उतारने की अनुमति ली थी। उन्होंने दरवाजे पर ताला लगा दिया था।

“तुम्हारे साथी को क्या हुआ?” निको ने पूछा।

“वह मर गया,” गुंथर ने कहा। “रूसियों ने उसे मार डाला।”

“रात के चौकीदार का क्या हुआ? क्या उसे पता नहीं था कि तुम क्या कर रहे थे?”

"सुराग नहीं।"

आपको कैसे पता चला कि वह चुप रहा?

“हाँ, उसने किया। हमने उसका अच्छे से ख्याल रखा।”

चर्च के नीचे का पत्थर का फर्श गीला था और उसमें फफूंद की गंध आ रही थी। निको और गुंथर को ताला लगा हुआ एक भारी दरवाजा मिला, और गुंथर ने कुल्हाड़ी से उसे तोड़ दिया। उन्होंने दरवाजा एक तरफ खींचकर टॉर्च से कमरे में रोशनी की। वाकई, अंदर चार बक्से रखे हुए थे।

"मैंने तुमसे क्या कहा था?" गुंथर ने अपने चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान लिए कहा।

दोनों आदमी एक-एक करके बक्सों को पुराने सीढ़ीदार रास्ते से ऊपर ले जाने में काफी जोर लगा रहे थे। गुंथर अपनी आपा खो बैठा था।

"लार्स, यहाँ इतना कुछ है कि तुम पूरी ज़िंदगी में भी खर्च नहीं कर पाओगे!" उनके भारी वजन को देखते हुए निको को लगा कि लार्स सही कह रहा है।

उन्हें ट्रक में लोड करने में एक घंटे से ज़्यादा समय लग गया। निको पसीने से तरबतर हो रहा था। वह लगातार आस-पास देखता रहा कि कहीं कोई उसे देख तो नहीं रहा, लेकिन आस-पास की इमारतों से कोई रोशनी नहीं आ रही थी और रात के झींगुरों की आवाज़ के अलावा कोई और शोर नहीं था। जब आखिरी बक्सा भी ट्रक के अंदर ठूंस दिया गया, तो गुंथर पीछे झुक गया और अंधेरे में एक ज़ोरदार आवाज़ निकाली।

“इसी का तो मैं इंतज़ार कर रहा था! इस घिनौने युद्ध का! आखिरकार। मेरे लिए कुछ तो मिला!”

“चलो यहाँ से चलते हैं,” निको ने फुसफुसाते हुए कहा।

"रुको, रुको, मुझे तुम्हें दिखाना होगा कि हमारे पास किस तरह का माल है।"

"अभी नहीं।"

“अहंकारी मत बनो,” उसने कहा। “क्या तुम यह नहीं देखना चाहते कि मैं तुम्हें कितना अमीर बना रहा हूँ?”

उसने अपनी टॉर्च कमर के पास नीचे की ओर पकड़ रखी थी, जिससे उसकी रोशनी उसके चेहरे पर पड़ रही थी।

“मुझे देखो, लार्स। मुझे देखो! यह एक समृद्ध, नए हंगरीवासी का चेहरा है—”

निको को आवाज सुनाई देने से पहले ही गोली लग गई। गुंथर का सिर पीछे की ओर झटका और उसका कॉलर खून से लाल हो गया। दूसरी गोली उसकी छाती को भेदते हुए उसे आटे की बोरी की तरह गिरा दिया, उसकी टॉर्च कीचड़ में जा गिरी।

निको जम गया। उसे पास आते कदमों की आहट सुनाई दी। अचानक, उसकी नज़र एक लाल बालों वाले लड़के पर पड़ी, जिसने राइफल की नली को सीधा आगे की

ओर ताने रखा था और वह ट्रक के पिछले टायर से सटे हुए मृत गनथर के शरीर को देख रहा था।

निको ने आत्मसमर्पण करते हुए अपने हाथ ऊपर उठा लिए, लेकिन जब लड़के ने उसका चेहरा देखा, तो उसने बंदूक नीचे कर दी। वह लड़का लगभग दस साल का लग रहा था।

“क्यों?” निको ने हांफते हुए पूछा।

“उसने मेरे पिता को मार डाला,” लड़के ने सपाट स्वर में कहा। “मैं हर रात उसके लौटने का इंतज़ार करता हूँ। उसके और उस दूसरे सैनिक के लौटने का।”

वह रुका। "तुम नहीं।"

“नहीं, मैंने नहीं किया,” निको ने झट से कहा। “मैं नहीं था, कसम से।”

लड़के ने अपने होंठ कसकर बंद कर लिए। ऐसा लग रहा था मानो वह आंसू रोकने की कोशिश कर रहा हो।

“तुम्हारे पिता,” निको ने कहा। “क्या वो रात के चौकीदार थे?”

"हाँ।"

मुझे खेद है। मुझे पता नहीं था।

“दूसरा आदमी कहाँ है?”

"मृत।"

"अच्छा।"

उसने गुंथर के शरीर को लात मारी। वह कीचड़ में गिर गया।

मैं घर जाकर अपनी मां को सब कुछ बताऊंगी।

वह मुड़कर जाने लगा।

“रुको।” निको ने ट्रक की ओर इशारा करते हुए कहा। “क्या तुम्हें बक्से नहीं चाहिए?”

“इनमें क्या है?”

"सोना, मुझे लगता है। पैसा। गहने।"

“यह मेरा नहीं है,” लड़के ने कहा।

उसने अपना सिर एक तरफ झुकाया।

"क्या यह तुम्हारा है?"

“नहीं,” निको ने कहा, “ऐसा नहीं है।”

अच्छा। शायद आप इसे उसे वापस दे सकते हैं जिससे उन्होंने इसे लिया था।
लड़के ने राइफल का पट्टा अपने कंधे पर डाला, टॉर्च की रोशनी के सामने से गुजरा और अंधेरे में गायब हो गया।

* * *

उस रात के बाद कई घटनाएँ घटीं, जिनका यहाँ विस्तार से वर्णन करना संभव नहीं है। मैं बस इतना बता सकता हूँ कि निको ने अपनी कुछ दौलत का इस्तेमाल अपनी शिक्षा के लिए किया, क्योंकि उसे एहसास था कि स्कूल का उसका आखिरी दिन तब था जब वह ग्यारह साल का था और जर्मनों ने उसके घर पर कब्ज़ा कर लिया था। पहले बुडापेस्ट में एक हंगेरियन किशोर के रूप में, फिर पेरिस में एक फ्रांसीसी विश्वविद्यालय के छात्र के रूप में, और बाद में, अपनी अंग्रेज़ी में निपुणता हासिल करने के बाद, लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स के 1954 बैच के सदस्य के रूप में, निको ने टॉमस गेर्गेल नाम का इस्तेमाल करते हुए अच्छी शिक्षा प्राप्त की, खासकर व्यापार के तरीकों में। वह पैसा कमाना सीखने के लिए पूरी तरह समर्पित था, क्योंकि वह जानता था कि इससे उसे युद्ध के वर्षों में गुज़ारा करने में मदद मिली। वह अपनी कक्षाओं में परिपक्वता दिखाता था और उसके प्रोफेसर उसकी प्रशंसा करते थे। चर्च में रखे बक्सों की बदौलत, उसने एक निजी बैंक खाता बनाए रखा था जो उसके साथी छात्रों को आश्चर्यचकित कर देता था, लेकिन वह उनके साथ छात्रावासों में रहता था और अक्सर कहता था कि उसके पास खाने के लिए मुश्किल से ही कुछ होता है। उसकी अच्छी शक्ल-सूरत ने कई युवतियों का ध्यान आकर्षित किया और अगर वह नहीं चाहता था तो वह कभी अकेला नहीं रहता था। वह अपनी प्रेमिकाओं को बताता था कि युद्ध के दौरान उसका हंगेरियन परिवार पूरी तरह से खत्म हो गया था, इसलिए उसके पास न तो माता-पिता थे और न ही छुट्टियों में घर लौटने का कोई सवाल ही था। उसके प्रेम संबंध गहन तो थे, लेकिन अल्पकालिक थे। वह किसी के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने में विश्वास नहीं रखता था।

उन्होंने सम्मान के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की, और जब उन्हें अपनी डिप्लोमा मिली, तो वे उसे लेकर साउथेम्प्टन के एक हवाई अड्डे के पास एक होटल के कमरे में चले गए। उन्हें नए सिरे से शुरुआत करने की आवश्यकता महसूस हुई, जैसा कि आदतन झूठे लोग अक्सर करते हैं। अपने जालसाजी के औजारों का उपयोग करके, उन्होंने चर्मपत्र से "टोमास गेर्गेल" नाम मिटा दिया।

उसे अपना बचपन, अपने दादाजी, व्हाइट टॉवर की यात्रा और उस यहूदी कैदी की कहानी याद आ गई जिसने अपनी रिहाई के बदले पूरी इमारत को रंगने की पेशकश की थी। निको ने कलम उठाई और एकदम साफ लिखावट में उस कैदी का नाम, "नाथन गुइडिली," अपने डिप्लोमा पर लिख दिया।

अगली सुबह, वह अपने पहले हवाई जहाज में सवार हुआ, जो उसकी यात्रा का पहला चरण था, जो उसे पश्चिम की ओर ले जाएगा, फिर और पश्चिम की ओर, जब तक कि वह खुद को कैलिफोर्निया नामक राज्य और हॉलीवुड नामक शहर की चकाचौंध भरी धूप में नहीं पा लेता, जहाँ झूठी भूमिकाएँ निभाना न केवल आम बात थी, बल्कि व्यापार भी था।

कैटलिन कराडी ने एक बार निको से कहा था, "तुम्हें फिल्मों में काम करना चाहिए।" जल्द ही, अपने पैसों की बदौलत, वह सफल हो गया।

अब सेबेस्टियन और फैनी की बात करते हैं, जिनका नाम एक जैसा था।

थेसालोनिकी में दोबारा मिलने के तीन हफ्ते बाद, यहूदी कल्याण कार्यालय में उनकी शादी हुई। फैनी ने सफेद लिनेन की पोशाक पहनी थी जो एक सहायता कर्मी ने उसे उधार दी थी। वह पोशाक बहुत बड़ी थी और उसे कपड़े में उलझने से बचने के लिए सावधानी बरतनी पड़ी। सेबेस्टियन ने एक रब्बी द्वारा दिया गया गहरा कोट और टाई पहनी थी।

यह एक संक्षिप्त समारोह था, जिसमें दो बंदरगाह श्रमिकों को गवाह के रूप में हस्ताक्षर करने के लिए बुलाया गया था। दंपति के पास आमंत्रित करने के लिए कोई परिवार या मित्र नहीं थे, केवल भूत थे, जिनकी छवि उन्होंने अपने मन में बनाई थी, जब उनकी प्रतिज्ञाएँ उस खाली कमरे में गूंज रही थीं। अंगूठियों का आदान-प्रदान होने के बाद, उन्होंने अजीब तरह से चुंबन किया, और फैनी को शर्मिंदगी हुई कि एक पल के लिए उसे याद आया कि उसने अपने नए पति के भाई को चूमा था।

उस समय, इतनी कम उम्र में, यह कहना उचित होगा कि सेबेस्टियन अपने किशोरावस्था के सपने को पूरा कर रहा था, जबकि फैनी अपने पुराने जीवन के एकमात्र बचे हुए हिस्से से चिपकी हुई थी। यह कोई सोच-समझकर किया गया विवाह नहीं था। फिर भी, अठारह और सोलह वर्ष की आयु में वे पति-पत्नी बन गए, और यदि प्रेम में समान न हों, तो एक विचार ने उन्हें एकजुट कर दिया: दोनों में से कोई भी सैलानिका में एक पल भी नहीं रहना चाहता था।

जैसे ही उन्हें कुछ सहायता मिली, वे दक्षिण की ओर जाने वाली एक नाव पर सवार हो गए (फैनी ने ट्रेन में चढ़ने से इनकार कर दिया), और कई पड़ावों के बाद, वे पहाड़ी द्वीप क्रेते पर उतरे। आसमान चमकीले नीले रंग के बीच सफेद धारियों से भरा हुआ था, और उनकी गर्दन पर गर्मी सुखद लग रही थी।

"हमें कहाँ रहना चाहिए?" सेबेस्टियन ने हेराक्लियन के बंदरगाह शहर से गुजरते हुए पूछा।

“यहाँ नहीं,” फैनी ने कहा। “कोई शांत जगह। लोगों से दूर।”

"ठीक है।"

"शायद आप हमारे लिए एक घर बना सकते हैं?"

सेबेस्टियन मुस्कुराया। "मैं?"

फैनी ने सिर हिलाया, और जब उसे एहसास हुआ कि वह मजाक नहीं कर रही है, तो उसने यह कहने से खुद को रोक लिया कि उसे घर बनाना नहीं आता, और बस इतना कहा, "अगर आप यही चाहती हैं, तो मैं बना दूंगा।"

उसे एक साल से ज़्यादा का समय लगा, और इस दौरान उसने कई गलतियाँ कीं जो गलत सलाह के कारण हुईं। लेकिन आखिरकार, द्वीप के पूर्वी छोर के पास जैतून के बाग के किनारे एक ज़मीन के टुकड़े पर, सेबेस्टियन ने ईंटों और सीमेंट से बना तीन कमरों का घर बनाया, जिसकी लकड़ी की छत मिट्टी की टाइलों से ढकी हुई थी। इस साफ-सुथरे घर में अपनी पहली रात, फैनी ने रविवार की मोमबत्तियाँ जलाईं और एक प्रार्थना की जो उसने अपने पिता के जीवित रहने के बाद से नहीं की थी।

“अभी क्यों?” सेबेस्टियन ने कहा।

“क्योंकि,” उसने कहा, “अब हमारे पास एक घर है।”

उस रात, उन्होंने कोमल और भावुकतापूर्ण तरीके से प्रेम किया, जो उनके पहले के प्रेम प्रसंगों में नहीं था। और जल्द ही उन्होंने अपनी पहली संतान, एक नन्ही सी बच्ची का स्वागत किया, जिसका नाम उन्होंने सेबेस्टियन की दिवंगत माँ, टान्ना के नाम पर टिया रखा। फैनी ने बच्ची पर वह सारा प्यार बरसाया जो उसने युद्ध के दौरान अपने भीतर दबा रखा था। जब उसने बच्ची को गोद में लिया और उसके कोमल बालों को चूमा, तो उसे अपने फेफड़ों में एक नई और ताजगी भरी साँस का एहसास हुआ, और उसका हृदय संतोष नामक एक सुखद और अद्भुत अनुभूति से भर गया।

सेबेस्टियन ने युद्ध को भुलाने की कोशिश की। लेकिन युद्ध ने उसका पीछा नहीं छोड़ा।

फैनी को जो संतोष मिला, वह उससे दूर रहा। शिविरों में कष्ट सहने वाले कई लोगों की तरह, उसकी रातें मृतकों के साये में गुज़रती थीं। उनके चेहरे। उनकी हड्डियों के ढाँचे। वे पल जब वह उन्हें कीचड़ या बर्फ में गिरा देता था। नींद में छोटे-छोटे डरावने दृश्य लौट आते और उसे पसीने से तरबतर, काँपते हाथों के साथ जगा देते। वह साँस लेने के लिए हाँफता और उसकी आँखों से आँसू बहने लगते। ऐसा इतनी बार होता था कि वह अपने बिस्तर के पास एक लकड़ी का चम्मच रखता था ताकि फैनी को उसकी सिसकियाँ सुनाई न दें।

सेबेस्टियन, अपने भाई निको की तरह, अपनी स्कूली शिक्षा पूरी नहीं कर पाया था। लेकिन पैसे की कमी के कारण उसके पास काम के सीमित विकल्प थे। उसे अपने पिता से तंबाकू के कारोबार की जानकारी थी, और कुछ समय बाद उसे क्रेते में सिगरेट आयात करने वाली एक कंपनी में नौकरी मिल गई। इससे उसे खाने-पीने और कपड़ों के लिए पर्याप्त पैसे मिल जाते थे, और अपनी बेटी से खुश फैनी ने और कुछ नहीं माँगा।

एक रात, टिया के चौथे जन्मदिन पर, वे पास के एक मछुआरे गाँव से एक छोटी नाव में निकले और बंदरगाह की ओर पीछे मुड़कर देखा। तेल से जलने वाले स्ट्रीट लैंप ने उसे प्रकाश के एक घेरे में घेर रखा था।

“मुझे लगता है टिया को एक बहन की जरूरत है,” फैनी ने कहा।

“या शायद कोई भाई?” सेबेस्टियन ने कहा।

फैनी ने अपने पति का हाथ छुआ। "क्या आप कभी अपने भाई के बारे में सोचते हैं?"

सेबेस्टियन ने तेवर चढ़ाए।

"नहीं।"

"अगर वह जीवित हो तो क्या होगा?"

“शायद वो ऐसा ही है। वो हमेशा अपनी मनचाही चीज़ें हासिल करने के तरीके ढूंढ लेता था।”

“क्या तुम अब भी उससे नाराज़ हो?”

“वह नाजियों के साथ काम कर रहा था, फैनी। वह उनके झूठ फैला रहा था।”

"आपको कैसे मालूम?"

मैंने उसे देखा! तुमने भी उसे देखा!

मैंने उसे एक पल के लिए देखा।

और उन्होंने तुमसे कहा था कि सब ठीक हो जाएगा। नौकरियां होंगी। परिवार एकजुट होंगे। है ना?
उसने नीचे देखा। "हाँ।"
“जैसा मैंने कहा।”
लेकिन वह झूठ क्यों बोलेगा? इसमें उसका क्या फायदा था?
उन्होंने उसे जीवित रहने दिया।
"हो सकता है उन्होंने उससे भी झूठ बोला हो। क्या आपने कभी इस बारे में सोचा है?"
सेबेस्टियन ने अपने दांत भींच लिए। अपने भाई के प्रति उसका गुस्सा शारीरिक रूप से प्रकट होने लगा।
“उस दिन तुम उसके साथ क्या कर रहे थे?”
"तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"
“तुम्हें पता है। घर में।”
"फिर यह?"
उन्होंने उस सुबह की घटना को कितनी बार दोहराया था। फैनी ने बार-बार बताया था कि वह तहखाने में क्यों छिपी थी, बाहर आने से कितना डर रही थी, निको का हाथ क्यों पकड़े हुए थी, और एक घंटे बाद वहां से क्यों निकली थी। उसे यह बातचीत बिल्कुल पसंद नहीं थी क्योंकि हर बार इसका अंत उसके पिता की दवाखाने के सामने हुई मौत से ही होता था।
“कोई बात नहीं,” सेबेस्टियन ने कहा। “इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।”
लेकिन यह मायने रखता था। ईर्ष्या शायद ही कभी भूलती है। सेबेस्टियन का वह हिस्सा, जिसे यह एहसास था कि फैनी कभी निको को ज़्यादा पसंद करती थी, उसके किशोरावस्था में पैदा हुआ एक शैतान था। और भले ही फैनी ने उससे शादी कर ली थी और उसे एक बेटी दी थी, फिर भी वह शैतान, ऐसे समय में, उसके कान में फुसफुसाता रहता था।
* * *
एक दिन सेबेस्टियन ने एक पत्रिका में वियना के एक व्यक्ति के बारे में पढ़ा, जिसने पूर्व नाज़ियों को खोजने के लिए एक एजेंसी बनाई थी। जाहिर है, उनमें से कई लोग नई पहचान के साथ छिपे हुए थे। इस व्यक्ति के पास धन, एक कार्यालय और यहाँ तक कि एक छोटा सा स्टाफ भी था। कुछ लोग उसे "नाज़ी शिकारी" कहते थे। वह

पहले ही कई पूर्व एसएस अधिकारियों को गिरफ्तार करवा चुका था।
कई दिनों तक, काम पर सिगरेट के डिब्बे उतारते हुए सेबेस्टियन उस आदमी के बारे में सोचता रहा। एक रात, फैनी और टिया के सो जाने के बाद, उसने एक लंबा पत्र लिखना शुरू किया जिसमें उसने ऑशविट्ज़ में बिताए अपने समय की यादों का ब्योरा दिया: उसे दिए गए काम, शवदाह गृह और गैस चैंबर चलाने वाले अधिकारियों के नाम, कुछ एसएस गार्डों द्वारा मारे गए लोगों की संख्या और शुत्ज़हाफ्टलागरफ्यूहरर उडो ग्राफ द्वारा किए गए कई अत्याचार। उसकी सूची नौ पन्नों में फैली हुई थी।
जब उसने पत्र लिखना समाप्त कर लिया, तो उसने उसे वियना स्थित उस व्यक्ति को भेज दिया। उसके पास उस व्यक्ति का केवल नाम और उसकी संस्था का नाम था, कोई पता या नंबर नहीं थे, इसलिए उसे संदेह था कि वह पत्र वहाँ पहुँच पाएगा या नहीं।
लेकिन उस पत्र को भेजने के चार महीने बाद, सेबेस्टियन को जवाब में एक पत्र मिला —स्वयं नाज़ी हंटर की ओर से। उन्होंने सेबेस्टियन को साझा की गई जानकारी के लिए धन्यवाद दिया और उसकी विस्तृत जानकारी की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि यदि सेबेस्टियन कभी वियना आ सकें, तो वे उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलकर विवरणों की पुष्टि करना चाहेंगे और आरोप का औपचारिक बयान लेना चाहेंगे। यह भागे हुए अपराधियों, विशेष रूप से उडो ग्राफ का पीछा करने में सहायक हो सकता है, जो एजेंसी द्वारा जुटाई गई जानकारी के अनुसार, एक पोलिश अस्पताल से भाग गया था और लापता हो गया था।
सेबेस्टियन ने वह पत्र कम से कम एक दर्जन बार पढ़ा। पहले तो वह गुस्से से आग बबूला हो गया, मानो शारीरिक रूप से बीमार पड़ गया हो, यह जानकर कि ग्राफ अभी भी जीवित है। लेकिन हर बार पढ़ने के साथ-साथ सेबेस्टियन को अपने अंदर एक नई ताकत का एहसास होता गया, जैसे ठंड से सुन्न हो चुकी उंगलियां फिर से गर्म हो जाती हैं। अब वह कुछ कर सकता था। वह कदम उठा सकता था। इतने लंबे समय तक शिविरों में बिताया उसका समय एक रस्सी की तरह था जिसने उसे जकड़ रखा था। वियना का यह आदमी उसके लिए वह चाकू था जो उसे इस बंधन से मुक्त कर सकता था।
सेबेस्टियन ने फैनी को अपने पत्राचार के बारे में नहीं बताया।
उसने नाज़ी हंटर से चिट्ठी छुपा दी। इस तरह उसने अपनी पत्नी को धोखा दिया। यह

कोई नई बात नहीं है; पति-पत्नी एक-दूसरे से जो झूठ बोलते हैं, उनमें अक्सर कुछ बातें छुपाई जाती हैं। आप इस बात को छिपा लेते हैं। आप उस कल्पना को साझा नहीं करते। आप कुछ कहानियों को पूरी तरह से छोड़ देते हैं।

आप इन कृत्यों को यह कहकर उचित ठहराते हैं कि मैं, सत्य, बहुत उपद्रवी हूँ। क्यों बेवजह हंगामा खड़ा करना? क्यों बवाल मचाना? उदाहरण के लिए, सेबेस्टियन ने फैनी को रिवका नाम की लड़की से अपनी पिछली शादी के बारे में कभी नहीं बताया था। वह बेचारी बच्ची ऑशविट्ज़ में टाइफस से मर गई थी, और सेबेस्टियन ने उससे मुश्किल से ही बात की थी। उसके मन में, पूरा रिश्ता—जल्दबाजी में हुई शादी, बुदबुदाते हुए वचन, उसकी दादी की अंगूठी—किसी और की गलती थी, और वह उसे याद नहीं करना चाहता था। वह फैनी को भी परेशान नहीं करना चाहता था।

तो उसने दयालुतावश उसे धोखा दिया, या कम से कम उसने खुद को यही बताया। फैनी ने भी अपने तरीके से यही किया। सेबेस्टियन की अपने भाई से ईर्ष्या को जानते हुए, उसने शादी के दौरान एक बार भी यह ज़िक्र नहीं किया कि उसने निको को डेन्यूब नदी के किनारे फिर से देखा था, या यह कि उसे विश्वास था कि निको ने उसकी जान बचाई थी।

* * *

जब सेबेस्टियन ने आखिरकार अपनी पत्नी को वह पत्र दिखाया, तो वह आश्चर्यचकित रह गई।

“तुम उस आदमी से संपर्क क्यों करोगे?” उसने पूछा।

वह जो कर रहा है वह महत्वपूर्ण है।

“तो उसे करने दो। ग्रीस में हमारी भी एक जिंदगी है।”

लेकिन आपने उसकी बात पढ़ ली। मेरी जानकारी आपके काम आ सकती है।

"क्या सहायता करूं?"

"उन बदमाशों को ढूंढने में उसकी मदद करो।"

और क्या करें?

“इन्हें फांसी पर लटका दो। इन्हें तब तक लटकाए रखो जब तक ये सड़ न जाएं!”

फैनी ने मुंह फेर लिया। "और हत्याएं," उसने बुदबुदाते हुए कहा।

“यह हत्या नहीं है। यह न्याय है। मेरे माता-पिता, मेरे दादा-दादी, मेरी बहनों के लिए न्याय। तुम्हारे पिता के लिए न्याय, फैनी! क्या तुम यह नहीं चाहती?”

फैनी ने आंसू पोंछे। "क्या मैं उसे वापस पा सकूंगी?"
"क्या?"
"अगर आप इन नाजियों को ढूंढ लेते हैं, तो क्या मुझे मेरे पिता वापस मिल जाएंगे?"
सेबेस्टियन ने तेवर चढ़ाए। "बात वो नहीं है।"
"यह मेरे लिए है," उसने फुसफुसाते हुए कहा।
मैं वियना जाना चाहता हूँ।
फैनी ने पलकें झपकाईं। "और टिया और मुझे छोड़कर चले जाओगे?"
“बिल्कुल नहीं। मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूंगा।” उसने उसका हाथ पकड़ लिया। “मैं चाहता हूं कि हम सब वहां जाएं। हम वहां बस सकते हैं। मैं इस आदमी के लिए काम कर सकता हूं। मुझे पता है।”
फैनी ने अपना सिर हिलाया, पहले धीरे-धीरे, फिर तेजी से, हिंसक रूप से, मानो उसे अपने लिए कुछ भयानक आता हुआ दिखाई दे रहा हो।
“ऑस्ट्रिया? नहीं, सेबेस्टियन, नहीं! मैं एक बार ऑस्ट्रिया से भाग गया था! नहीं, कृपया, नहीं!”
आजकल हालात अलग हैं।
“नहीं! ये वो जगह है जहाँ वे सब रहते हैं! ये वो जगह है जहाँ से वे आए हैं!”
“फैनी। मुझे यह करना ही होगा।”
“क्यों?” वह अब सिसक रही थी। “तुम इसे पीछे क्यों नहीं छोड़ सकते?”
“क्योंकि मैं ऐसा नहीं कर सकता!” वह चिल्लाया। “क्योंकि मैं इसे हर रात देखता हूँ! क्योंकि लोगों को अपने किए की सज़ा भुगतनी ही पड़ेगी!”
फैनी ने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं। उसे दूसरे कमरे से अपनी बेटी के रोने की आवाज़ सुनाई दी। उसके कंधे झुक गए। जब उसने दोबारा बोलना शुरू किया, तो उसकी आवाज़ काँप रही थी।
क्या यह आपके भाई के बारे में है?
"क्या?"
“क्या यह निको के बारे में है? क्या तुम बदला लेना चाहते हो?”
“बेवकूफी भरी बातें करना बंद करो। मैं इस आदमी की मदद करना चाहता हूँ ताकि वह नाजियों को ढूंढ सके और उन्हें उनकी करनी का फल दे सके, बस इतना ही! और मैं यह करके रहूँगा!”

उसने उसे घूरकर देखा, उसका जबड़ा कसकर बंद था। लेकिन उसे नज़रें हटानी पड़ीं क्योंकि, और मुझे पता है, वह सही कह रही थी। हाँ, उसके मन का एक बड़ा हिस्सा चाहता था कि उडो ग्राफ को पकड़ा जाए, दोषी ठहराया जाए और हज़ार बार फांसी दी जाए।

लेकिन उसके मन का एक हिस्सा यह भी चाहता था कि वियना में बैठा वह आदमी किसी और का पता लगाए, एक खास युवा नाज़ी सहायक जिसका नाम निको क्रिस्पिस था।

और उसे न्याय के कटघरे में लाओ।

उडो एक मनोरंजन पार्क घूमने जाता है

मेरे शत्रु का शत्रु मेरा मित्र होता है। यह कहावत सदियों पुरानी है। लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, यह इतनी तेज़ी से घटित हुई कि कुछ ही लोगों को एहसास हुआ कि क्या हो रहा है।

उच्च पदस्थ नाज़ी अधिकारी लंबे समय से अमेरिकी सेना के निशाने पर थे। लेकिन जैसे-जैसे नाज़ी साम्राज्य का पतन शुरू हुआ, अमेरिका ने एक नए दुश्मन पर ध्यान केंद्रित किया। इससे पहले कि 'वुल्फ' ने साइनाइड का कैप्सूल निगलकर खुद को गोली मार ली और आठ दिन बाद उसके देश ने आत्मसमर्पण कर दिया, अमेरिकी खुफिया एजेंटों ने चुपचाप अपनी रणनीति में बदलाव कर दिया था। जर्मनी का अस्तित्व समाप्त हो चुका था। सोवियत संघ अगला बड़ा खतरा था। और रूसियों को नाज़ियों से ज़्यादा कोई नहीं जानता था, उनसे नफ़रत नहीं करता था और न ही उनके खिलाफ़ इतनी ज़ोरदार लड़ाई लड़ता था।

इसलिए जब युद्ध समाप्त हुआ, और गुप्त मार्गों के माध्यम से हजारों एसएस सदस्यों को भागने का मौका मिला, तो उनमें से कई को गुप्त रूप से संयुक्त राज्य सरकार के लिए काम करने के लिए आमंत्रित किया गया, जो उन्हें नए नाम, नई नौकरियां, नए घर और नई सुरक्षा प्रदान करेगी, बशर्ते वे अपने पुराने रूसी दुश्मन को हराने में मदद करें।

इस तरह की भर्ती की जानकारी अमेरिकी जनता के साथ कभी साझा नहीं की गई, और न ही कई दशकों तक की गई। इसमें आपको आश्चर्य नहीं होना चाहिए। झूठ के मामले में सरकारें किसी से भी अधिक समय तक टिक सकती हैं।

उडो ग्राफ, जो अटलांटिक महासागर पार करके एक धीमी गति से चलने वाले जहाज

से आए थे, एक साल से ब्यूनस आयर्स के एक अपार्टमेंट में रह रहे थे। उनका एक फर्जी नाम था और वे एक कसाई की दुकान में काम करते थे। उन्होंने काम चलाने लायक स्पेनिश सीख ली थी। उन्होंने खुद से कहा, यह सब अस्थायी है, सत्ता में वापसी की एक लंबी, सोची-समझी योजना का हिस्सा है। उन्होंने अपनी आवाज धीमी रखी और चारों ओर कान लगाए रखे।

1947 की शुरुआत तक, उडो को अपने से पाँच मील के दायरे में रहने वाले कम से कम तीन अन्य विस्थापित जर्मनों के बारे में पता चल गया था; ये सभी एसएस में अधिकारी रह चुके थे। वे सप्ताहांत में छुपकर मिलते थे। वे अपने साथी नाज़ियों के बारे में अफवाहें साझा करते थे जिन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका में भर्ती किया गया था। उडो ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह ऐसे अवसर का स्वागत करेगा।

एक शनिवार को, जब उडो वील कटलेट पका रहा था, तभी उसने अपने अपार्टमेंट के दरवाजे पर दस्तक सुनी। दालान से एक स्थिर, धीमी और एकदम साफ जर्मन आवाज सुनाई दी:

“महामहिम ग्राफ, कृपया मुझे अंदर आने दीजिए। यह सुरक्षित है। मैं एक प्रस्ताव लेकर आया हूँ। मुझे लगता है कि आप इसे सुनना चाहेंगे।”

उडो ने कड़ाही को आँच से हटाया। वह दरवाजे की ओर बढ़ा। पास ही एक हुक पर टंगे कोट की जेब में उसने पिस्तौल रखी हुई थी। अब उसने अपना हाथ उस पिस्तौल पर रखा।

उन्होंने कहा, "यह प्रस्ताव कहां से आया है?"

"क्या आप पहले यह जानना नहीं चाहते कि यह क्या है?"

“यह कहाँ से आया है?” उडो ने दोहराया।

“वाशिंगटन, डी.सी.,” उस आदमी ने कहा। “यह तो—”

उडो ने दरवाजा खोला। उसने अपना कोट उठाया।

“मुझे पता है वो कहाँ है,” उसने अजनबी से कहा। “चलो चलते हैं।”

* * *

छह महीने बाद, उडो ग्राफ मैरीलैंड के उपनगरीय इलाके में एक प्रयोगशाला में जॉर्ज मेक्लेन के नए नाम से काम कर रहा था, जिसके दस्तावेज़ों से पता चलता था कि वह बेल्जियम का अप्रवासी था। उसे भर्ती करने वाले अमेरिकियों को उडो की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि के बारे में पता चल गया था और उन्होंने मान लिया था कि उसने एसएस में

इसका इस्तेमाल किया होगा। वे रूसी सेना के बारे में उसके ज्ञान को जानने के लिए उत्सुक थे। उडो, जो मौका मिलते ही मुझे नीचा दिखाने में माहिर था, ने इस तरह के ज्ञान के बारे में बेधड़क झूठ बोला, यहाँ तक कि उसने यह दावा भी किया कि उसने युद्ध का अधिकांश समय जासूसी और हथियार निर्माण पर काम करते हुए बिताया। वह जितनी बार कम्युनिस्ट शब्द का इस्तेमाल करता, अमेरिकी उसकी बातों पर उतना ही विश्वास करने लगते।

“और उन रिपोर्टों का क्या कहना है जिनमें कहा गया है कि आप ऑशविट्ज़ में थे?” लकड़ी के पैनल वाले एक दफ्तर में साक्षात्कार के दौरान एक अमेरिकी एजेंट ने उनसे पूछा। गठीले शरीर और छोटे बालों वाला वह एजेंट धाराप्रवाह जर्मन बोलता था। उडो ने उसके सवालों का जवाब सावधानीपूर्वक दिया।

“ऑशविट्ज़? हाँ, मैं वहाँ गया था।”

“आप वहां काम नहीं करते थे?”

"हरगिज नहीं।"

“आपकी यात्राओं का उद्देश्य क्या था?”

उडो रुक गया।

"आपने अपना नाम क्या बताया था, अधिकारी?"

मैं कोई अधिकारी नहीं हूँ। मैं सिर्फ एक एजेंट हूँ।

"माफ़ कीजिए। आपकी जर्मन भाषा बहुत अच्छी है। मैंने आपकी इतनी कुशलता देखकर मान लिया था कि आप मुझसे श्रेष्ठ हैं।"

एजेंट अपनी कुर्सी पर पीछे की ओर झुक गया और बनावटी विनम्रता से मुस्कुराया। उडो ने इस बात पर गौर किया। उसने मन ही मन सोचा, जो व्यक्ति तारीफें पसंद करता है, उसे सुधारा जा सकता है।

“बेन कार्टर,” एजेंट ने कहा। “यही मेरा नाम है। मैंने अपनी माँ से जर्मन सीखी है। उनका पालन-पोषण डसेलडोर्फ में हुआ था।”

"एजेंट कार्टर, आपको यह समझना होगा कि ऑशविट्ज़ सिर्फ एक शिविर से कहीं अधिक था। इसमें कई कारखाने थे जो हमारे युद्ध प्रयासों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थे। हवाई हमले की स्थिति में योजनाओं पर चर्चा करने के लिए मैंने उन कारखानों का दौरा किया था।"

उन्होंने आगे कहा, "रूसियों द्वारा।"

उस आदमी की आंखें चौड़ी हो गईं।
"और ऑशविट्ज़ में हुए अत्याचारों के बारे में आप क्या जानते हैं?"
“अत्याचार?”
“गैस चैंबर? फाँसी की सजाएँ? और वे असंख्य यहूदी जिनकी वहाँ हत्या की गई थी?”
उडो ने भयभीत दिखने की कोशिश की। “मुझे इन आरोपों के बारे में युद्ध के बाद ही पता चला। मैं अपनी रक्षा पर ध्यान केंद्रित कर रहा था। ज़ाहिर है, जो कुछ हुआ होगा उसके बारे में पढ़कर मैं स्तब्ध रह गया।”
उसने देखा कि कार्टर अपना पेन पकड़े हुए उडो की आंखों को ध्यान से देख रहा था।
“एक जर्मन होने के नाते, स्वाभाविक रूप से, मैं चाहता था कि मेरा देश विजयी हो,” उडो ने आगे कहा। “लेकिन एक इंसान होने के नाते, मैं यहूदी कैदियों के खिलाफ ऐसी क्रूरता को बर्दाश्त नहीं कर सकता। या किसी और के खिलाफ भी।”
जब एजेंट ने लिखना शुरू किया, तो उडो लिखता रहा, उसके शब्द और विचार विपरीत दिशाओं में दौड़ रहे थे।
"कुछ भयानक कृत्य किए गए होंगे।"
हम राजा थे। और हम फिर से राजा बनेंगे।
“यदि ऐसा है, तो ऐसी अमानवीयता उचित नहीं है।”
जब तक कि आपके शिकार अमानवीय न हों।
"मुझे इस बात का अफसोस है कि दूसरों ने हमारे राष्ट्र के नाम पर क्या किया होगा।"
मुझे कोई अफसोस नहीं है।
एजेंट कार्टर ने अपने नोट्स पूरे करने के बाद फोल्डर बंद कर दिया। और जब उसने झुककर कहा, "चलिए रूसी मिसाइलों के बारे में बात करते हैं," तो उडो समझ गया कि उसके सारे पाप धुल गए हैं। पादरी गलत था। उसे भगवान की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं थी।
* * *
कुछ ही समय में, उडो ग्राफ, उर्फ जॉर्ज मेक्लेन, अमेरिकी सरकार के लिए एक अनौपचारिक जासूस बन गया। उसके पास अपना टाउन हाउस, अपना फोन, गैरेज में कार और पिछवाड़े में बारबेक्यू की सुविधा थी। जैसे-जैसे साल बीतते गए और शीत युद्ध तेज होता गया, उसने प्रयोगशाला में मिसाइल विकास पर काम किया। लेकिन

उसे सबसे ज्यादा उपयोगी प्रयोगशाला के बाहर, कम्युनिस्टों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने में माना गया। उसका पुराना देश, जर्मनी, दो भागों में बँट गया था, एक पक्ष पश्चिम के प्रति वफादार था, दूसरा सोवियत संघ के प्रति। एजेंसी चाहती थी कि उडो अपने पुराने संपर्कों से खुफिया जानकारी जुटाए। उन्होंने उसके लिए जर्मन वायरटैप सुनने और इंटरसेप्ट किए गए संदेशों को पढ़ने की व्यवस्था की। संदेह इतना गहरा था कि उडो अपनी साझा की गई अधिकांश जानकारी मनगढ़ंत बना लेता था, और कोई भी इसे गलत साबित नहीं कर सका। वह कभी-कभी पूरी तरह से अपनी कल्पना से ही काल्पनिक दुश्मन गढ़ लेता था।

1950 के दशक में, यह उनके वेतन को जायज़ ठहराने के लिए काफी था। उडो की अंग्रेज़ी में बहुत सुधार हुआ। वह अमेरिकी जीवन में घुलमिल गए। उन्होंने अपने घर के सामने का लॉन काटा। वह क्रिसमस पार्टियों में शामिल हुए। एक बार कंपनी की सैर पर, वह एक मनोरंजन पार्क गए और अपने सहकर्मियों के साथ रोलर कोस्टर की सवारी की।

उसकी मुलाकात पामेला नाम की एक महिला से हुई जो प्रयोगशाला में टेलीफोन का काम करती थी। वह कद में छोटी और खूबसूरत थी, उसके सुनहरे घुंघराले बाल थे और उसे सजावट का शौक था और वह फिल्टर वाली सिगरेट पीती थी। जिस रात उसने उडो के लिए बर्गर बनाए, उसी रात उडो ने फैसला कर लिया कि वह एक बेहतरीन अमेरिकी साथी साबित होगी। उडो ने परिवार बसाने के लिए एक आदर्श जर्मन पत्नी ढूंढने का अपना सपना छोड़ दिया था। उसे अपने इस छल में एक साथी की जरूरत थी। पामेला की आदतें आम अमेरिकियों जैसी थीं—वह धारावाहिक देखती थी, च्युइंग गम चबाती थी और उडो की नौकरी में रुतबे, खासकर उसके वेतन से बेहद प्रभावित थी। जब उसने शादी का प्रस्ताव रखा, तो उसने पहले पूछा कि क्या उसे अपनी कार मिल सकती है। जब उडो ने हां कहा, तो उसने भी हां कह दी।

उन्होंने चर्च में शादी की। वे दोस्तों के साथ टेनिस खेलते थे। वे नियमित रूप से शारीरिक संबंध बनाते थे। लेकिन उडो के लिए, औरत सिर्फ साथी थी, इससे ज्यादा कुछ नहीं। वह अमेरिकियों को अनुशासनहीन मानता था। वे बहुत ज्यादा मिठाई खाते थे। वे बहुत ज्यादा टीवी देखते थे। जब उनका देश वियतनाम युद्ध में गया, तो उन्होंने विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने तो अपना झंडा भी जला दिया!

इस तरह की बेवफाई उडो को बेहद घृणित लगी। लेकिन इससे उसे यह सोचने पर

मजबूर होना पड़ा कि इस तथाकथित शक्तिशाली राष्ट्र को सही शत्रु द्वारा पराजित किया जा सकता है।

इससे उसे उम्मीद मिली।

जिस बात ने उन्हें चिंतित किया, वह अखबार में छपी एक खबर थी।

वियना में एक यहूदी शिविरों से बच निकले व्यक्ति ने पूर्व नाजियों को बेनकाब करने के लिए एक पूरा संगठन बनाया था। यह सनकी यहूदी विदेशी सरकारों को नामों की सूचियाँ जारी कर रहा था। कई बार तो इन लोगों पर मुकदमा भी चलाया गया!

उडो सोचता था कि कितने लोगों को पता होगा कि वह अमेरिका में है। उसे शक था कि कोई उसे ढूंढने के लिए समुद्र पार करके आएगा। लेकिन 1960 में, वुल्फ के प्रमुख योजनाकारों में से एक, एडॉल्फ आइचमैन नाम के एक व्यक्ति को अर्जेंटीना में पकड़ा गया, उसे नशीली दवा दी गई, इज़राइल लाया गया, दोषी ठहराया गया और फांसी दे दी गई। उडो को एहसास हुआ कि वह सुरक्षित नहीं है। उनमें से कोई भी सुरक्षित नहीं था। उसे वियना में इस यहूदी को रोकना ही था।

इसके लिए उसे झूठी पहचान से कहीं अधिक की आवश्यकता होगी।

उसे शक्ति की आवश्यकता होगी।

* * *

यह अवसर जल्द ही आ गया।

एजेंट बेन कार्टर, जिन्होंने वर्षों तक उडो के साथ काम किया था, 1956 में एजेंसी छोड़कर राजनीति में चले गए, उन्होंने मैरीलैंड में एक राज्य चुनाव जीता, फिर दूसरा, फिर तीसरा, और अंततः 1964 में सीनेट सीट के लिए चुनाव लड़ा।

उडो और कार्टर एक-दूसरे के संपर्क में थे। उडो को लगा कि एक निर्वाचित अधिकारी का समर्थन उनके लिए अच्छा रहेगा, और दोनों अपनी पत्नियों से दूर एक खास बार में साथ में ब्रांडी पीने का आनंद लेते थे। वर्षों से, कार्टर ने नाज़ी पार्टी, उनके संगठन, उनके शुद्ध आदर्शों और शुद्ध वंश के प्रति समर्पण के लिए एक विशेष प्रशंसा व्यक्त की थी।

“मुझे गलत मत समझना,” उसने एक रात उडो से कहा था, “तुम यूं ही लोगों पर गैस का इस्तेमाल नहीं कर सकते। लेकिन किसी भी देश को अवांछित लोगों से निपटने का अधिकार होता है, है ना?”

उडो, कार्टर का मनोरंजन करता था। वह अक्सर उसकी तारीफ करता था। वह जानता

था कि एक दिन उसे इस आदमी की जरूरत पड़ सकती है।
कार्टर के सीनेट चुनाव अभियान के दौरान उन्हें मौका मिला। एक रात उनकी और उडो की मुलाकात एक बार में हुई। कार्टर बहुत परेशान थे और उन्होंने खूब शराब पी रखी थी। कुछ पूछने पर उन्होंने उडो को बताया कि उनका चुनाव अभियान खतरे में है, "सब कुछ बिखरने वाला है," और यह सब उस महिला की वजह से है, जिसके साथ, जैसा कि कार्टर ने कहा, "मुझे कभी संबंध नहीं रखना चाहिए था।" कई सालों से वह महिला देश में हीरे की तस्करी कर रही थी और उन्हें भारी मुनाफे पर बेच रही थी। कार्टर ने अपने सरकारी पद का इस्तेमाल करके उसके लिए फर्जी कागजात हासिल किए थे, जिसके बदले में उन्हें आधी रकम मिलती थी। लेकिन अब जब वह राष्ट्रीय चुनाव लड़ रहे थे, तो उन्होंने उससे कहा कि उन्हें यह सब बंद करना होगा, यह बहुत जोखिम भरा था। इससे वह महिला क्रोधित हो गई। उसने उन्हें बेनकाब करने की धमकी दी।
"एक बार मेरे विरोधियों को इसकी जानकारी मिल गई," कार्टर ने कराहते हुए कहा, "तो मेरा खेल खत्म हो जाएगा।"
उसने अपना सिर हाथों में थाम लिया। उडो ने अपना पेय एक ही घूंट में पी लिया और गिलास को ज़ोर से पटक दिया। वह कार्टर की इस कमजोरी से शर्मिंदा था। एक औरत?
“मुझे उसका नाम बताओ,” उडो ने कहा।
"क्या?"
उसका नाम और वह कहाँ रहती है।
"यह कोई जासूसी वाली बात नहीं है।"
“नहीं,” उडो ने कहा। “यह आसान है।”
एक हफ्ते बाद, उस महिला का कई बार पीछा करने और यह जानने के बाद कि वह अपने घर के पास एक पुल पर रात में टहलने जाती है, उडो ने अपनी कार उसी पुल पर रोक दी, एक जैक निकाला और टायर पर काम करने का नाटक किया।
जब वह महिला अकेली प्रकट हुई, तो उडो घुटनों के बल बैठकर उसकी ओर सिर हिलाकर अभिवादन किया।
उन्होंने कहा, "आपके रास्ते में आने के लिए क्षमा करें।"
“कोई परेशानी?” उसने कहा।

"फ्लैट।"
उसने दोनों ओर नजर डाली, यह सुनिश्चित करने के लिए कि आसपास कोई नहीं है।
क्या आप मेरी एक मदद करेंगे? क्या आप इसे एक पल के लिए पकड़ कर रखेंगे?
"ज़रूर।"
वह उसे एक रिंच देने के लिए उठा, और जैसे ही उसने रिंच ली, उसने अपनी जैकेट से एक रिवॉल्वर निकाली और उसके माथे पर एक गोली मार दी। साइलेंसर की वजह से गोली की हल्की सी झनझनाहट ही सुनाई दी। कुछ ही क्षणों बाद, उसने उसके शरीर को पुल से नीचे फेंक दिया और नीचे बहती नदी में गिरने की आवाज़ सुनी। उसने रिंच और जैक को कार की डिक्की में रखा, गाड़ी चलाकर चला गया और कार को पहले से तय कबाड़खाने में छोड़ दिया, जहाँ अगले दिन दोपहर से पहले उसे कुचल दिया गया।
कार्टर ने भारी बहुमत से चुनाव जीता। और जॉर्ज मेक्लेन नाम के व्यक्ति को उनके स्टाफ में स्थायी पद मिल गया। हत्या करने की कला में सहजता देखकर उडो ग्राफ खुश हुआ और उसने अपने लिए एक गिलास शराब बनाई। अब वह वास्तविक सत्ता के एक कदम और करीब था, ऐसी सत्ता जो वियना में उस यहूदी को खत्म कर सकती थी और नाज़ी सपने को साकार कर सकती थी।

ईर्ष्या का पात्र सनकी

मुझे इस दुनिया में एक उलझन महसूस होती है। अगर लोग सच्चाई को इतना महत्व देते हैं, तो वे झूठ बोलने वालों से इतने मोहित क्यों होते हैं?
आपके साहित्य में सदियों से यही विषय रहा है। मोलियर का टार्टुफ़ शुरू से ही धोखेबाज है। द ग्रेट गैट्सबी का मुख्य पात्र भी ऐसा ही है।
आजकल की फिल्में झूठ बोलने वालों और धोखेबाजों का महिमामंडन करती हैं। ऑल अबाउट ईव, द गॉडफादर। शायद यही वजह है कि निको फिल्मों की ओर आकर्षित हुआ। कुछ भी वास्तविक नहीं है। सब कुछ काल्पनिक है।
एक दोपहर, कैटलिन कराडी के साथ समय बिताते हुए, निको ने उनसे पूछा कि उन्होंने अभिनेत्री बनना क्यों चुना।
“क्योंकि मैं गायब हो सकती हूँ,” उसने कहा। “मैं किसी और के अंदर छिप सकती हूँ। मैं उनके आँसू बहा सकती हूँ, उनकी गालियाँ चिल्ला सकती हूँ, उनके प्यार को महसूस कर सकती हूँ, लेकिन जब दिन खत्म हो जाता है, तो इनमें से कुछ भी मुझे छू

नहीं पाता।”

मुझे बिना दर्द के अनुभव मिल जाता है।

बिना दर्द के अनुभव। यह विचार निको को बहुत लुभावना लगा। कैलिफोर्निया पहुँचते ही उसने तुरंत पूछा कि वह फिल्म उद्योग में कैसे प्रवेश कर सकता है। उसे बताया गया कि सबसे तेज़ रास्ता एक एक्स्ट्रा कलाकार के रूप में काम ढूंढना है। यह सेट पर जाने और प्रक्रिया को देखने का एक आसान तरीका था।

उन दिनों युद्ध पर कई फिल्में बन रही थीं। ऐसी ही एक परियोजना में, निको को एक दिन के लिए युद्ध के दृश्य में पृष्ठभूमि सैनिक की भूमिका निभाने के लिए काम पर रखा गया था। वह पूरी तरह से वेशभूषा में था जब एक अभिनेता धातु की चादर के एक टुकड़े से टकराकर गिर गया, जिससे उसके पैर में गहरा घाव हो गया और उसे चिकित्सा सहायता के लिए ले जाया गया।

“तुम!” किसी ने निको पर चिल्लाते हुए कहा। “गोरे लड़के! क्या तुम एक लाइन ले सकते हो?”

निको ने प्रोडक्शन के दौरान कभी एक शब्द भी नहीं बोला था, लेकिन उसने तुरंत जवाब दिया, "हाँ, बिल्कुल।" उसे एक गिरे हुए शरीर के पास दौड़कर जाने, उसे पलटने, ऊपर देखने और चिल्लाने के लिए कहा गया, "वह मर गया!" फिर निर्देशक के "कट!" चिल्लाने का इंतज़ार करना था।

उन्होंने एक बार इसका अभ्यास किया, और निको ने दूसरे अभिनेता के शरीर को उठाया, जिसकी आँखें बंद थीं। जब निर्देशक ने चिल्लाकर कहा, "चलो इसे सेट करते हैं!" तो अभिनेता ने अपनी आँखें खोलीं और कहा, "अरे, दूसरा आदमी कहाँ गया?"

“उसे चोट लग गई,” निको ने कहा।

“ओह। ये तो बहुत दुख की बात है। अच्छा आदमी था।”

"हाँ।"

मैं चार्ली निकोल हूं।

मैं... रिची हूँ।

“रिची क्या?”

“रिची जेम्स।”

यह एक ऐसा नाम था जिसे उसने मौके पर ही गढ़ा था।

“तो, रिची, तुमने बहुत सारी फिल्में की हैं?”

"ओह हां।"
"जो लोग?"
“बहुत कुछ। अरे। हमें इस दृश्य के लिए तैयारी करनी चाहिए, है ना?”
“तैयारी क्या करनी है? मैं यहीं लेटा रहूंगा। तुम मुझे ढूंढ लेना। कम से कम तुम्हें एक लाइन तो मिल जाएगी।”
“हाँ।” उसने अपनी पैंट के पाँव को दबाया। “ये वर्दी बहुत कड़क हैं।”
"असली चीज़ से ज़्यादा बुरा नहीं है।"
"मेरे ख़याल से।"
“रिची?”
"हाँ?"
उस आदमी ने आंखें सिकोड़ीं।
"आप सेवा करें?"
"सेवा करना?"
“युद्ध।”
“ओह। हाँ। हाँ। मैं युद्ध में था।”
“मैं भी। दक्षिण प्रशांत। ग्वाडलकैनाल। यह उससे कहीं बेहतर है, है ना?”
"ऐसा होता है।"
"कहाँ थे?"
“यूरोप।”
"कहाँ?"
"कई जगह।"
"अरे हां?"
"हाँ।"
“रिची?”
"हाँ?"
उस आदमी ने सूंघा। "क्या तुम किसी को मारते हो?"
निको ने पलकें झपकाईं। एक पल के लिए उसने ट्रेन के प्लेटफार्म के बारे में सोचा। लोग उसे घेर लेते थे, दिन-ब-दिन, जब वह भीड़ में से होकर गुजरता था और उनसे झूठ बोलता था।

उन्होंने कहा, "सिर्फ नाज़ी।"
“नाज़ी?”
निको ने अपना सिर घुमाया। "हाँ। नाज़ी। मैंने उनमें से बहुतों को मारा था।"
“वाह, रिची!” उसने धूल में बैठे कुछ अन्य अभिनेताओं को चिल्लाकर कहा। “अरे दोस्तों! हमारे पास एक सच्चा युद्ध नायक है! इसने कई नाजियों को मार गिराया!”
बाकी लोगों ने कंधे उचका दिए। उनमें से कुछ ने ताली बजाई।
“क्या हम तैयार हैं?” निर्देशक ने गरजते हुए पूछा।
उन्होंने वह दृश्य किया। निको चिल्लाया, "वह चला गया!" और निर्देशक संतुष्ट होकर दूसरे सेटअप की ओर बढ़ गया। एक आदमी निको के पास आया और उसे बताया कि दिन के अंत में उसे एक डायलॉग बोलने के बदले पैसे कहाँ मिलेंगे।
“धन्यवाद,” निको ने धीरे से कहा। लेकिन जैसे ही बाकी लोग चले गए, वह सीधे पार्किंग लॉट की ओर चला गया, एक बस में चढ़ा और फिर कभी किसी फिल्म सेट पर वापस नहीं लौटा।
इसके बजाय, निको ने फिल्मों में निवेश करके सफलता हासिल की।
एक स्विमिंग क्लब में उनकी मुलाकात रॉबर्ट मॉरिस नाम के एक युवा निर्देशक से हुई। रॉबर्ट के पास राजा सोलोमन पर एक फिल्म बनाने का विचार था। जब रॉबर्ट ने फिल्म बनाने के लिए पैसे की कमी बताई, तो निको ने कहा, "मैं इसमें आपकी मदद कर सकता हूँ।"
वे दोनों एक स्टूडियो में गए, जिसने जोखिम साझा करने वाले एक साझेदार के प्रोत्साहन से इस प्रोजेक्ट में निवेश किया। फिल्म बेहद लोकप्रिय हुई और निको की लागत कई गुना बढ़ गई। जल्द ही स्टूडियो में उनका अपना कार्यालय हो गया, जहाँ वे लोगों के फिल्म संबंधी विचारों को सुनते और यह तय करते कि किन विचारों पर काम करना है। उनकी फिल्मों की सफलता बढ़ती गई और स्टूडियो की संपत्ति भी बढ़ती गई। लोकप्रिय विचारों को परखने की उनकी कुशलता ने उनके उद्योग जगत के साथियों को बहुत प्रभावित किया, लेकिन मेरे लिए यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। एक अच्छा झूठा जानता है कि लोग क्या सुनना चाहते हैं; तो वह यह क्यों नहीं जानेगा कि लोग क्या देखना चाहते हैं?
निको का प्रभाव तेजी से बढ़ने लगा। लोग उसकी सफलता दर के बारे में कानाफूसी करने लगे। उससे मिलने के लिए बेताब रहने लगे। वह नाथन गुइडिली नाम का

इस्तेमाल कर रहा था, जो उसके कार्यालय में टंगी डिप्लोमा पर लिखा था। उसने लोगों से उसे नेट कहकर बुलाने को कहा।

1950 का दशक बीत गया, फिल्में अधिक लोकप्रिय, अधिक जटिल और अधिक खर्चीली होती गईं। निको स्टूडियो के लिए और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गए। उन्हें अच्छा खासा वेतन मिलता था और उन्हें अपनी मर्जी से कार्यक्रम तय करने की छूट थी, जिसके चलते वे अक्सर कई दिनों तक स्टूडियो से गायब हो जाते थे।

बाहर से देखने पर यह एक बेहद आकर्षक जीवन प्रतीत होता था। एक अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी। एक शानदार व्यवसाय। एक फिल्म फैक्ट्री में एक निजी कार्यालय, जहाँ किसी के सबसे बड़े सपने पर्दे की वास्तविकता में बदल जाते थे।

लेकिन दिन के उजाले में बोले गए झूठ रात के अंधेरे में अकेलापन छोड़ देते हैं। निको की नींद डरावनी थी। शायद ही कोई रात ऐसी गुज़रती थी जब युद्ध की कोई याद उसे हांफते हुए न जगा दे। वह नाज़ियों को लाशों को डेन्यूब नदी में फेंकते देखता था। वह ऑशविट्ज़ के द्वार देखता था। वह कीचड़ में पड़े शवों के ढेर देखता था। लेकिन ज़्यादातर वह उन हज़ारों यहूदियों को देखता था जिनसे उसने ट्रेन के प्लेटफार्म पर झूठ बोला था, उनके पीले चेहरे, उनकी भरोसेमंद आँखें, और जिस आज्ञाकारी ढंग से वे डिब्बों में अपनी मौत की ओर बढ़े, निको के यह कहने के बाद कि सब ठीक हो जाएगा।

कभी-कभी उसके माता-पिता के भूत उसके सपनों में आते थे, और हमेशा एक ही सवाल पूछते थे: "क्यों?" ऐसे मौकों पर, निको इतना बेचैन हो जाता था कि उसे अपना घर छोड़ना पड़ता था और वह घंटों अपने पड़ोस में घूमता रहता था जब तक कि उसकी सांसें सामान्य नहीं हो जातीं और उसका तनाव कम नहीं हो जाता।

नतीजतन, वह सुबह काम पर बहुत कम आता था। वह नींद की गोलियों पर और भी ज्यादा निर्भर होता जा रहा था, और कभी-कभी दोपहर बाद तक नहीं आता था। उसके पास हमेशा कोई न कोई बहाना होता था। गाड़ी खराब हो गई। डॉक्टर से अपॉइंटमेंट था। क्योंकि उसकी प्रतिभा बहुत कीमती थी, स्टूडियो उसके बहानों को बर्दाश्त कर लेता था।

आखिरकार, निको सिर्फ रात में ही मीटिंग करने लगे। उन्होंने अपने ऑफिस की लाइटें धीमी रखीं, क्योंकि उन्हें डर था कि आगंतुक उनके चेहरे पर दिख रही चिंता या उनके द्वारा ली जा रही गोलियों के असर को देख न लें। स्टूडियो में उन्हें सनकी के रूप में

जाना जाने लगा, लेकिन फिल्म जगत में, एक सफल व्यक्ति जितना अधिक सनकी व्यवहार करता था, उसके सहकर्मी उसकी सनक की उतनी ही सराहना करते थे। जल्द ही स्टूडियो के अन्य लोग भी रात में ही मीटिंग करने लगे।

1960 की गर्मियों में, स्टूडियो एक बेहद महंगी फिल्म, एक वेस्टर्न फिल्म का निर्माण कर रहा था, जिसे निको ने मंज़ूरी दी थी। प्रचार के लिए, स्टूडियो के मालिक रॉबर्ट यंग ने एक प्रमुख समाचार पत्र को साक्षात्कार दिया। उन्होंने सनकी नैट गुइडिली के बारे में जो कुछ भी जानते थे, वह साझा किया, और बाद में पता चला कि पत्रकार की असली दिलचस्पी इसी में थी। पत्रकार ने श्री गुइडिली के मूल के बारे में छानबीन शुरू की। उन्होंने लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में फोन किया और पता चला कि वहां इस नाम का कोई छात्र कभी नहीं था। उन्होंने यह जानकारी स्टूडियो के मालिक को दी, जिन्होंने अगली रात काम से निकलते समय निको से पूछताछ की।

“नेट, मुझे तुमसे एक सवाल पूछना है,” उसने कहा। “तुम्हारी दीवार पर डिप्लोमा तो लगा है। लेकिन क्या तुमने सच में कभी उस स्कूल में पढ़ाई की है?”

निको को अपनी त्वचा में झुनझुनी महसूस हुई। अमेरिका में यह पहली बार था जब उसके झूठ का पर्दाफाश हुआ था। उसका दिमाग तेज़ी से सोचने लगा। उन्हें कैसे पता चला? उन्हें और क्या-क्या पता है? उसने इंग्लैंड में अपनी कक्षाओं के बारे में सोचा, और यह भी कि उसने टॉमस गेर्गेल नाम से कितनी अच्छी पढ़ाई की थी। क्या उसने सच में कभी पढ़ाई की थी? बिल्कुल की थी।

“नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया,” उसने कहा। “मुझे खेद है। मुझे लगा कि इससे लोग प्रभावित होंगे।”

मालिक ने कंधे उचकाए और गहरी सांस छोड़ी। "खैर। मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे लगता है कि मुझे उस रिपोर्टर से बात नहीं करनी चाहिए थी। हम इसका ध्यान रखेंगे।"

"आपका क्या मतलब है?"

उसने निको के हाथ पर थप्पड़ मारा। "चिंता मत करो। तुम हमेशा विजेताओं को चुनते रहो। लेकिन अब और झूठ मत बोलना, ठीक है?"

निको ने उसे जाते हुए देखा। वह दिन-रात कहानी के प्रकाशित होने का इंतज़ार करता रहा। लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। वह वेस्टर्न फ़िल्म रिलीज़ हुई और ज़बरदस्त हिट रही। निको को बोनस मिला। तीन महीने बाद, उसने स्टूडियो छोड़ दिया और अपनी

खुद की कंपनी शुरू कर दी, जहाँ उसके कार्यालय का पिछला दरवाज़ा सीधे उसकी पार्किंग में खुलता था और उसे आते-जाते कोई नहीं देख पाता था।

हृदय और उसकी आकांक्षाएँ

आइए, यहाँ प्रेम के बारे में बात करते हैं। आप पूछ सकते हैं कि सत्य को इस विषय में क्या पता है? लेकिन मनुष्य प्रेम के सबसे शुद्ध रूप का वर्णन करने के लिए कौन सा शब्द चुनते हैं?

"सत्य।"

तो मेरी बात ध्यान से सुनो।

सदियों से इस बात पर बहस होती रही है कि सच्चे प्यार का क्या अर्थ है। कुछ लोग कहते हैं कि सच्चा प्यार वह है जब दूसरे की खुशी आपके लिए अपनी खुशी से ज्यादा मायने रखती है। वहीं कुछ अन्य लोग कहते हैं कि सच्चा प्यार वह है जब आप अपने साथी के बिना दुनिया की कल्पना भी नहीं कर सकते।

मेरे लिए सच्चा प्यार आसान है। यह उस तरह का प्यार है जिसमें आप खुद से झूठ नहीं बोलते।

फैनी, अगर सच कहूँ तो, उसने कभी सेबेस्टियन से सच्चा प्यार नहीं किया था। वह उसके पास पनाह लेने आई थी। उसने राहत पाने के लिए उसे गले लगाया था। जब वे सैलानिका में व्हाइट टॉवर के पास मिले, तो दोनों ज़िंदा थे, लेकिन उन्हें पता नहीं था कि क्यों। एक शादी ने उनके जीवित रहने को अर्थ दिया।

लेकिन त्रासदी ने उस विवाह को संभव बनाया, और मृत्यु उस समारोह का हिस्सा बन गई। उनका प्यार एक-दूसरे के लिए कम, बल्कि उनके आसपास मौजूद सभी भूतों के लिए ज़्यादा था। जैसे-जैसे साल बीतते गए, वे भूत फैनी से अलग-अलग तरह से फुसफुसाते रहे, सेबेस्टियन से अलग। फैनी के लिए तो बस उसके पिता थे, जो कहते थे, "अपनी ज़िंदगी जियो।" सेबेस्टियन के लिए तो बस उसके पिता थे, जिनकी तीन पीढ़ियाँ शिविरों में कत्ल कर दी गई थीं, और उसके दिमाग में चीख उठती थी, "हमारा बदला लो!"

इसलिए, अपनी पत्नी की आपत्तियों के बावजूद, सेबेस्टियन अंततः परिवार को वियना ले गया, जहाँ वह नाज़ी हंटर के साथ काम कर सकता था।

और फैनी ने उसे कभी माफ नहीं किया।

उसे ऑस्ट्रिया में रहना बिल्कुल पसंद नहीं था। उसे वहां की यादें बिल्कुल अच्छी नहीं

लगती थीं। उसे ठंड बिल्कुल पसंद नहीं थी। उसने जर्मन सीखने, पहाड़ों पर जाने या स्कीइंग सीखने से इनकार कर दिया। उसका सारा ध्यान टिया की परवरिश पर था, स्कूल के बाद उसके आसपास रहती, उसे उसकी यहूदी जड़ों की याद दिलाती रहती। टिया एक शर्मीली, बुद्धिमान किशोरी बनी, जो खूब पढ़ती थी और अपनी माँ की तरह, अपनी सुंदरता से काफी हद तक अनजान थी। वह अक्सर पूछती थी कि वे ग्रीस कब लौट सकते हैं, जहाँ गर्मी होती है और वह समुद्र में तैर सकती है।

सेबेस्टियन को रात में सुरक्षा गार्ड की नौकरी मिल गई, जिससे उसे दिन में काफी समय नाज़ी हंटर की मदद करने, सूचियों की समीक्षा करने, फोन करने, पत्र लिखने और जानकारी जुटाने के लिए मिल जाता था। एजेंसी में समान रूप से समर्पित कार्यकर्ताओं का एक छोटा समूह था, जिनमें से अधिकांश शिविरों से बच निकले थे। वे सिगरेट पीते थे और कॉफी पीते थे। उन्होंने दीवार पर भागे हुए नाज़ियों की तस्वीरें लगा रखी थीं और हर गिरफ्तारी या निर्वासन का जश्न मनाते थे। सेबेस्टियन इन लोगों के साथ काम करने के लिए अपनी पत्नी और बेटी के साथ कई बार खाना नहीं खा पाता था, और जब वह घर आता था, तो वह उनकी प्रगति के बारे में बात करना चाहता था, जिसे फैनी ने मना कर दिया।

"टिया के सामने नहीं," उसने कहा।

“हमारी बेटी को पता होना चाहिए कि उसके परिवार के साथ क्या हुआ, फैनी। उसे पता होना चाहिए कि उसके कोई दादा-दादी या चचेरे भाई-बहन क्यों नहीं हैं!”

“क्यों? ताकि ये बात उसे भी परेशान करे? तुम इसे क्यों नहीं भूल सकते? तुम बार-बार नाजियों के बारे में क्यों बात करते रहते हो? तुम्हें हमेशा अतीत में ही क्यों जाना पड़ता है?”

मैं यह उन सभी लोगों के लिए कर रहा हूं जिन्हें मैंने खो दिया है।

"आपके पास जो अभी भी हैं उनका क्या?"

यह बहस अलग-अलग रूपों में, महीने में कम से कम एक बार दोहराई जाती थी। उसे लगता था कि यही जीने का कारण है। उसे लगता था कि यही उनके रिश्ते को बर्बाद कर रहा है। दोनों कहते थे कि वे इस बारे में लड़ना नहीं चाहते, लेकिन समय के साथ, यही बहस उन दोनों के बीच एकमात्र साझा मुद्दा बन जाती थी।

जैसे-जैसे सेबेस्टियन एजेंसी में आगे बढ़ता गया, उसने विदेशी शहरों की यात्राएँ शुरू कर दीं, इस उम्मीद में कि वह सरकारों पर दबाव डालकर वहाँ रह रहे पूर्व एसएस

अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करवा सके। उसके मन में हमेशा उडो ग्राफ (जिसके बारे में उसने फैनी को बताया था) और निको (जिसके बारे में उसने किसी को नहीं बताया था) का ख्याल रहता था। हालाँकि उनके पाप बराबर नहीं थे, फिर भी वह उन दोनों को युद्ध अपराधी मानता था। वह उन दोनों को सज़ा दिलाना चाहता था।

जैसे-जैसे सेबेस्टियन इन यात्राओं पर जाने लगा, वह फैनी के दिल से और दूर होता चला गया, यहाँ तक कि एक दिन, जब उसकी ट्रेन लेट हो गई और वह अपनी बेटी के हाई स्कूल ग्रेजुएशन समारोह में शामिल नहीं हो पाया, तो वह पूरी तरह से उसके दिल से निकल गया।

जब टिया स्कूल के सभागार में रो रही थी, तो फैनी ने उसका हाथ थाम लिया। उसने उससे कहा कि यह टाला नहीं जा सकता था, चिंता मत करो, गुस्सा मत करो। वह अपनी बेटी को आइसक्रीम खिलाने ले गई और बाद में उसे शुभ रात्रि का चुंबन दिया। जब सेबेस्टियन आधी रात के बाद आखिरकार पहुंचा, तो फैनी चिल्लाई नहीं। उसने कोई हंगामा नहीं किया। उसने मुश्किल से ही कुछ कहा। प्यार की सच्चाई यही है कि जब वह फीका पड़ जाता है, तो आपको वास्तव में कोई फर्क नहीं पड़ता। आपको बिल्कुल भी फर्क नहीं पड़ता।

कुछ साल बाद, जब टिया इज़राइल के एक विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए चली गई, तो फैनी ने अपना सूटकेस खोला, अपने कपड़े पैक किए और सेबेस्टियन को बताया कि वह भी एक यात्रा पर जा रही है। वह शनिवार का दिन था, सब्त का दिन, जिस दिन धार्मिक यहूदी यात्रा नहीं करते। फैनी को इसकी परवाह नहीं थी। उसने अपने पति को दरवाजे पर बाहें मोड़े, माथे पर शिकन लिए खड़े देखा, जबकि वह अपना कोट बंद कर रही थी और अपना बैग उठा रही थी।

“तुम कब वापस आओगे?” उसने कहा।

“मैं आपको फोन करके बता दूंगी,” उसने कहा।

लेकिन वह पहले से ही जानती थी; वह वापस नहीं आएगी। और भीतर ही भीतर, क्योंकि सच्चा प्यार झूठ नहीं बोल सकता, वह भी यही जानता था।

फैनी का पहला पड़ाव हंगरी था।

लगभग पच्चीस वर्षों से वह सोचती रही कि गिज़ेला का क्या हुआ, जिसने युद्ध के दौरान उस पर इतनी दया दिखाई थी। जिस दिन एरो क्रॉस ने फैनी को पकड़ा, वह आखिरी दिन था जब उसने उस बेचारी को देखा था। सैनिकों ने कहा कि उसे राजद्रोह

के लिए मौत की सजा मिलेगी। लेकिन फैनी को निश्चित रूप से जानना था। उसने ज़हर से भरी माला के बारे में सोचा। उसने प्रार्थना की कि गिज़ेला को कभी भी उनका इस्तेमाल न करना पड़े।

वह वियना से बुडापेस्ट तक गई। वहाँ से उसने तीन ट्रेनें बदलकर उस पहाड़ी गाँव तक पहुँची जहाँ गिज़ेला रहती थी। फैनी को पुरानी सड़क पहचानने में लगभग पूरा दिन लग गया। बहुत कुछ बदल चुका था। वास्तुकला। स्ट्रीटलाइट्स। गिज़ेला के घर की जगह एक बड़ा, आधुनिक घर बन चुका था, और फैनी शायद उस घर को पूरी तरह से अनदेखा कर देती, अगर उसके पीछे ढलान पर बना मुर्गीखाना अभी भी वहीं न होता।

वह अपना सूटकेस लिए रास्ते पर चलने लगी। उसकी धड़कन तेज़ हो गई। उसे वह दिन याद आया जब उस बूढ़ी औरत ने उसे देखा था, और वह सुबह जब गार्ड फैनी को घसीटकर ले गए थे।

उसने दरवाजे पर दस्तक दी। एक गठीली, अधेड़ उम्र की नर्स ने दरवाजा खोला।

“हैलो,” फैनी ने अपनी हंगेरियन भाषा याद करने की कोशिश करते हुए कहा। “मैं ढूंढ रही हूँ... मैं जानती थी... यहाँ एक महिला रहती थी। उसका नाम गिज़ेला था?”

नर्स ने सिर हिलाया।

“क्या आपको पता है कि... खैर... क्या वह अभी भी जीवित है?”

“बिल्कुल,” नर्स ने जवाब दिया।

फैनी ने इतनी ज़ोर से साँस छोड़ी कि वह आगे झुक गई। "ओह, भगवान का शुक्र है। भगवान का शुक्र है। क्या आपको पता है कि मैं उसे कहाँ ढूंढ सकती हूँ?"

नर्स असमंजस में लग रही थी। उसने दरवाजा खोला और फैनी ने देखा कि एक महिला व्हीलचेयर पर बैठी है और अंगीठी के पास है। उसकी दाहिनी आंख पर पट्टी बंधी थी और चेहरे का वह हिस्सा लटका हुआ था। लेकिन फैनी को देखते ही वह चीख पड़ी और फैनी दौड़कर उसके पास गई और उसके पैरों पर गिर पड़ी और उसकी गोद में इतनी जोर से रोने लगी कि उसके मुंह से बस इतना ही निकला, "मुझे माफ कर दो, मुझे माफ कर दो, मुझे माफ कर दो।"

* * *

एरो क्रॉस गिरोह गिज़ेला को पूछताछ कक्ष में घसीटकर ले गया और जब उसने यह मानने से इनकार कर दिया कि वह जिस लड़की को छिपा रही थी वह यहूदी थी, तो उन्होंने उसे बुरी तरह पीटा। तीन सप्ताह तक उन्होंने उसे खाना, पानी और यहाँ तक

कि चिकित्सा सहायता भी नहीं दी, ताकि वह सच उगल दे। अंत में, जब गिज़ेला के चर्च के एक बुजुर्ग पादरी उसके दरवाजे पर आए और एक अज्ञात राशि का भुगतान किया, तब जाकर उसे रिहा किया गया।

मार-पीट के कारण उसकी एक आंख की रोशनी चली गई और वह बिना छड़ी के चल नहीं पाती थी। समय बीतने के साथ-साथ उसके कूल्हे की हालत बिगड़ती गई और अब उसे चलने-फिरने के लिए व्हीलचेयर की ज़रूरत पड़ने लगी। फैनी ने इतनी बार माफी मांगी कि गिज़ेला ने उसे "मुझे खेद है" शब्द का प्रयोग करने से मना कर दिया, यह कहते हुए कि युद्ध में इतने सारे पीड़ित थे कि केवल जीवित रहना ही जश्न मनाने लायक बात थी।

उस पहली रात, फैनी ने नर्स को खाना बनाने में मदद की। जब फैनी सूप का कटोरा लेकर आई, तो गिज़ेला मुस्कुराई और बोली, "याद है जब मैंने तुम्हारे लिए ऐसा किया था?"

मैं इसे कभी नहीं भूल सकता।

“अब खुद को देखो। क्या चेहरा है। क्या बाल हैं। और तुम्हारा फिगर! फैनी, तुम कितनी खूबसूरत हो।”

फैनी का चेहरा लाल हो गया। उसे लंबे समय से खूबसूरत महसूस नहीं हुआ था।

"मैंने तुम्हारे बारे में सोचना कभी बंद नहीं किया, गिजेला।"

और मैं हर दिन आपके लिए प्रार्थना करता था।

“बहुत कुछ हुआ,” फैनी ने कहा। “भयानक चीजें...”

क्या आप मुझे बताना चाहेंगे?

“मुझे नहीं पता कि कहां से शुरू करूं। मैं डेन्यूब नदी पर लगभग मर ही गया था। और फिर, एक पदयात्रा के दौरान, हमें कई दिनों तक बर्फ में चलना पड़ा। वहां एक छोटा लड़का था...”

उसका गला भर आया। उसे अपनी परेशानियों का ज़िक्र करने में भी शर्म आ रही थी, जबकि व्हीलचेयर पर बैठी गिज़ेला ने खुद इतना कुछ सहा था।

गिजेला ने कहा, "आपने जो भी कष्ट सहा हो, उसके बावजूद आप आज भी यहां हैं, इसका एक कारण है।"

इसका कारण क्या है?

ईश्वर आपको सही समय का संकेत देगा।

फैनी ने अपने होंठ काट लिए।
“तुम मेरे प्रति इतने दयालु क्यों थे?”
“मैंने तुमसे कई साल पहले कहा था, प्रिय। तुम्हें मेरे दिल के खालीपन को भरने के लिए भेजा गया था। और अब, तुमने वही काम फिर से कर दिया है।”
फैनी मुस्कुराई और उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।
“खाओ,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
गिजेला ने एक चम्मच सूप पिया।
"अच्छी बात है।"
“सूप?”
गिजेला ने फैनी का हाथ पकड़ लिया।
“यह,” उसने कहा।
* * *
अब, कहानी को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से, मैं फैनी और गिज़ेला द्वारा साथ बिताए गए दो हफ्तों में साझा की गई सारी खुशियों का विस्तार से वर्णन नहीं करूँगा, हालाँकि उनका पुनर्मिलन वर्षों में दोनों के लिए सबसे सुखद पल था। मैं एक ऐसी बातचीत का ज़िक्र ज़रूर करूँगा जो बड़ी सहजता से हुई, लेकिन हमारी कहानी की दिशा को पूरी तरह से बदल देती है।
फैनी रसोई में पकौड़ी बना रही थी, उसे वह प्रक्रिया याद आ रही थी जो उसने और गिज़ेला ने वर्षों पहले की थी। उसने खमीर का आटा और दही पनीर लिया और उन्हें एक साथ बेल लिया।
“आपने यह नया घर कब बनवाया?” फैनी ने पूछा।
“ओह, बहुत समय पहले,” गिजेला ने कहा।
“यह बहुत आरामदायक है।”
"धन्यवाद।"
“तुमने मुर्गीखाना क्यों रखा हुआ था?”
गिज़ेला मुस्कुराई। "अगर तुम मुझे ढूंढते हुए वापस आए तो।"
“वाह, यह काम कर गया,” फैनी ने हंसते हुए कहा। “सच कहूं तो, अगर वह मुर्गीखाना न होता तो मैं सीधे उसके पास से ही गुजर जाती।”
वह एक पकौड़ी लेकर मेज पर आई और बैठ गई। उसने अपनी आवाज धीमी कर ली।

“अगर पूछना ठीक हो तो... आपने इतने अच्छे घर के लिए पैसे कैसे जुटाए? मेरा मतलब है, आखिर किस बात के बाद...”
“उन्होंने मेरे साथ क्या किया?”
फैनी ने भौंहें चढ़ाईं। "हाँ।"
“डार्लिंग। मुझे लगा तुम जानती हो।”
“क्या जानते थे?”
“लड़का।”
"कौन - सा लड़का?"
लाल बालों वाला लड़का।
“कौन सा लड़का? वह कौन है?”
“वह अपना नाम कभी नहीं बताता। लेकिन युद्ध के कुछ साल बाद वह आने लगा। वह पैसों से भरा एक थैला लाता था। वह कहता था कि यह मेरे लिए है और यह मत पूछो कि क्यों।”
“अगले साल वह फिर आया। उसके अगले साल फिर। अब वह एक वयस्क हो चुका है, लेकिन हर साल, उसी दिन, 10 अगस्त को, वह वहीं होता है। वह मुझे बैग देता है, फिर चला जाता है।”
“रुको,” फैनी ने कहा। “मुझे समझ नहीं आ रहा। तुम्हें ये पैसे कौन भेज रहा है?”
गिजेला की आंखें चौड़ी हो गईं।
मुझे लगा कि यह तुम्हारी तरफ से आ रहा है।
गिजेला द्वारा उल्लिखित तिथि महत्वपूर्ण थी।
शायद आपको याद हो। फैनी को याद था। बुडापेस्ट के एक रेलवे स्टेशन से बाहर निकलते समय भी वह कुछ हफ्तों बाद इसके बारे में सोच रही थी।
10 अगस्त।
जिस दिन उसकी ट्रेन सैलानिका से रवाना हुई।
फैनी उस सुबह को कभी नहीं भूल पाएगी। प्लेटफार्म। अफरा-तफरी। निको। उसे मवेशियों वाली गाड़ी में धकेला जाना, रोशनी का गायब होना, हवा का सूख जाना, गाड़ी का भयानक रूप से गड़गड़ाते हुए रवाना होना। यह उसके जीवन का निर्णायक मोड़ था।
लेकिन इसका गिजेला से क्या संबंध था?

हंगरी में, उस खास दिन, उसे पैसे क्यों पहुंचाए जा रहे थे? क्या यह महज़ एक संयोग था? क्या सरकार उसे पैसे वापस कर रही थी? नहीं। यह सब बेतुका था। एक लाल बालों वाला लड़का पैसे क्यों पहुंचाएगा?

फैनी ने याद करने की कोशिश की कि क्या उसने गिज़ेला के बारे में किसी को बताया था। सिर्फ सेबेस्टियन को। क्या उसका इससे कुछ लेना-देना हो सकता है?

ट्रेन स्टेशन पर स्थित फोन सेंटर से फैनी ने ऑपरेटर से वियना स्थित अपार्टमेंट में फोन करवाया। उसने काफी देर तक इंतजार किया। कोई जवाब नहीं मिला। वह हिचकिचाई, फिर उसने ऑपरेटर को एजेंसी में सेबेस्टियन का नंबर दिया। किसी ने फोन उठाया और बताया कि वह वहीं है।

"नमस्ते?"

उनकी आवाज पतली और दूर से आती हुई सुनाई दी।

"सेबेस्टियन, मैं हूँ।"

"आप कहां हैं?"

बुडापेस्ट।

"क्यों?"

क्या आप गिजेला के बारे में कुछ जानते हैं?

"कौन?"

“गिसेले।”

“वो कौन है?”

"ट्रेन के बाद मुझे ढूंढने वाली महिला।"

एक विराम।

क्या आप उसी से मिल रहे हैं?

“हाँ, मैंने उसे ढूंढ लिया। वह ज़िंदा है। मुझे बहुत राहत मिली। लेकिन, सेबेस्टियन, उसे हर साल पैसे भेजे जाते हैं। बहुत सारे।”

"कहां से?"

“मुझे नहीं पता। मैं आपसे पूछने ही वाला था कि क्या आपका इससे कोई लेना-देना है?”

"मुझे?"

उसकी हंसी में छिपे व्यंग्य से फैनी तुरंत समझ गई कि वह ऐसा नहीं करता।

“छोड़ो कोई बात नहीं,” उसने कहा। “यह एक मूर्खतापूर्ण विचार था।”
"क्षमा मांगना।"
"तो फिर अलविदा।"
"इंतज़ार।"
"क्या?"
"फैनी?"
"हाँ?"
क्या आप जल्द ही घर आ रहे हैं?
उसने अपनी छाती को छुआ।
मैं अभी कुछ समय तक यात्रा करता रहूंगा।
लंबा सन्नाटा।
मुझे लगा कि आप मुझे यह बताने के लिए फोन कर रहे हैं कि आपको मेरा भाई मिल गया है।
"तुम्हारे मन में ऐसा विचार क्यों आएगा?"
मुझे नहीं पता। छोड़ो।
अलविदा, सेबेस्टियन।
"क्या आप दोबारा फोन करेंगे?"
“जी हां। मैं फोन करूंगा।”
"कब?"
उसने अपना माथा रगड़ा। "मैं फोन करूंगी।"
उसने फोन काट दिया।
* * *
उस दोपहर, फैनी खुद को डेन्यूब नदी के किनारे टहलते हुए पाई। गर्मी की ठंडी हवा उसके कंधों से उसके काले घुंघराले बालों को उड़ा रही थी। उसे चिंता थी कि यह यात्रा उसके लिए एक दर्दनाक याद बन सकती है, लेकिन दिन के उजाले में, दो दशक से भी अधिक समय बाद, इसमें कुछ भी जाना-पहचाना नहीं था। बस एक विशाल नदी शहर को चीरती हुई, महाद्वीप को पार करती हुई, काला सागर में जा गिरती थी।
फैनी बुडापेस्ट की विशाल संसद भवन, उसके गॉथिक शैली के अग्रभाग और विशाल केंद्रीय गुंबद को निहार रही थी। उसने नदी के किनारे बने गिरजाघरों पर भी नज़र

डाली। वह सोच रही थी कि इन इमारतों में रहने वाले सभी लोग दो दशक पहले क्या कर रहे होंगे, जब रात में यहूदियों को गोली मारकर नदी में फेंक दिया जाता था।
उसने उस घटना के बहुत से हिस्सों को भुला दिया था। यही उसका तरीका था। जहाँ सेबेस्टियन हर बार उस घटना की याद आने पर परेशान होता था, वहीं फैनी ने अपने दिमाग में एक दीवार खड़ी कर ली थी ताकि वह उन भयानक यादों से खुद को बचा सके। उस दोपहर, अगर सूरज आसमान में बिल्कुल बीचोंबीच न होता, तो शायद वह उस दीवार के सुरक्षित हिस्से में ही रहती, अगर वह डेन्यूब नदी के किनारे एक बेंच पर न बैठ जाती।
कुछ ही देर बाद, एक बूढ़ा आदमी प्रार्थना की किताब लिए हुए आया। वह तटबंध के किनारे तक गया और आगे-पीछे झूलने लगा। फैनी ने उसकी प्रार्थनाएँ पहचान लीं। वे हिब्रू भाषा में थीं।
जब उसका काम समाप्त हो गया, तो उसने रूमाल से अपना चेहरा पोंछा और उसके पास से गुजर गया।
“तुम किसके लिए शोक मना रहे हो?” फैनी ने पूछा।
वह आश्चर्यचकित होकर रुक गया।
"क्या आप कद्दिश के बारे में जानते हैं?"
उसने सिर हिलाया।
“मेरी बेटी,” उसने कहा।
“उसकी मृत्यु कब हुई?”
“तेईस साल पहले। उन्होंने उसे यहीं मार डाला था।” उसने तेज़ बहती नदी की ओर देखा। “कब्र तक नहीं। बस पानी।”
"मैं माफी चाहता हूँ।"
उसने उसके चेहरे का गौर से अध्ययन किया।
“आप हंगरी से नहीं हैं। आपका लहजा ही ऐसा है।”
“ग्रीस। लेकिन मैं यहाँ पहले भी आ चुका हूँ। इस नदी पर। रात में। मेरे हाथ बंधे हुए थे।”
उसने नज़रें फेर लीं। "मैं तुम्हारी बेटी से ज़्यादा भाग्यशाली थी।"
बूढ़ा आदमी घूरता रहा। उसकी आँखों में आँसू भर आए। वह बैठ गया और धीरे से फैनी के कंधे को छुआ। उसने देखा कि वह भी रो रही थी।

“बरूच हाशेम,” उसने फुसफुसाते हुए कहा। “मैंने आज तक किसी ऐसे व्यक्ति से मुलाकात नहीं की जो इससे बच निकला हो। मुझे बताओ। तुम्हें किसने बचाया?”
“मुझे नहीं पता,” फैनी ने अचानक कहा। “इतने सालों बाद भी मुझे नहीं पता। मैंने सुना था कि वह एक अभिनेत्री थी, लेकिन मैंने उसे कभी नहीं देखा। अंधेरा था। वे हमें तहखाने में ले गए। हम वहाँ हफ्तों तक रहे।”
बूढ़ा आदमी पीछे की ओर झुक गया। वह स्तब्ध प्रतीत हो रहा था।
"कैटालिन कराडी," वह बुदबुदाया।
"कौन?"
“वह अभिनेत्री। मैंने तो सिर्फ अफवाहें ही सुनी थीं।”
“क्या आप उसे जानते थे?”
“हर हंगेरियन उसे जानता था। वह बहुत लोकप्रिय थी। फिर उसने सरकार के खिलाफ आवाज उठाई, और उन्होंने उसे बर्बाद कर दिया। उसे पीटा। उन्होंने उसके सुंदर चेहरे पर मुक्के मारे। मैंने सुना है कि उन्होंने उसका जबड़ा तोड़ दिया।”
“ऐसी कहानियां और अफवाहें थीं कि उसने यहूदी बच्चों को बचाने के बदले में एरो क्रॉस को गहने बेचे थे। लेकिन क्या आप मुझे बता रहे हैं कि यह सच है? क्या आप सचमुच उनमें से एक थीं?”
“हाँ!” फैनी ने कहा। “वह अब कहाँ है? कृपया! मुझे उसे ढूंढना है!”
बूढ़े आदमी ने सिर हिलाया। “उन्होंने उसे बहुत पहले हंगरी से निकाल दिया था। उन्होंने उसकी प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिला दिया। वह काम नहीं कर सकती थी।”
मैंने कहीं पढ़ा था कि वह न्यूयॉर्क शहर में रहती है। मुझे लगता है कि वहाँ उसकी एक दुकान है। टोपी की दुकान, या कुछ और।
फैनी का सिर झुक गया। न्यूयॉर्क शहर? वह रोने लगी।
“क्या बात है?” बूढ़े आदमी ने पूछा।
“कुछ नहीं। बस... मैं उसे ढूंढना चाहता था। मैं उसे धन्यवाद देना चाहता था। और मुझे उससे किसी के बारे में पूछना था, एक लड़के के बारे में जिसे मैं जानता था, एक लड़के को जिसे मैंने उस रात देखा था। मुझे लगता है कि वह उसके साथ काम कर रहा था।”
उसने बूढ़े आदमी के चेहरे की ओर देखा। "मुझे लगता है कि उसी ने मुझे बचाया था।"
तेज हवा चल रही थी। बूढ़े आदमी ने अपने रुमाल से अपनी आंखें पोंछीं।

"क्या आप जानते हैं कि जीवन बचाने के बारे में तालमुद क्या कहता है?"
फैनी ने सिर हिलाया। "अगर आप एक को बचाते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे आपने पूरी दुनिया को बचा लिया हो।"
“हाँ, बिल्कुल।” उसने अपने हाथ जोड़ लिए। “आपकी उम्र कितनी है?”
“अड़तीस।”
“मेरी बेटी की उम्र।” उन्होंने उदास मुस्कान दी। “अगर वह जीवित होती।”
मुझे खेद है। यह सुनना आपके लिए बहुत मुश्किल होगा।
“ओह, नहीं, मेरी प्यारी। तुमने मुझे कल्पना से परे खुशी दी है। तुम बच गई। तुमने उन्हें हरा दिया। एक जान बच गई। मानो तुम्हारे साथ पूरी दुनिया बच गई हो।”
उसने अपना हाथ उसके हाथ पर रखा। "क्या तुम्हारे बच्चे हैं?"
“एक बेटी।”
"सबसे अच्छा बदला," उसने मुस्कुराते हुए कहा।
उसने नदी की ओर देखा, फिर सूर्य की ओर नज़र डाली। उसने अपना रुमाल एक तरफ रखा और खड़ा हो गया।
“क्या आप मेरे साथ मेरे कार्यालय चलेंगे?” उसने पूछा। “यह यहाँ से ज्यादा दूर नहीं है।”
“क्यों?” फैनी ने कहा।
मैं आपको वह ढूंढने में मदद करना चाहता हूं जिसकी आपको तलाश है।
* * *
फैनी कालीन कारखाने की दूसरी मंजिल पर स्थित उस बूढ़े आदमी के दफ्तर में गई। उसने उसे अपने कई कर्मचारियों से मिलवाया और अपनी बेटी की बचपन की एक तस्वीर दिखाई। फैनी के जाने से पहले, वह आदमी एक कोठरी में गया, तिजोरी खोली और एक लिफाफे में न्यूयॉर्क शहर के हवाई टिकट के लिए पर्याप्त पैसे भर दिए। मैंने इस कहानी में अप्रत्याशित मोड़ों का जिक्र किया था। निश्चित रूप से, यह भी उनमें से एक है।
जब फैनी ने शुरू में उसकी दयालुता को ठुकरा दिया, तो बूढ़े व्यक्ति ने मुस्कुराते हुए जोर देकर कहा कि उसने पैसे एक कारण से बचाए थे, और इससे उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वह अपने ही बच्चे की मदद कर रहा हो, जिसके सपने अधूरे रह गए थे।
फैनी ने जाते समय बूढ़े आदमी को गले लगाया। उसने उसके सिर पर आशीर्वाद दिया।

फिर उसने अंतिम फुसफुसाहट में कहा, जिससे फैनी कांप उठी: "दुनिया को बताओ कि यहाँ क्या हुआ था।"

वह इमारत से स्तब्ध होकर निकली। तीन हफ्ते बाद, वह न्यूयॉर्क शहर की एक सड़क पर कागज का एक टुकड़ा पकड़े हुए एक पता खोज रही थी।

भाग V

वह हंसती है, वह झूठ बोलती है

बाइबल में अब्राहम और सारा की कहानी है। जब वे दोनों नब्बे वर्ष के थे, तब तीन अजनबी उनसे मिलने आए, जो वास्तव में प्रभु के दूत थे। सारा घर के अंदर खाना बना रही थी। उसी समय, बाहर, एक दूत ने अब्राहम को एक चौंकाने वाली खबर दी।

“मैं अगले साल इसी समय तुम्हारे पास वापस आऊंगा,” देवदूत ने कहा, “और तुम्हारी पत्नी एक बेटे को जन्म देगी।”

तंबू के अंदर बैठी सारा ने यह सब सुना और हंस पड़ी। उसने मन ही मन कहा, "जब मैं इतनी थक चुकी हूँ और मेरे पति इतने बूढ़े हो चुके हैं—अब मुझे यह सुख मिलेगा?"

बेशक, सर्वशक्तिमान की उपस्थिति में स्वयं से बात करना वास्तव में स्वयं से बात करना नहीं होता। स्वर्गदूत ने तुरंत अब्राहम से पूछा, “सारा अभी क्यों हँसी? उसने ऐसा क्यों कहा, ‘क्या मैं सचमुच गर्भवती हो जाऊँगी?’ क्या ईश्वर अपनी इच्छा के अनुसार कुछ भी नहीं कर सकता?”

अब्राहम ने अपनी पत्नी को बुलाया, जिसने सामना किए जाने पर डरकर झूठ बोला।

"मैं नहीं हंसी," सारा ने कहा।

“तुम हँसे थे,” देवदूत ने उत्तर दिया।

अब, इस घटना से आप यह समझ सकते हैं कि ईश्वर छल को बर्दाश्त नहीं करता, चाहे वह छोटा ही क्यों न हो।

दूसरी ओर, जब स्वर्गदूत ने अब्राहम को सारा की कही बात दोहराई, तो आपने ध्यान दिया होगा कि उसने अब्राहम के पिता बनने के लिए बहुत बूढ़े होने वाली बात को छोड़ दिया। उसने पति का अपमान करने और दंपति के बीच दरार पैदा करने के बजाय इस बात को सिरे से खारिज कर दिया।

तो आप यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि स्वर्गदूत भी झूठ बोलते हैं।

मैं इस कहानी को अलग तरह से देखता हूँ। सामंजस्य बनाए रखने के लिए, कुछ बातें

ऐसी होती हैं जो आप नहीं कहते, भले ही आप जानते हों कि वे सही हैं। तकनीकी रूप से, यह छल का कार्य है। यह प्रेम का भी कार्य है। ये दोनों जितना आप सोचते हैं उससे कहीं अधिक आपस में जुड़े हुए हैं।
जैसा कि हम जल्द ही देखेंगे।

अतीत से पोस्टकार्ड

फैनी ईस्ट ट्वेंटी-थर्ड स्ट्रीट पर स्थित दुकान में दाखिल हुई। हर जगह टोपियाँ ही टोपियाँ थीं—हुक पर, अलमारियों पर, पुतलों के सिर पर। वहाँ कोई और ग्राहक नहीं था। एक छोटे से स्पीकर से मधुर शास्त्रीय संगीत बज रहा था।
"शुभ दोपहर," एक आवाज ने टूटी-फूटी अंग्रेजी में कहा।
फैनी ने एक अधेड़ उम्र की महिला को पीछे के कमरे से निकलते देखा। यह वही थी। अभिनेत्री। ज़रूर वही होगी। वह पचास से ऊपर लग रही थी, लेकिन फिर भी उसकी खूबसूरती बरकरार थी। उसका चेहरा गहरे मेकअप से सजा था, उसकी आंखों में गहरा नीला आईशैडो लगा था और उसकी लिपस्टिक अंगूर के रंग की थी। उसके काले बाल उस ज़माने के फैशन के मुताबिक ऊंचे उठे हुए थे।
“सुप्रभात,” फैनी ने हंगेरियन भाषा में कहा।
उस महिला की निगाहें सीधे फैनी की आंखों पर टिक गईं, उनकी निगाहें इतनी तीखी थीं कि फैनी कांप उठी।
"आप कौन हैं?"
“कृपया। मुझे आपसे कुछ पूछना है।”
क्या आपको टोपी चाहिए?
"नहीं।"
"तो फिर मैं आपकी सेवा नहीं कर सकता।"
महिला पीछे वाले कमरे की ओर मुड़ी।
“रुको!” फैनी अचानक बोल पड़ी। “1944 में डेन्यूब नदी के किनारे, यहूदियों का एक समूह मारा जाने वाला था। कहते हैं कि तुम वहाँ थे। और वहाँ एक लड़का था, जिसने जर्मन अधिकारी जैसी वर्दी पहनी हुई थी। प्लीज़। क्या तुम जानते हो कि वह कौन है?”
महिला धीरे से मुड़ी।
"आप किनके साथ हैं?"

"कोई नहीं।"
"आप किनके साथ हैं?"
फैनी ने अपना सिर हिलाया। उसे चक्कर आ रहा था। उसने खुद को संभालने के लिए एक शेल्फ पकड़ ली।
“कोई नहीं। मैं किसी के साथ नहीं हूँ। मेरे पास अब कोई बचा ही नहीं है।”
वह महिला चुपचाप देखती रही। जब फैनी रोने लगी तो उसने अपनी बाहें मोड़ लीं।
“इस लड़के का नाम क्या था?”
“निको। उसका नाम निको था।”
मैंने यह नाम कभी नहीं सुना।
वह ग्रीस से था।
महिला ने अपना सिर हिलाया।
मुझे खेद है। मैं उन्हें नहीं जानता।
“क्या मैं बैठ सकता हूँ? मेरी तबीयत ठीक नहीं है।”
अभिनेत्री ने दर्पण के पास रखी एक कुर्सी की ओर इशारा किया। फैनी बैठ गई और वह महिला उसके पीछे चली गई। उनकी परछाइयाँ दर्पण में भर गईं।
"1944 में आपकी उम्र कितनी थी?" अभिनेत्री ने पूछा।
"चौदह।"
आप डेन्यूब नदी पर क्या कर रहे थे?
“मुझे अन्य लोगों से बांध दिया गया था और एरो क्रॉस द्वारा मेरी हत्या की जाने वाली थी। किसी ने मुझे बचा लिया। किसी ने अपनी जान जोखिम में डाली। और इसी वजह से मैं जीवित हूँ।”
उसने अपनी आँखें पोंछीं। “जीने से भी बढ़कर। इसी वजह से मैं बड़ी हो पाई। मेरी शादी हो पाई। मेरी अपनी एक बच्ची हुई और मैं उसे वो सब दे पाई जो मुझे कभी नहीं मिला।”
उस महिला ने कुछ नहीं कहा। लेकिन फैनी ने देखा कि उसका निचला होंठ कांपने लगा।
“ये तुम ही थे, है ना? तुमने ही मुझे बचाया था।”
फैनी ने उसका हाथ पकड़ लिया।
"यह आप थे।"

“ये मैंने नहीं किया,” महिला ने अपना हाथ पीछे खींचते हुए जवाब दिया। “ये मेरे पैसे थे। हर चीज़ की एक कीमत होती है। किसी की जान बचाने के लिए भी कीमत चुकानी पड़ती है। और जान बचाने के लिए भी कीमत चुकानी पड़ती है।”

उसने अपने जबड़े को छुआ।

“मैंने सुना है कि वे तुम्हारे साथ बहुत बुरा बर्ताव करते थे,” फैनी ने कहा।

"दूसरों के प्रति उनके व्यवहार की तुलना में वे कम भयानक थे।"

“उस रात सिर्फ मैं ही नहीं था। हम कम से कम बीस लोग थे।”

“तेईस,” महिला ने धीमी आवाज़ में कहा।

वह काउंटर के पीछे गई और उसके नीचे से एक छोटी तिजोरी खोली। उसने तिजोरी में रखी चीज़ों को खंगाला और एक लिफाफा निकाला। अंदर एक कागज़ का टुकड़ा था। उसने उसे खोला और फैनी के सामने रख दिया।

वह किताब पुरानी थी और किनारों से फीकी पीली पड़ गई थी। लेकिन लिखावट साफ थी। नामों की एक सूची, जन्मतिथियों के साथ। कुल तेईस नाम थे।

“क्या आप यहाँ हैं?” महिला ने पूछा।

फैनी ने पंक्तियों को सरसरी तौर पर पढ़ा। उन्नीसवीं पंक्ति पर पहुँचते ही वह चौंक उठी और शब्दों के नीचे अपनी उंगलियाँ रख दीं।

फैनी नाहमियास, 2/12/1930

"यह आप है?"

फैनी ने सिर हिलाया।

“तो मुझे बहुत खेद है कि मैंने तुम्हारे साथ इतना ठंडा व्यवहार किया।” उसने फैनी के कंधे पर हाथ रखा। “मुझे खुशी है कि तुम जीवित हो।”

“बाकी लोगों का क्या हुआ?” फैनी ने पूछा। “उनका क्या हुआ?”

“छोटे बच्चे तो बच गए। बड़े बच्चों को एक बस्ती में डाल दिया गया। उसके बाद क्या हुआ, मुझे नहीं पता।”

“हाँ,” फैनी ने कहा।

वह महिला बैठ गई।

"मुझे बताओ।"

“वे हमें ऑस्ट्रिया ले गए। कई दिनों तक हमें चलते रहना पड़ा। बहुत ठंड थी। खाना नहीं था, पानी नहीं था। हम ज़मीन पर सोते थे। आप रुक नहीं सकते थे, वरना वे

आपको गोली मार देते। बहुत से लोग मारे गए। औरतें, बच्चे। उन्हें कोई परवाह नहीं थी। उन्होंने उन्हें कीचड़ में ही छोड़ दिया।"

महिला ने आह भरी। उसने कागज की ओर इशारा किया।

"इनमें से चौदह नाम अभी भी जीवित हैं। पंद्रह अब आपके साथ हैं। बुडापेस्ट में एक महिला उनका रिकॉर्ड रखती है। कुछ अभी भी हंगरी में हैं। कुछ इज़राइल में, कुछ यहाँ अमेरिका में। उनके पति, पत्नियाँ, बच्चे हैं। उन्होंने बहुत कष्ट झेला है। लेकिन यह जानकर मुझे राहत मिली है कि उनकी अच्छी देखभाल हो रही है।"

फैनी ने ऊपर देखा। "तुम्हारा क्या मतलब है?"

"हर साल उन्हें पैसे मिलते हैं। किसी को नहीं पता कि कहाँ से। यह सिलसिला युद्ध समाप्त होने के बाद से चल रहा है।"

अभिनेत्री ने फैनी के चेहरे के भाव को देखा।

"तुम्हें भी ये पैसा मिलेगा?"

"नहीं। लेकिन मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो ऐसा करता है। हर साल, उसी दिन—"

"10 अगस्त," महिला ने कहा।

"10 अगस्त," फैनी ने दोहराया।

अभिनेत्री ने अपने होंठ सिकोड़े, फिर कागज उठाया और उसे मोड़कर लिफाफे के अंदर रख दिया। उसने कुछ देर तक फैनी को देखा।

"यहीं रुको," उसने कहा।

वह पीछे के कमरे में गई और थोड़ी देर के लिए गायब हो गई। जब वह वापस आई, तो उसके हाथ में रबर बैंड से बंधे पोस्टकार्ड का एक पैकेट था।

वह बैठ गई, बैग का पट्टा खोला, फिर फैनी के सामने मेज पर पोस्टकार्ड रख दिए। कम से कम दो दर्जन पोस्टकार्ड थे। हर पोस्टकार्ड पर एक नई फिल्म के प्रीमियर की घोषणा थी।

"मुझे ये पोस्टकार्ड सालों से मिल रहे हैं," अभिनेत्री ने कहा। "कोई संदेश नहीं। कोई हस्ताक्षर नहीं। बस पोस्टकार्ड। आप जिस लड़के को ढूंढ रही हैं? क्या उसके सुनहरे बाल थे? क्या उसकी मुस्कान प्यारी थी?"

फैनी ने झट से सिर हिलाया। "हाँ। हाँ, उसने किया!"

"अगर यह वही है, तो वह अब तक का सबसे होशियार लड़का था जिससे मैं मिली हूँ।

वह कई भाषाएँ बोलता था। किसी को भी मोहित कर सकता था। उसने मेरे कुछ गहने और फर नाजियों से छिपाए थे। अगर ऐसा न होता, तो मेरे पास एरो क्रॉस के साथ व्यापार करने के लिए कुछ भी नहीं बचता। लेकिन उसका नाम... आपने फिर से कौन सा नाम बताया था?"

"निको?"

"नहीं। उनका नाम एरिक अल्मन था। कम से कम जब तक मैं उन्हें जानता था। मैंने एक बार उनसे कहा था कि उन्हें फिल्मों में जाना चाहिए।"

उसने पोस्टकार्ड की ओर इशारा करते हुए कहा, "मुझे लगता है उसने ही किया होगा।"

उसने कार्डों को एक के ऊपर एक रखा और उन पर रबर बैंड लगा दिया। उसने कार्डों का ढेर फैनी को दे दिया।

उन्होंने कहा, "इन फिल्मों को बनाने वाले व्यक्ति को ढूंढो, और तुम्हें वह लड़का मिल जाएगा जिसकी तुम तलाश कर रहे हो।"

वियना, 1978

कहानी के इस मोड़ पर, आप देखेंगे कि हमारे चार पात्रों में से तीन अमेरिका पहुँच चुके हैं। चौथा भी वहाँ पहुँचेगा, और कुछ ऐसा देखेगा जिसे उसने कभी न देखने की कल्पना की थी। इसे समझाने के लिए, मुझे समयरेखा को 1978 में ले जाना होगा, यानी फैनी द्वारा कैटलिन कराडी की खोज के दस साल बाद।

सेबेस्टियन क्रिस्पिस नाज़ी हंटर के शीर्ष कर्मचारियों में से एक बन गया था। वह एजेंसी के लिए पूर्णकालिक रूप से काम कर रहा था, जिसने वर्षों में अपने कुछ कर्मचारियों को खो दिया था। इसे अभी भी कुछ बड़े दानदाताओं से वित्त पोषण मिल रहा था, लेकिन युद्ध अपराधियों में लोगों की रुचि कम होती जा रही थी। धन जुटाना मुश्किल हो गया था।

तीन कमरों के एक छोटे से अपार्टमेंट में अकेले रहते हुए, सेबेस्टियन ने अपना पूरा जीवन इस नेक काम में लगा दिया था। वह सुबह जल्दी आता था और शाम तक काम करता था। कई बार, देर रात अपने दफ्तर में पनीर और सरसों का सैंडविच खाते हुए, उसे एहसास होता था कि यही उसका एकमात्र सहारा है।

वह अपने बिस्तर के पास फैनी और टिया की तस्वीर रखता था। उसका दिल इस बात से टूट जाता था कि उसका परिवार उसके साथ नहीं है। फिर भी, कई बार वह हफ्तों तक उनसे बात नहीं कर पाता था। उसे समझ नहीं आता था कि क्या कहे। वह खुद

को समझाने की कोशिश में परेशान हो जाता था, या यह बताने की कोशिश में कि इन नाज़ी दरिंदों के खिलाफ न्याय उसके लिए सबसे बड़ा कर्तव्य था, और एकमात्र सार्थक कर्तव्य था। वह समझ नहीं पाता था कि वे ऐसा क्यों नहीं सोचते थे। अंदर ही अंदर, वह अपने ऊपर हुए अत्याचारों के जुनून से दुखी था, फिर भी उन लोगों पर क्रोधित था जिन्होंने ये अत्याचार किए थे और जिन्हें कोई सजा नहीं मिली थी।

अंत में, उसने अपने जीवन को गलत दिशा में ले जाने के लिए खुद को दोषी ठहराया। उसे ऐसा नहीं करना चाहिए था। उसका दिमाग उसके नियंत्रण में नहीं था। युद्ध समाप्त होने के बहुत समय बाद भी, लोगों को बंधक बनाए रखता है।

* * *

सेबेस्टियन को अमेरिका लाने वाली खबर यह थी कि नाजियों का एक नया दल इलिनोइस के एक छोटे से उपनगरीय कस्बे स्कोकी में मार्च करने की योजना बना रहा था। इस कस्बे में यहूदी होलोकॉस्ट पीड़ितों की संख्या असामान्य रूप से अधिक थी, जो अमेरिका में अपना जीवन बसाने आए थे। अकेले स्कोकी में ही लगभग सात हजार लोग थे।

इसीलिए नाजियों ने इसे निशाना बनाया था। अपने मार्च के दौरान, उन्होंने भूरे रंग की वर्दी पहनने, झंडे लहराने, अपनी बांहों पर स्वस्तिक प्रदर्शित करने और नाजी सलाम करते हुए अपने सीधे दाहिने हाथ की हथेली उठाने की योजना बनाई थी।

जब सेबेस्टियन ने इसके बारे में पढ़ा, तो उसे घृणा हुई। अमेरिका में? यह सच नहीं हो सकता! लेकिन बुराई सिंहपर्णी के बीजों की तरह फैलती है, सीमाओं को पार कर जाती है और क्रोधित मनों में जड़ जमा लेती है।

जब 1930 के दशक में वुल्फ ने अपने अनुयायियों को उकसाया, तो यह इसलिए कारगर नहीं हुआ क्योंकि जर्मन यहूदियों से नफरत करते थे, बल्कि इसलिए कि सभी मनुष्य दूसरों से नफरत करने लगते हैं यदि उन्हें लगता है कि वे उनकी unhappiness का कारण हैं। असली चुनौती उन्हें इस बात के लिए मनाना है।

यह मुश्किल नहीं है। बस एक ऐसे समूह को ढूंढिए जो पीड़ित महसूस कर रहा हो और दूसरे समूह को उनकी परेशानियों का कारण बता दीजिए। मूल नाजियों ने यहूदियों के साथ यही किया था। और यद्यपि नए उभरते नाजियों में जर्मनी के प्रति वोल्फ जैसी कट्टर निष्ठा नहीं थी, फिर भी वे नस्लीय शुद्धता का वही गीत गाते रहे और अशुद्धों को शुद्ध करने की आवश्यकता पर बल देते रहे ताकि वे योग्य लोगों का जीवन

बर्बाद न कर दें। नफरत एक प्राचीन धुन है। दोषारोपण तो उससे भी पुराना है।
सेबेस्टियन ने नाज़ी हंटर को यकीन दिलाया कि इलिनोइस में होने वाला यह आयोजन पूर्व एसएस अधिकारियों को छांटने का एक अवसर हो सकता है। शायद कुछ लोग इसमें शामिल हों? दूर से देखें? तस्वीरें ली जा सकती हैं। जानकारी जुटाई जा सकती है।
हंटर मान गया। और जल्द ही सेबेस्टियन संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए रवाना हो गया, जहाँ उसने सार्वजनिक रूप से एक नफरत फैलाने वाले समूह के उदय का अवलोकन करने और निजी तौर पर उडो ग्राफ और निको क्रिस्पिस के बारे में सुराग खोजने की योजना बनाई।
विमान में चढ़ने के बाद ही उसने मन ही मन स्वीकार किया कि वह फैनी को भी देखने की उम्मीद कर रहा था।
उडो ने उस मार्च पर ध्यान दिया था।
वॉशिंगटन डी.सी. के बाहर रहते हुए, उन्हें बढ़ते नाज़ीवाद के शुरुआती संकेतों की अच्छी जानकारी थी। इससे उन्हें गर्व और आशा दोनों महसूस होते थे।
तीन दशक से भी अधिक समय बीत चुका था जब उसने इटली से अर्जेंटीना और फिर अमेरिका तक उस गुप्त मार्ग का अनुसरण किया था। उसकी पहचान अभी भी गुप्त थी। सीनेटर के लिए किए गए विभिन्न अनुचित कार्यों के कारण, उडो "विशेष सलाहकार" के पद तक पहुँच गया था। उसका अपना कार्यालय था और उसे मोटी तनख्वाह मिलती थी। इस बीच, अनौपचारिक रूप से, वह अमेरिकी जासूसी एजेंसी के साथ काम करता रहा, जिसने साम्यवाद के खिलाफ अपने उग्र युद्ध में उसकी स्थिति को और भी मजबूत कर दिया था। वह टैप किए गए फोन सुनता था। वह चोरी किए गए दस्तावेजों का अनुवाद करता था। यहाँ तक कि उसे एक बार यूरोप भी भेजा गया था, ताकि वह अपने कथित खुफिया संपर्कों का पता लगा सके।
उडो उस यात्रा पर अपने वतन जाने की उम्मीद कर रहा था, लेकिन उसे बताया गया कि यह बहुत खतरनाक है। कोई उसे याद रख सकता था। इतना करीब आकर भी अपने प्यारे जर्मनी में कदम न रख पाने का कतई उसे परेशान कर रहा था, भले ही वह दो हिस्सों में बंट गया था - पूरब और पश्चिम - और उसका बचपन का शहर बर्लिन एक विशाल दीवार से अलग हो गया था। फिर भी, उसे यह जानकर खुशी हुई कि कुछ जर्मन लोग युद्ध के लिए माफी मांगते रहने का विरोध कर रहे हैं। कुछ तो अपने

शहरों में होलोकॉस्ट स्मारकों के निर्माण का भी विरोध कर रहे थे।
उन्होंने कहा, "बस बहुत हो गया। अब आगे बढ़ने का समय है।"
उडो ने मन ही मन कहा, "यही तो शुरुआत है। समय बीतता है। लोग भूल जाते हैं। फिर हम दोबारा उठते हैं।"
* * *
उडो अब साठ वर्ष के आसपास थे, लेकिन वे नियमित रूप से सुबह व्यायाम करके खुद को चुस्त-दुरुस्त रखते थे: सूर्योदय से पहले उठकर, हर दिन दो घंटे तक वे सिट-अप्स, पुल-अप्स, वेट लिफ्टिंग और दौड़ लगाकर खुद को तरोताज़ा रखते थे। वे जंक फूड खाने से परहेज करते थे—भले ही उनकी अमेरिकी पत्नी पामेला अलमारियों को जंक फूड से भर देती थीं। वे अपने दांतों का ख्याल रखते थे। वे धूप से बचते थे। उन्होंने अपने बालों को भूरा रंग दिया था ताकि सफेद बालों को छिपा सकें। इस प्रकार, जब वे आईने में देखते थे, तो उन्हें एक बूढ़ा आदमी नहीं, बल्कि एक सैनिक का भावुक रूप दिखाई देता था, जो बुलाए जाने पर अपने कर्तव्यों को फिर से निभाने के लिए तैयार था। उनके मन में, वे आज भी एक योद्धा थे, जो झाड़ियों में छिपे हुए थे।
इलिनॉय में होने वाले मार्च में उडो का शामिल होना बहुत जोखिम भरा था। एक छोटा सा कस्बा। बहुत सारे यहूदी। इसमें कोई शक नहीं कि उनमें से कुछ ऑशविट्ज़ में रहे होंगे। हमेशा यह संभावना थी कि कोई उसे पहचान ले। उसने बाल्टीमोर में छिपे एक साथी नाज़ी के बारे में सुना था, जो एक सुपरमार्केट में खरीदारी कर रहा था, तभी एक जीवित बचे व्यक्ति ने उसे देख लिया और येदिश में चिल्लाने लगा, "डेर कात्सेफ! डेर कात्सेफ!" ("कसाई! कसाई!")। उसने इतना हंगामा किया कि पुलिस ने उस आदमी को गिरफ्तार कर लिया, और अंततः, वियना में उस बूढ़े यहूदी द्वारा दिए गए दस्तावेजों की बदौलत, उसका अतीत उजागर हो गया। उसे जर्मनी प्रत्यर्पित किया गया और अदालत ने उसे दोषी पाया।
उडो को यह सब बिल्कुल पसंद नहीं था। उसने अपनी नोटबुक में अन्य एसएस अधिकारियों की गलतियों और उनसे बचने के तरीकों को लिखा। लेकिन जब स्कोकी में होने वाला छोटा सा मार्च शिकागो में रैली के पक्ष में रद्द कर दिया गया, तो उसने अपने फैसले पर पुनर्विचार किया। उस जैसे बड़े शहर में? वह भीड़ में छिप सकता था। दर्शकों के बीच घुलमिल सकता था। देख सकता था कि यह देश नाज़ी पुनरुत्थान के

लिए कितना अनुकूल हो सकता है। उसे उस चीज़ से जुड़ने की बहुत याद आ रही थी जिस पर उसे विश्वास था। इस प्रलोभन का विरोध करना मुश्किल था।

उसने पामेला के परिवार से मिलने के बहाने शिकागो की यात्रा का इंतज़ाम किया। देखा जाए तो यह एक छोटा सा झूठ था, और उडो के मन में यह पूरी तरह जायज़ भी था। हवाई जहाज़ की यात्रा के दौरान, उसने कल्पना की कि वह एक प्रभावशाली सैन्य दृश्य देखेगा, सैकड़ों, बल्कि हज़ारों युवा, बलवान नाज़ी सैनिक, एक सीध में, सलीके से और अनुशासनपूर्वक मार्च करते हुए, एक श्रेष्ठ नस्ल की शक्ति का प्रदर्शन करते हुए, दुनिया को एक संदेश देते हुए।

* * *

उस दिन उसने जो देखा वह बिलकुल अलग था। जब वह उस रविवार की सुबह पार्क पहुँचा, तो वह पहले से ही नारे लगाते नाज़ी-विरोधी समूहों और तख्तियाँ लिए युवा अश्वेत कार्यकर्ताओं से घिरा हुआ था। सैकड़ों पुलिसकर्मी लाठियाँ लिए, हेलमेट पहने इधर-उधर घूम रहे थे। लंबे बालों वाले किशोर गोल घेरे बनाकर सिगरेट पी रहे थे और मनोरंजन की तलाश में थे। उडो के अनुमान के अनुसार, वहाँ कम से कम कई हज़ार लोग थे, और उनमें से कोई भी नाज़ी नहीं था।

आखिरकार, दो वैन पार्क में आकर रुकीं, एक काली और एक सफेद, और उनमें से लगभग दो दर्जन लोग बाहर निकले। उन्होंने नाज़ी वर्दी पहन रखी थी, लेकिन उडो के अनुसार वे न तो चुस्त-दुरुस्त थे, न ही अनुशासित और न ही संगठित। लोग चिल्ला रहे थे, "नाज़ी, घर जाओ!" और वे अपनी वैन पर चढ़ने के लिए संघर्ष कर रहे थे। उन लोगों की ज़्यादातर बातें सुनाई नहीं दे रही थीं। दर्शक उन पर चीज़ें फेंक रहे थे। पुलिस प्रदर्शनकारियों को पीछे धकेलने लगी। कुछ लोगों को गिरफ्तार कर हथकड़ी पहना दी गई। उडो ने लोगों को हंसते हुए, कुछ को सिगरेट पीते हुए, इस अफरा-तफरी में आते-जाते देखा।

पूरा दृश्य उसे घृणास्पद लगा। यह कोई कार्रवाई का आह्वान नहीं था। यह तो एक तमाशा था। मुट्ठी भर लोग उसके देश की वर्दी को कलंकित कर रहे थे, श्वेत मोहल्लों में अश्वेतों के बसने के बारे में चिल्ला रहे थे, न कि भेड़ियों के श्रेष्ठ नस्ल के सिद्धांतों के बारे में। इन निकम्मों को देखो, उडो ने सोचा। नेता चिल्लाया, "मैं मानता हूँ कि कोई होलोकॉस्ट नहीं हुआ था!" जैसे ही उसने ऐसा कहा, एक प्रदर्शनकारी चिल्लाया, "मार्टिन, नरक में जाओ!"

उडो के बगल में खड़ा एक आदमी झुककर इशारा करते हुए बोला, "क्या आपको पता है कि उसके पिता यहूदी हैं?"

“क्या?” उडो ने कहा।

“वैन पर बैठा वो छोटा लड़का, नेता है। उसके पिता यहूदी हैं। वो वहाँ ऊपर क्या कर रहा है?”

उडो गुस्से से आग बबूला हो गया। यह आखिरी अपमान था। एक यहूदी का बेटा? वर्दी पहने हुए? वह पुलिसकर्मियों के बीच से रास्ता बनाते हुए वैन की ओर बढ़ा, जो चीखते-चिल्लाते अश्वेत युवकों से जूझ रहे थे। वह करीब पहुंचा और उस छोटे कद के धोखेबाज से उसकी नज़रें मिलीं। उसने मुंह से आवाज़ निकालकर चिल्लाते हुए कहा: “नीचे बैठ जाओ! तुम शर्मनाक हो!”

उन्हें कभी मौका ही नहीं मिला। दशकों से न सुने गए दो शब्दों ने उनके क्रोध को शांत कर दिया, ये शब्द इतने अप्रत्याशित थे कि वे स्रोत को देखने के लिए मुड़ने से खुद को रोक नहीं पाए।

“यूडीओ ग्राफ!”

वहाँ, पार्क के उस पार, एक लंबा, दुबला-पतला आदमी खड़ा था, जिसका चेहरा लगभग पागलों जैसा था। उडो ने उस चेहरे को पहचान लिया, अब वह बूढ़ा हो चुका था, किशोर नहीं था। भाई। सेबेस्टियन। लेकिन मैंने उसे गोली मारी थी! वह ज़िंदा कैसे है?

“यूडीओ ग्राफ!”

उडो ने अपने हाथ जेब में डाले और तेज़ी से विपरीत दिशा में बढ़ गया। मैं यहाँ क्यों आया? यह लापरवाही थी। उसे बार-बार अपना नाम पुकारा जाता सुनाई दिया, लेकिन प्रदर्शनकारियों के शोरगुल और वैन के ऊपर खड़े उस छोटे आदमी की चीख-पुकार के बीच उसने उसे अनसुना करने की कोशिश की, जो चिल्ला रहा था, "अगर तुम नरसंहार चाहते हो, तो हम तुम्हें वही देंगे!" उडो का सिर दर्द कर रहा था। सोचो। सोचो। वह एक पुलिस अधिकारी के पास से गुजरा और उसके कंधे से लग गया।

“अधिकारी महोदय, पीछे एक पागल आदमी ‘उडो ग्राफ’ चिल्ला रहा है। उसके पास बंदूक है। मैंने उसे देखा है।”

पुलिस अधिकारी ने अपने एक साथी को पकड़ा और तेजी से भाग निकला, जबकि उडो अपने पैरों को हिलाता रहा, जल्दी-जल्दी चल रहा था लेकिन दौड़ नहीं रहा था,

सिर नीचे किए हुए, खुद से बातें कर रहा था, "ऊपर मत देखो, ऊपर मत देखो," ठीक वैसे ही जैसे उसने तैंतीस साल पहले उन रूसी सैनिकों के पास से गुजरते समय खुद से बातें की थीं। उस समय उसका गुस्सा उस पर हावी हो गया था, और उस झगड़ालू यहूदी ने उसे हरा दिया था। वह दोबारा हार नहीं मानेगा।

वह आगे बढ़ता रहा, पार्क से बाहर निकला और एक व्यस्त सड़क पार की। उसने एक बस को आते देखा, जिसे उसने इशारा करके रोका और उसमें चढ़ गया। उसने ड्राइवर को एक डॉलर का नोट दिया और खिड़की से दूर, पीछे की सीट पर तेज़ी से चला गया। बैठते ही उसे एहसास हुआ कि उसकी कमीज़, मोज़े और अंडरवियर पसीने से भीग चुके थे।

* * *

सेबेस्टियन सांस लेने के लिए झुका। चीखने से उसका गला खराब हो गया था। उसने गलियों में ऊपर-नीचे देखा, लेकिन उसे वह बूढ़ा आदमी कहीं नहीं दिखा। फिर भी। वह वही था। उसे पता था। उसका शक सही निकला था। नाज़ियों के फिर से उठने का ख्याल पूर्व शुत्ज़हाफ्टलागरफ्यूहरर के मन में घर कर गया था। वह झाड़ियों से बाहर निकल आया था।

सेबेस्टियन के दिमाग में तरह-तरह के विचार चल रहे थे। तीस साल से भी ज़्यादा समय से उसे डरावने सपने आते रहे, आधी रात को चीखें सुनाई देती रहीं, बदले की भावनाएँ सताने लगीं, और इस सब के बीच उसे कभी पता नहीं चला कि वह आदमी ज़िंदा भी है या नहीं ताकि उसे उसकी सज़ा मिल सके। लेकिन वह ज़िंदा था! मैंने उसे देखा! वही उभरा हुआ जबड़ा। वही कठोर आँखें जो ऑशविट्ज़ के प्रांगण में सेबेस्टियन को घूरती रहती थीं। उसके बालों का रंग भी वही था।

उसने पार्क में उडो का पीछा किया, लेकिन पुलिस ने सेबेस्टियन को पकड़ लिया और प्रदर्शनकारियों ने उसका रास्ता रोक दिया। यह सोचकर उसका मन उदास हो गया कि जीवन में एक बार मिलने वाला अवसर उसके हाथ से फिसल गया।

लेकिन दूसरे हिस्से को उसकी असली उंगलियां महसूस हो रही थीं। वे किसी ऐसी वस्तु पर पंजों की तरह जकड़ी हुई थीं जो उसे सुकून दे रही थी, उम्मीद की एक किरण जगा रही थी कि आखिरकार न्याय को एक मौका मिल सकता है।

वह एक कैमरा था।

और सेबेस्टियन ने कम से कम बीस तस्वीरें ली थीं।

उसने सबसे पहले हंटर को फोन किया।
वह अपनी खुशी को मुश्किल से ही रोक पा रहा था। "मैंने उसे ढूंढ लिया!" सेबेस्टियन ने कहना शुरू किया और फिर जो कुछ हुआ था उसका विस्तृत वर्णन किया। शिकारी प्रसन्न तो हुआ, लेकिन उसने संयमित प्रतिक्रिया देते हुए सेबेस्टियन को याद दिलाया कि शैतान को देखना और उसे पकड़ना दो अलग-अलग बातें हैं।
फिर भी, हंटर ने कहा कि तस्वीरें, सेबेस्टियन की प्रत्यक्षदर्शी गवाही के साथ मिलकर (यह देखते हुए कि उसने खुद लगभग दो साल उडो ग्राफ की यातनाओं के तहत बिताए थे), अमेरिकी अधिकारियों को कार्रवाई करने के लिए पर्याप्त होनी चाहिए। लेकिन उन्होंने सेबेस्टियन को आगाह किया कि यह याद रखना जरूरी है कि अमेरिकियों को एक पूर्व नाज़ी का पता लगाने में मदद करने के लिए, उन्हें यह स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है कि उन्होंने उसे शरण दी थी।
उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा, "सावधानी से आगे बढ़ें। यह जान लें कि आप किस पर भरोसा कर सकते हैं।"
सेबेस्टियन ने फोन काट दिया और अपने बालों में हाथ फेरते हुए, सिर खुजाते हुए, कनपटी रगड़ने लगा। जिस सबूत का वह इंतज़ार कर रहा था, वह आखिरकार मिल गया था, और अब उसे निर्देश दिया गया था, "सावधानी से आगे बढ़ो।"
उसने होटल के फ्रिज से वोदका की एक छोटी बोतल निकाली और पी ली। फिर उसने रिसेप्शन पर फोन किया और कैलिफोर्निया में कॉल लगाने के लिए कहा। उसने उन्हें एड्रेस बुक में लिखे हुए नंबर पढ़कर सुनाए। ये उसकी अब पूर्व पत्नी का आखिरी फोन नंबर था जो उसके पास था।

हॉलीवुड, 1980

"कृपया फिल्म शुरू करें।"
फिल्म को प्रोजेक्टर में उल्टा करके चलाया गया, जिससे लेंसों से होकर गुज़रती तेज़ रोशनी स्क्रीन पर बिखर गई। किसी तरह, इस प्रक्रिया के दौरान तस्वीर सीधी हो गई। हर सेकंड चौबीस फ्रेम प्रोजेक्ट किए गए, और हर फ्रेम तीन बार चमका, फिर भी दृश्य स्क्रीन पर सुचारू रूप से चलते रहे, मानो कलाकार आपके ठीक सामने हों। चलती-फिरती फिल्म देखने का हर पहलू किसी न किसी तरह का धोखा है। लेकिन यह बात मुझे समझ में आई, स्क्रीनिंग रूम में बैठे उस थके हुए आदमी को नहीं।
“रोशनी,” निको ने कहा।

“जी सर, क्षमा करें,” प्रोजेक्शनिस्ट ने कहा।

कमरा अंधेरा हो गया। फिल्म चलने लगी। तीन हफ़्तों में यह तीसरी बार था जब निको ने इसे अकेले देखा था। यह फिल्म, जो अभी रिलीज़ नहीं हुई थी, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एक जर्मन विदूषक की कहानी थी, जो अपने नशे में धुत व्यवहार के कारण एक नज़रबंदी शिविर में पहुँच जाता है। वहाँ वह कैद यहूदी बच्चों के लिए प्रदर्शन करता है। जब नाज़ी उसे बच्चों को हँसाते हुए देखते हैं, तो वे विदूषक का इस्तेमाल उन बच्चों को मौत के शिविरों की ओर जाने वाली ट्रेनों में चढ़ाने के लिए करते हैं। अपनी इच्छा के विरुद्ध, वह बार-बार ऐसा करता है। अंत में, अपने धोखे के लिए दोषी महसूस करते हुए, विदूषक खुद ऑशविट्ज़ जाता है और एक बच्चे का हाथ पकड़कर उनके साथ गैस चैंबर में प्रवेश करता है।

निको द्वारा वित्तपोषित यह फिल्म एक काल्पनिक रचना थी, लेकिन हर बार जब यह अपने अंत तक पहुंचती थी, तो उसे अपने शरीर में कंपकंपी महसूस होती थी।

"फिर से, महोदय?" प्रोजेक्शनिस्ट ने खत्म होने पर पूछा।

नहीं। इतना काफी है।

“यह दिल दहला देने वाला है, है ना?”

निको उठा और बूथ की तेज रोशनी की ओर देखा।

"क्या कहा आपने?"

“माफ़ कीजिए महोदय,” प्रोजेक्शनिस्ट ने धीमी आवाज़ में कहा। “क्षमा कीजिए।”

बत्ती बुझ गई, और उसके तुरंत बाद फिल्म के डिब्बे के गिरने की भद्दी आवाज़ सुनाई दी।

निको ने सिर हिलाया और वापस बैठ गया। यह प्रोजेक्शनिस्ट नया था और जाहिर तौर पर नियमों से अनजान था: स्क्रीनिंग प्रक्रिया के दौरान बोलना मना था, जब तक कि आपसे बात न की जाए।

निको को हॉलीवुड में "द फाइनेंसर" उपनाम मिल गया था, जिसका उच्चारण फ्रेंच तरीके से "फी-नैन्सी-ये" होता था। वह अब अपने व्यवसाय के सबसे शक्तिशाली लोगों में से एक थे। अभिनेताओं और निर्देशकों की चकाचौंध के बावजूद, हॉलीवुड में पैसा ही सब कुछ था, और फाइनेंसर के पास बाकी लोगों से कहीं ज़्यादा पैसा था। लेकिन अपने क्षेत्र के कई लोगों के विपरीत, वह लाइमलाइट से दूर रहते थे और फिल्मों के पूरा होने पर उन्हें निजी तौर पर देखना चाहते थे, न कि उनके प्रीमियर में

शामिल होना या उनके सेट पर जाना। उनकी ज़्यादातर फिल्मों ने अच्छा मुनाफा कमाया, जिसे उन्होंने नए प्रोजेक्ट्स में फिर से निवेश किया और और भी ज़्यादा मुनाफा कमाया।

चालीस की उम्र में भी, निको की गहरी नीली आँखें, लहराते सुनहरे बाल और लंबा, दुबला-पतला शरीर उस व्यवसाय में सबका ध्यान खींच लेता था जहाँ अच्छी शक्ल-सूरत मायने रखती है। लेकिन लोग उसे अक्सर नहीं देखते थे। वह अजीब समय पर आता था। वह देर तक रुकता था। उसके पास कोई सहायक नहीं था और वह अपना अधिकांश काम फोन पर ही करता था। वह कभी साक्षात्कार नहीं देता था। उसे अपना काम अपेक्षाकृत सरल लगता था। ऐसी कहानियाँ चुनो जिन्हें लोग सुनना चाहते हों। सुनिश्चित करो कि बजट उचित हो। आगे बढ़ो।

बीच-बीच में, वह कई दिनों तक गायब हो जाता था, और अक्सर उसके फोन का जवाब नहीं मिलता था। जब वह जवाब देता भी था, तो मनगढ़ंत कहानियां सुनाता था: टखने में चोट, न्यूयॉर्क की अचानक यात्रा, कार में कोई खराबी। लोग अपॉइंटमेंट के लिए महीनों इंतजार करते थे। अगर वह अपॉइंटमेंट रद्द कर देता, तो उन्हें और कई महीने इंतजार करना पड़ता था।

अब वह सफेद स्क्रीन को घूर रहा था, और अभी-अभी देखी गई फिल्म के आखिरी दृश्य के बारे में सोच रहा था, जिसमें एक जोकर गैस चैंबर में जा रहा था। उसने अपनी कनपटी को रगड़ा, फिर आर्मरेस्ट पर तीन बार हाथ से थपथपाया।

“मैंने अपना मन बदल लिया है,” उसने प्रोजेक्शनिस्ट से कहा। “इसे फिर से चलाओ।”

अब, मैं आपका सवाल सुन सकता हूँ: क्या फैनी को कभी निको मिला?

उत्तर आपके सामने ही है। लेकिन इसे प्रकट होने में बारह साल लग गए। इस दौरान उठाए गए महत्वपूर्ण कदम इस प्रकार हैं:

1968

कैटलिन कराडी से मिलने के बाद, फैनी यूरोप लौट आई। टिकट संबंधी प्रतिबंध, पासपोर्ट संबंधी कागजी कार्रवाई और आगे पैसे की कमी के कारण न्यूयॉर्क से आगे यात्रा करना उसके लिए असंभव हो गया था।

उसने फिल्म से संबंधित पोस्टकार्ड अपने पास रखे।

1969

फैनी ने हंगरी के अपने गांव में गिजेला से दोबारा मुलाकात की और गर्मियों के दौरान उसके साथ रही, कैलेंडर पर 10 अगस्त की तारीख को चिह्नित करती रही।
उस दिन, लाल बालों वाला, रूखी त्वचा और गठीले शरीर वाला एक आदमी पैसों से भरा थैला लेकर आया। फैनी ने उसका सामना किया।
“तुम कौन हो? तुम्हें किसने भेजा है? ये पैसा कहाँ से आ रहा है?”
हर सवाल पर उसने सिर हिला दिया। जब फैनी ने ज़िद की, तो वह अपनी छोटी कार में बैठा और चला गया।

1970

फैनी इज़राइल गई, जहाँ उसकी बेटी रहती थी, और दोनों ने कई महीने साथ बिताए, अक्सर समुद्र किनारे, जो टिया को बहुत पसंद था। उन्होंने टिया की ग्रेजुएशन के बाद की योजनाओं और एक ऐसे युवक के बारे में बात की, जिससे वह मिली थी और जो सेना में भर्ती होने वाला था। कभी-कभी वे सेबेस्टियन के बारे में भी बात करती थीं। एक रात, समुद्र तट पर टहलते हुए, टिया ने पूछा, "क्या तुम कभी उसके पास वापस जाओगी?" और फैनी ने कहा कि उसे नहीं पता। टिया ने पूछा, "तुम दोनों के बीच क्या हुआ?" और फैनी ने आह भरकर कहा, "पहले हम दोस्त थे, फिर हम शरणार्थी बन गए, फिर हम माता-पिता बन गए, और अब हम अजनबी जैसा महसूस करते हैं।"

1971

फैनी हंगरी लौट आई और गिज़ेला के साथ रहने लगी, घर के कामों में उसकी मदद करती और गाँव में सैर के दौरान उसकी व्हीलचेयर को धकेलती। जब 10 अगस्त की सुबह लाल बालों वाला आदमी आया, तो फैनी तैयार थी। उसने फिर पूछा कि पैसा कहाँ से आएगा। जब उसने जवाब देने से इनकार कर दिया, तो वह दौड़कर उसकी कार में गई और आगे की सीट पर बैठ गई। "जब तक तुम मुझे नहीं बताओगे, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगी," उसने चिल्लाकर कहा।
वह आदमी कुछ पल तक उसे घूरता रहा, फिर कार वहीं छोड़कर चला गया।

1972

फैनी इज़राइल लौट आई, जहाँ उसकी बेटी और उसके नए पति ने अपने पहले बच्चे, एक बेटे का स्वागत किया। दंपति ने उसका नाम फैनी के पिता के नाम पर शिमोन रखा, जिससे फैनी एक ही समय में खुश और दुखी दोनों थी।

1973

अपनी बेटी के आग्रह पर, फैनी नाज़ियों के शासनकाल में हुए अत्याचारों के यहूदी पीड़ितों के स्मारक पर गईं। नाज़ियों के शासनकाल में हुए अत्याचारों के लिए अब आम तौर पर इस्तेमाल होने वाला शब्द "होलोकॉस्ट" है। यह ग्रीक शब्द होलोकास्टन से आया है, जिसका अर्थ है जलाकर बलिदान देना। फैनी ने कहा कि यह शब्द अनुचित है। जब टिया ने पूछा कि वह इसके लिए कौन सा शब्द इस्तेमाल करेंगी, तो फैनी ने कहा कि इसके लिए कोई शब्द नहीं है, और न ही कभी होना चाहिए।

यरूशलम के पश्चिमी हिस्से में एक पहाड़ी पर याद वाशेम नामक स्मारक बनाया गया था। वहाँ फैनी ने शिविरों की विस्तृत तस्वीरें देखीं। उसने बीमारों, भूखों से व्याकुल लोगों, कमजोरों और मृतकों की तस्वीरें देखीं। कुछ तस्वीरों के साथ-साथ जीवित बचे लोगों के बयान भी छपे थे, जिनमें उन्होंने अपने कष्टों का विस्तृत वर्णन किया था।

उसने एक माँ की कहानी पढ़ी जिसने अपने सात वर्षीय बेटे को खो दिया था। उसका नाम योसी था। नाज़ी सैनिकों ने उसे उसकी गोद से छीन लिया था। किसी कारणवश, इससे फैनी को बुडापेस्ट से बाहर की मौत की यात्रा याद आ गई, वह लड़का जो कमरबंद लिए बर्फ में मर गया था। क्या पता योसी भी वैसा ही था? क्या पता फैनी को उस बच्चे के भाग्य का पता था लेकिन उसकी बेचारी माँ को नहीं?

वो रोने लगी, पहले धीरे-धीरे, फिर बेकाबू होकर। “क्या हुआ, माँ?” टिया ने पूछा। “क्या बात है?” लेकिन फैनी बस अपना सिर हिला सकी। ट्रेन में दाढ़ी वाले आदमी ने कहा था, “पूरी दुनिया को बताओ कि यहाँ क्या हुआ।” लेकिन वो अभी उस सच को बोल नहीं सकती थी। वो जो हुआ था उसके बारे में किसी से भी बात नहीं करना चाहती थी, अपनी बेटी से भी नहीं।

1974

फैनी हंगरी लौट गई। गिज़ेला, जो अब साठ वर्ष से अधिक उम्र की थीं, का स्वास्थ्य खराब हो रहा था। वह बहुत सी बातें भूलने लगी थीं। सर्दियों की रातों में, वह आग के पास बैठकर फैनी के हाथ पकड़े रहतीं और कभी-कभी दूसरे कमरे की ओर मुड़कर अपने बिछड़े हुए पति से बात करतीं, और उनसे कहतीं, "बाहर से और लकड़ी ले आओ, हमारी बेटी को ठंड लग जाएगी।"

1975

एक सुबह, अपने बिस्तर पर लेटी हुई, गिजेला ने फैनी से अपनी आंखों पर बंधी पट्टी हटाने के लिए कहा।

"क्यों?"
क्योंकि मैं यीशु से मिलने जा रहा हूँ।
"कृपया मुझे छोड़कर मत जाओ। अभी नहीं।"
गिज़ेला ने उसका हाथ पकड़ लिया। “जब हम अलग थे, तब भी मैंने तुम्हें कभी नहीं छोड़ा। अब मैं तुम्हें कैसे छोड़ सकती हूँ?”
शरद ऋतु की धूप खिड़की से छनकर अंदर आ रही थी।
“ओह, गिज़ेला,” फैनी ने लड़खड़ाते शब्दों में कहा, “मैं सोचती रहती हूँ कि अगर मैं कभी तुम्हारे जीवन में न आती तो तुम बेहतर स्थिति में होती।”
बुजुर्ग महिला मुश्किल से अपना सिर हिला पाई।
"तुम्हारे बिना, मैं बहुत पहले ही मर गया होता।"
उसने फैनी की उंगलियों को दबाया।
“कृपया? मेरी आँख?”
फैनी ने धीरे से अपनी पट्टी हटाई। हालाँकि घाव को देखना कष्टदायक था, फिर भी उसने नज़र नहीं हटाई। गिज़ेला ने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया, मानो वह ऊपर किसी चीज़ को निहार रही हो।
“वह तुम्हारा इंतजार कर रहा है,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
“कौन?” फैनी ने कहा।
गिजेला ने मुस्कुराते हुए अपनी अंतिम सांस ली और इस दुनिया से विदा हो गई।

1976

अगस्त में, जब लाल बालों वाला आदमी आया, तो फैनी बरामदे में बैठी थी। जैसे ही वह थैला लेकर पास आया, उसने अपनी गोद में रखा कंबल उठाया और उसके सामने एक पिस्तौल रखी हुई थी जो सीधे उसकी ओर तनी हुई थी।
मुझे यह जानना है कि यह पैसा कौन भेज रहा है। अभी के अभी।
लाल बालों वाले उस आदमी ने बैग नीचे गिरा दिया और अपनी बाहें ऊपर उठा लीं। वह एक कदम पीछे हट गया।
“मुझे नहीं पता,” उसने कहा। “सच कहूँ तो। मुझे भी बाकी सब लोगों की तरह साल में एक बार ही वेतन मिलता है। उसने मुझे चेतावनी दी है कि अगर मैंने कभी कुछ कहा तो पैसा बंद हो जाएगा।”
आपको किसने चेतावनी दी थी?

जिप्सी।
"क्या यह उसका पैसा है?"
मुझे ऐसा नहीं लगता। जिस तरह से वह कपड़े पहनता है, उससे तो बिल्कुल नहीं।
"तो कौन?"
"अगर मुझे अनुमान लगाना हो, तो मैं कहूंगा कि यह वह पैसा है जिसके लिए मेरे पिता ने अपनी जान दी।"
"आपके पिता?"
“नाज़ियों ने उनके चर्च में बक्से छिपा दिए थे, जिसके बाद उन्हें गोली मार दी गई। मुझे कभी पता नहीं चला कि उन बक्सों के अंदर क्या था। लेकिन एक साल बाद, दो आदमी उन्हें लेने वापस आए। उनमें से एक वही आदमी था जिसने मेरे पिता की हत्या की थी।”
"जहां वह अब है?"
मैंने उसे गोली मारकर मार डाला।
और दूसरा वाला?
"मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा।"
“क्या उसने बक्से ले लिए?”
"हाँ।"
"वह उनमें मौजूद चीज़ों को क्यों दे देगा?"
"मुझें नहीं पता।"
"क्या आप उसका वर्णन कर सकते हैं?"
उस आदमी ने सिर हिलाया। “बहुत समय पहले की बात है। वह नाज़ी जैसा दिखता था। जवान। मुझसे ज़्यादा उम्र का नहीं।”
फैनी उस रात के बारे में सोचने लगी जब उसने निको को डेन्यूब नदी पर देखा था। वह एक नाज़ी जैसा दिखता था। जवान। मुझसे ज़्यादा उम्र का नहीं।
“मैं भी उसे मार सकता था,” उस आदमी ने कहा। “लेकिन मैंने नहीं मारा। शायद इसीलिए मुझे भी पैसे मिल रहे हैं।”

1977

फैनी ने अपने पर्स में कैटलिन कराडी के पोस्टकार्ड रखकर विमान में सवार हो गई। वह जवाब पाने की उम्मीद में अमेरिका जा रही थी।

लॉस एंजिल्स पहुँचने पर, फैनी ने पार्किंग में ताड़ के पेड़ वाले एक मंज़िला मोटल में एक कमरा किराए पर लिया। पहले दिन, उसने फ्रंट डेस्क के पीछे बैठे एक आदमी को पोस्टकार्ड दिखाए और पूछा कि क्या वह जानता है कि ये फिल्में किसने बनाई हैं। जब उसे नहीं पता था, तो उसने गलियारे में झाड़ू लगा रही महिला से पूछा। जब उसे भी नहीं पता चला, तो फैनी सड़क पार करके एक ढाबे के मालिक से पूछने गई। हालाँकि उसे फिल्मों के बारे में कुछ नहीं पता था, लेकिन जब उसने फैनी का लहजा सुना तो उसने कहा, "ईसाई एलिनिदा?" (क्या आप ग्रीक हैं?) और फैनी ने कहा, "नाई" (हाँ)। उनकी बातचीत खत्म होने तक, फैनी को कॉफी, अंडे और पैनकेक बनाने का काम मिल गया था। उसने उस काम से अपनी अंग्रेज़ी सुधारी। और उसने अपनी अंग्रेज़ी का इस्तेमाल फिल्म उद्योग के कामकाज को सीखने के लिए किया।

1978

जब आखिरकार उसे पता चला कि उन फिल्मों को बनाने वाला कौन था—एक रहस्यमय, शायद ही कभी दिखने वाला आदमी, जिसका उपनाम गुइडिली था—तो वह उस स्टूडियो में गई जहाँ वह कथित तौर पर काम करता था। उसने अपनी सबसे खूबसूरत पोशाक पहनी, इमारत में प्रवेश किया और लॉबी में रिसेप्शनिस्ट से पूछा कि क्या कोई नौकरी उपलब्ध है।

उसने आठ महीने तक हर हफ्ते ऐसा किया, और हर बार उसे मना कर दिया गया।

1979

एक वसंत ऋतु के दिन, फैनी की साप्ताहिक यात्रा के दौरान, स्टूडियो की रिसेप्शनिस्ट, जो उस समय तक उसे पसंद करने लगी थी, मुस्कुराई जब फैनी ने पूछा कि क्या कोई नौकरी निकली है।

“तुम्हारी किस्मत अच्छी है,” उसने कहा। एक प्रशिक्षण पद खाली हुआ था। शुरुआत में वेतन कम था, लेकिन इससे करियर में आगे बढ़ने का मौका मिल गया। क्या फैनी को इसमें दिलचस्पी थी?

अगले दिन उसने काम शुरू किया। उसे उम्मीद थी कि गलियारे या लॉबी में उसकी मुलाकात उस आदमी से होगी जिसे वह निको समझ रही थी, लेकिन जल्द ही उसे पता चला कि किसी को भी उससे मिलने की इजाज़त नहीं थी। वह एक निजी द्वार से आता-जाता था। वह कभी कर्मचारियों से नहीं मिलता था। फैनी सोचने लगी कि क्या उसकी सारी मेहनत बेकार गई।

1980

एक साल की प्रशिक्षण अवधि पूरी करने के बाद, फैनी को उसके प्रशिक्षणदाता रोड्रिगो ने बताया कि वह स्वास्थ्य कारणों से सेवानिवृत्त हो रहा है। उसने फैनी को एक होशियार छात्रा होने पर बधाई दी और कहा कि अब वह पदोन्नति के लिए तैयार है।

"आपका क्या मतलब है?"

आप मेरी जगह किसी और को रख रहे हैं।

फैनी को गहरी सांस लेनी पड़ी। वह जानती थी कि इसका क्या मतलब है।

“बस याद रखना,” रोड्रिगो ने चेतावनी दी। “हमेशा समय पर रहना। वह जो भी कहे, ठीक वही करना। और उससे तब तक बात मत करना जब तक वह तुमसे बात न करे।”

उसने सिर हिलाया। और नवंबर में, उसने आधिकारिक तौर पर पदभार संभाल लिया। फाइनेंसर के निजी प्रोजेक्शनिस्ट के रूप में।

चार टकराव

आप सच्चाई का जितना सामना करेंगे, उतना ही परेशान होते जाएंगे। लेकिन अगर आप इस पुरानी कहावत पर यकीन करते हैं कि सच्चाई आपको आज़ाद कर सकती है, तो क्या मैं ही वो नहीं हूँ जिसकी आपको गुप्त रूप से चाहत है?

हमारे चारों पात्रों को, वर्ष 1980 में, अंततः उन सच्चाइयों का सामना करना पड़ा, जो लंबे समय से उन पर साया डाले हुए थीं।

इसके बाद उन्होंने जो किया, उससे हमारी कहानी के अंत की पृष्ठभूमि तैयार होती है।

सेबेस्टियन ने अपने उत्पीड़क का सामना किया।

उडो ग्राफ को दोबारा देखकर, उसके दिमाग में और कुछ नहीं आ रहा था। उसने जो तस्वीरें ली थीं, वे एकदम साफ़ और स्पष्ट थीं, और जब हंटर द्वारा प्राप्त एक पुरानी तस्वीर से उनकी तुलना की गई, तो समानता स्पष्ट थी। इतने वर्षों के बावजूद, शुत्ज़हाफ्टलागरफ्यूहरर में ज़्यादा बदलाव नहीं आया था।

लेकिन हंटर सही था। शैतान को देखना और उसे पकड़ना दो अलग-अलग बातें थीं। अमेरिकी राजनेताओं से कई बार संपर्क करने के बावजूद, कोई भी यह मानने को तैयार नहीं था कि एक उच्च पदस्थ नाज़ी ने संयुक्त राज्य अमेरिका में शरण ली है।

सेबेस्टियन खाली हाथ वियना लौट आया।

उन्होंने महीनों तक अपना मामला तैयार करने में बिताए, हंटर द्वारा एकत्र किए गए

दस्तावेज़ों के माध्यम से ग्रैफ के बारे में हर संभव जानकारी जुटाई। उन्होंने कई बार न्यूयॉर्क की यात्रा की, विभिन्न यहूदी समूहों से मुलाकात की, जो यह जानकर उतने ही हैरान थे कि पूर्व एसएस अधिकारी उनके देश में छिपे हो सकते हैं। वे यहाँ कैसे पहुँचे? उन्हें कौन पनाह दे रहा है?

अंततः, 1980 की शुरुआत में, सेबेस्टियन की मुलाकात एक ऐसी महिला से हुई, जिसके बहनोई अमेरिकी सीनेटर थे और संयोग से यहूदी थे। उस सीनेटर ने कैपिटल के पास स्थित अपने कार्यालय में सेबेस्टियन से मिलने की सहमति दी।

सेबेस्टियन को हौसला मिला। अगर वह किसी उच्च पदस्थ अमेरिकी राजनेता को ग्राफ का पीछा करने के लिए मना सकता है, तो निश्चित रूप से अमेरिकी सरकार उसे ढूंढ लेगी।

अपनी मुलाकात से एक रात पहले, वाशिंगटन डी.सी. के एक होटल के कमरे में, सेबेस्टियन ने रूम सर्विस से मंगवाया चिकन सैंडविच खत्म किया। फिर, उसने एक बार फिर कैलिफोर्निया में फैनी के नंबर पर कॉल किया। उसने कई बार कोशिश की थी, लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया था। इस बार, कई बार घंटी बजने के बाद, उसने फोन उठाया।

“यह मैं हूँ,” सेबेस्टियन ने कहा।

फैनी हैरान लग रही थी। "तुम कहाँ हो? तुम्हारी आवाज़ तो बहुत पास लग रही है।"

मैं वाशिंगटन डी.सी. में हूँ।

"क्यों?"

“ग्राफ। ऑशविट्ज़ से। मैं प्रगति कर रहा हूँ।”

उसने उसकी आह सुनी।

"हम उसे ढूंढ निकालेंगे, फैनी, मैं कसम खाता हूँ।"

"मुझे उम्मीद है कि तुम ऐसा करोगे, सेबेस्टियन।"

"हम ऐसा करेंगे।"

"लेकिन कृपया।"

"क्या?"

"ध्यान से।"

जब वह इस तरह की बातें कहती थी, तो उसे ऐसा लगता था कि भले ही उन्होंने पाँच साल पहले तलाक के कागजात पर हस्ताक्षर कर दिए थे, फिर भी वह उससे प्यार

करती है। उसकी आवाज़ नरम पड़ गई।
“आप कैसे हैं?” उसने पूछा।
"मैं ठीक हूँ।"
"क्या तुम अभी भी उस भोजनालय में काम कर रहे हो?"
"मेरे पास एक नया काम है।"
"कहाँ?"
"एक फिल्म स्टूडियो में।"
वाह! क्या सब ठीक चल रहा है?
“हां। क्या आपने टिया से बात की है?”
“जब से मैं यहाँ आया हूँ, तब से नहीं। यह बहुत महंगा है। फोन कॉल और समय का अंतर।”
“तुम्हें उसे फोन करना चाहिए। उसे बताना चाहिए कि तुम ठीक हो।”
"मैं करूँगा।"
"धन्यवाद।"
“फैनी, सुनो। अगर यह काम खत्म होने के बाद मैं तुमसे मिलने आऊं तो कैसा रहेगा? मैं कभी कैलिफोर्निया नहीं गया। मुझे नहीं पता कि मैं कब इतना करीब आ पाऊंगा।”
वाशिंगटन कैलिफोर्निया के पास नहीं है।
“हां। मुझे पता है। लेकिन। आपको पता है।”
"हाँ।"
"इसलिए हां?"
एक विराम।
"नहीं।"
उडो ने अपने अतीत का सामना किया।
अब इस बात से इनकार करना नामुमकिन था। वे उस पर नज़र रख चुके थे। हालाँकि वह वाशिंगटन, डी.सी. लौट आया था और अपना ढोंग फिर से शुरू कर दिया था—बारबेक्यू पर स्टेक ग्रिल करना, पत्नी और पड़ोसियों के साथ ड्रिंक करना—लेकिन कुछ तो बदल गया था। उसका अतीत उतना दबा हुआ नहीं था जितना वह मानता था। ब्रदर और उसके तीखे यहूदी मुख ने यह साबित कर दिया था।
उडो अब सतर्क हो गया था। उसके अंदर का सैनिक जागृत हो चुका था।

शिकागो रैली के बाद के हफ्तों में, उसने अमेरिका में रह रहे दो पूर्व एसएस अधिकारियों को गुप्त रूप से फोन किया, जिनमें से एक मैरीलैंड में और दूसरा फ्लोरिडा में रहता था। उसने उनसे पूछा कि क्या वे सेबेस्टियन क्रिस्पिस नाम के इस यहूदी को जानते हैं। दोनों में से कोई भी नहीं जानता था। लेकिन उनके पास उसके बारे में जानकारी जुटाने के तरीके थे। हालांकि, दोनों ने आश्चर्य व्यक्त किया कि उडो उस रैली में गया ही क्यों था।

उनमें से एक ने पूछा, "तुम क्या सोच रहे थे?"

मैं देखना चाहता था कि वे तैयार हैं या नहीं।

“वे हमारे जैसे नहीं हैं, उडो। वे नकल तो करते हैं, लेकिन उनमें दृढ़ विश्वास की कमी है।”

उन्हें हमारे नेतृत्व की जरूरत है।

“सहमत हूँ। लेकिन हमारी शर्तों पर। अखबार के पत्रकारों के लिए किसी तमाशे के रूप में नहीं। हम इस तरह से काम नहीं करते।”

"मान गया।"

"आप करो?"

"हाँ।"

"शायद हमें फोन पर बात नहीं करनी चाहिए।"

"क्यों नहीं?"

“लाइनें। वे अभी सुन रहे होंगे। अगली बार हमारे मध्यस्थ का इस्तेमाल करना।”

"सभी अधिकार है।"

उडो ने गुस्से से आग बबूला होकर फोन काट दिया। इतने सालों की सावधानी के बाद एक लापरवाह कदम? वह सब कुछ बर्बाद कर सकता था। उसका सहकर्मी सही था। सावधानी बरतना ज़रूरी था।

लेकिन अमेरिका एक विशाल देश था। वहाँ किसी एक व्यक्ति को ढूँढ़ना बहुत मुश्किल था। उसे इस बात से तसल्ली मिली। और हंटर अब उतना शक्तिशाली नहीं रहा था जितना पहले था। उडो ने सुना था कि उसका पैसा खत्म हो रहा है।

कई महीने बीत गए। कोई उसकी तलाश में नहीं आया। उडो ने इस समय का सदुपयोग नाज़ी हंटर के अभियानों की छानबीन करने में किया। उसे पता चला कि यहूदी क्रिस्पिस उस बूढ़े आदमी का शीर्ष लेफ्टिनेंट बन गया था। ऑस्ट्रिया में उडो के

संपर्कों ने उसे बताया कि क्रिस्पिस वियना के एक अपार्टमेंट में अकेला रह रहा था। यह निराशाजनक था। घर में परिवार की मौजूदगी हमलावर को कुछ हद तक फायदा देती है। किसी को धमकाया जा सकता है या बंधक बनाया जा सकता है।

1980 की शुरुआत में, उडो को ऑस्ट्रिया से एक संदेश मिला कि क्रिसपिस वियना छोड़कर संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए हैं। किसी को नहीं पता था कि वे कहाँ और किसलिए गए हैं। फिर एक सुबह, उडो सीनेटर कार्टर के कार्यालय गए और इमारत के गोल गुंबद में सुरक्षा गार्ड के पास से गुज़र रहे थे। जैसे ही उन्होंने अपना कार्ड दिखाया, उन्होंने प्रवेश की अनुमति के लिए इंतज़ार कर रहे आगंतुकों की कतार पर एक नज़र डाली। उनका खून जम गया।

वह रहा। यहूदी! फिर से! उसने ग्रे रंग का सूट पहना हुआ था और वह डेस्क की ओर बढ़ रहा था। उसने अपना सिर उडो की ओर घुमाया और एक पल के लिए दोनों की नज़रें मिलीं, इससे पहले कि उडो तेज़ी से मुड़ा और गलियारे में भाग गया। जैसे ही दरवाज़ा बंद होने वाला था, वह भीड़ भरी लिफ्ट में घुस गया। उसने बटन ढूंढने की कोशिश की और उसे तीन बार दबाया। उसने नीचे देखा, अपने आस-पास के लोगों से नज़रें हटा लीं।

वह यहाँ क्या कर रहा है? उसे क्या पता है?

फैनी ने अपनी भावनाओं का सामना किया।

जिस दिन उसे पता चला कि उसका प्रमोशन हो रहा है, वह काम पर देर तक रुकी रही और घर जाने वाली अपनी रोज़ की बस छूट गई। अगली बस का इंतज़ार करते हुए उसने पार्किंग लॉट के पीछे से एक पुरानी कार निकलते हुए देखी, और जब वह एक ट्रैफिक सिग्नल पर रुकी, तो उसका गला भर आया।

वो। गाड़ी चलाने वाला आदमी। बिल्कुल उसी की तरह दिख रहा था। हाँ, बड़ा हो चुका, पर निको। वही लड़का जो स्कूल में उसके आगे बैठता था। क्लेइसौरास स्ट्रीट की तंग जगह में बैठा लड़का। डेन्यूब नदी पर वो किशोर, जिसने बेहोश होने से पहले उसका नाम पुकारा था।

उसके मन का एक हिस्सा चाहता था कि वह दौड़कर उसकी कार के पास जाए, उसकी खिड़की पर जोर से दस्तक दे और चिल्लाए, "मैं फैनी हूँ! तुम क्या कर रहे हो? तुम दूसरा नाम क्यों इस्तेमाल कर रहे हो?"

लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। उसे पक्का यकीन करना था। वह अगली रात वापस

आई, इस बार उसने रेस्टोरेंट में अपने पुराने बॉस से गाड़ी उधार ली। जब पुरानी कार फिर से पार्किंग से निकली, तो वह उसके पीछे-पीछे एयरपोर्ट के पास एक अपार्टमेंट बिल्डिंग तक गई, जहाँ ड्राइवर ने गाड़ी पार्क की और अंदर चला गया। अँधेरा था और फैनी को ज़्यादा कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वह सुबह वापस आई। कार अभी भी वहीं थी। अगले दिन भी वही हाल था। अगले दिन भी वही हाल था।

यह बात समझ से परे थी। एक ताकतवर व्यापारी इस गरीब मोहल्ले में क्यों रह रहा होगा? उसे लगने लगा कि उसने कोई गलती कर दी है, शायद उसकी कल्पना ही इस सब पागलपन की वजह है, शायद सेबेस्टियन से नाखुशी ने निको को, उसके पहले प्यार को, उस आदमी को जिसने शायद उसकी जान बचाई थी, हर समस्या का हल बना दिया है। यह सब एक बेवजह का ध्यान भटकाने वाली बात थी। उसे शर्मिंदगी महसूस हुई, बचकानापन लगा।

अगली बार जब वह उस अपार्टमेंट बिल्डिंग के पास से गुज़री, तो उसने खुद से वादा किया कि यह आखिरी बार होगा। कार अभी भी वहीं खड़ी थी। उसने स्टीयरिंग व्हील पर मुट्ठियाँ पटकीं। उसने टिया के बारे में सोचा। उसने सेबेस्टियन के बारे में सोचा। उसे घर वापस जाना चाहिए। हवा का पीछा करना बंद करो।

उसने टर्न सिग्नल जलाया। तभी अपार्टमेंट बिल्डिंग से एक आकृति निकली। उसने गहरी सांस ली। वह रहा। उसके हाथ में एक पुराना सूटकेस था, उसने पैंट और सफेद टी-शर्ट पहनी हुई थी। दिन की रोशनी में उसका चेहरा साफ दिखाई दे रहा था, और वह बिल्कुल उसी लड़के जैसा लग रहा था जिसे वह याद करती थी, बस अब वह प्यारा नहीं बल्कि आकर्षक था, और उसकी आंखों के आसपास थोड़ी झुर्रियां पड़ गई थीं। उसका पतला शरीर चुस्त और तंदुरुस्त था, और यह मानना मुश्किल था कि वह चालीस के दशक के अंत में होगा, उससे सिर्फ एक साल छोटा।

वह अपनी कार में बैठ गया, और फैनी उसके पीछे-पीछे घुमावदार सड़कों से गुज़रती हुई आगे बढ़ी, फिर एक राजमार्ग पर चढ़ गई और लगभग एक घंटे तक यातायात से जूझते हुए एक उपनगरीय इलाके में जाकर रुकी। एक बार फिर, फैनी को लगा कि कहीं उसकी कल्पना वास्तविकता से कहीं आगे तो नहीं निकल गई।

लेकिन इसके बाद जो हुआ उससे सारे संदेह दूर हो गए।

गाड़ी होम ऑफ पीस मेमोरियल पार्क नामक यहूदी कब्रिस्तान में मुड़ी। वह आदमी पानी की बोतल और कपड़ों से भरा थैला लिए गाड़ी से उतरा। वह धीरे-धीरे एक

पहाड़ी पर चढ़ते हुए पुरानी कब्रों के एक हिस्से तक पहुँचा, जहाँ वह घुटनों के बल बैठ गया और कब्रों को साफ करने लगा।

तभी फैनी को पता चला। उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसे सैलानिका के कब्रिस्तान में बिताई वो दोपहर याद आई, जब उसने, निको और सेबेस्टियन ने परिवार के सदस्यों की कब्रों को साफ किया था, जिसे लाज़ार ने "सच्ची और प्रेमपूर्ण दया" कहा था। और कैसे उन तीनों में से निको ही अकेला खड़ा हुआ, अजनबियों की कब्रों तक गया और बोला, "चलो," और फैनी और सेबेस्टियन को अपने साथ आने के लिए प्रेरित किया। ये वो पहला पल था जब उसे याद आया कि उसने उस लड़के की कोमल पवित्रता पर आश्चर्य जताया था जिसे वे चियोनी कहते थे। और अब उसे एहसास हुआ कि निको क्रिस्पिस को खोजने के इस लंबे और घुमावदार सफर में उसे न सिर्फ उसका दिमाग खींच रहा था।

यह उसका दिल था।

निको का सामना एक जानी-पहचानी मुस्कान से हुआ।

जब आप हर बात पर झूठ बोलते हैं, तो आपका कोई अस्तित्व नहीं रह जाता। और निको, या नेट, या मिस्टर गुइडिली, या फाइनेंसर, कैलिफोर्निया में एक अलग-थलग जीवन जी रहे थे। अविवाहित। कोई संतान नहीं। कोई रिश्तेदार नहीं। कोई सच्चा दोस्त नहीं। उन्होंने अपने साथियों से कहा कि उन्हें औपचारिकता पसंद है, वे उन्हें "सर" या "मिस" कहकर संबोधित करते थे और उनसे भी ऐसा ही करने का अनुरोध करते थे।

जीवन में कोई भरोसेमंद व्यक्ति न होने के कारण, उसके दिन व्यर्थ के झूठों में बीतते थे। उसने डाकिया से कहा कि वह स्कूबा डाइविंग कर सकता है। उसने कैशियर से कहा कि वह एक अकाउंटेंट है। जब बैंक कर्मचारी ने उससे पूछा कि उसका दिन कैसा बीत रहा है, तो उसने कहा कि वह अपने बच्चों को स्कूल से लेने जा रहा है। उसने उनके नाम भी बताए: अन्ना और एलिज़ाबेथ।

यह सब उसकी मानसिक स्थिति का लक्षण था, जो उम्र के साथ और भी बिगड़ती जा रही थी। निको खुद को डीलर बताकर आर्ट गैलरी में घुस जाता था। वह सस्ती प्रॉपर्टी देखता था, फिर अपनी दौलत के बावजूद कहता था कि वह उसे खरीद नहीं सकता। कभी-कभी वह जर्मन बीयर बार में जाकर खुद को हाल ही में आया अप्रवासी बताता था।

वह कभी ग्रीक या लाडिनो नहीं बोल पाता था, जो उसकी बचपन की भाषाएँ थीं,

लेकिन हर शनिवार सुबह, निको शहर के दूसरी ओर बस से जाता और एक ऑर्थोडॉक्स आराधनालय से तीन ब्लॉक दूर उतर जाता। वहाँ वह सिर पर एक तल्लीत (यहूदी धार्मिक वस्त्र) रखकर, एक घंटे तक लगातार आगे-पीछे झूलते हुए हिब्रू में प्रार्थना करता। उसने क्या प्रार्थना की, यह मैं निको और ईश्वर के बीच की बात के रूप में छोड़ता हूँ। कुछ बातें हमारे लिए मायने नहीं रखतीं।

वह जालसाजी की कला में निपुण बना रहा, हालांकि अब इसका कोई खास फायदा नहीं था। उसने फर्जी नामों से क्रेडिट कार्ड के लिए आवेदन किया, लेकिन कार्ड मिलने के बाद कभी उनका इस्तेमाल नहीं किया। उसके पास तीन अलग-अलग राज्यों के तीन ड्राइविंग लाइसेंस थे। उसके पास चार अलग-अलग देशों की नागरिकता वाले पासपोर्ट थे। उसने एक दर्जन बैंकों में अपने सुरक्षित खाते रखे हुए थे।

हॉलीवुड के एक समृद्ध इलाके में उनका एक आलीशान घर था, लेकिन वे ज्यादातर हवाई अड्डे के पास एक जर्जर अपार्टमेंट में सोते थे। वे अक्सर कम समय के नोटिस पर विदेश यात्रा करते थे और सबसे सस्ती सीटों पर सफर करते थे। वे अपने साथ एक पुराने सूटकेस के अलावा कुछ नहीं ले जाते थे, वही सूटकेस जिसमें वे पहली बार अमेरिका आए थे। वे अजनबियों को बताते थे कि वे जूते बेचने वाले हैं।

दशकों तक इस तरह के विकृत धोखे के बावजूद, निको ने कभी मदद नहीं मांगी। मदद का मतलब था अतीत की ओर देखना, और वह ऐसा बिल्कुल नहीं चाहता था। इसके बजाय, उसने अपने अतीत और वर्तमान के बीच रेत की बोरियों की एक के बाद एक परतें जमा कर दीं, मानो एक ऐसा बांध बना दिया हो जो यादों के विशाल सैलाब को भी रोक सके।

और फिर उनकी मुलाकात अपने नए प्रोजेक्शनिस्ट से हुई।

* * *

वह रोड्रिगो के साथ प्रशिक्षण ले रही थी, जो एक उम्रदराज मैक्सिकन व्यक्ति थे और कई वर्षों से इस पद पर कार्यरत थे। निको को रोड्रिगो पसंद थे क्योंकि वे बुद्धिमान और समय के पाबंद थे, शायद ही कभी कुछ मांगते थे और स्क्रीनिंग रूम में कभी भी फिल्म पर टिप्पणी नहीं करते थे। जब रोड्रिगो ने अपनी मधुमेह की वजह से सेवानिवृत्त होने की घोषणा की, तो निको ने लॉस एंजिल्स के शीर्ष एंडोक्रिनोलॉजिस्ट को हर महीने उनके घर आने की व्यवस्था की और उनके दीर्घकालिक उपचार का खर्च उठाने का वादा किया।

निको की नए प्रोजेक्शनिस्ट से पहली मुलाकात तब हुई जब उसने जर्मन विदूषक पर बनी फिल्म दिखाई। उस दिन दूसरी बार फिल्म देखने के बाद, वह प्रोजेक्शन रूम की सीढ़ियाँ चढ़ गया। उसने लंबे, काले घुंघराले बालों वाली एक महिला की पीठ देखी, जो झुककर एक कनस्तर को रख रही थी।

"याद?"

महिला रुक गई लेकिन पीछे मुड़कर नहीं देखी।

आपने उस फिल्म को दिल दहला देने वाली क्यों कहा?

वह महिला धीरे-धीरे उठी, फिर मुड़ी और मुस्कुराई। जब निको ने उसका चेहरा देखा, तो उसे एक ऐसी पीड़ा महसूस हुई जिसे उसके झूठ भी बयान नहीं कर सकते थे।

“क्योंकि ऐसा ही था, है ना?” उसने कहा।

क्या निको को पता था कि वह फैनी थी?

उसकी प्रतिक्रिया को देखते हुए यह कहना मुश्किल था। एक स्वस्थ दिमाग वाला व्यक्ति तो उसका नाम पुकारता, उसे गले लगा लेता। लेकिन निको का दिमाग लंबे समय से स्वस्थ नहीं था। वह हर सकारात्मक बात को भी मानने से इनकार करता था।

"यह तो बस एक फिल्म है," उसने नज़रें फेरते हुए कहा।

“क्या यह सच्ची कहानी है?” फैनी ने पूछा।

"नहीं।"

"यह सच लगा।"

"फिल्मों का यही काम होता है।"

जब फैनी ने अपने होंठ काटे तो उसने एक पल के लिए उस पर नज़र डाली। उसके सारे चेहरे के हाव-भाव बेहद जाने-पहचाने थे। सुंदर आकार का चेहरा, भूमध्यसागरीय रंगत, बड़ी-बड़ी चमकती आँखें। यहाँ तक कि उसके घने, काले और कंधों पर लहराते बाल भी। किशोरावस्था की फैनी को उसके वयस्क रूप में आसानी से पहचाना जा सकता था।

उन्होंने स्वीकार किया, "सच कहूं तो, मैंने ज्यादा फिल्में नहीं देखी हैं।"

तो फिर यहां काम क्यों करते हो?

मुझे लगता है कि मैंने सोचा था कि यह मेरे लिए अच्छा होगा।

“आह।”

उसने ज़मीन की ओर देखा। उसने अलमारियों की ओर देखा।

“अच्छा, धन्यवाद, महोदया। अगले सप्ताह मिलते हैं।”
वह जाने के लिए मुड़ा।
"महोदय?"
"हाँ?"
क्या तुम मेरा नाम नहीं जानना चाहते?
उसने उससे नजरें मिलाईं।
उन्होंने कहा, "यह जरूरी नहीं है।"

भाग VI

अंत की शुरुआत

जैसा कि अभिनेत्री कैटलिन कराडी ने कहा था, जीवन में जो कुछ भी घटित होता है, उसकी एक कीमत चुकानी पड़ती है। अब हम देखेंगे कि हमारे चारों किरदारों ने क्या कीमत चुकाई—उन सच्चाइयों के लिए जो उन्होंने बोलीं और उन झूठों के लिए जिन्हें उन्होंने सहा। उनके अंतिम कर्मों का हिसाब उसी दिन, उसी जगह पर चुकाना पड़ा जहाँ से हमारी कहानी शुरू हुई थी।
इन सभी को एक साथ लाने वाली बात 1983 की शुरुआत में सैलानिका के सबसे बड़े अखबार, मैकेडोनिया में प्रकाशित एक लेख थी:

युद्ध में मारे गए यूनानी यहूदी पीड़ितों की याद में आयोजित कार्यक्रम
15 मार्च के लिए निर्धारित
आज यह घोषणा की गई कि मंगलवार, 15 मार्च को दोपहर 2:00 बजे लिबर्टी स्क्वायर से एक विशेष स्मारक जुलूस निकाला जाएगा, जो पुराने रेलवे स्टेशन तक जाएगा। यह समारोह थेसालोनिकी से नाज़ी शिविर ऑशविट्ज़ तक जाने वाली पहली ट्रेन की 40वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित किया जा रहा है। थेसालोनिकी के मेयर और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के इसमें शामिल होने की उम्मीद है।

अन्य परिस्थितियों में, यह महज एक कैलेंडर नोट होता, दुनिया भर में आयोजित अनगिनत आयोजनों में से एक, जो एक ऐसे युद्ध की याद में आयोजित किए जाते थे

जो स्मृतियों से धुंधलाता जा रहा था।
लेकिन हमारी कहानी में, यह एक मोहक गीत था।
ग्रीक मार्च का विचार सेबेस्टियन का था।
वह वर्षों से इस मुद्दे को उठा रहा था। नाज़ी हंटर के साथ काम करते हुए, सेबेस्टियन लगातार वुल्फ के युद्ध में मारे गए यूनानी पीड़ितों पर ध्यान न दिए जाने पर खेद व्यक्त करता रहा था। पोलैंड और जर्मनी की कहानियाँ तो आम थीं—किताबें लिखी गईं, फिल्में बनीं—लेकिन बहुत से लोग इस बात से अनभिज्ञ थे कि नाज़ियों ने ग्रीस पर आक्रमण भी किया था, या यह कि सैलानिका, जो कभी पचास हज़ार से अधिक यहूदियों का घर था, वहाँ से केवल दो हज़ार ही जीवित बचे थे।
हंटर ने ग्रीक सरकार के सदस्यों से बात की थी और उन पर दबाव डाला था कि वे अपने इतिहास में घटी भयावह घटनाओं को स्वीकार करें, जिनमें से कई घटनाएं कुछ ग्रीक अधिकारियों की मिलीभगत से और भी बदतर हो गई थीं।
लेकिन राष्ट्र अपने अतीत का सामना करने में धीमे होते हैं। अंततः, स्वयं कार्यक्रम में शामिल होने का वादा करके, हंटर अधिकारियों को इस बात के लिए राजी करने में सफल रहे कि सैलानिका के केंद्र से पुराने रेलवे स्टेशन तक एक मार्च की अनुमति दी जाए, जहाँ कई यूनानी परिवारों के रिश्ते हमेशा के लिए टूट गए थे।
और वह स्थान जहाँ सेबेस्टियन ने आखिरी बार अपने भाई को देखा था।
* * *
अब तक आप सोच रहे होंगे कि निको अपने बड़े भाई को क्यों परेशान कर रहा था। आखिर, दशकों बीत चुके थे जब उन्होंने एक-दूसरे को देखा था। सेबेस्टियन पचास के दशक के मध्य में थे, दादा बन चुके थे और वियना में रहते थे। और अगर हम खुलकर बात करें (और मेरे पास क्या विकल्प है?), तो सेबेस्टियन ने अब ईमानदारी का वो ताज पहन रखा था जो कभी निको के पास था। सच्चाई की खोज के प्रति उनका अटूट समर्पण उनके दिन-रात को भर देता था।
लेकिन समय सारे घाव नहीं भरता। कुछ घावों को तो यह और गहरा कर देता है। सेबेस्टियन बचपन से ही निको से ईर्ष्या करता था। जिस तरह से वह दिखता था। जिस तरह से वह परिवार का मनोरंजन करता था। जिस तरह से लाज़ार्रे उसे पसंद करता था। "कितना सुंदर लड़का है!"
भाइयों के बीच ईर्ष्या होना आम बात है; अक्सर एक को लगता है कि दूसरा सारा

प्यार पाता है। लेकिन सेबेस्टियन को सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यह थी कि जब निको का भेद खुल गया, तब भी वह प्यार खत्म नहीं हुआ।

इसके बजाय, ऑशविट्ज़ जाने वाली भीड़ भरी ट्रेन के डिब्बे में, बिना भोजन, बिना पानी के, मौत की घुटन भरी हवा में, सेबेस्टियन के माता-पिता अपने खोए हुए बेटे के लिए रोते रहे।

“उसका क्या होगा?” तन्ना विलाप करते हुए बोली।

उसका क्या होगा? सेबेस्टियन ने सोचा। हमारा क्या होगा?

लेव ने हौसला बढ़ाते हुए कहा, "वह कोई न कोई रास्ता निकाल लेगा। वह बहुत होशियार लड़का है।"

चालाक? वो तो झूठा है! छोटा-मोटा झूठा!

निको की छोटी बहनें भी अपने भाई के लिए रो रही थीं। केवल फैनी, या फैनी का ख्याल ही सेबेस्टियन को सुकून दे रहा था। उन्हें जहाँ भी ले जाया जा रहा था, फैनी भी वहीं जा रही थी, और वह उसे दिलासा देने की कोशिश कर सकता था। वह फैनी के लिए उतना ही महत्वपूर्ण हो सकता था, जितना निको बाकी सभी के लिए महत्वपूर्ण था।

फिर उस विशालकाय आदमी ने खिड़की से जाली हटा दी, और पल भर में सेबेस्टियन ने एक ऐसा फैसला ले लिया जिसने सालों तक उसका दिल तोड़ दिया। उसने उस इकलौते इंसान को खुद से दूर कर दिया जिसने उसे उम्मीद दी थी। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह उससे प्यार करता था।

और कई साल बाद, वह उसे खुद से दूर धकेल देगी क्योंकि वह ऐसा नहीं चाहती थी।

* * *

सेबेस्टियन ने काफी समय से अपनी पूर्व पत्नी से बात नहीं की थी। पिछली कुछ फोन कॉल्स में वह इतनी बेरुखी भरी लग रही थी कि अब वह उससे बात करके खुद को तकलीफ नहीं देना चाहता था। वह कैलिफोर्निया में थी। वह ऑस्ट्रिया में था। बस बात यहीं खत्म हो गई।

वह अक्सर सोचता था कि क्या उसे कोई नया प्रेमी मिल गया है। सेबेस्टियन को तो नहीं मिला था। हालाँकि कुछ महिलाएँ उसे आकर्षक लगती थीं, और कई ऐसी भी थीं जो उसमें दिलचस्पी रखती थीं, फिर भी वह हमेशा अपने काम को ही प्राथमिकता देता था। अपने उत्पीड़कों का पीछा करने से बढ़कर उसे कुछ भी इतना महत्वपूर्ण नहीं

लगता था। शायद इसमें आश्चर्य की बात नहीं है कि एक उपेक्षित लड़का बड़ा होकर न्याय की तलाश करने वाला व्यक्ति बन गया।

फिर भी, सेबेस्टियन को सैलानिका में आयोजित उस कार्यक्रम पर गर्व था, जिसे उसने संभवत: वहाँ घटी घटनाओं की पहली आधिकारिक मान्यता दिलाने में मदद की थी। और अगर फैनी अपने नए घर में उससे नहीं मिल पाती, तो शायद वह उनके पुराने घर में उससे मिल जाए।

उसने उसे अखबार का लेख और एक पत्र भेजा, जिसमें पूछा कि क्या वह कम से कम अपने पिता को श्रद्धांजलि देने के लिए इस मार्च में शामिल होने पर विचार करेगी। शायद टिया भी आ जाए?

उसने इसे डाक से भेज दिया, इस उम्मीद में कि फैनी ने अपना पता नहीं बदला होगा। फैनी ने अकेले में पत्र पढ़ा।

ग्रीस में कदम रखे उसे दशकों बीत चुके थे। उसने अपनी बेटी को फोन किया, जिसने कहा, "अगर तुम जाओगी, तो मैं भी जाऊंगी," और फैनी ने सोचा कि अगर हम सब साथ हों तो अच्छा रहेगा। पिछले पांच सालों में सेबेस्टियन के प्रति उसकी नाराजगी कुछ कम हो गई थी, आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि उनका आपस में बहुत कम संपर्क था, और आंशिक रूप से उसके भाई के प्रति उसके मन में फिर से जागृत स्नेह के कारण, जिससे वह अब सप्ताह में एक बार स्क्रीनिंग रूम में मिलती थी।

हर बुधवार को निको दोपहर 2:00 बजे फैनी द्वारा लोड की गई फिल्में देखने आता था। फैनी उसे देखते हुए निको का ध्यान अपनी ओर खींचती थी। वह अब भी सुंदर था, एक परिपक्व अंदाज में। लेकिन वह बहुत कम बोलता था। फिल्में खत्म होने के बाद ही वह बूथ पर आता और शिष्टाचारवश थोड़ी-बहुत बातचीत करता। वह हमेशा विनम्र रहता था, पूछता कि क्या यह काम उसके लिए ठीक है, क्या उसे किसी चीज़ की ज़रूरत है। उसकी आवाज़ कोमल थी और उसमें एक ऐसी कोमलता थी जो फैनी को अपनी ओर खींच लेती थी। और, ज़ाहिर है, भीतर ही भीतर वह उससे एक गहरा जुड़ाव महसूस करती थी, ठीक वैसे ही जैसे हम अक्सर उन लोगों के लिए महसूस करते हैं जिनसे हमने बचपन में प्यार किया था, दशकों बाद भी, भले ही वे कितने भी बदल गए हों।

क्या उन्होंने अतीत के बारे में बात की?

नहीं। फैनी हफ़्तों तक पहचान की एक चिंगारी का इंतज़ार करती रही, एक ऐसे पल

का जब उसे यह कहने का सही समय लगे कि "क्या हम उन चीज़ों के बारे में बात कर सकते हैं जिनके बारे में हम बात नहीं कर रहे हैं?" लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। इसके बजाय, वे एक अनकही मिलीभगत में उलझ गए। वह उसे पहचानना नहीं चाहता था क्योंकि इसका मतलब था अपने किए के दर्द का सामना करना। और वह उसे ज़ोर नहीं देती थी क्योंकि उसका दिमाग़ साफ़ तौर पर ठीक नहीं था। धोखे की परतें। अर्थहीन झूठ। फैनी ने सोचा, ज़रूर कोई कारण होगा। उसे डर था कि उसका सच उसे दूर भगा देगा। जो बातें वह जानना चाहती थी—वह कहाँ था? उसने क्या-क्या सहा? क्या वह हर साल लोगों को बड़ी रकम भेज रहा था?—ये सब बातें एक साथ कहना बहुत मुश्किल था। उसे धैर्य रखना होगा। उसने खुद को याद दिलाया कि इतने लंबे समय तक उसे पता ही नहीं था कि वह ज़िंदा भी है या नहीं। वह इंतज़ार कर सकती थी।

और इस तरह, कुछ समय के लिए, उन्होंने एक दुर्लभ प्रकार की दयालुता का आदान-प्रदान किया: मौन की दयालुता। वे वर्तमान में कंधे से कंधा मिलाकर काम करते रहे और अतीत को बिना किसी बाधा के सोने दिया।

फिर, लगभग एक साल तक साथ काम करने के बाद, फैनी एक दुर्लभ शाम की स्क्रीनिंग के लिए निको के लिए खाना लेकर आई।

"यह क्या है?" उसने चिकन पैनकेक और भरवां पत्ता गोभी के पत्तों से भरी ट्रे को देखकर आश्चर्यचकित होकर पूछा।

उन्होंने कहा, "मैंने सोचा, बहुत देर हो चुकी है, और शायद आपको बाद में खाने का मौका भी न मिले। मुझे उम्मीद है कि सब ठीक होगा।"

उसने उसे धन्यवाद दिया और वह वापस बूथ में चली गई। स्क्रीनिंग के बाद, उसने देखा कि उसने सब कुछ खा लिया था।

"बहुत अच्छा था।"

"धन्यवाद।"

“तुमने इस तरह खाना बनाना कहाँ से सीखा?”

"मुझे एक हंगेरियन महिला ने सिखाया था।"

वह रुका।

तो आप हंगेरियन हैं?

नहीं। मैं बस कुछ समय के लिए उसके साथ रुका था।

"कब?"
“युद्ध के दौरान।” उसने सोच-समझकर अपने अगले शब्द चुने। “मैं छिप रही थी। जर्मनों से। उस हंगेरियन महिला ने मुझे तब तक ज़िंदा रखा जब तक कि मुझे एरो क्रॉस द्वारा पकड़ नहीं लिया गया।”
उसने उसके चेहरे पर एक प्रतिक्रिया खोजने की कोशिश की।
उन्होंने कहा, "मैंने पेरिस में कुकिंग स्कूल में पढ़ाई की।"
वह अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ।
"शुभ रात्रि, महोदया।"
* * *
दिल में प्यार के कई रास्ते होते हैं, और करुणा उनमें से एक है। फैनी ने अपनी साप्ताहिक मुलाकातों के बीच के खाली समय का इस्तेमाल निको की परेशानी को समझने की कोशिश में किया। हालाँकि उसे ऐसा करने में असहजता महसूस होती थी, फिर भी वह कभी-कभी इमारत से बाहर जाते समय उसका पीछा करती थी। उसने उसे सस्ते रेस्तरां में अकेले खाना खाते, किताबों की दुकानों में खोजबीन करते या हवाई अड्डे के पास वाले अपार्टमेंट में कई दिनों तक गायब रहते हुए देखा।
हर हफ्ते, शुक्रवार की सुबह, निको कब्रिस्तान जाता और कब्रों की सफाई करता। फैनी उसके पीछे-पीछे चलती। उसे कब्रों पर झुका हुआ देखकर फैनी बहुत भावुक हो जाती थी। निको ने चाहे जो भी दुख झेला हो, यह साफ था कि वह जीवितों की तुलना में मृतकों के साथ अधिक सहज महसूस करता था।
हालांकि फैनी ने निको के अतीत की खोज में उसका पीछा किया था, लेकिन समय बीतने के साथ-साथ उसे एहसास हुआ कि निको की परवाह करने के लिए उसे अतीत की ज़रूरत नहीं है। सेबेस्टियन के साथ, सब कुछ युद्ध के इर्द-गिर्द घूमता था। वे कभी भी उसकी छाया से बच नहीं पाए।
निको के साथ, वह भयावहता दबी हुई थी। फैनी को वास्तव में यही अच्छा लगता था। शायद वह उसे इसलिए नजरअंदाज करता था क्योंकि वह युद्ध के दौरान फैनी पर हुए अत्याचारों को फिर से कुरेदना नहीं चाहता था। फैनी इसे दयालुता मानती थी।
फिल्म स्क्रीनिंग के बाद वे ज़्यादा समय साथ बिताते थे, फैनी द्वारा बनाई गई कॉफ़ी पीते हुए बातें करते थे। निको ने फिल्मों के प्रति अपने प्रेम और एक अच्छी कहानी के बारे में अपने विचार साझा किए। फैनी ने इज़राइल में रहने वाली अपनी बेटी के बारे में

बताया और उस पर अपने गर्व के बारे में बताया। उन्होंने कभी भी लड़की के पिता का ज़िक्र नहीं किया, और निको ने भी कभी इस बारे में नहीं पूछा।

फिर एक रात, सन् 1983 की शुरुआत में, बाहर ज़ोरदार तूफ़ान आ रहा था, और निको ने फैनी को उसकी कार तक छोड़ने के लिए छाते का सहारा लिया। बारिश बहुत तेज़ थी, हवा उसे तिरछी दिशा में उड़ा रही थी। अचानक फैनी का जूता फिसल गया और निको के उसे पकड़ने से पहले ही वह एक बड़े गड्ढे में गिर गई। फैनी की पोशाक पूरी तरह भीग गई थी। वह हंसने लगी।

“क्या तुम्हें चोट लगी है?” निको ने कहा।

“नहीं, मैं ठीक हूँ,” उसने कहा।

तुम क्यों हंस रहे हो?

“जब आप इतने भीग जाते हैं, तो क्या फर्क पड़ता है? याद है, बचपन में गर्मियों में हम कैसे करते थे? अगर बारिश शुरू हो जाती थी, तो हम कपड़ों के साथ ही समुद्र में दौड़ पड़ते थे?”

"अपने कपड़े पहने हुए, हाँ," निको ने मुस्कुराते हुए कहा।

फैनी ने पलकें झपकाईं। "तुम्हें वह याद है?"

निको के चेहरे पर तनाव के भाव उभर आए।

उन्होंने कहा, "सभी बच्चे ऐसा करते हैं।"

फैनी ने अपने गालों से बारिश के पानी को पोंछा, फिर निको के कंधे पर एक हाथ रखकर खुद को संभाला। जूता पहनते समय उसका संतुलन बिगड़ गया और वह निको पर गिर पड़ी। जब उसने ऊपर देखा, तो उसका चेहरा निको से कुछ ही इंच दूर था, और निको के चेहरे पर एक ऐसा भाव था जो उसने पहले कभी नहीं देखा था, मानो कोई भ्रमित, खोया हुआ लड़का हो।

फिर, अपने जीवन में दूसरी बार, उसने उसे चूमा। उसने बचपन में, किशोरावस्था की झिझक में, ऐसा किया था। लेकिन इस बार चुंबन कोमल और देर तक चलने वाला था, और उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और खुद को उस पल में बहने दिया, जो असलियत से कहीं ज़्यादा लंबा लगा। जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो उसने देखा कि वह उसे घूर रहा है।

“सब ठीक है,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।

उसने मुश्किल से अपनी सांस रोकी, उसे छाता पकड़ाया और बारिश में दौड़ पड़ा।

निको को एक बैठक में ग्रीक मार्च के बारे में पता चला।
फैनी से उस मुलाकात के कुछ दिनों बाद, एक निर्देशक उनके कार्यालय में आया और प्रसिद्ध नाज़ी हंटर पर एक वृत्तचित्र बनाने के लिए धन की मांग करने लगा। निको ने कहा कि वह हंटर के काम से परिचित था; उसने हाई-प्रोफाइल गिरफ्तारियों के बारे में पढ़ा था।
निर्देशक ने जोर देकर कहा, "वह एक बेहतरीन विषय साबित होगा। कल्पना कीजिए एक ऐसे व्यक्ति की जो तब तक चैन से नहीं बैठेगा जब तक कि भागे हुए सभी नाजियों को न्याय के कटघरे में नहीं लाया जाता - साथ ही उन लोगों को भी जिन्होंने उनकी मदद की थी।"
“उनकी मदद की?” निको ने कहा।
“हाँ। जर्मनों के साथ सहयोग करने वाले भी उतने ही दोषी हैं, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?”
निको अपनी सीट पर थोड़ा हिल गया।
"क्या हंटर आपकी फिल्म का हिस्सा बनने के लिए सहमत हो गया है?"
“हमने पत्रों का आदान-प्रदान किया है। वह इस पर विचार कर रहे हैं। मैं अगले महीने ग्रीस में उनका वीडियो बनाना चाहता हूं। 15 मार्च को। वह वहां एक स्मारक कार्यक्रम में भाग ले रहे हैं।”
निको ने ऊपर देखा।
“पंद्रह मार्च?”
"हाँ।"
"कहाँ?"
“थेसालोनिकी।”
“सलोनिका?”
उस आदमी ने मुस्कुराते हुए कहा, “असल में, यूनानी इसे थेसालोनिकी कहते हैं। खैर, वह युद्ध में मारे गए सभी यूनानी यहूदियों को श्रद्धांजलि देने के लिए वहाँ एक जुलूस का नेतृत्व कर रहा है। वे पुराने रेलवे स्टेशन पर जाकर जुलूस खत्म करेंगे, जहाँ से ट्रेनें उन्हें यातना शिविरों तक ले जाती थीं। साक्षात्कार के लिए यह एक अच्छी जगह है, है ना?”
निको को अपने पेट में सिहरन महसूस हुई। उसकी मांसपेशियां तन गईं। उसके माथे

पर पसीना आ गया।
वह तेजी से उठा।
“सर?” निर्देशक ने पूछा। “क्या मैंने कुछ गलत कह दिया?”
मैं इस बारे में सोचूंगा। अब अलविदा।
वह जल्दी से दरवाजे से बाहर निकल गया, उस आदमी को उसके कार्यालय में अकेला छोड़कर।
* * *
निको उस रात सोया नहीं। वह अंधेरे में अपने मोहल्ले की गलियों में घूमता रहा, फिर सूरज उगने तक अपनी कार की पिछली सीट पर बैठा रहा। वह आराधनालय गया और दो घंटे अकेले प्रार्थना की। फिर वह फैनी के अपार्टमेंट की सीढ़ियों पर गया और उसके काम पर आने का इंतज़ार करने लगा। उसे देखकर फैनी मुस्कुराई।
“मुझे तुम्हें कुछ बताना है,” उसने अचानक कहा।
“तुम्हें कैसे पता चला कि मैं कहाँ रहता हूँ?”
बैठ जाओ।
वह बैठ गई। "क्या बात है?"
"मुझे जाने की जरूरत है।"
"कब?"
"जल्द ही।"
"आप कहां जा रहे हैं?"
"दूर।"
"क्यों?"
मैं कुछ नहीं कह सकता।
फैनी ने देखा कि उसकी छाती तेजी से ऊपर-नीचे हो रही थी और माथे पर पसीना था। उसे लगा कि यह घबराहट का ही एक रूप है। उसने खुद भी कई बार ऐसा महसूस किया था, कभी अपनी कार में अकेले या आधी रात को। उसने उसके हाथों को थाम लिया।
“एक गहरी सांस लो, फिर दूसरी,” उसने आग्रह किया।
आपको लग सकता है कि निको निर्देशक की बातों से नाराज़ था। लेकिन वह नाज़ी हंटर के बारे में सब कुछ जानता था। दरअसल, वह वर्षों से उस व्यक्ति का सबसे बड़ा

आर्थिक सलाहकार रहा था, गुमनाम चेक भेजकर एजेंसी को चलाता रहा था।
और न ही यह धारणा थी कि हंटर नाज़ी सहयोगियों की तलाश कर रहा था। निको उस आदमी के काम के बारे में, उसने किसे खोजा था, और वह किसका पीछा कर रहा था, सब कुछ जानता था।
नहीं, निको को जो बात परेशान कर रही थी, वह कुछ ऐसा था जिसे उसने उस क्षण महसूस किया जब निर्देशक ने उसे ग्रीस में होने वाले मार्च के बारे में बताया था, कुछ चिंताजनक और खतरनाक, कुछ ऐसा जिसके बारे में फैनी को पता नहीं होना चाहिए था।
“मेरी तरफ देखो,” उसने फुसफुसाते हुए कहा। “तुम ठीक हो जाओगे।”
निको की कहानी इतनी उथल-पुथल भरी थी कि उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। उसने अपना हाथ धीरे से फैनी की गर्दन के पीछे रखा, और उनके जीवन में तीसरी बार, और निको की पहल पर पहली बार, उनके होंठ धीरे से, प्यार से मिले।
और फिर, ठीक वहीं, एक अपार्टमेंट बिल्डिंग की सीढ़ियों पर, कैलिफोर्निया की एक सुबह के साफ आसमान के नीचे, फैनी ने वह सब कह दिया जो वह उस रात से अपने मन में दबाए हुए थी जब उसने उसे पहली बार ट्रैफिक लाइट पर देखा था।
“निको, मैं फैनी हूँ। मुझसे बात करो। मुझे पता है तुम ही हो।”
उडो ने अपने कैलेंडर पर उस तारीख पर गोला बना दिया।
15 मार्च को सैलॉनिका में। उसे भेस बदलने की ज़रूरत होगी। और एक बंदूक की भी।
उसने ब्रांडी की बोतल से एक घूंट लिया, फिर ढक्कन लगाकर उसे वापस शेल्फ पर रख दिया। उसके पिता बुढ़ापे में शराबी बन गए थे, और उडो ने ठान लिया था कि वह उनकी राह पर नहीं चलेगा। आजकल तो वह खुद को एक गिलास तक पीने से भी रोक रहा था। जब पीने की इच्छा होती, तो बस बोतल से एक घूंट पी लेता था, और आजकल उसे पीने की इच्छा पहले से कहीं ज्यादा होने लगी थी।
वह अस्त-व्यस्त बिस्तर पर बैठ गया और अपार्टमेंट की खिड़की से उत्तरी इटली के बर्फ से ढके पहाड़ों की ओर देखने लगा। छत नीची थी और उसका रंग उखड़ रहा था। उस पर मकड़ी का जाला बन गया था। उडो ने उसे अपनी हथेली में मसल दिया।
अमेरिका में उसने जो कुछ भी बनाया था, सब कुछ तबाह हो जाने के बाद से वह पिछले तीन सालों से यहीं रह रहा था। उडो को कार्टर के कार्यालय में बुलाया गया

था। सीनेटर ने उसे बताया कि वियना स्थित यहूदी एजेंसी का कोई व्यक्ति शिकागो में नाज़ी रैली में उडो की एक तस्वीर और युद्ध के दौरान एसएस वर्दी पहने उसकी एक और तस्वीर प्रसारित कर रहा है। एक पत्रकार ने चेहरा पहचानकर कार्यालय को फोन कर दिया था।

"हमने हर बात से इनकार किया," कार्टर ने कहा। "हमने उनसे कहा कि तस्वीरों से कुछ साबित नहीं होता। गलत पहचान हुई थी। इस तरह की बातें।"

“अच्छा,” उडो ने कहा।

"लेकिन," कार्टर ने धीमी आवाज में कहा, "आप यहां नहीं रुक सकते।"

"आपका क्या मतलब है?"

"मेरा मतलब है कि वे करीब हैं। मेरा मतलब है कि इससे पूरा कार्यक्रम चौपट हो सकता है।"

"क्या आप चाहते हैं कि मैं वाशिंगटन छोड़ दूं?"

कार्टर ने अपना सिर हिलाया।

“वॉशिंगटन नहीं। पूरा देश।”

“क्या? कब?”

"सुबह तक।"

* * *

और इस तरह, अपने जीवन में दूसरी बार, उडो ग्राफ भाग गया। रातोंरात इकट्ठा किए गए सभी कीमती सामानों से भरा एक सूटकेस लेकर, उसने न्यूयॉर्क के लिए सूर्योदय की उड़ान भरी और वहाँ से रोम जाने वाली फ्लाइट पकड़ी। उसने अपने कार्यालय से कागजात कभी नहीं लिए। उसने अपनी पत्नी को अलविदा भी नहीं कहा। वह एक भूत की तरह गायब हो गया। जब अधिकारी कार्टर के कार्यालय पहुँचे, तो सीनेटर ने कहा कि उन्होंने जॉर्ज मेक्लेन नाम के व्यक्ति को एक सप्ताह पहले निजी कारणों से बर्खास्त कर दिया था। उन्हें उसके अतीत के बारे में केवल इतना पता था कि वह एक बेल्जियम का अप्रवासी था और उसने अपने कार्यकाल के दौरान सराहनीय काम किया था। उसके वर्तमान ठिकाने का कोई पता नहीं था।

रोम के बाहरी इलाके में एक युवा छात्रावास में चार महीने तक छिपने के बाद, उसके इतालवी संपर्कों ने उसे एक नई पहचान दिलाने में मदद की। युद्ध के बाद जिस भूमिगत संगठन ने उसे पनाह दी थी, उसकी जड़ें इस देश में अभी भी मौजूद थीं,

लेकिन उतनी शक्तिशाली नहीं थीं। उडो को आखिरकार एक इतालवी पासपोर्ट मिल गया, लेकिन इसके लिए उसे अपनी तिजोरी से निकाले गए काफी पैसे खर्च करने पड़े। उसका "छिपाव" टायरोलियन आल्प्स के पास एक मांस पैकिंग कारखाने में नौकरी थी, एक ऐसी नौकरी जहाँ इतालवी बोलने की आवश्यकता नहीं थी। वह झाड़ू लगाता था और डिलीवरी का हिसाब रखता था। यह मामूली काम था, और इसने उडो की आत्मा को झकझोर दिया।

निर्वासन में बिताया गया हर दिन उसके लिए मानो एक त्याग जैसा था। वाशिंगटन में वह कुछ बड़ा करने की तैयारी कर रहा था। उसके पास पैसा था। उसका प्रभाव था। उसने कार्टर को अपने इशारों पर नचा रखा था, क्योंकि कार्टर ने उसके लिए कई गंदे काम किए थे, और उसने सही समय आने पर इस प्रभाव का पूरा फायदा उठाने की योजना बना रखी थी।

अब सब कुछ खत्म हो चुका था, वियना के उस बूढ़े यहूदी और भाई ने उसे तबाह कर दिया था, जो उसका पीछा ऐसे कर रहे थे जैसे कोई चूहा सीवर के गड्ढे में घुस जाता है। खैर, चूहा भी पीछा कर सकता है। और सही परिस्थितियों में, वह जान भी ले सकता है। उडो वाशिंगटन से अपना विमान उड़ाने के क्षण से ही उन दोनों से छुटकारा पाने के बारे में सोच रहा था।

उसने अपने कैलेंडर पर गोला लगी तारीख को फिर से देखा। 15 मार्च। उसे एक पत्र मिला था जिसमें एक ग्रीक अखबार का लेख था, जिसमें सैलानिका में मृत यहूदियों के लिए आयोजित समारोह और उसमें शामिल होने वाले लोगों के बारे में बताया गया था। नाज़ी हंटर और ब्रदर के नाम लाल स्याही से गोला बनाकर लिखे गए थे, साथ ही जर्मन भाषा में दो हस्तलिखित शब्द भी थे, जो निस्संदेह उसके किसी साथी नाज़ी ने लिखे थे जो अभी भी छिपा हुआ था।

वे दो शब्द थे Beende es.

"इसे खत्म करें।"

वह शेल्फ के पास गया और ब्रांडी उठा ली। सैलानिका? कितना उपयुक्त है! यह शहर उसकी सबसे बेहतरीन रचनाओं का केंद्र रहा था, और यह उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि हो सकती थी। नाज़ी हंटर को मारने से छिपकर रह रहे अन्य लोगों के लिए सुरक्षा बढ़ जाएगी। वे फिर से सामने आ सकेंगे। सूरज की रोशनी में अपना गौरवपूर्ण स्थान ग्रहण कर सकेंगे।

उडो ने बोतल का ढक्कन खोला और एक और घूंट लिया। उसे भेस बदलने की ज़रूरत होगी। उसे बंदूक की भी ज़रूरत होगी। उसके पास पहले से ही दोनों चीज़ें थीं।

मुझे तरीकों को गिनने दें

यदि शब्दों से यह पता चलता है कि मनुष्य किसी चीज़ को कितना महत्व देता है, तो आप मुझे बहुत महत्व देते होंगे। सोचिए कि सत्य को व्यक्त करने के लिए आपके पास कितने शब्द हैं।

लोग कहते हैं, "सच कहूँ तो।" या "क्या मैं आपसे ईमानदारी से बात करूँ?" या "सचमुच" या "वास्तविक रूप से" या "झूठ नहीं" या "तथ्य यह है" या "दुखद सत्य" या "निस्संदेह सत्य" या "मामले की सच्चाई यह है..."

ये सब अंग्रेज़ी में हैं। फ़्रेंच में Je dis la verité (“मैं तुम्हें सच बता रहा हूँ”) या स्पैनिश में la verdad amarga (“कड़वा सच”) जैसे मुहावरे हैं। जर्मन में sag mir die wahrheit (“मुझे सच बताओ”) कहते हैं, हालाँकि युद्ध के वर्षों में यह मुहावरा अप्रचलित हो गया था। सत्य के लिए ग्रीक शब्द Aletheia है, जिसका शाब्दिक अर्थ है “भूलना नहीं”, यह इस तथ्य की स्वीकृति है कि मैं अक्सर अस्पष्ट हो जाता हूँ।

वैसे तो, मेरे कई मौखिक संदर्भों में से, मुझे "सच कहा जाए तो" सबसे ज्यादा पसंद है। आप कल्पना कर सकते हैं कि कोई राजा इसे घोषित कर रहा हो। कोई माँ इसकी माँग कर रही हो। या सर्वशक्तिमान ईश्वर इसका आदेश दे रहे हों।

सच कहें तो।

और यह हमें वापस वहीं ले आता है जहाँ से हमारी कहानी शुरू हुई थी, सैलानिका शहर में, और लिबर्टी स्क्वायर में, जहाँ चार दशक पहले, नाजियों ने सब्त की सुबह नौ हजार यहूदी पुरुषों को चिलचिलाती धूप में इकट्ठा करके, उनसे अंतहीन कसरत करवाकर, गिरने वालों को पीटकर और विरोध करने वालों को मारकर उन्हें अपमानित किया था।

इस बार, उसी स्थान पर, 15 मार्च की दोपहर को, नागरिकों की एक बड़ी भीड़ उस युग की शर्मनाक घटना को याद करने के लिए एकत्रित हुई। कई लोग मृतकों की याद में लाल कार्नेशन फूल लिए हुए थे। अन्य लोगों ने सफेद गुब्बारे पकड़े हुए थे जिन पर दो ग्रीक शब्द लिखे हुए थे।

फिर ज़ाना।

"फिर कभी नहीं।"

सेबेस्टियन ने पोडियम पर एक कागज़ पकड़ा हुआ था।

हवा से उसके बाल माथे पर लहरा रहे थे, तभी उसने माइक्रोफोन में जोश से बोलते हुए बताया कि 1940 के दशक में सैलानिका के यहूदियों ने किस तरह कष्ट झेले थे। उसने मारपीट, अपमान, अंधाधुंध गोलीबारी के बारे में बताया। उसने उन पीले सितारों के बारे में बताया जिन्हें पहनने के लिए उन्हें मजबूर किया गया था। बैरन हिर्श यहूदी बस्ती के बारे में, दीवारों के ऊपर लगे कांटेदार तारों के बारे में और भागने की कोशिश करने वालों के भयानक अंजाम के बारे में बताया।

उन्होंने बताया कि कैसे नाजियों ने उनके पिता का कारोबार दो अजनबियों को सौंप दिया और फिर उन्हें उनकी ही दुकान से बाहर निकाल दिया। बोलते-बोलते वे सोचने लगे कि क्या उन अजनबियों के बच्चे भी भीड़ में मौजूद थे और क्या उन्हें जरा भी शर्म महसूस हुई होगी।

“हमारा इतिहास नष्ट हो गया, हमारा समुदाय नष्ट हो गया, हमारे परिवार नष्ट हो गए,” सेबेस्टियन ने घोषणा की। “लेकिन हमारा विश्वास नहीं। आज हम याद करते हैं। लेकिन कल, न्याय जारी रहना चाहिए…”

लोगों ने सिर हिलाकर सहमति जताई। कुछ लोगों ने तालियाँ बजाईं। जब सेबेस्टियन ने अपनी बात समाप्त की, तो वह एक तरफ हट गया और हंटर को बोलने का मौका दिया। जब हंटर ने यह कहते हुए अपनी बात समाप्त की, "हम कभी चैन से नहीं बैठेंगे, हम कभी नहीं भूलेंगे," तो भीड़ एक साथ पुराने रेलवे स्टेशन की ओर चलने लगी।

सेबेस्टियन सबसे आगे खड़ा हो गया। उसने गहरी साँस ली और बादलों को ध्यान से देखा। मार्च के हिसाब से ठंड थी और लग रहा था कि बारिश होने वाली है। उसने अपने हाथ जेबों में डाल लिए। हालाँकि वह इस आयोजन के होने से खुश था, पर इसमें कुछ अजीब सा भी था। मार्च में शामिल लोग स्वस्थ और तंदुरुस्त थे, उनमें से कई युवा थे, कुछ तो यहूदी भी नहीं थे। उन्होंने फैशनेबल कपड़े और दौड़ने वाले जूते पहने हुए थे। इमारतें वैसी नहीं थीं जैसी सेबेस्टियन को याद थीं। वहाँ एक विशाल नई पार्किंग थी। एक नया न्यायालय भवन था। पुराने लाडादिका जैतून तेल बाजार का नवीनीकरण करके उसे एक मनोरंजन क्षेत्र में बदला जा रहा था, जिसकी पत्थर की सड़कों पर अब कैफे और बार खुल गए थे।

सेबेस्टियन को यह अवसर की गंभीरता के लिए बहुत आधुनिक और चमकदार लगा, मानो वह किसी बच्चे के जूते में एक वयस्क का पैर जबरदस्ती डालने की कोशिश कर रहा हो। लेकिन फिर, किसी घटना का स्मरण करना और उसे जीना एक ही बात नहीं है।

उसने उस दिन बिछड़े लोगों के बारे में सोचा। उसने अपनी माँ और नन्ही बहनों के बारे में सोचा, कि कैसे उनका जीवन उनके साथ अचानक समाप्त हो गया। उसने अपने पिता और दादा के बारे में सोचा, कि कैसे उन्होंने उसे ऑशविट्ज़ की भयावहता से बचाने की कोशिश की थी, और कैसे लाज़ार हर रात उनसे उस दिन ईश्वर द्वारा दी गई किसी एक अच्छी बात को दोहराने का आग्रह करता था। उसने सोचा कि क्या वे सब अब ईश्वर के साथ हैं, और क्या वे किसी तरह उनकी याद में इस मार्च को देख रहे हैं। उसने सोचा कि चालीस साल बाद भी वे इस एकजुटता के बारे में क्या सोचते होंगे।

उसने पीछे मुड़कर देखा। वहाँ शायद एक हज़ार लोग थे—जो सैलानिका में बचे हुए यहूदियों की कुल संख्या के बराबर थे। एक हज़ार। जहाँ कभी पचास हज़ार लोग फल-फूल रहे थे।

सेबेस्टियन ने गर्दन घुमाकर देखा। वह जानता था कि फैनी और टिया भीड़ में कहीं हैं, लेकिन वह उन्हें देख नहीं पा रहा था। वह सोच रहा था कि क्या उसके बोले गए शब्दों से उसके जीवन के बारे में कुछ पता चला है, और क्यों वह इतने सालों से उनसे दूर रहा है।

फैनी ने अपनी बेटी का हाथ पकड़ रखा था।

वे अन्य प्रदर्शनकारियों के साथ कदम मिलाकर चलने लगे। जैसे ही वे पुराने बैरन हिर्श मोहल्ले के पास पहुँचे, जो काफी हद तक सुनसान था, फैनी की धड़कन तेज़ हो गई। उसे याद आया कि बचपन में उसे यहाँ घसीटकर लाया गया था, दो औरतें उसकी कोहनियों को पकड़े हुए थीं, उसके पिता की फाँसी की तस्वीर अभी भी उसके दिमाग में ताज़ा थी, दवाखाने के सामने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी गई थी, उनका हाथ दरवाज़े के हैंडल पर था।

“क्या बात है, माँ?” फैनी का चेहरा देखकर टिया ने कहा।

“कुछ नहीं, बस यादें,” फैनी ने कहा। उसने जबरदस्ती मुस्कुराते हुए अपने होंठों पर मुस्कान ला दी। लेकिन उसका मन बार-बार उसी दिन की यादों में खो गया था, उस रेनकोट की यादों में जो उसने पहनी थी, उस तंग जगह की यादों में जहाँ वह छिपी थी।

निको की यादों में।

उस सुबह से उसने उसे अपने अपार्टमेंट की सीढ़ियों पर नहीं देखा था, जब उसने उससे कहा था, "मैं जानती हूँ कि यह तुम हो।" उसकी आँखें आँसुओं से भर उठी थीं और उसे पूरा यकीन था कि वह टूट जाएगा, सब कुछ बता देगा, कबूल कर लेगा। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। इसके बजाय, वह खड़ा हुआ और बुदबुदाया, "अब तुम्हें काम पर आने की ज़रूरत नहीं है, मैं तुम्हें फिर भी वेतन दूंगा," और फिर जल्दी से अपनी कार की ओर चला गया।

उसके बाद उसका कहीं पता नहीं चला। फैनी अगले तीन हफ्तों तक हर दिन काम पर आती रही। वह उसके घर गई। वह उसके अपार्टमेंट में भी गई। कोई सुराग नहीं मिला। ग्रीस जाने से एक रात पहले, वह एक बार फिर स्टूडियो गई, इस उम्मीद में कि शायद वह देर रात तक वहाँ मौजूद हो। स्क्रीनिंग रूम खाली था। उसका निजी कार्यालय अँधेरा था। उसने दरवाज़ा खोलने की कोशिश की। वह खुला हुआ था। वह हिचकिचाई, फिर अंदर चली गई।

वह उसके बिना इस कमरे में कभी नहीं आई थी। वह उसकी मेज के पास गई। मेज लगभग खाली थी, बस कुछ स्क्रिप्ट करीने से एक साथ रखी थीं। उसने एक दराज खोली। कुछ नहीं। दूसरी दराज खोली। खाली।

वह एक फाइल कैबिनेट के पास गई और ऊपर का हैंडल खींचा। उसने देखा कि उसमें लगभग आधा दर्जन फाइलें थीं, जिन पर उन फिल्मों के नाम लिखे थे जिन्हें उसने स्क्रीनिंग के दौरान देखा था। नीचे वाला दराज भी उतना ही खाली था। उसने सोचा, इतने कम कागजों के साथ, क्या निको सब कुछ अपने दिमाग में रखता है? इतनी सारी जानकारी! वह यह सब कैसे कर पाता होगा?

वह नीचे वाले दराज को खोलने की ज़हमत नहीं उठाना चाहती थी। लेकिन उसने अपना इरादा बदल लिया और हैंडल खींचने के लिए झुकी। हैंडल नहीं खुला। उसने और ज़ोर से खींचा। आखिरकार, वह नीचे बैठ गई और दराज को झटके से खोल दिया, और उसे तुरंत समझ आ गया कि यह इतना मुश्किल क्यों था।

दराज दर्जनों फाइलों से भरी हुई थी, जिनमें से प्रत्येक पर वर्ष अंकित था, जो 1946 से शुरू होकर वर्तमान तक जारी था। उसने एक फाइल निकाली, उसे खोला और उसकी सांसें थम सी गईं।

अंदर, यहूदी नामों की कई सूचियाँ थीं, जिनमें से प्रत्येक में उम्र और पता लिखा था—

फ्रांस, इज़राइल, ब्राज़ील, ऑस्ट्रेलिया में—साथ ही एक संख्यात्मक चिह्न के आगे सही का निशान लगा हुआ था। वहाँ तस्वीरें और सहायक दस्तावेज़, जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्रों की प्रतियाँ भी थीं।

उसने एक और फाइल निकाली। उसमें भी सूचियाँ थीं। एक और फाइल। वही सब। ऐसा लग रहा था कि हर साल फाइलें मोटी होती जा रही थीं। आखिरी फाइल, जिस पर 1983 लिखा था, इतनी मोटी थी कि फैनी को उसे उठाने के लिए दोनों हाथों की ज़रूरत पड़ी। जब उसने उसे उठाया, तो उसकी नज़र पीछे की तरफ़ कुछ दबी हुई चीज़ पर पड़ी। एक बड़ा सा लिफ़ाफ़ा, जिस पर नीले मार्कर से 'फैनी' लिखा था। काँपते हाथों से उसने उसका हुक खोला।

दस मिनट बाद, वह दफ्तर से तेज़ी से बाहर निकली। अपनी कार के पास पहुँचकर वह उस पर गिर पड़ी और रोने लगी। वह अपने जीवन में खोई हुई हर चीज़ के लिए और इस एहसास के लिए रो रही थी कि उसने अभी-अभी कुछ और खो दिया है। उसने लिफाफे को देखा और जान गई कि निको अब कभी वापस नहीं आएगा। सच और झूठ के बीच अड़े रहने के चक्कर में उसने खुद को एक तीसरे विकल्प की ओर धकेल दिया था: कभी न जान पाना कि कौन सा सच है और कौन सा झूठ।

उडो ने अपनी बंदूक के बट को महसूस किया।

यह उसकी जैकेट की जेब में छिपा हुआ था, और जैसे ही भीड़ रेलवे स्टेशन पर पहुँची, उसने इसे सहलाया। उसने लिबर्टी स्क्वायर में नाज़ी हंटर को मारने के बारे में सोचा था, लेकिन वह इतनी दूर था कि निशाना लगाना मुश्किल था। वैसे भी, रेलवे स्टेशन ज़्यादा उपयुक्त जगह थी। यह वही जगह थी जहाँ उसने अपनी पूरी कोशिश की थी, इस शहर से यहूदी गंदगी को साफ़ किया था। पचास हज़ार लोग जा चुके थे। जल्द ही, दो और।

जब से उसने सैलॉनिका छोड़ा था, तब से उसमें बहुत बदलाव आ चुका था, लेकिन यादें अभी भी बाकी थीं। जैसे ही भीड़ पटरियों के पास पहुंची, उडो, जो एक प्रतिभागी के वेश में था और जिसके हाथ में एक सफेद गुब्बारा था, उस खास व्यक्ति के बारे में सोचने लगा जिसका उसने यहां बखूबी इस्तेमाल किया था। निको क्रिस्पिस। वह लड़का जिसने कभी झूठ नहीं बोला।

उडो अक्सर सोचता था कि उसका क्या हुआ होगा। उसने उस बच्चे की जान बख्श दी थी। सालों बाद, जब भी वह किसी को मारता, तो वह दया के उस एक काम को याद

करता और खुद को श्रेय देता। क्लेइसौरास स्ट्रीट के घर में साथ बिताया गया वह समय उडो के लिए माता-पिता होने के सबसे करीब का अनुभव था, और उसे आज भी वह रात याद है जब उसने निको को जर्मन किताब पढ़कर सुनाई थी, और वह समय भी जब निको उसके सिरदर्द के लिए गर्म तौलिया लाया था। अब रेलवे प्लेटफॉर्म को देखकर उसे एहसास हुआ कि उस लड़के से उसके आखिरी शब्द शायद यही रहे होंगे, "तुम बेवकूफ यहूदी।" उसे लगभग इस बात का पछतावा हो रहा था।

उडो की अमेरिकी पत्नी पामेला ने एक-दो बार परिवार शुरू करने की बात की थी, लेकिन उडो ने कभी उसके साथ बच्चा पैदा करने के बारे में नहीं सोचा। उसके वंश में एक लेबनानी पिता और एक सर्बियाई दादी शामिल थीं। वह किसी भी तरह के मिश्रित नस्ल के बच्चे को इस दुनिया में नहीं लाना चाहता था।

उसने हाथ बढ़ाकर अपने सिर पर बंधी सफेद बालों वाली विग और उसके ऊपर रखी टोपी को छुआ। उसमें खुजली हो रही थी और असहज महसूस हो रहा था, लेकिन ज़रूरी था, उसने खुद से कहा। भाई ने उसे दो बार पहचान लिया था। केवल मूर्ख ही अपनी गलतियों को दोहराता है।

जब वे रेलवे स्टेशन पहुँचे, तो प्रदर्शनकारी मंच पर फैल गए और समारोह की प्रतीक्षा करने लगे। उडो यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि पटरियों से पचास गज आगे एक असली लकड़ी की मवेशी गाड़ी खड़ी थी, वैसी ही जैसी नाजियों ने यहूदियों को शिविरों तक ले जाने के लिए इस्तेमाल की थी। अब उस पर एक पट्टिका लगी थी, मानो वह किसी संग्रहालय की वस्तु हो। उडो उसे घूरता रहा और उसे उसके आकार-प्रकार याद आ गए - उसकी लंबाई, चौड़ाई और उसमें समा सकने वाले यहूदियों की अनुमानित संख्या। अगर उसकी याददाश्त सही थी तो 87, हालाँकि उसने गर्व से कहा था कि उसने उसमें सौ से अधिक यहूदियों को ठूंस दिया था।

एक माइक्रोफोन और एक पोडियम स्थापित किया गया था, और आयोजकों में से एक ने यहूदी पीड़ितों से संबंधित लोगों को एक-एक करके आगे आने, उन लोगों के नाम बताने का निर्देश दिया जिन्हें उन्होंने खो दिया था, और पटरियों पर एक कार्नेशन फूल रखने के लिए कहा।

एक बूढ़ी महिला, जिसने ग्रे रंग का कोट पहना हुआ था, सबसे पहले चली।

उन्होंने कहा, “इसी मंच पर मैंने चालीस साल पहले अपने पति अवराम जहोन को खो दिया था। उन्होंने मुझे एक हफ्ते पहले एथेंस भेजा था, मेरी सुरक्षा के लिए। नाजियों

ने उन्हें पकड़ लिया। मैं उन्हें फिर कभी नहीं देख पाई। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।"

उसने पटरियों पर एक कार्नेशन का फूल गिराया और पोडियम से धीरे-धीरे चली गई। उसके बाद करीने से कटी दाढ़ी वाला एक पतला, अधेड़ उम्र का आदमी आया।

"इसी मंच पर मैंने अपने माता-पिता, एलियाहू और लूचा हाउली को खो दिया..."

उडो ने गहरी सांस ली। कितना नाटकीय! कांपती हुई आवाजें। आंसू। क्या उन्हें इस बात का जरा भी अंदाजा था कि उन ट्रेनों की योजना बनाने और उसमें कितनी व्यवस्थाएं लगी थीं? कागजी कार्रवाई और श्रमशक्ति की कितनी विशाल मात्रा?

"इसी मंच पर मैंने अपने परदादा को खो दिया था..."

"इसी मंच पर मैंने अपनी तीन मौसियों को खो दिया..."

उडो ने अपना सिर हिलाया। जहाँ ये लोग मातम देख रहे थे, वहाँ वह सम्मान देख रहा था। जहाँ वे त्रासदी देख रहे थे, वहाँ वह उपलब्धि देख रहा था। उसके हाथ में एक गुब्बारा था जिस पर लिखा था "फिर कभी नहीं।" कितना हास्यास्पद! वह तो ठीक इसके विपरीत योजना बना रहा था।

शोक मनाने वालों की कतार पूरी तरह से बन चुकी थी, और उडो ने देखा कि हंटर और ब्रदर कतार के पीछे अपनी-अपनी जगह ले चुके थे। उसने मन ही मन सोचा कि जब वे मंच पर पहुँचेंगे, तो वह पहले को सिर में गोली मारकर मार डालेगा, फिर दूसरे को कुछ ही दूरी पर मार देगा। वह भीड़ के बीच से रेंगता हुआ आगे बढ़ा, जब तक कि उसे सबसे अच्छा कोण नहीं मिल गया।

"इसी मंच पर मैंने अपने चाचा मॉरिस को खो दिया..."

"इसी मंच पर मैंने अपनी बहन विदा को खो दिया..."

रोते रहो, यहूदियों, उडो ने मन ही मन कहा। उसने अपनी कोट की जेब में रखी पिस्तौल को छुआ। स्टील को छूना अच्छा लगा। पलटवार करना अच्छा लगा। इन यहूदी चूहों से तीन साल तक भागने के बाद, उनका पीछा करना अच्छा लग रहा था।

द ट्रैक्स रिमेंबर

इस दुनिया में चार दिशाएँ हैं। और चार ऋतुएँ हैं। चार मूलभूत गणितीय क्रियाएँ हैं, और पृथ्वी के चार उप-प्रणालियाँ हैं। बाइबल में स्वर्ग की चार नदियों का ज़िक्र है। स्वर्ग की चार हवाओं का। ताश के पत्तों में चार सूट होते हैं। कार में चार पहिए होते हैं। मेज़ के चार पैर होते हैं।

चार आधार है। चार संतुलन है। चार आधारों का एक पूर्ण चक्र है, जब तक कि आप वहीं समाप्त न हो जाएं जहां से आपने शुरू किया था, यानी घर पर।
अब हमारे घर लौटने का समय आ गया है।
तो यहीं पर हमारी चार कोनों वाली कहानी का अंत होता है।
सेबेस्टियन ने लाल कार्नेशन्स का एक गुच्छा पकड़ रखा था।
उसने अपने माता-पिता, दादा-दादी, जुड़वां बहनों और चाचा-चाची के लिए एक-एक फूल रखा। जैसे ही कतार खत्म होने वाली थी, उसे अपने कंधे पर एक थपकी महसूस हुई। उसने मुड़कर देखा तो फैनी और टिया खड़ी थीं। फैनी ने उसे हल्के से गले लगाया और अपनी आंख से एक आंसू पोंछा।
“मुझे तुम पर गर्व है,” उसने कहा। “ऐसा करने के लिए।”
“मैं भी,” टिया ने कहा।
सेबेस्टियन को गले में घुटन महसूस हुई।
“धन्यवाद,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।
फैनी ने एक कार्नेशन फूल आगे बढ़ाते हुए कहा, "तुम्हारे भाई के लिए।"
सेबेस्टियन हिचकिचाया, फिर उसने उसे ले लिया।
“अब आपकी बारी है, पापा,” टिया ने कहा।
हवा तेज़ हो रही थी और सफ़ेद गुब्बारे हवा में लहरा रहे थे। सेबेस्टियन मंच पर चलकर माइक्रोफ़ोन के पास रुक गया। उसने आसमान की ओर देखा तो उसे एक अनोखा नज़ारा दिखा: बर्फ़ के टुकड़े हवा में उड़ रहे थे। बर्फ़ के टुकड़े? मार्च में? उसने उत्सुकता से अपना सिर थोड़ा झुकाया और महसूस किया कि एक बर्फ़ का टुकड़ा उसकी नाक पर गिरा, ठंडा, छोटा और गीला।
चालीस फीट दूर, उडो ग्राफ ने अपनी जैकेट में हाथ डाला।
आखिरकार, एक सटीक निशाना। वह उस यहूदी गंदगी का अंत कर सकता था जिसने उसकी जिंदगी बर्बाद कर दी थी। पहले भाई को, फिर बूढ़े को। उसे बस अपना हाथ हिलाना ही पड़ेगा।
सेबेस्टियन ने बोलने के लिए अपना मुंह खोला, और उसने दूसरों की तरह ही बोलना शुरू करने की योजना बनाई। उसके शब्द भीड़ में गूंज उठे।
“इस मंच पर...”
उडो ने ऊपर देखा। सेबेस्टियन ने भी ऊपर देखा। क्योंकि ये शब्द सेबेस्टियन की

आवाज़ नहीं थे, बल्कि किसी और की, एक आदमी की आवाज़ थी, जो उन लाउडस्पीकरों से गूंज रही थी जिनका इस्तेमाल नाज़ी कभी अपनी ट्रेनों के प्रस्थान की घोषणा करने के लिए करते थे।

“इस मंच पर... मैंने तुम्हारे परिवारों से एक भयानक झूठ बोला!” आवाज गरज उठी। “मैंने उनसे कहा कि यह सुरक्षित है! मैंने उनसे कहा कि वे किसी अच्छी जगह जा रहे हैं! मैंने उनसे कहा कि उन्हें नौकरियां मिलेंगी, और वे सब फिर से एक साथ होंगे!”

मुझे खेद है। यह कभी सच नहीं था।

भीड़ में सन्नाटा छा गया। सबकी निगाहें इधर-उधर घूम गईं। अपने जीवन में पहली बार, सेबेस्टियन, फैनी और उडो ग्राफ ने एक ही समय में एक ही विचार साझा किया: निको।

“इस मंच पर मैंने अपने ही लोगों को धोखा दिया। हर उस व्यक्ति को जिसे मैं जानता था। हर उस व्यक्ति को जिसे मैं प्यार करता था। मैंने उन सभी को मुझसे दूर जाते हुए देखा, फिर भी वे मेरी कही बातों पर विश्वास करते रहे।”

लेकिन मुझसे भी झूठ बोला गया था। मुझे बताया गया था कि मेरी बातें सच हैं। मुझे बताया गया था कि मेरा परिवार सुरक्षित रहेगा।

एक विराम।

“वे नहीं थे।”

सेबेस्टियन आगे-पीछे झुककर यह पता लगाने की पूरी कोशिश कर रहा था कि आवाज़ कहाँ से आ रही है। जैसे-जैसे आवाज़ जारी रही, उसके अंदर क्रोध उमड़ता गया।

“यहाँ जो भयावह घटनाएँ घटीं, उनके लिए कई लोग ज़िम्मेदार थे। लेकिन एक व्यक्ति सबसे ज़्यादा ज़िम्मेदार था। उसका नाम उडो ग्राफ था। एक नाज़ी शुत्ज़हाफ्टलागरफ्यूहरर। उसने ही यह सब आयोजित किया था।”

भीड़ में उडो जम गया, उसका हाथ अभी भी उसकी जैकेट में रखी बंदूक को पकड़े हुए था।

“उसने हमारे परिवारों को यहूदी बस्ती में डाल दिया। उसने उन्हें ऑशविट्ज़ भेज दिया। और ऑशविट्ज़ में उसने उन्हें जानवरों की तरह मरवा दिया। गोली मार दी। गैस से मार डाला। उनके शवों को कभी दफनाया नहीं गया, बस जलाकर राख कर दिया गया।”

उडो को अपनी विग के नीचे पसीने की बूँदें महसूस हो रही थीं।
लेकिन आपको यह जानना चाहिए कि न्याय हुआ। उडो ग्राफ मर चुका है। वह एक बहादुर यहूदी के हाथों मारा गया। उसके सारे बुरे सपने टूट गए। वह कायर की तरह मरा। वह अकेला मरा।
उडो और बर्दाश्त नहीं कर सका। उसने टोपी और विग उतार फेंकी, गुब्बारे को छोड़ दिया और अपनी बंदूक निकाल ली।
“यह झूठ है!” वह चिल्लाया। “तुम झूठे हो! तुम झूठ बोलते हो!”
* * *
इसके बाद जो कुछ हुआ, वह नौ सेकंड से भी कम समय में घट गया, फिर भी एक लंबे सपने जैसा लगा। सेबेस्टियन ने एक सफेद गुब्बारा ऊपर उठते देखा, और उसके नीचे उडो ग्राफ पिस्तौल लहरा रहा था। उसने फैनी की चीख सुनी जो उसका नाम पुकार रही थी। उसने हंटर को ज़मीन पर गिरते देखा। फिर, गोलियों की अचानक आवाज़ से ठीक पहले, सेबेस्टियन एक ऐसे शरीर के नीचे दब गया जिसने उसे प्लेटफॉर्म पर गिरा दिया और कार्नेशन के फूल इधर-उधर बिखर गए।
वह धड़ाम से गिरा, टक्कर के कारण उसकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। उसने सांस लेने की कोशिश की। पीठ के बल लेटे हुए, कंधों के नीचे ठंडी कंक्रीट महसूस करते हुए, उसने आंखें खोलीं तो देखा कि एक सुनहरे बालों वाला आदमी उसके ऊपर लेटा हुआ है, और एक ऐसा चेहरा जिसे वह चालीस साल पहले या चालीस साल बाद भी जानता होगा।
“तुम!” सेबेस्टियन हांफते हुए बोला।
“मुझे माफ करना, भाई,” निको ने फुसफुसाते हुए कहा। “मुझे पता था कि वह यहीं होगा। मुझे उसे बाहर निकालना ही था।”
“ग्राफ?”
“अब वह तुम्हारा है। तुम उसे न्याय के कटघरे में ला सकते हो।”
भीड़ में तीन लोगों ने उडो को ज़मीन पर गिरा दिया। एक अन्य व्यक्ति ने उसके हाथ पर पैर रखकर बंदूक छीन ली, और एक पुलिस अधिकारी ने धक्का देकर बंदूक छीन ली। टिया घुटनों के बल बैठी चीख रही थी और फैनी को पकड़े हुए थी, जो आगे की ओर घिसटती हुई मंच पर उलझे हुए दो आदमियों तक पहुँचने की कोशिश कर रही थी।

अपने भाई का भार महसूस करते हुए सेबेस्टियन इतना स्तब्ध था कि बोल ही नहीं पा रहा था। उडो ग्राफ और निको? वो जोड़ी जिसके लिए वो अपनी पूरी जवानी दीवानगी में पागल रहा था? आखिरकार, वो दोनों उसके पास थे। लेकिन उस तरह से नहीं जैसा उसने सोचा था।

तो क्या सच में आप ही हैं?

"मैं ही हूँ," निको ने धीमी आवाज़ में कहा।

सेबेस्टियन ने उस आवाज़ से अभ्यस्त होने की कोशिश की। पिछली बार जब उसने निको को बोलते सुना था, तब वह बच्चा था।

“मैं तुमसे नफरत करता था, निको। इतने सालों से।”

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, भाई।

“हाँ, ऐसा ही है। सच्चाई मायने रखती है।”

“कौन सा सच?”

“तुमने हमसे झूठ बोला। तुमने ऐसा क्यों किया, निको? तुमने उनकी मदद क्यों की?”

निको ने अपना सिर उठाया।

अपने परिवार को बचाने के लिए।

सेबेस्टियन ने जोर से पलकें झपकाईं।

"क्या?"

“ग्राफ ने कहा था कि तुम सब घर लौट आओगे। उन्होंने वादा किया था कि हम फिर से एक साथ होंगे।”

“और तुमने उस पर विश्वास कर लिया? भगवान के लिए, निको, वे नाज़ी थे!”

निको ने आह भरी। "मैं बच्चा था।"

सेबेस्टियन की आंखों में आंसू उमड़ रहे थे, मानो दशकों से दबा हुआ गलत गुस्सा उसकी आंखों के पीछे पिघल रहा हो।

“तुम कहाँ गए थे? तुमने कैसे जीवन बिताया? तुम इतने समय से कहाँ थे?”

“प्रायश्चित,” निको ने कर्कश स्वर में कहा।

उसने मुस्कुराने की कोशिश की, लेकिन उसकी सांसें तेज़ चल रही थीं। सेबेस्टियन ने गुस्से से भरा एक नेक भाव जुटाने की कोशिश की, लेकिन वह नाकाम रहा। उस पल, उसे सिर्फ अपने पिता की आखिरी विनती सुनाई दे रही थी। एक दिन अपने भाई को ढूंढो। उसे बताओ कि तुम्हें माफ़ कर दिया गया है।

"अब तुम प्रायश्चित करना बंद कर सकते हो," सेबेस्टियन ने अंत में फुसफुसाते हुए कहा।

एक पल के लिए वे एक-दूसरे को निहारते रहे, मानो उम्र की झुर्रियाँ और सफ़ेद होते बाल गायब हो गए हों। वे फिर से दो युवा भाइयों की तरह एक-दूसरे के ऊपर आराम कर रहे थे, मानो अभी-अभी बेडरूम में कुश्ती खत्म करके लौटे हों।

“सुनो,” निको ने धीमी आवाज़ में कहा। “मेरे पास ग्राफ़ के नाज़ी दस्तावेज़ हैं। उंगलियों के निशान के साथ। वे मेरी जेब में हैं, ठीक है?”

"क्या?"

“मेरी जेब में। इन्हें ले लो।”

"तुम मुझे इन्हें बाद में दे दोगे।"

निको ने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं। "मुझे नहीं लगता कि मैं ऐसा करूँगा।"

जैसे ही सेबेस्टियन हिला, उसे अपनी छाती पर कुछ गर्म और गीला सा महसूस हुआ, और उसे एहसास हुआ कि यह खून था, बहुत सारा खून। यह चिपचिपा था, जिसने उन्हें आपस में जोड़ दिया था।

निको लुढ़कते हुए पीछे की ओर गिर पड़ा, उसकी निगाहें आसमान पर टिकी थीं। उसे ग्रैफ की दो गोलियां लगी थीं और सीने के नीचे से काफी खून बह रहा था। उसके मुंह पर हल्की सी मुस्कान थी, मानो वह बादलों में कुछ मनोरंजक देख रहा हो।

अचानक, फैनी उसके बगल में आ गई। वह झुककर रोने लगी और उसका चेहरा अपने हाथों में ले लिया।

“निको! निको!”

“निको!” सेबेस्टियन ने दोहराया।

उस पल, जब निको की धड़कन धीमी हो रही थी, उसे एहसास हुआ कि उन तीनों का फिर से एक साथ होना कितना अच्छा था, ठीक वैसे ही जैसे उस समय जब वे खाड़ी के किनारे बने सफेद टावर पर चढ़े थे। और जैसे ही उसके जीवन में किए गए सारे काम—सारे झूठ और प्रायश्चित करने के सारे प्रयास—एक धुंधली सी तस्वीर में तेज़ी से गुज़रने लगे, निको को एहसास हुआ कि उसके दादाजी उस कैदी के बारे में सही थे, जो तब तक पेंट करता रहा जब तक कि टावर इतना सफेद नहीं हो गया कि उसके सारे पाप धुल गए।

क्षमा पाने के लिए एक व्यक्ति कुछ भी कर सकता है।

इसके बाद जो कुछ हुआ, जब फैनी ने निको का सिर पकड़ रखा था और सेबेस्टियन उसके घाव पर दबाव डाल रहा था, वह मैं समझा नहीं सकता।

पुराना मालगाड़ी का डिब्बा चलने लगा। वह पटरियों पर चरमराती हुई, धीरे-धीरे गति पकड़ती हुई, दस-बीस फीट, मानो किसी लंबी यात्रा से लौटकर स्टेशन पर आ रही हो। भीड़ में मौजूद लोग एक-दूसरे को कोहनी मारते हुए तब तक देखते रहे जब तक कि सब लोग अवाक नहीं रह गए, उनके मुंह खुले रह गए।

फिर, जैसे बर्फ के टुकड़े राख की तरह सर्दियों की हवा में उड़ रहे थे, ट्रेन रुक गई। उसके दरवाजे खुल गए। फैनी ने महसूस किया कि निको का सिर उसकी उंगलियों से उठ गया है। उसने कुछ देर तक डिब्बे के अंदर देखा, फिर मुस्कुराया, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे, मानो वह उन सभी लोगों के चेहरे देख रहा हो जिनसे उसने कभी प्यार किया था और झूठ बोला था, और वे उसे घर ले जाने आए हों।

कुछ ही क्षणों बाद, उनकी मृत्यु उस स्त्री की बाहों में हुई जो उनसे प्रेम करती थी और उस भाई के हाथों में हुई जिसने उन्हें क्षमादान दिया था। यह अविश्वसनीय लग सकता है, लेकिन यही हुआ था। सच यही है। सच यही है।

और चलिए मान लेते हैं...

सैलानिका में हुई उस घटना को कई साल बीत चुके हैं। और हालांकि शायद उस दिन जैसी कोई नाटकीय घटना अब साझा करने के लिए नहीं बची है, फिर भी मैं कहानी को पूरा करने के लिए बाध्य हूँ।

मरे हुए लोग झूठ नहीं बोलते, लेकिन उनके सच को उजागर करना पड़ता है। निको क्रिस्पिस अपने पीछे कई रहस्य छोड़ गए। हॉलीवुड जगत में उनकी असली पहचान कभी सामने नहीं आई, क्योंकि केवल फैनी और सेबेस्टियन ही जानते थे कि वे ही फाइनेंसर थे। उनका स्टूडियो उसी गोपनीयता के साये में बंद हुआ, जिस साये में वह चलता था, और व्यापारिक पत्रिकाओं में इसे "उसके एकांतप्रिय संस्थापक की अचानक सेवानिवृत्ति" बताया गया। एक फाइल कैबिनेट में मिले मनीला लिफाफे में उनके स्पष्ट निर्देश थे कि उनकी प्रोजेक्शनिस्ट, फैनी नाम की महिला, उनके सभी काम निपटाए, सभी बकाया बिलों का भुगतान करे और कंपनी से पैसे निकाल ले, जो उसने किया।

जब सामान ढोने वाले लोग निको के घर भेजे गए, तो फैनी उनके साथ गई। वह उसके सादे ढंग से सजे बेडरूम में खड़ी थी, जहाँ उसे अलमारी में केवल एक पुराना चमड़े का

थैला मिला। जब सामान ढोने वालों में से एक ने पूछा, "तहखाने में रखे सामान का क्या?" तो वह उसके पीछे सीढ़ियों से नीचे गई और एक धुंधली रोशनी वाले पिछले कमरे में दाखिल हुई। एक बार फिर, वह आश्चर्यचकित रह गई।

वहाँ, एक भूरे पर्दे के सामने, तिपाई पर एक फिल्म कैमरा, एक कुर्सी और कुछ लाइटें रखी थीं। अलमारियों पर नीले धातु के डिब्बों की कई कतारें थीं, जिनमें से प्रत्येक पर एक संख्या अंकित थी और उसमें फिल्म की एक रील थी।

“ओह, निको,” फैनी ने फुसफुसाते हुए कहा।

उस रात, स्टूडियो के स्क्रीनिंग रूम में, उसने पहली फिल्म को रील में पिरोया, प्रोजेक्टर चालू किया और निको का चेहरा देखा जब वह बीस साल का था। लेंस में सीधे देखते हुए, उसके सुनहरे बाल घने थे और चेहरे पर अभी भी कुछ हद तक लड़कपन झलक रहा था, उसने कहना शुरू किया: "मैंने युद्ध में इस तरह जीवित रहने का संघर्ष किया..."

फैनी ने फिल्म रोक दी और तुरंत सेबेस्टियन को फोन किया। उसने कहा, "तुम कैलिफोर्निया कब आ सकते हो?"

अगले कुछ हफ्तों में, उन दोनों ने फिल्म की हर रील देखी, और निको ने अपने अविश्वसनीय जीवन की कहानी सुनाई। उसने अपनी विभिन्न पहचानों का विस्तार से वर्णन किया, जैसे कि एक जर्मन सैनिक, एक युगोस्लावियाई छात्र, एक हंगेरियन संगीतकार, एक पोलिश रेड क्रॉस कार्यकर्ता। उसने रोमानी लोगों के साथ रहने, दस्तावेज़ों की जालसाजी सीखने, वर्दी चुराने और एक युवा नाज़ी का रूप धारण करने के बारे में बताया। उसने अभिनेत्री कैटलिन कराडी के साथ अपने रिश्ते के बारे में बताया और उन्हें बहादुर बनने के लिए प्रोत्साहित करने और फिल्मों के बारे में सिखाने का श्रेय दिया। जब उसने डेन्यूब नदी पर उस रात को याद किया, तो उसने बताया कि कैसे उसने फैनी को पहचाना, उसे जीवित देखकर वह कितना खुश हुआ, और कैसे एरो क्रॉस से उसे बचाए जाने के बाद, उसने कैटलिन के संपर्कों का उपयोग करके गिज़ेला का पता लगाया, जिसने उसके दोस्त की रक्षा की थी, और उसे मुक्त कराने के लिए एक पादरी को पैसे भेजे।

जब फैनी ने यह सुना तो वह फूट-फूटकर रोने लगी।

निको ने सैकड़ों बातचीतें सुनाईं। सालों तक उसने दुनिया को झूठ के सिवा कुछ नहीं बताया था, लेकिन कैमरे के सामने उसने सिर्फ सच बोला, मानो किसी और से साझा

न करके उसने हर बात को बड़ी सावधानी से सहेज कर रखा हो।
आखिरी दृश्यों में, उन्होंने अपनी संपत्ति के वितरण के बारे में निर्देश दिए। उनकी सारी संपत्ति—हंगरी के एक चर्च से चुराया गया खजाना और फिल्मों से कमाया गया हर पैसा—उन परिवारों को दिया जाना था जिनके नाम उनकी फाइलों में दर्ज थे। उन्होंने यूरोप में कई वर्षों तक यात्रा की ताकि वे यथासंभव अधिक से अधिक लोगों का पता लगा सकें, जिसकी शुरुआत उन्होंने पोलैंड के ज़ाकोपेन में एक तहखाने की दीवारों पर खुदे बच्चों के नामों से की और फिर सैलानिका से जाने वाली ट्रेनों की नाज़ी सूची में दर्ज हर व्यक्ति तक पहुँचे।
उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि पीड़ितों के बच्चों और उनके बच्चों के बच्चों को हर साल 10 अगस्त को तब तक धनराशि दी जाए, जब तक कि वह पूरी तरह खत्म न हो जाए। उनकी इच्छा थी कि यह कार्य गुमनाम रूप से किया जाए, एक ऐसे परोपकार के रूप में जिसका कोई प्रतिफल न हो।
ग्रीस रवाना होने से ठीक पहले रिकॉर्ड किए गए आखिरी वीडियो में, उन्होंने बताया कि उन्हें कैसे पता चला कि उडो ग्राफ सैलानिका में होंगे, क्योंकि वे एक खास अमेरिकी सीनेटर को गुप्त रूप से भुगतान करके कई सालों से उन पर नज़र रख रहे थे। उन्हें सूचना मिली थी कि पूर्व शुत्ज़हाफ्टलागरफ्यूहरर ने मार्च में इटली से ग्रीस के लिए टिकट बुक किया था। जब निको को एक फिल्म निर्देशक से सेबेस्टियन के समारोह के बारे में पता चला, और यह भी कि हंटर और सेबेस्टियन वहाँ मौजूद होंगे, तो उन्हें ग्राफ की योजना समझ आ गई। और उन्हें इसे रोकना ही था।
उन्होंने फैनी को उन्हें ढूंढने, उनके लिए खाना बनाने और तब तक उन्हें अपनी परछाई का सामना करने के लिए मजबूर न करने के लिए धन्यवाद दिया, जब तक कि वे तैयार नहीं हो गए, जो उन्होंने कहा कि वह फैनी के बिना नहीं कर सकते थे। उन्होंने फैनी को कुछ समय के लिए ही सही, उन्हें "प्यार का एहसास कराने" के लिए भी धन्यवाद दिया।
उसने अपनी आखिरी कहानी अपने भाई के लिए बचाकर रखी थी। उसने कहा कि वह जानता था कि सेबेस्टियन को लगता था कि उसने अपने परिवार को छोड़ दिया है, लेकिन सच तो यह था कि ट्रेन की पटरियों पर बिछड़ने के बाद से वह हर दिन ऑशविट्ज़ पहुँचने की कोशिश में लगा रहा। उसने बताया कि इतने समय बाद भी, मुक्ति के दिन वे कुछ ही मिनटों से एक-दूसरे से नहीं मिल पाए थे। लेकिन उसने

अपने दादा लाज़ार्रे को अस्पताल में पाया, और हालाँकि वह अपने नानो को सच बताने की हिम्मत नहीं कर पाया, फिर भी वह वापस आया और उनके आखिरी दिनों में उनके साथ रहा, डॉक्टर बनकर उनका हाथ थामे। उस दौरान, जब भी वह अंधा आदमी बोलता, वह हमेशा "मेरे बहादुर पोते, सेबेस्टियन" के बारे में पूछता।

निको को लगा कि उसके भाई को यह सुनकर अच्छा लगेगा।

जब लाज़ार्रे की मृत्यु हुई, तो निको ने शव को शिविर से बाहर ले जाकर एक दूरदराज के खेत में दफना दिया, क्योंकि वह जानता था कि उसके दादाजी नाज़ी शिविर की मिट्टी में दफन होना नहीं चाहेंगे। उसने एक छोटा पत्थर ढूंढा और उसे समाधि के पत्थर के रूप में इस्तेमाल किया। एक साल बाद, अपनी नई कमाई से निको वापस गया और उस जमीन को खरीद लिया जहाँ कब्र थी। और हर गर्मियों में, वह वहाँ जाकर कपड़े और पानी से पत्थर को साफ करता था। उसने सोचा कि शायद सेबेस्टियन भी ऐसा करना चाहेगा।

और उडो ग्राफ का क्या हुआ?

खैर। हमारी कहानी जिस तरह से आगे बढ़ी है, उससे आप शायद यही मानेंगे कि उसे उसकी करनी का फल मिला। लेकिन न्याय कभी निश्चित नहीं होता। उसके तराजू में हेरफेर किया जा सकता है।

उडो ने हत्या के आरोप से इनकार करते हुए दावा किया कि उसने विरोध में केवल हवा में गोली चलाई थी। उसने नाजियों से किसी भी तरह के संबंध से इनकार किया। अपना इतालवी पासपोर्ट दिखाते हुए उसने दावा किया कि वह एक राष्ट्रवादी है जो "होलोकॉस्ट के झूठ" पर विश्वास नहीं करता।

अदालती सुनवाई के दौरान जब सेबेस्टियन ने अपने भाई द्वारा उपलब्ध कराए गए नाज़ी पहचान पत्र का एक टुकड़ा दिखाते हुए कहा, "इस आधिकारिक दस्तावेज़ पर उडो ग्राफ के उंगलियों के निशान हैं," तभी उडो ने अचानक अपनी कहानी बदल दी और अपनी असली पहचान स्वीकार कर ली। उसे कभी पता नहीं चला कि निको के जीवन के कई अन्य दस्तावेजों की तरह, ये दस्तावेज भी जाली थे।

लेकिन उडो ने अपनी चालबाज़ी बंद नहीं की थी। उसके वकीलों ने उसके गृह देश में ही मुक़दमा चलाने पर ज़ोर दिया। और, यकीन करना मुश्किल है, लेकिन यह अनुरोध मान लिया गया, क्योंकि कुछ अज्ञात दानदाताओं द्वारा भुगतान किए गए यूनानी अधिकारियों ने यह मान लिया कि एक जर्मन अदालत एक पूर्व नाज़ी को दंडित करने

के लिए यूनानी अदालत से बेहतर सक्षम है। उडो द्वारा निजी तौर पर युद्ध के दौरान अपने सैलानिका सहयोगियों के नाम उजागर करने की धमकी देने का उसकी रिहाई में बहुत बड़ा योगदान था। उडो ने बहुत ही सावधानीपूर्वक डायरी लिखी थी। एक न्यायाधीश, जिसके पिता का नाम उन डायरियों में दर्ज लोगों में शामिल था, ने उडो के पक्ष में फैसला सुनाया।

शूत्ज़ाफ़्टलागरफ़ुहरर घर जा रहा था।

सेबेस्टियन और नाज़ी हंटर बेहद गुस्से में थे। उन्होंने अभियोजकों के दफ्तरों पर धावा बोल दिया और चिल्लाकर पूछा, "तुम्हें कौन पैसे दे रहा है?", लेकिन उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। उन्हें बताया गया कि जर्मन इसे संभाल लेंगे।

ग्राफ के प्रत्यर्पण में कई सप्ताह लग गए। उन्हें फ्रैंकफर्ट के लिए उड़ान भरनी थी, लेकिन इस आशंका से कि विमान का मार्ग बदलकर उसे इज़राइल ले जाया जा सकता है, उन्होंने ट्रेन से जाने का अनुरोध किया। और फिर, अविश्वसनीय रूप से, उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया गया।

इन सब बातों ने उन अनेक समूहों को और भी क्रोधित कर दिया जिन्होंने उनकी कैद की मांग की थी। संपादकीय लिखे गए। शिकायतें दर्ज कराई गईं।

लेकिन एक व्यक्ति, जिसने इस आदमी द्वारा दूसरों के साथ किए गए अत्याचारों को काफी हद तक देखा था, ने केवल शिकायत करने से कहीं अधिक किया। सत्य का हिसाब-किताब होना ही चाहिए, चाहे वह तुरंत हो या भविष्य में। उडो के मामले में, इसमें पूरा जीवन लग गया। लेकिन यह हुआ।

जब वह दो यूनानी पुलिस अधिकारियों के साथ ट्रेन में चढ़ा, तो वह आत्मविश्वास से भरा हुआ था। अपने प्रिय जर्मनी लौटना उसके लिए सम्मानजनक व्यवहार की गारंटी थी। उसे इस बात का पूरा यकीन था। जैसे ही ट्रेन ग्रामीण इलाकों से गुज़री, एक महिला परिचारिका ने ठेले से उन्हें पेय पदार्थ दिए, और उडो ने पुलिस से पूछा कि क्या उसे एक गिलास रेड वाइन दी जा सकती है। अधिकारियों ने कंधे उचका दिए। उडो ने मन ही मन अपनी जीवित रहने की क्षमता पर खुशी मनाई। वह वास्तव में अपने मुकदमे का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था। उसे अपनी मातृभाषा में बोलने का मौका मिलेगा। वुल्फ की आवाज़ फिर से सुनाई देगी। जर्मनी सर्वोपरि है!

उसने शराब की आखिरी बूंद तक पी ली और गिलास परिचारिका को लौटा दिया, उसने न तो उसके सफेद दस्तानों पर ध्यान दिया, न ही उसके गले में लटके पुराने

लाल मोतियों के हार पर, और न ही इस बात पर कि उन मोतियों में से दो गायब थे, जो टूटकर उसके पेय में घुल गए थे।

जर्मन सीमा से दो मील दूर, उडो ग्राफ का दम घुट गया, वह खांसने लगा, अपनी सीट पर गिर पड़ा और हमेशा के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं, उसके शरीर में मौजूद जहर ने उसे उसकी बहुप्रतीक्षित घर वापसी से वंचित कर दिया।

यह बिलकुल वैसा ही था जैसा निको ने रेलवे स्टेशन पर कहा था। वह कायर की तरह मरा। वह अकेला मरा। एक बहादुर यहूदी के हाथों।

कभी-कभी झूठ केवल एक ऐसा सत्य होता है जो अभी घटित होना बाकी है।

... आमीन

मैंने शुरुआत में ही कहा था कि सत्य को ईश्वर ने त्याग दिया है। लेकिन जिस प्रकार आप परलोक में अपने प्रियजनों से मिलने की लालसा रखते हैं, उसी प्रकार मैं भी स्वर्ग में वापसी का सपना देखता हूँ। सर्वशक्तिमान के आलिंगन का।

इससे पहले कि ऐसा हो, मुझे एक बात स्वीकार करनी है। हमारी कहानी की शुरुआत से ही, मैंने एक छोटी सी बात को छोड़ दिया है।

मुझे पृथ्वी पर निर्वासित कर दिया गया क्योंकि मानव जाति के बारे में मेरी भविष्यवाणी सही थी। मनुष्य टूटे हुए हैं। पाप के प्रति संवेदनशील हैं। उन्हें बुद्धि दी गई थी ताकि वे खोजबीन कर सकें, लेकिन वे अक्सर अपनी ही शक्ति का दोहन करना चुनते हैं। वे झूठ बोलते हैं। और उनके झूठ उन्हें यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि वे ईश्वर हैं।

सच्चाई ही एकमात्र ऐसी चीज है जो उन्हें रोक सकती है।

फिर भी। आप मौन से शोर को दबा नहीं सकते। सत्य को एक आवाज़ की ज़रूरत होती है। इस कहानी को साझा करने के लिए, मुझे एक विशिष्ट आवाज़ की आवश्यकता थी। एक ऐसी आवाज़ जो निको के अपने सफ़र को बयां करती हुई सुने, एक ऐसी आवाज़ जो सेबेस्टियन को व्यक्तिगत रूप से समझे, एक ऐसी आवाज़ जो फैनी की पीड़ादायक यात्रा के हर कदम पर उसके साथ हो, एक ऐसी आवाज़ जो उडो ग्राफ की मरणोपरांत खोजी गई डायरियों के हर शब्द को आत्मसात करे।

एक ऐसी किताब जो आपको उस भयावहता के बारे में बता सके जो वुल्फ ने इस धरती पर फैलाई थी, सैलानिका की गलियों से लेकर एक भीड़भाड़ वाली मालगाड़ी की खिड़की तक, मौत के शिविरों से लेकर गैस चैंबरों तक और डेन्यूब नदी के खूनी

किनारों तक।

एक ऐसी कहानी जो यह समझा सके कि कैसे उस बुराई के बावजूद आशा जीवित रही, एक दर्जी की दयालुता में, एक अभिनेत्री के साहस में, एक पिता और दादा के स्नेहपूर्ण संरक्षण में, और तीन बच्चों के कोमल हृदयों में, जिन्हें किसी तरह यह पता था कि वे एक दूसरे से फिर मिलेंगे।

एक ऐसी आवाज जो आपको चेतावनी दे सकती है कि एक बार बोला गया झूठ आसानी से उजागर हो जाता है, लेकिन हजार बार बोला गया झूठ सच जैसा लग सकता है।

और दुनिया को नष्ट कर देंगे।

मैं ही वह आवाज़ हूँ। और इन शब्दों को साझा करने के लिए, ठीक उसी दृष्टांत की तरह, मैंने एक रंगीन वस्त्र धारण किया, और यह सुनिश्चित किया कि सत्य का हिसाब-किताब सुनाया जाए।

मुझे अपने जीवनकाल में दो बार "दुनिया को यहाँ जो हुआ, वह बताओ" कहा गया, और यह मेरे जीवन भर का बोझ रहा है, इस अंतिम क्षण तक। मैंने एक अच्छा इंसान बनने की कोशिश की है, लेकिन अब मैं बूढ़ा हो चुका हूँ और मृत्यु के निकट हूँ। बाकी सब दफन हो चुके हैं। मैं ही इस कहानी का एकमात्र अवशेष हूँ।

तो यहीं पर, मैं अपने अंतिम शब्दों के साथ इसे समाप्त करता हूँ।

मेरा नाम फैनी नाहमियास क्रिस्पिस है।

सेबेस्टियन की पत्नी।

निको का प्रेमी।

उडो ग्राफ का हत्यारा।

मैंने तुम्हें जो कुछ भी बताया है, वह सब सत्य है।

और इसलिए, अंततः, ईश्वर की कृपा से, मैं स्वतंत्र हूँ।

***** समाप्त *****

sjeet

लेखक की ओर से

यह कहानी काल्पनिक है, लेकिन इसके निर्माण में कई कड़वी सच्चाइयाँ शामिल हैं।

इसीलिए, मैं उन सभी साहसी लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने होलोकॉस्ट के दौरान घटी घटनाओं की कहानी कहने का साहस दिखाया, चाहे वे इतिहासकार हों जिनकी पुस्तकें मैंने बड़े चाव से पढ़ीं, या वे जीवित बचे लोग हों जिनके प्रत्यक्ष अनुभवों ने दुनिया को वह दिखाया जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकती थी।

अपने साथ घटी सबसे भयानक घटनाओं को याद करना बहुत साहस का काम है। उन लोगों के साहसी वृत्तांतों के बिना, जिन्होंने उन घटनाओं को जिया है, हम नाजियों के हाथों हुए अत्याचारों की भयावहता को कभी नहीं जान पाते और न ही हमारे पास यह सुनिश्चित करने का कोई उपाय होता कि ऐसी घटनाएँ दोबारा न हों।

इस पुस्तक में मैंने उन वृत्तांतों की प्रकृति के प्रति निष्ठा बनाए रखने और सैलॉनिका (जिसे यूनानी और अन्य लोग थेसालोनिकी, सैलॉनिकी या सैलॉनिका कहते हैं) के यहूदियों के साथ घटी घटनाओं का सटीक चित्रण करने का प्रयास किया है, जो इस विविधतापूर्ण स्थान के अनेक प्रभावों को दर्शाती है। बेशक, उपन्यास इतिहास की पुस्तक नहीं है, लेकिन जहाँ तक संभव हो, इस कहानी की घटनाएँ 1930 के दशक के उत्तरार्ध और 40 के दशक के दौरान उस शहर में घटी घटनाओं को प्रतिबिंबित करती हैं।

तो इस समय इस किताब को क्यों चुना? दरअसल, अपने लेखन जीवन के अधिकांश समय से मैं होलोकॉस्ट के दौरान एक कहानी लिखना चाहता था। लेकिन मुझे ऐसी कोई कहानी नहीं मिल पा रही थी जो पहले से ही दुखद रूप से परिचित न हो।

एक दशक से भी अधिक समय पहले, एक संग्रहालय की यात्रा के दौरान, मैंने एक जीवित बचे व्यक्ति का वीडियो देखा जिसमें वह बता रहा था कि कैसे यहूदियों को कभी-कभी साथी यहूदियों से यह झूठ बोलने के लिए इस्तेमाल किया जाता था कि यातना शिविरों की ओर जाने वाली ट्रेनें कहाँ जा रही हैं। जीवन और मृत्यु के बीच सच्चाई का वह विकृत रूप महीनों और यहाँ तक कि वर्षों बाद भी मेरे मन में बसा रहा।

'द लिटिल लायर' की कहानी की शुरुआत उसी तस्वीर से हुई थी।

फिर, कुछ साल पहले, मैंने नाज़ियों के शासन में यूनानियों के अनुभवों के बारे में पढ़ना शुरू किया। कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के बाद, मैं क्रेते द्वीप पर एक संगीतकार के रूप में ग्रीस में रहा था। वहाँ रहते हुए, मुझे यूनानी लोगों और उनकी संस्कृति से प्यार हो गया।

जब मैंने अपने शोध के दौरान पाया कि सैलानिका (जैसा कि उस समय गैर-ग्रीक दुनिया के अधिकांश लोग इसे कहते थे) में नाजियों द्वारा नष्ट किए गए सभी शहरों में यहूदी आबादी का प्रतिशत सबसे अधिक था, तो मुझे पता चल गया कि मुझे अपनी कहानी के लिए एक घर मिल गया है, और इसके पात्र उन ऐतिहासिक गलियों से उभरने लगे।

मुझे आशा है कि यह पुस्तक, सत्य के महत्वहीन हो जाने पर होने वाले परिणामों के बारे में चेतावनी देने के साथ-साथ, युद्ध के दौरान यूनानी यहूदियों को झेलनी पड़ी पीड़ाओं की गहन पड़ताल के लिए प्रेरणा प्रदान करेगी। नाज़ी अत्याचार के अनगिनत अन्य पीड़ितों की तरह, उनके नुकसान और पीड़ाओं को कभी भी पूरी तरह से मापा नहीं जा सकता।

* * *

इस प्रयास में कई लोगों ने मेरी बहुत मदद की। सबसे पहले मैं अथक एफी कलामपौकिडू का धन्यवाद करना चाहता हूँ, जिन्होंने वर्षों तक मेरी मार्गदर्शक, अनुवादक, इतिहासकार और सैलानिका में जीवन के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम किया। उन्होंने मुझे शहर को उस तरह से दिखाया जैसा शायद ही कोई दिखा पाता है, और लेखन प्रक्रिया के दौरान उन्होंने जो भी छोटी-बड़ी जानकारी दी, उसके लिए मैं उनका सदा आभारी रहूँगा। पुराने रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर उनके साथ खड़े होकर जब वे कहानियां सुनाती थीं, तो मुझे ऐसा लगता था मानो यह कहानी मेरे पैरों के नीचे गूंज रही हो।

साथ ही, एंजेलो स्टेट यूनिवर्सिटी के डॉ. डू ए. कर्टिस, पीएचडी, एलपी को विशेष धन्यवाद, जिन्होंने धैर्यपूर्वक मुझे पैथोलॉजिकल झूठ बोलने के पीछे के विज्ञान और निको जैसे व्यक्ति को इससे कैसे परेशानी हो सकती है, इसके बारे में समझाया।

रब्बी स्टीवन लिंडेमैन का हार्दिक आभार, जिन्होंने दृष्टांत, तालमुदिक संदर्भ और सत्य एवं झूठ पर यहूदी दृष्टिकोण साझा किए और इस पुस्तक को पहले ही पढ़कर सुनाया। इसके बाद उन्होंने प्रश्नों के कई पृष्ठ तैयार किए। उन्होंने यह सब हैती में हमारे बच्चों के साथ काम करने के लिए जाते समय किया, जो वे नियमित रूप से करते हैं। यह वास्तव में एक सच्चा और प्रेमपूर्ण दयालुतापूर्ण कार्य है।

मृत्यु शिविरों, यहूदी बस्तियों, लिबर्टी स्क्वायर और डेन्यूब नदी के किनारे घटी घटनाओं और कैटलिन कराडी के अविश्वसनीय साहस पर प्रकाश डालने वाले सभी

स्रोतों का उल्लेख करना असंभव होगा। इस प्रक्रिया में कई व्यक्तिगत वृत्तांतों का अध्ययन किया गया, और यदि निको, फैनी और सेबेस्टियन के अनुभवों में कुछ समानताएं दिखाई देती हैं, तो मुझे पूरी उम्मीद है कि इसे एक ऐसी कहानी के रूप में समझा जाएगा जिसे बार-बार सुनाया जाना चाहिए।

ज़ेकेलमैन होलोकॉस्ट सेंटर, उसके कर्मचारियों और उसकी वक्ता श्रृंखला के साथ-साथ यरूशलेम में स्थित याद वाशेम को विशेष धन्यवाद, जो एक बहुमूल्य और अमूल्य संसाधन है।

मेरी नियमित टीम मुझे लगातार आश्चर्यचकित करती रहती है: जो-एन बार्नास, जो अपने गहन शोध में गहराई तक जाती हैं; केरी अलेक्जेंडर, जो सभी छोटे-बड़े कार्यों को संभालती हैं; एंटोनेला इयानारिनो, जो मेरे लिए डिजिटल जगत को बड़े प्यार से समझाती हैं; और मार्क "रोजी" रोसेन्थल, जो मेरे जीवन की उलझनों को सुलझाने में मदद करते हैं ताकि मैं अपने लेखन पर उतना ध्यान दे सकूं जितना उसे मिलना चाहिए।

डेविड ब्लैक और मैंने पैंतीस वर्षों तक एक हाथ मिलाने के बंधन में साथ काम किया है, जो व्यापार से कहीं अधिक मित्रता का प्रतीक बन गया है। और करेन रिनाल्डी, जिन्होंने अब तक मेरी सबसे अधिक पुस्तकों का संपादन किया है, ने मुझे इस कहानी में गहराई से उतरते समय प्रोत्साहित किया कि जीवन की सबसे कठिन परिस्थितियों में भी पाई जाने वाली सरल सुंदरता को कभी न भूलें। व्हाइट टॉवर की प्रेरणा सीधे तौर पर उन्हीं से मिलती है।

हार्परकॉलिन्स की पूरी प्रकाशन टीम, ब्रायन मरे, जोनाथन बर्नहैम, लेस्ली कोहेन, टीना एंड्रियाडिस, डग जोन्स, किर्बी सैंडमेयर और मिलान बोज़िक को एक और शानदार कवर के लिए धन्यवाद। साथ ही, मेरे विदेशी प्रकाशकों के प्रति भी हार्दिक आभार, जो मानते हैं कि मेरी कहानियों का अन्य देशों और भाषाओं में भी महत्व है। इसके लिए मैं अतुलनीय सुसान रायहोफर का धन्यवाद करना चाहता हूँ, जो दुनिया भर में मेरे लिए प्रचार करती हैं।

मैं ऐसे बड़े-बुजुर्गों को जानता था जो गर्म मौसम में भी लंबी आस्तीन वाले कपड़े पहनते थे ताकि कलाई के पास बने नीले टैटू को छिपा सकें। मैंने डरावनी कहानियों और कानाफूसी के बारे में अधूरी बातें सुनीं, जो किसी डरावनी फिल्म से निकली लगती थीं। हालांकि सभी का नाम लेना मुश्किल है, फिर भी मैं ईवा और सोलोमन

नेसर, जो और चाना मैगुन, और रीटा और इज़ी स्मिलोविट्ज़, और कई अन्य लोगों का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिन्होंने अपनी यादों के माध्यम से मुझे सिखाया कि "फिर कभी नहीं" कहना सिर्फ एक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक प्रतिज्ञा होनी चाहिए। अपने पुराने और नए पाठकों के माध्यम से, मैं कहानियाँ सुनाने के सौभाग्य को जानता हूँ। अपने करीबी और दूर के परिवार के माध्यम से, मैं दुनिया को साझा करने की खुशी को जानता हूँ। हैती में हमारे बच्चों और हाल ही में, नन्ही सी बच्ची नैडी के माध्यम से, मुझे यह देखने का मौका मिलता है कि कैसे नया जीवन पुरानी परेशानियों का इलाज है। और मेंडल अब भी एक आवारा है।

अंत में, मैं अपनी प्यारी पत्नी जेनीन के प्यार के बिना वो सब कुछ नहीं कर सकता जो मैं करता हूँ। और हम दोनों ही ईश्वर के प्रेम के बिना कुछ नहीं कर सकते। सच कहूँ तो। सच कहूँ तो।

मिच एल्बोम

जुलाई 2023

लेखक के बारे में

मिच एल्बोम ने कई उपन्यास लिखे हैं, जिनमें काल्पनिक और गैर-काल्पनिक दोनों तरह की पुस्तकें शामिल हैं, जिनकी दुनिया भर में सैंतालीस भाषाओं में कुल मिलाकर 41 मिलियन से अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं। उन्होंने आठ ऐसी किताबें लिखी हैं जो न्यूयॉर्क टाइम्स की नंबर एक बेस्टसेलर रही हैं—जिनमें सर्वकालिक सर्वश्रेष्ठ संस्मरण 'ट्यूजडेज़ विद मोरी' भी शामिल है—पुरस्कार विजेता टीवी फिल्में, नाटक, पटकथाएं, एक राष्ट्रीय स्तर पर सिंडिकेटेड अखबार कॉलम और एक संगीत नाटक भी लिखा है। डेट्रॉइट फ्री प्रेस में अपने काम के लिए उन्हें नेशनल स्पोर्ट्स मीडिया एसोसिएशन और मिशिगन स्पोर्ट्स हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया और उन्हें 2010 में आजीवन उपलब्धि के लिए रेड स्मिथ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। एल्बोम ने अपने गृहनगर में नौ अलग-अलग धर्मार्थ संस्थाओं के एक समूह 'से डेट्रॉइट' की स्थापना की और उसका संचालन करते हैं। इसके अलावा, वे एक गैर-लाभकारी मिठाई की दुकान और खाद्य उत्पाद श्रृंखला भी चलाते हैं, जिसका उद्देश्य डेट्रॉइट के सबसे वंचित नागरिकों के लिए कार्यक्रमों को वित्त पोषित करना है। 2010 से, वे पोर्ट-औ-प्रिंस, हैती में एक अनाथालय का संचालन कर रहे हैं, जहां वे हर महीने जाते हैं। वे अपनी पत्नी, जेनीन के साथ मिशिगन में रहते हैं। अधिक जानकारी के लिए

www.mitchalbom.com, www.saydetroit.org और www.havefaithhaiti.org पर जाएं।

hc.com पर बेहतरीन लेखकों, विशेष ऑफ़र और बहुत कुछ खोजें।

मिच एल्बोम द्वारा भी।

लाइफबोट में अजनबी

चिका को ढूँढना

स्वर्ग में आपसे मिलने वाला अगला व्यक्ति

फ्रेंकी प्रेस्टो के जादुई तार

स्वर्ग से पहली फ़ोन कॉल

समय रक्षक

थोड़ा विश्वास होना

एक और दिन के लिए

स्वर्ग में आपसे मिलने वाले पाँच लोग

मॉरी के साथ मंगलवार

कॉपीराइट

यह पुस्तक एक काल्पनिक रचना है। इसमें वास्तविक व्यक्तियों, घटनाओं, संस्थानों, संगठनों या स्थानों के संदर्भ केवल प्रामाणिकता का आभास देने के उद्देश्य से दिए गए हैं और काल्पनिक रूप से प्रयुक्त किए गए हैं। अन्य सभी पात्र, घटनाएँ और संवाद लेखक की कल्पना से लिए गए हैं और इन्हें वास्तविक नहीं माना जाना चाहिए।

द लिटिल लायर। कॉपीराइट © 2023 एएसओपी, इंक. द्वारा। अंतर्राष्ट्रीय और पैन-अमेरिकन कॉपीराइट कन्वेंशनों के तहत सर्वाधिकार सुरक्षित। आवश्यक शुल्क के भुगतान पर, आपको इस ई-पुस्तक के पाठ को स्क्रीन पर देखने और पढ़ने का गैर-अनन्य, गैर-हस्तांतरणीय अधिकार प्रदान किया गया है। हार्परकॉलिन्स ई-बुक्स की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना, इस पाठ का कोई भी भाग पुनरुत्पादित, प्रसारित, डाउनलोड, डीकंपाइल, रिवर्स-इंजीनियर या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली में, किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, चाहे इलेक्ट्रॉनिक हो या यांत्रिक, वर्तमान में ज्ञात हो या भविष्य में आविष्कार किया गया हो, संग्रहीत या उसमें शामिल नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण

कवर डिजाइन मिलान बोज़िक द्वारा किया गया है।

कवर का चित्र मार्क स्मिथ द्वारा बनाया गया है।

डिजिटल संस्करण नवंबर 2023 आईएसबीएन: 978-0-06-240667-5

संस्करण 09222023

प्रिंट ISBN: 978-0-06-240665-1

प्रकाशक के बारे में

ऑस्ट्रेलिया
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स ऑस्ट्रेलिया प्राइवेट लिमिटेड
लेवल 13, 201 एलिजाबेथ स्ट्रीट
सिडनी, न्यू साउथ वेल्स 2000, ऑस्ट्रेलिया
www.harpercollins.com.au
कनाडा
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स लिमिटेड
बे एडिलेड सेंटर, ईस्ट टॉवर
22 एडिलेड स्ट्रीट वेस्ट, 41वीं मंजिल
टोरंटो, ओंटारियो, M5H 4E3
www.harpercollins.ca
भारत
हार्परकॉलिन्स इंडिया
ए 75, सेक्टर 57
नोएडा
Uttar Pradesh 201 301
www.harpercollins.co.in
न्यूज़ीलैंड
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स न्यूजीलैंड
यूनिट डी1, 63 अपोलो ड्राइव
रोजडेल 0632
ऑकलैंड, न्यूजीलैंड
www.harpercollins.co.nz
यूनाइटेड किंगडम
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स लिमिटेड।
1 लंदन ब्रिज स्ट्रीट
लंदन SE1 9GF, यूके

www.harpercollins.co.uk
संयुक्त राज्य अमेरिका
हार्परकॉलिन्स पब्लिशर्स इंक.
195 ब्रॉडवे
न्यूयॉर्क, एनवाई 10007
www.harpercollins.com